अग्रोहा एक ऐतिहासिक धरोहर

डॉ० चम्पालाल गुप्त

अग्रोहा

एक ऐतिहासिक धरोहर

(अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवालों का गौरवपूर्ण इतिहास)

लेखकः
डॉ. चम्पालाल गुप्त
एम.ए.पीएच.डी

अग्रोहा विकास ट्रस्ट
अग्रोहा (हिसार) हरियाणा-125047

प्रकाशक :
अग्रोहा विकास ट्रस्ट
अग्रोहाधाम
अग्रोहा (हिसार)-125047
हरियाणा
दूरभाष : (016694) 5127

© सर्वाधिकार-लेखकाधीन सुरक्षित

प्रथम संस्करण-1993
द्वितीय संस्करण-1996
तृतीय संस्करण-1998
मूल्य : 25/-

मुद्रक :
पूनम प्रिंट्स
दिल्ली-35

प्राक्कथन

'अग्रोहा-एक ऐतिहासिक धरोहर' पुस्तक का तृतीय संशोधित-परिवर्धित संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

अग्रवाल एवं वैश्य समुदाय के इतिहास तथा उसके गौरव को समक्ष लाना मेरी रूचि का प्रिय विषय रहा है। इसी संदर्भ में मैंने आज से कई वर्ष पूर्व वैश्य समुदाय का राष्ट्रोत्थान में योगदान विषय पर शोध कार्य अपने हाथ में लिया और देश के कोने-कोने में जाकर पर्याप्त सामग्री एकत्र की। बाद में अग्रोहाधाम पत्रिका के मानद सम्पादक के रूप में जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। जब यह सामग्री पत्रिका के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँची तो लोगों ने उसका हार्दिक स्वागत किया। इससे अग्रवाल एवं वैश्य इतिहास में अनेक नये पृष्ठ जुड़े।

अग्रोहा के पाँचवें धाम के रूप में निर्माण तथा महाराज अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के फलस्वरूप समाज-बंधुओं में जातीय इतिहास को जानने की उत्सुकता बढ़ी और एक ऐसी इतिहास-पुस्तक की मांग होने लगी, जिसमें अग्रोहा, अग्रसेन तथा वैश्य अग्रवालों के बारे में पूरी जानकारी हो। उसी का परिणाम प्रस्तुत पुस्तक है।

इतिहास के अन्य पौराणिक महापुरुषों के समान महाराजा अग्रसेन को लेकर भी विद्वानों में विभिन्न मतभेद हैं किंतु प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य पाठकों को अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल के विषय में अधिकत्तम जानकारी प्रदान करना है। अत: दीर्घकालिक अध्ययन मनन के फलस्वरूप जो तथ्य अधिक प्रामाणिक प्रतीत हुए, उन्हें प्रस्तुत ग्रंथ में सीधी-सरल भाषा में प्रकट करने तथा विवादास्पद विषयों का युगानुकूल तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। आशा है, इससे पाठकों की अग्र-इतिहास सम्बंधी अनेकानेक जिज्ञासाओं का समाधान होगा और वे बहुत कुछ नवीन जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल की त्रयी आपस में इतनी सम्पृक्त है कि उसमें से किसी एक को पृथक नहीं किया जा सकता। इसलिए पुस्तक का शीर्षक अग्रोहा से सम्बन्धित होते हुए भी इसमें अग्रसेन, अग्रवाल सम्बंधी जानकारी का विशद रूप से समावेश किया गया है।

सम्पूर्ण पुस्तक की सामग्री चार भागों-अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल तथा अग्रवाल वैश्य समाज की राष्ट्र सेवाएं में विभक्त करते हुए अग्र समाज के विभिन्न पक्षों को समेटने का प्रयास किया गया है। अग्रवाल वैश्य समाज भारत ही नहीं विश्व के अग्रणी समाजों में है। इसकी उपलब्धियां महान रही हैं और यह समय के साथ-साथ अपनी उपलब्धियों द्वारा इतिहास में नये-नये पृष्ठ जोड़ता रहा है। समाज की इन नवीनत्तम उपलब्धियों की जानकारी पाठकों को मिल सके, इसके लिए प्रस्तुत संस्करण में पर्याप्त परिवर्तन-परिवर्धन किए गए है और राष्ट्र सेवाओं सम्बन्धी अध्याय को नवीन संदर्भों के अनुकूल अद्यतन स्वरूप प्रदान किया गया है।

पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन में अग्रोहा निर्माण के सूत्रधार श्री नंदकिशोर जी गोईन्का एवं श्री हरपतराय जी टांटिया की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मुख्य रूप से सहयोगी रहे हैं। पुस्तक के लेखन में विभिन्न लेखकों की सामग्री का भी यत्र-तत्र प्रयोग किया गया है। इन सबके प्रति लेखक हार्दिक आभार प्रकट करता है।

पाठकों ने इस पुस्तक को बड़ी सहृदयता से अपनाया और अल्प अवधि में ही इस पुस्तक का तृतीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है, यह संतोष का विषय है। इस सम्बन्ध में लेखक पाठकों के रचनात्मक सुझावों को सादर आमन्त्रित करता है।

अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल की धरोहर महान है। उसमें वे सब तत्व विद्यमान हैं, जो किसी भी राष्ट्र या समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं। यदि पुस्तक से अग्रोहा एवं अग्रसेन की उस महान धरोहर से पाठकों को कुछ भी प्रेरणा मिल सकी तो मैं अपने इस प्रयास को सार्थक समझूंगा।

सधन्यवाद!

विनीत

26 जनवरी, 1998

चम्पालाल गुप्त

भूमिका

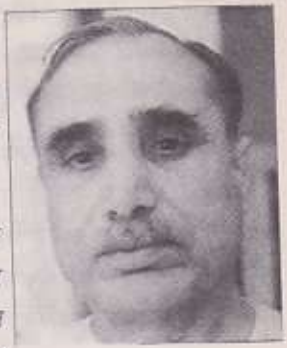

डॉ. चम्पालाल गुप्त द्वारा लिखित 'अग्रोहा-एक इतिहासिक धरोहर' पुस्तक का तृतीय संशोधित परिवर्धित संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए ट्रस्ट गौरव का अनुभव कर रहा है।

डॉ. गुप्त अग्रवाल एवं वैश्य इतिहास के विद्वान हैं और विगत तीन दशकों से समाज के इतिहास पर अनुसंधानरत है। इनके पास अग्र/वैश्य साहित्य का विशाल संग्रह है। मुझे श्रीगंगानगर प्रवास के समय जब इसे देखने का अवसर मिला तो मैं बड़ा ही प्रभावित हुआ। शायद ही इस प्रकार का दुर्लभ संग्रह अन्यत्र कहीं हो। हजारों पृष्ठों की तो लिखित सामग्री है। अनेक ऐसी पुस्तकें एवं ग्रंथ हैं, जिनकी जानकारी समाज के लोगों को बहुत कम है।

मैं समझता हूँ, यदि यह सम्पूर्ण सामग्री प्रकाश में आ जाय तो अग्रवाल वैश्य इतिहास में अनेक नये पृष्ठ जुड़ेंगे और अपने इतिहास को न जानने के कारण समाज के बंधुओं में जो हीनभावना है, वह दूर होकर समाज पूरी आन-बान-शान से अपनी यशोपताका पूरे विश्व में फहरा सकेगा। यह संग्रह एक प्रकार से अग्रवाल/वैश्य साहित्य का विश्वकोष है और इसे देखने के बाद ही इसकी महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है।

जब मैंने इस संग्रह को देखा तो अनुभव किया कि यह सम्पूर्ण सामग्री प्रकाश में आनी चाहिये। मैंने डॉ. गुप्त जी से अग्रोहाधाम पत्रिका के मानद सम्पादन का कार्यभार संभालने और उसके माध्यम से अग्र साहित्य की इस विलुप्त सामग्री को प्रकाश में लाने का अनुरोध किया। प्रसन्नता की बात है कि डॉ. गुप्त ने इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए वर्षों तक इस पत्रिका का सम्पादन कर अग्रवाल। वैश्य समाज को उसके महान अतीत एवं वर्तमान से अवगत कराया और अपनी लेखनी द्वारा पूरे अग्रवाल। वैश्य समाज में एक नई चेतना एवं गौरवानुभूति की भावना भर दी। परिणाम स्वरूप आज पूरे समाज में जागृति का स्वर है।

अग्रोहाधाम के निर्माण तथा विकास के फलस्वरूप समाज-बंधुओं में महाराजा अग्रसेन तथा अग्रोहा के विषय में जानने की इच्छा जागृत हुई। लोगों की प्रबल माँग को देखते हुए ट्रस्ट ने एक ऐसी पुस्तक के प्रकाशन का निश्चय किया, जिससे समाज के बंधुओं को अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल के साथ-साथ समाज की उपलब्धियों एवं राष्ट्र-निर्माण में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का परिचय भी मिल सके।

मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता का अनुभव होता है कि डॉ. गुप्त ने 'अग्रोहा-एक ऐतिहासिक धरोहर' पुस्तक का लेखन कर इस दिशा में एक उपयोगी कार्य किया है। अग्रवाल इतिहास के अनेक पक्ष हैं और प्रायः सभी पक्षों की जानकारी का समावेश इस पुस्तक में करते हुए डॉ. साहब ने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है। अल्प समय में ही इस पुस्तक के दो संस्करणों का समाप्त हो जाना इसकी लोकप्रियता का द्योतक है।

विशेष उल्लेखनीय है कि डॉ. गुप्त ने यह सम्पूर्ण कार्य समाजसेवा एवं समर्पण की भावना से निस्वार्थ रूप से किया है। आपकी यह निष्ठा भावना पूरे समाज के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है।

मुझे विश्वास है कि पुस्तक का यह तीसरा संस्करण पाठकों को और भी उपयोगी प्रतीत होगा तथा यह कृति समाज-बंधुओं को महाराज अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल की शानदार विरासत से परिचित कराते हुए मानवमात्र को पूज्य महाराज अग्रसेन जी के समानता, भाईचारे, सहयोग, सहिष्णुता, अहिंसा प्रेम जैसे मूल्यों पर चलते हुए सुंदर-सुखी समाज का निर्माण करने, अग्रबंधुओं को अपनी पितृभूमि से जुड़ने, भावात्मक तादात्म्य स्थापित करने और एक महान अग्रोहा का निर्माण करने की प्रेरणा देने में समर्थ होगी।

मैं इस महत्त्वपूर्ण प्रयास के लिए डॉ. गुप्त की सराहना तथा उनकी इस कृति की सफलता की कामना करता हूँ।

26 जनवरी 1998

—नंदकिशोर गोईन्का
अध्यक्ष, अग्रोहा विकास ट्रस्ट

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या

प्रथम खण्ड-अग्रोहा

1. अग्रोहा-एक पृष्ठभूमि 11
2. स्थिति और स्वरूप 12
3. अग्रोहा राज्य की सीमा और प्रमुख नगर 13
4. अग्रोहा की ऐतिहासिकता 13
5. अग्रोहा नगर का वर्णन 18
6. अग्रोहा और लक्खी तालाब 20
7. सेठ हरभजशाह 21
8. शीलामाता 22
9. अग्रोहा की रीत-एक मुद्रा, एक ईंट 25
10. अग्रोहा के पतन सम्बन्धी गाथायें 26-29
    (i) बाबा धुंगनाथ और उनकी भविष्यवाणी
    (ii) सिकंदर का आक्रमण और अग्रोहा का विनाश
    (iii) अग्रोहा का विध्वंस और समरजीत
11. अग्रोहा से निष्क्रमण 29
12. अग्रोहा के थेह एवं उनके पुरातात्विक अवशेष 30
13. अग्रोहा निर्माण सम्बन्धी प्रयत्न एवं वर्तमान अग्रोहा 35
14. महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा 39
15. अग्रोहा में मेले और कुम्भ 39
16. अग्रोहा-पांचवां धाम 40

द्वितीय खण्ड-अग्रोहाधिप महाराजा अग्रसेन

18. अग्रोहा और अग्रसेन 41-43
    (i) जन्म
    (ii) विवाह
19. महाराजा अग्रसेन का काल 43-47
    (i) राज्यभार
    (ii) अग्रोहा राज्य स्थापना की कथा

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या

20. महाराजा अग्रसेन द्वारा 18 यज्ञों का आयोजन 47
21. महाराजा अग्रसेन के पूर्वज और उनकी वंशावली 48
22. महाराजा अग्रसेन के पुत्र-पुत्रियां और वंश 52
23. महाराजा अग्रसेन और लक्ष्मी पूजा 52
24. महाराजा अग्रसेन-वैश्य या क्षत्रिय 54
25. महाराजा अग्रसेन की राज्य व्यवस्था और आदर्श 57
26. महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल जाति 61
27. महाराजा अग्रसेन और उनकी जयन्ती 61

तृतीय खण्ड-अग्रोहा और अग्रवाल

29. अग्रोहा और अग्रवाल-पारस्परिक सम्बन्ध 62
30. अग्रवालों की पृष्ठभूमि एवं इतिहास 62
31. प्राचीन वैश्य वंश- 64-74
    मौर्य साम्राज्य, गुप्त वंश, वर्द्धन वंश, वल्लभी वंश,
    काकाटक वंश, नागवंश, भारशिव वंश, मध्यकाल एवं अंग्रेजी काल
32. अग्रवाल शब्द की व्युत्पति तथा नामकरण 74
33. अग्रवाल शब्द की प्राचीनता 75
34. अग्रवालों के लिए प्रयुक्त विविध उपनाम एवं उनका अभिप्राय 77
    वैश्य, वणिक-बनिया, गुप्त या गुप्ता, महाजन, शाह, सेठ-श्रेष्ठि, मारवाड़ी
35. अग्रवाल जाति और नागवंश 81
36. अग्रवाल जाति के गोत्र एवं उनकी वैज्ञानिकता 83-84
    (i) प्रमुख गोत्र एवं प्रचलित शुद्ध रूप
    (ii) साढ़े सत्रह गोत्र एवं महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के
    मध्य वैवाहिक सम्बन्धों सम्बन्धी धारणा
37. प्रमुख गोत्राधिपति एवं प्रवर आदि 85
38. अग्रवालों के अल्ल, बंक और उपनाम 87-96
39. अग्रवाल समाज के विभिन्न घटक- 97-105
    (i) अग्रवालों के प्रमुख भेद
    (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का वर्गीकरण
    (iii) धर्म पन्थ आदि के आधार पर
    (v) अन्य अग्रवाल
40. अग्रवाल समाज की विशिष्टताएं 105

चतुर्थ खण्ड
अग्रवाल समाज की राष्ट्र सेवाएं

41. अग्रवाल समाज का राष्ट्र निर्माण में योगदान 112
(अ) स्वतंत्रता संग्राम एवं अग्र समाज
(ब) स्वतन्त्र भारत और अग्रवाल समाज
42. राजनीतिक योगदान 123
43. आर्थिक एवं औद्योगिक क्षेत्र 134
44. सामाजिक क्षेत्र 142
45. भारतीय सभ्यता, संस्कृति और धर्म 153
46. शिक्षा, प्रचार-प्रसार एवं अन्य लोकोपकारी कार्य 161
47. संस्थापित ट्रस्ट तथा एवं उनके लोकोपकारी कार्य 164
48. साहित्य लेखन एवं प्रकाशन के क्षेत्र में 171
49. राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार-प्रसार में योगदान 176
50. पत्रकारिता 178
51. प्रवर्तित विभिन्न साहित्यिक पुरस्कार 181
52. विज्ञान एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में 185
53. क्रीड़ा एवं खेल जगत 190
54. न्याय एवं विधि क्षेत्र 192
55. कला, पुरातत्व, संगीत एवं नृत्य 193
56. मुद्रा 195
57. जादू कला 195
58. सैन्य, वीरता, साहस एवं बलिदान 196
59. अन्य क्षेत्रों में योगदान 203
59. डाक टिकट प्रकाशित विभूतियां 204
60. प्रमुख अग्रवाल साहित्य 205
61. उच्च राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त अग्रवाल/वैश्य 206
62. कुलाधिपति, कुलपति 207
63. अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित साहित्य 208

वर्तमान अग्रोहा और मानचित्र में उसकी स्थिति

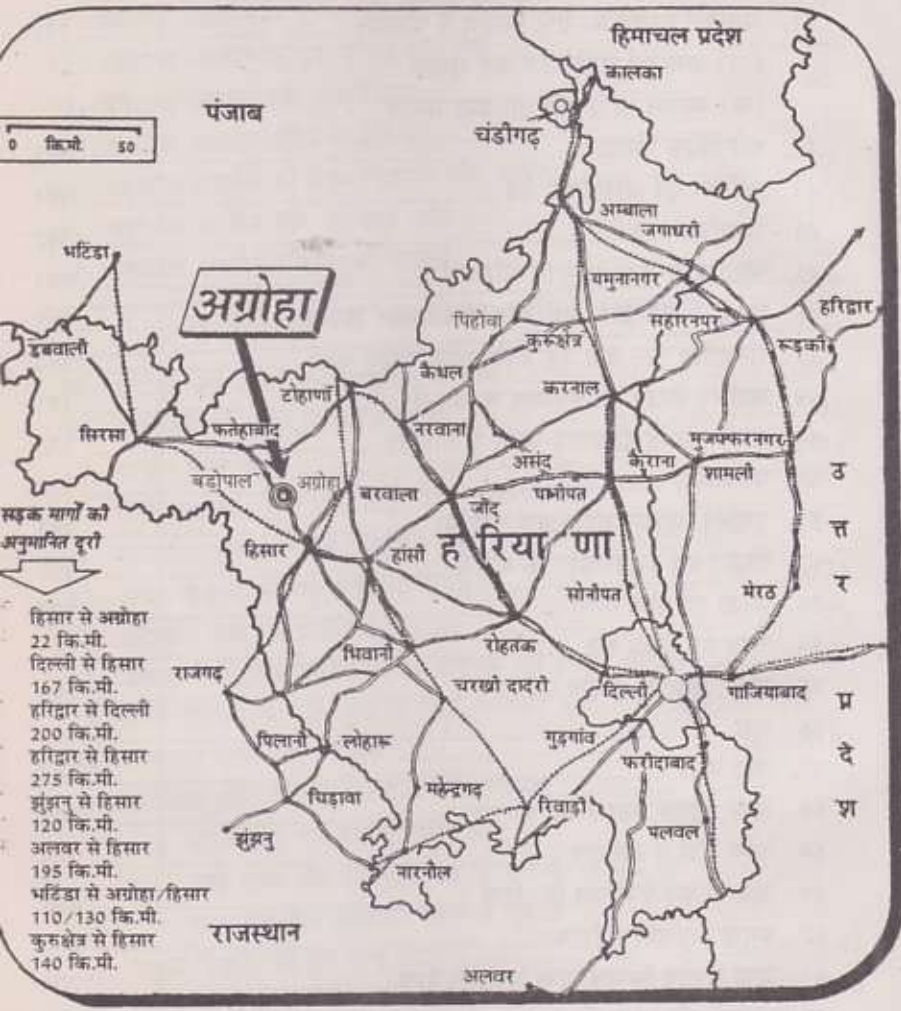

महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–10
(दिल्ली से फाजिल्का)

प्रथम खण्ड

अग्रोहा

अग्रोहा-एक पृष्ठभूमि

दे 'स्सों में देस हरियाणा, जित दूध दही का खाणा' कहकर लोकगाथाओं में हरियाणा का गौरवगान किया गया है। वैसे तो भारत के राजनीतिक पट पर हरियाणा का उद्‌भव नवम्बर 1966 में हुआ किन्तु यहां का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवपूर्ण है तथा यहाँ का प्रत्येक नगर अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि लिए है।

यह वही भूमि है, जहाँ विश्व का सबसे बड़ा महाभारत का युद्ध लड़ा गया और जहाँ की धरती भगवान कृष्ण के गीता-संदेश से निनादित हुई। नारद पुराण ने इसे हरिश क्षेत्र की संज्ञा देते हुए इसे मोक्षप्रदाता बताया है। सतयुग में यह भूमि 'स्यमन्तपंचक' तथा द्वापर में धर्मक्षेत्र में नाम से ख्यात रही है। इस भूमि पर अनेक सरोवर हैं और सभी सरोवर तीर्थस्थान की महिमा लिये हैं। कुरुक्षेत्र जैसे महात्म्य वाले महातीर्थ की यह भूमि 360 तीर्थों का वास-स्थान बताई जाती है। कहा जाता है कि इन्हीं सरोवरों के पावन तटों पर आसीन हो ऋषि-मुनियों ने आरण्यक ग्रन्थों एवं वैदिक ऋचाओं की रचना की। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति यहीं के सन्निहित सरोवर से हुई।

यहीं पावन सरस्वती और दृषद्वती नदियां बहती थीं। 18 पुराणों और महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास का आश्रम सभ्याप्रास सरस्वती नदी (हरियाणा) के पवित्र तट पर ही था। इन्हीं पावन नदियों के तटों पर महान वैदिक यज्ञों का आयोजन और आर्य संस्कृति का डिडिम्बघोष हुआ। मानव मात्र के लिए नीति दिशानिर्देशक प्रधान ग्रंथ मनुस्मृति का प्रणयन यहीं हुआ और कपिल, वशिष्ट, पुलस्त्य आदि अनेक मुनियों ने अपनी पवित्र चरणरज से इसे पावन किया।

कहा जाता है कि मार्केण्डेय मुनि ने थानेसर (कुरूक्षेत्र) में ही तपस्या की थी और यहीं के बेरी (रोहतक) ग्राम में दुर्वासा ऋषि का आश्रम था। महाभारत में उल्लेख है कि धर्मक्षेत्र (हरियाणा) में अनेक ऋषि अपने आश्रम बना कर धर्म, नीति और व्यवहार की शिक्षा अपने शिष्यों को दिया करते थे।

यहाँ के प्रत्येक नगर-हिसार, हाँसी, पिहोवा, जींद, पानीपत, सफीदों-सबका अपना-अपना इतिहास है। इसी प्रदेश में कर्ण द्वारा स्थापित करनाल और गुरु द्रोणाचार्य की भूमि गौड़ग्राम (गुड़गाँव) हैं। यहीं पानीपत का वह युद्धक्षेत्र हैं, जहाँ मुगलों के साथ लड़ाईयाँ लड़ी गई।

इस भूमि ने न जाने कितने साम्राज्यों के उत्थान, पतन, वैभव और पराभव को देखा। इसी भूमि पर वर्द्धनवंश के यशस्वी राजाओं ने शासन किया और यहीं हर्षवर्द्धन जैसा महान पराक्रमी और दानवीर शासक हुआ, जो हर चौथे वर्ष कुम्भ के अवसर पर अपना सर्वस्व, यहाँ तक कि शरीर पर पहनने के वस्त्र भी दान कर देता था। महान वीर विक्रमादित्य हेमूशाह की स्थली रिवाड़ी भी यहीं थी, जिन्होंने शत्रु-सेना को नाकों चने चबवा इतिहास में अपना नाम अमर किया। यहीं वीर रस के कवि सेनापति की वाणी का उद्घोष और बाबू बालमुकुन्द गुप्त के 'शिवशम्भु के चिट्ठे' लिखे गये, जिनसे ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिल उठी थी।

अध्यात्म, वीरता, पुरातत्व, इतिहास, शक्ति, शौर्य की यहाँ से सहस्त्रों धाराएं फूटीं, जिनके कारण इस धरा का नाम युगयुगों तक स्मरण किया जाता रहेगा।

अग्रोहा इसी महान भूमि का एक शक्तिशाली जनपद था, जहां महाराजा अग्रसेन का समानता, भाई चारे और पारस्परिक सहयोग का संदेश गूंजा और एक ईंट, एक रुपया जैसे महान समाजवादी सिद्धान्त का उद्घोष हुआ, जिसके विषय में कहा जा सकता है कि इस प्रकार का अभूतपूर्व सिद्धान्त न तो विश्व में अन्यत्र कहीं पनपा और आने वाला युग भी इस प्रकार के संदेश को देने में सक्षम हो सकेगा, कल्पना करना ही कठिन लगता है। यहीं, वह अग्रोहा राज्य था, जहाँ से महान अग्रवाल जाति का उद्भव हुआ, जिसके उद्योग-व्यवसाय में वर्चस्व, दानशीलता एवं परोपकार की यशोगाथाएं विश्व के कोने-कोने में व्याप्त हैं और भारतीय राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का सेहरा जिसके मस्तक पर सुशोभित है।

वास्तव में अग्रोहा का इतना अधिक महत्व, गौरव और देन है कि हरियाणा केवल इसी के बल पर अपनी यश-पताका पूरे विश्व में फैला सकता है। इस नगरी का इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण है और इसका कण-कण शौर्य, वीरता, त्याग जैसे आदर्शों से महिमान्वित है।

आइये! हम अग्रोहा की इस महान भूमि और उसके इतिहास के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

स्थिति और स्वरूप

यह स्थान दिल्ली से 190 तथा हिसार से 22 किलोमीटर दूर हरियाणा में महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 10 (हिसार-सिरसा बस मार्ग) के किनारे एक खेड़े के रूप में स्थित है। कभी महाराजा अग्रसेन जैसे राजा की राजधानी रहा, यह नगर आज एक साधारण से ग्राम के रूप में स्थित है, जहाँ चार-पाँच सौ घरों की आबादी है। इसके समीप ही प्राचीन राजधानी अग्रोहा के अवशेष थेह के रूप में सैंकड़ों एकड़ भूमि में फैले हैं, जो इस महान जाति और नगर के गौरवपूर्ण इतिहास को प्रकट करके के लिए आतुर हैं।

अग्रोहा किसी समय महाराजा अग्रसेन के राज्य की राजधानी थी। यहाँ के खंडहरों से पता चलता है कि कभी यह अपने समय का शक्तिशाली और वैभवपूर्ण नगर था। राजधानी होने के कारण, समस्त राज्य की शक्ति और शोभा यहाँ समाहित थी। यहाँ लगभग एक लाख परिवार बसते थे। इस नगर की रीत थी कि जो भी नया परिवार वहाँ

आकर बसता, उसे अग्रोहा के नागरिक एक रूपया और एक ईंट भेंट करते। इससे नव आंगतुक व्यक्ति को अपना व्यवसाय चलाने के लिए एक लाख रुपये तथा भवन निर्माण हेतु एक लाख ईंटे प्राप्त हो जातीं, जिससे वहाँ न कोई गरीब था और न ही कोई अभावग्रस्त। सब सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। उनमें जातीय गौरव के साथ धर्म और सहयोग की भावना भी थी। इस प्रकार सुख-दुःख में भागीदारी व सहकारिता का अनुपम आदर्श बना हुआ था-अग्रोहा।

अग्रोहा राज्य की सीमा और प्रमुख नगर

भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र ने अग्रवालों की उत्पत्ति नामक अपनी पुस्तक में महाराजा अग्रसेन के राज्य की सीमा इस प्रकार लिखी है-

''उत्तर में हिमालय पर्वत और पंजाब की नदियां, दक्षिण और पूर्व में गंगा, पश्चिम में यमुना से लेकर मारवाड़ तक का प्रदेश। राजधानी का नाम अग्रनगर (अग्रोहा) था। राज्य में दूसरा बड़ा नगर आगरा था, जिसका शुद्ध नाम अग्रपुर है। यह नगर महाराजा अग्रसेन के राज्य के पूर्व दक्षिण प्रदेश की राजधानी था। दिल्ली का शुद्ध नाम इन्द्रप्रस्थ है। गुड़गाँव जिसका शुद्ध नाम ''गौड़'' ग्राम है, यह नगर अग्रवालों के पुरोहित गौड़ ब्राह्मणों को मिला था। इसी लिए प्रायः अग्रवाल लोग यहां की माता को पूजते हैं, महाराष्ट्र (मेरठ), रोहिताश्व (रोहतक), हाँसी, हिसार, (जिसका शुद्ध नाम हिंसारि देश है) पुण्यपतन, (पानीपत) करनाल, नगरकोट (कोटकांगड़ा), लवकोट (लाहौर), मण्डी, विलासपुर, गढवाल, जींद, सपीदम, नाभा, नारिनवल (नारनौल) आदि नगर इस राज्य में थे।

अग्रोहा की ऐतिहासिकता

डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकर का मत है कि भारत में अनेक जातियों का उद्भव प्राचीन गणराज्यों के जनपदों से हुआ है। उसी के अनुरूप माना जाता है कि अग्रवाल जाति का उद्गम आग्रेय नामक जनपद से हुआ और यहीं से अग्रवाल भारत के विभिन्न भागों में फैले। जैसा कि अनेक प्राचीन राजधानियों और जनपदों के साथ हुआ, कालचक्र के प्रवाह में उनका अस्तित्व समाप्त हो गया और आज केवल खंडहर मात्र शेष हैं। उत्तरी कौशल जनपद की राजधानी श्रावस्ती अब सहेत-महेत नाम के छोटे से गाँव के रूप में रह गई है। तक्षशिला और पंचनद की अनेक राजधानियों के भी आज अवशेष मात्र दिखाई देते हैं। यही हाल अग्रोहा गणराज्य का भी हुआ। 650 एकड़ में फैले खंडहरों के अवशेष इसकी गौरवमयी गाथा को आज भी कहते हैं। सौभाग्य से इसके अस्तित्व के ऐतिहासिक प्रमाण भी उपलब्ध हो गए हैं, जिनसे यह प्रमाणित होता है कि किसी समय यही अग्रोदक अथवा आग्रेयगण की राजधानी थी।

अग्रोहा के अग्रवालों की आदि जन्मभूमि होने की किवदन्ती भाटों की पुरानी बहियों एवं लोकप्रिय अनुश्रुतियों में प्राचीन काल से ही चली आ रही थी। सौभाग्य से 1888-89 में जब सी.टी. राजर्स तथा 1938-39 में श्री एच.एल. श्रीवास्तव के नेतृत्व में यहाँ खुदाई कराई गई तो अन्य वस्तुओं-मनके, मूर्तियों, बर्तनों आदि के अतिरिक्त वहाँ पर्याप्त मात्रा में

सैंकड़ों की संख्या में ऐसे सिक्के भी मिले, जिन पर अंकित था-'अग्रोदके अगाच्च जनपदस'

इन तीन शब्दों ने अग्रवाल जाति के इतिहास को नया मोड़ दिया। डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल एवं अनेक इतिहासकारों ने स्वीकार किया कि आजकल जिसे अग्रोहा कहा जाता है, उसी का प्राचीन नाम प्राकृत भाषा में अग्रोदक है। जैसे संस्कृत प्रथूदक नाम से कुरुक्षेत्र का नगर पिहोवा बना, उसी प्रकार अग्रोदक से अग्रोहा बन गया है। अग्रोहा से प्राप्त इन सिक्कों की लिपि के आधार पर इनका काल दूसरी सदी ईस्वी पूर्व स्वीकार किया गया।

यह दृष्टव्य है कि प्राचीन काल में अधिकांश राजधानियां किसी नदी या जलस्रोत के निकट ही स्थित थीं। डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार "अग्रोदक" शब्द का यदि संधिविग्रह किया जाए तो अग्र+उदक होगा। उदक का अर्थ जल या तालाब होना चाहिए। प्राचीन काल में जबकि मरूस्थली इलाकों में जल का अत्यधिक महत्व था, तालाबों अथवा जलाशयों का नाम विशिष्ट पुरुषों अथवा नगरों से संबंधित करना सामान्य प्रक्रिया थी। इसी आधार पर हो सकता है कि "अग्र" नाम विशिष्ट व्यक्ति या राजा से सम्बद्ध होने के कारण उस तालाब का नाम "अग्रोदक" पड़ गया हो अथवा यह किसी "अग्र" नामक गणराज्य या नगर से सम्बद्ध रहा हो।

जो भी हो, अग्रोहा का अस्तित्व पुराना है और उसका सम्बन्ध अग्रवालों से रहा, यह निर्विवाद है। इसकी प्राचीनता के सम्बन्ध में उल्लेख ग्रंथों में भी मिलते हैं। डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकर की मान्यता है कि इसका अस्तित्व महाभारत काल में था। इस सम्बन्ध में उन्होंने महाभारत के निम्न श्लोक को उद्धृत किया है-

भद्रान रोहितकांश्चैव आग्रेयान् मालवानपि।
गणान् सर्वान् विनिर्जित्य नीतिकृत् प्रहसन्निव॥

महाभारत, वनपर्व 255:20

इस श्लोक में जिस आग्रेयगण का उल्लेख किया गया है, वह निश्चित रूप से अग्रोहा ही था। उपर्युक्त श्लोक में भद्र, रोहितक, आग्रेय, मालव आदि गणों का निश्चित क्रम में उल्लेख है, आज भी उनकी भौगोलिक स्थिति उसी रूप में पाये जाने से उनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है। रोहितक, मालव, भद्र आदि सुप्रसिद्ध गणराज्य रहे हैं और उनका इतिहास में भी उल्लेख मिलता है। रोहतक, हरियाणा में अग्रोहा से कुछ दूर दक्षिण पूर्व में और भद्र अर्थात् वर्तमान भादरा, अग्रोहा के पश्चिम में विद्यमान है। फिरोजपुर, लुधियाना, पटियाला, नाभा आदि रियासतों का कुछ भाग मालव प्रदेश के नाम से प्रख्यात रहा है। अत: आग्रेयगण की प्रामाणिकता और उसकी भौगोलिक स्थिति को देखते हुए उसका वर्तमान अग्रोहा होना स्वयं सिद्ध है।

सुविख्यात पुरातत्ववेता डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त एवं राधाकमल मुखर्जी ने भी इस श्लोक की प्रामाणिकता और आग्रेयगण के अस्तित्व को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया है। काठक संहिता, आपस्तंव श्रोत-सूत्र तथा पाणिनी की अष्टाध्यायी में भी आग्रायण, आग्रेयगण आदि का उल्लेख आया है, जो इस तथ्य की पुष्टि करता है।

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है कि ''अग्रोदक'' से ही अग्रोहा शब्द बना है। यह अग्रोहा या अग्रोदक एक जनपद की राजधानी था और उस जनपद का नाम ''अग्र'' था। अत: अग्रवाल जाति में अपने उद्‌गम के बारे में जो किंवदन्ती प्रचलित है, उसका आधार शुद्ध ऐतिहासिक है।

श्री वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक ''पाणिनीकालीन भारतवर्ष'' में पाणिनी के काल का गंभीर अध्ययन प्रस्तुत किया है। पाणिनी के सूत्र 8/4/4/ में 6 वनों का उल्लेख किया है-

''वनं पुरगामिश्रका सिधका सारिका कोटसग्रेभ्य: पुरगावण, मिश्रकावण, सिधकावण, सारिकावण, कोटरावण और अग्रेवण।

''अग्रेवण निश्चित रूप से अग्रजनपद, जिसकी राजधानी अग्रोदक (अग्रोहा) थी, में स्थित वन का नाम था। (पृ. 42)

पाणिनी का काल 500 ईस्वी पूर्व माना जाता है। इससे स्पष्ट है कि ईस्वी पूर्व 500 से पहले भी अग्रजनपद की स्थिति थी।

वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत ऐसा ग्रंथ है, जिसे आधुनिक युग में भी प्रामाणिक माना जाता है। वेदव्यास जी ने 18 पुराणों की रचना की, महाभारत में 18 पर्व हैं, महाभारत-युद्ध में 18 अक्षोहिणी सेना ने भाग लिया। युद्ध भी 18 दिन चला, युद्धभूमि में श्रीकृष्ण द्वारा कही गई गीता में भी 18 अध्याय हैं। अग्रवालों के भी 18 गोत्र हैं।

श्री कालीचरण केशान की मान्यता है कि महाभारत में अग्रजनपद का उल्लेख और 18 संख्या का साम्य निश्चित रूप से इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि महाभारत काल में अग्रजनपद (अग्रोहा) का अस्तित्व था और उसकी स्वतंत्र पहचान थी।

अग्रोहा सम्बन्धी उल्लेख यूनानियों के उन विवरणों में भी मिलता है, जिन्होंने सिकन्दर का प्रामाणिक इतिहास लिखा है। इन विवरणों में उल्लेख है कि सिकन्दर ने ''अग्लसोई'' नामक नगर पर आक्रमण किया था। डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकर ने इस अग्लसोई को अग्रोहा या आग्रेयगण ही माना है। उनका कथन है कि आग्रेयगण पर सबसे पहले आक्रमण सिकन्दर द्वारा ही हुआ था। उनके अनुसार अग्गलस्सि निवासियों का नाम था और अगलस उस स्थान का, जहाँ के ये लोग निवासी थे। डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त का मत भी यहीं है कि सिकन्दर अग्रोहा तक आया था और उसका विजित प्रदेश यही था। कर्टियस के अनुसार अग्लसोई जाति ने सिकन्दर का दृढ़तापूर्वक सामना किया और उसके पास 40,000 पैदल सिपाही और 3,000 घुड़सवारों की सेना थी। युद्ध के कारण इस नगर को भीषण क्षति उठानी पड़ी। अग्रोहा नगर पर विदेशी आक्रमणकारियों का अधिकार हो गया। एरियन के अनुसार इस नगर के 20,000 निवासियों ने अपनी रक्षा का अन्य उपाय न देखकर नगर में आग लगा दी और उसी में अपने स्त्री, बच्चों के साथ कूद कर जल मरे, किन्तु नगर का दुर्ग सुरक्षित बचा लिया गया। डायडोरस का इससे थोड़ा भिन्न मत है। उसके अनुसार इस नगर पर आक्रमण करने के बाद सिकंदर ने ही उसे जला दिया था। यह स्वाभाविक लगता है कि किसी भूभाग के निवासी, विरोधी सत्ता स्वीकार न करें तो वे आक्रोश स्वरूप उस नगर या गांव को उजाड़ अथवा जला दें। भाटों

के गीतों में भी सिकन्दर द्वारा अग्रोहा पर आक्रमण तथा अग्रोहावासियों द्वारा वीरतापूर्वक उसका मुकाबला करने का उल्लेख मिलता है।

डॉ० गंगाराम गर्ग के अनुसार मैकिजल की एक प्रसिद्ध पुस्तक में सिकन्दर महान के भारत पर किये जाने वाले उक्त आक्रमण का वर्णन है।

इस विवरण के अनुसार जब सिकन्दर की सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया तो उसने वापसी के लिए दक्षिण पंजाब एवं सिंध के मार्ग से लौटने का निश्चय किया और उस कार्य को सम्पन्न कराने के लिए उसने 2000 नावों का बेड़ा बनवाया। उसके पश्चात बिना किसी बाधा के सिकंदर, 1326 ई० पूर्व में वितस्ता (झेलम) नदी के किनारे आ पहुँचा और वहाँ के लोगों को परास्त कर जलमार्ग से अपनी वापसी यात्रा प्रारम्भ की। इस यात्रा में उसका विशाल जहाजी बेड़ा वितस्ता नदी में चल रहा था एवं उसकी स्थल सेना नदी के दोनों तटों पर उसका अनुगमन कर रही थी। इस प्रकार बिना किसी लड़ाई के सिकन्दर वितस्ता एवं असिल्की (चिनाव) नदियों के संगम पर जा पहुँचा। वहाँ के लोगों ने उसका अधिकार मान लिया किन्तु आग्रेयगण के लोगों ने उसका विरोध किया। उन लोगों का निवास स्थान शतद्रु (सतलुज) नदी के पूर्व दक्षिण में स्थित प्रदेश में था। सिकन्दर ने इन लोगों को युद्ध में परास्त किया, किन्तु नगरी पर उनका अधिकार होने से पूर्व ही आग्रेयगण के लोगों ने उसे भस्मसात कर दिया।

जो भी हो यूनानी इतिहासकारों द्वारा वर्णित ''अग्लसोई'' ही वर्तमान अग्रोहा था या नहीं, इस मत पर इतिहासकारों में कुछ मतभेद हो सकता है किन्तु ईस्वी पूर्व तीसरी सदी के लगभग अग्रोहा शासकों की उथल-पुथल का केन्द्र रहा, इसका प्रमाण वहाँ से प्राप्त यूनानी सिक्के, अमिंटस, ऐंटिअलकाइड, अफोलोडोट्स, इण्डोग्रीक आदि से भी होता है।

1938 में श्री एच.एल. श्रीवास्तव ने अग्रोहा के अवशेषों की खुदाई पुनः करवाई। पुरातात्विक रिपोर्टों ने इस तथ्य की पुष्टि की, 200 ई० पू० अग्रोहा एक विशाल समृद्ध नगर था और उसके बाद ही उसे जलाये या उजाड़े जाने जैसी कोई घटना हुई।

किसी भी राज्य या राष्ट्र की समृद्धि या सम्पन्नता कभी-कभी उसके अभिशाप का कारण भी बन जाती है। यही हाल अग्रोहा का हुआ। वहां एक सशक्त गणराज्य था। उसका वैभव बढ़ा-चढ़ा था। उसकी यही सम्पन्नता विदेशी आक्रमणकारियों के आकर्षण का बिन्दु बन गई। परिणामस्वरूप अग्रोहा को निरन्तर एक के बाद एक आक्रमणों और उथल-पुथल का सामना करना पड़ा। यह उसकी प्रबल जीवन्तता का ही परिणाम था कि वह इन वारों को झेलते हुए भी अपना अस्तित्व बनाये रख सका।

ई० पू० 200सदी के बाद के अग्रोहा का इतिहास उसके इसी उजड़ने-बसने की कहानी है। इस पर तोमरों और चौहानों का आक्रमण हुआ, कुषाण और भारशिव नागवंश ने इस पर अपना अधिकार बनाये रखने की चेष्टा की, उज्जैन के राजा समरजीत की कुचालों का यह शिकार हुआ, किन्तु 12वीं सदी के अंत में मौहम्मद गौरी और गजनबी के आक्रमणों ने तो इसकी कमर तोड़ दी। अग्रोहा पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया। यद्यपि इसका प्रमाणबद्ध उल्लेख नहीं मिलता, फिर भी गौरी की लूटपाट के क्षेत्रों में यह

हिस्सा भी आता है। हो सकता है, यह नगर उस समय अपनी प्रसिद्धि खो चुका हो, जिसके कारण इतिहासकारों ने इसका स्पष्ट उल्लेख न किया हो।

फिर भी जो ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं, उससे स्पष्ट है कि अग्रोहा ने जैसे किसी भी परिस्थिति में पराजित होना न सीखा था। उसमें परिस्थिति का सामना करने दुर्दम्य शक्ति और लालसा थी। कभी हरभजशाह जैसे दानी की उदारता से, तो कभी दीवान नन्नूमल जैसे मातृभूमि-प्रेमी द्वारा अग्रोहा-निर्माण का प्रयत्न चलता रहा और अग्रोहा अपने गौरव की यशोपताका फहराता रहा। बर्बर गजनियों और मोहम्मद गौरियों के तगड़े प्रहारों तथा विध्वंस के बाद पुनर्निर्माण का यह कार्य सहज नहीं था। फिर भी अग्रोहा निवासियों में कुछ ऐसी संजीवनी शक्ति विद्यमान थी, जिससे वह पुन: पुन: जीवित हो उठता था।

ऐसा लगता है कि गौरी के आक्रमणों के बाद भी अग्रोहा ने कई बार अंगड़ाई ली थी। इतिहासकार जियाऊद्दीन बरनी के उल्लेख से पता चलता है कि फिरोजशाह तुगलक के काल में अग्रोहा का अस्तित्व विद्यमान था। यही नहीं इब्नबतूता के उल्लेखों से पता चलता है कि हिसार-ए-फिरोजा के निर्माण में उसने अग्रोहा के अवशेषों की सामग्री का उपयोग किया था। हिसार से अग्रोहा 22 किलोमीटर की दूरी पर था, अत: फिरोजखां तुगलक ने इसके मलबे को काम में लिया हो तो आश्चर्य की बात नहीं। इस प्रकार वहाँ के ध्वंसावशेष भी क्रमश: समाप्त होते गए।

कालान्तर में पटियाला राजा के यशस्वी दीवान नन्नूमल अग्रवाल (1765-1781) ने अग्रोहा को पुन: बसाने और उसका पुनर्निर्माण करने का एक और प्रयत्न किया। वे बड़े ही कुशल प्रशासक एवं सैन्य संचालक थे। उन्होंने अपने सैन्य बल से दिल्ली के मुगल सम्राट के अधीनस्थ फतेहाबाद, सिरसा, हांसी और हिसार जैसे महत्त्वपूर्ण नगरों को पटियाला राज्य में सम्मिलित कर लिया। जब हिसार उनके आधिपत्य में आ गया तो उन्होंने अग्रोहा में एक किले का निर्माण कराया, जिसके अवशेष आज भी देखने को मिलते हैं और उसे दीवान नन्नूमल का किला कहते हैं।

18 वीं शताब्दी के अंत में सुप्रसिद्ध लेखक रेनेल ने अपने समय के भारत का एक नक्शा दिया है, जिसमें अग्रोहा का नाम भी है। इससे पता चलता है कि अग्रोहा का 18 वीं शताब्दी में भी अस्तित्व था।

इस प्रकार अग्रोहा के विध्वंस और निर्माण के प्रयत्न चलते रहे किन्तु लगता है कि मोहम्मद गौरी के आक्रमण से पहले जो इसका विशाल और भव्य रूप था, वह फिर नहीं बन सका। गौरी के आक्रमण के पश्चात् अग्रोहा से निष्क्रमण करने वाले बहुसंख्यक अग्रवाल विभिन्न स्थानों में जाकर बस गए और वहां के स्थायी निवासी हो गए। भाटों के गीतों तथा अनुश्रुतियों से पता चलता है कि अग्रोहा छोड़ने वाले अग्रवालों ने पहले हिसार, हांसी, तोशाम, सिरसा, नारनौल, रोहतक, पानीपत, करनाल, जींद, कैथल, दिल्ली मेरठ, सुनाम, जगाधरी, सहारनपुर, बूड़ियों, कानोड, नांगल आदि में बस्तियाँ बसाई, जो वर्तमान हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली और पूर्वी राजस्थान में थीं।

इनके अतिरिक्त अमृतसर, अलवर, उदयपुर, आमेर, सांभर, कुचामन, मेड़ता, पाली आदि में भी अग्रवालों की बहुलता थी।

अग्रवालों में विभिन्न अल्ल और बंक प्रचलित हैं, उनसे भी इन बस्तियों (स्थानों) का पता चलता है। जैसे अग्रवालों की एक शाखा जो मेहम नामक स्थान पर जाकर बस गई थी, मेहमिया कहलाई। इसी प्रकार केड नामक स्थान पर बसने वाले केडिया और कानोड़ के रहने वाले कानोड़िया कहलाए।

इस सब तथ्यों से स्पष्ट है कि वर्तमान अग्रोहा ही आग्रेय गणराज्य (अग्रोदक) की प्राचीन राजधानी और अग्रवाल जाति के वंशजों का आदि स्थल है। उसी गणराज्य के निवासियों ने शताब्दियों तक विदेशी आक्रमणों से लोहा लिया और प्राण देकर भी अपनी पितृभूमि की रक्षा की। उन महापुरुषों के बलिदान और उनकी पतिव्रता स्त्रियों के जौहर में जलने की किंवदंतिया आज भी प्रचलित हैं।

यद्यपि अग्रोहा में प्राचीन अवशेषों की खुदाई का पूरा कार्य नहीं हुआ है, फिर भी वहाँ जो ध्वंसावशेष, सिक्के, मूर्तियां आदि मिले हैं, उनसे पता चलता है कि वहां किसी समय महान जनपद का अस्तित्व था और उसकी सभ्यता सिंधुघाटी एवं मोहनजोदड़ो सभ्यता से भी कहीं अधिक आगे बढ़ी हुई थी।

अग्रोहा के उत्खनन से प्राप्त इन तथ्यों का उल्लेख हम आगे करेंगे।

अग्रोहा नगर का वर्णन

अनुश्रुतियों के अनुसार कहा जाता है कि अग्रोहा नगर बीस सहस्त्र बीघा क्षेत्रफल भूमि पर बसा था। उसके चारों ओर पक्की चारदीवारी बनी और खाई खुदी हुई थी जो कि उस काल में नगर की सुरक्षा के लिए आवश्यक थी। नगर में प्रवेश के लिए एक विशाल द्वार था। उसके साथ-साथ गुप्तद्वार भी थे, जो शत्रु आक्रमण के समय विशेष रूप से उपयोगी थे।

नगर की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ थी। नगर में अनेक कुंज थे, उनमें आकाश को छूती भव्य अट्टालिकाएं और राजमहल थे। नगर में अनेक सुंदर उद्यान थे जो कि फलदार वृक्षों और रंग-बिरंगे सुरभित पुष्पों से आच्छादित थे। ये उद्यान नगर के सौंदर्य को द्विगुणित करते थे। इस नगर में लगभग साढ़े तीन लाख जनसंख्या निवास करती थी। यह नगर अपने वैभव, सुंदरता और शिल्प-निर्माण की दृष्टि से अद्वितीय एवं अनुपम था। भाटों की विरूदावली में अग्रोहा का यह वर्णन इस प्रकार से है-

बाय बनी चौबीस, पात्र छत्तीस बंधाए, कूप तेरा सौ साठ ता ऊपर फिरत दुहाई।
चार किले चौफेर बने षोडस दरवाजे, हाट छप्पन हजार बाजे छत्तीसों बाजे
सवा लाख घर शहर में बसता ऊपर स्थिर रहे, राजा अग्र बसायो अग्रोहा एता काम त्रेता किया।

महालक्ष्मी व्रतकथा में अग्रोहा नगर की महिमा इन शब्दों में मिलती है

हरिद्वारात् पश्चिमायां विशि क्रोस चतुर्दशे,
गंगा यमुनयोर्मध्ये पुण्य पुण्यांतरे शुभे, चक्रे चाग्रोनगर यत्र शक्रो वंशगतः। 130
द्वादश योजन विस्तीर्णम् आयत .शुभम्, द्वापरस्यांतकालेषु कलावादि गते सति। 131

अकरोद्वंशविस्तारं ज्ञातीन् संवर्धयनन्ततः, कोटिं कोटिं च मुद्रास्तत्र निवेशयत्। 132
प्रसादमाला सुखदा विधिकाश्च चतुष्पथाः, वाटिकाः पुष्पवाटीश्च सरः पंकज शोभितम्। 133
देव मंदिर वापीच गोपुर द्वारशोभिताः, पारावतैः सारसैश्च हंसैः शाटिक मयूरकैः
कल कोकिल गणैस्तव नाना विराजते, प्रसून माला फल पल्लवैः द्रुमाः। 134
पुरी विशाला गजवाजि शोभिता, सुवर्ण रत्नाभरणादि संकुला
प्रभूतयज्ञैः धनधान्यपूरिता, यथेन्द्र देवैर्भूवि चामरावती। 135
नगरे मध्य देशेचे महालक्ष्म्यालयं शुभम्, तन्मध्ये कमलादेवी पूजयेन्नि शिवासरम।136

हरिद्वार से पश्चिम की ओर चौदह कोस की दूरी पर गंगा, यमुना के बीच अत्यंत पुण्य स्थान पर, उस जगह पर जहाँ शक्र को वश में किया था, राजा अग्र ने अग्र नगर की स्थापना की। यह नगर द्वादश योजन विस्तीर्ण व बड़ा शुभ है। उस समय द्वापर का अंत हो चुका था और कलि का आरम्भ हो गया था। वहाँ राजा ने अपने वंश का विस्तार किया और जातियों का सब प्रकार से संवर्धन किया। वहाँ करोड़ों मुद्राएं लगाईं।

बड़े सुखदायक महलों की पंक्तियां बनाई गई, गलियां चतुष्पथ (चौराहे), बाग, फूलों के बगीचे, कमलों से सुशोभित तालाब, देव-मंदिर, बावड़ियां आदि बनवाई गईं। वे गोपुर और द्वार से सुशोभित थीं।

पारावत, सारस, हंस, सारिका, मयूर, कोयल आदि विविध सुंदर पक्षियों के समूह वहां विराजते थे। वृक्ष-फूलों, फलों तथा पत्तों से सुशोभित थे। वह विशाल पुरी हाथी, घोड़ों से शोभित थी, स्वर्ण रत्नआदि से परिपूर्ण थी। वहाँ बहुत यज्ञ होते थे। वह धन-धान्य से भरी हुई, मानों इन्द्रदेव की अमरावती ही पृथ्वी के ऊपर आ गई हो।

डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकर ने उस समय के जनपदों, नगरों का वर्णन करते हुए लिखा है कि प्राचीन भारत में आजकल की तरह बड़े-बड़े राज्य नहीं थे। भारत में ही नहीं, अपितु संसार के अन्य सभी देशों में उस समय छोटे-छोटे राज्य होते थे। प्राचीन ग्रीस में ऐसे राज्यों के लिए नगर राज्य (सिटी स्टेट) शब्द प्रयोग में आता है। भारत के प्राचीन साहित्य में भारत के ऐसे छोटे-छोटे राज्यों के लिए "गण" या संघ शब्द प्रयुक्त होता था। इनका विस्तार-क्षेत्र आजकल के जिले व तहसील के लगभग होता था। बीच में पुर या राजधानी होती थी और चारों ओर जनपद। पुर में सम्पन्न लोगों के घर होते थे। देवताओं के मंदिर बने होते थे और विविध व्यवसायी अपना कार्य करते थे। राज्य का संचालन यहीं से होता था। पुर के चारों तरफ प्रायः ऊंची दीवार रहती थी, जो गहरे पानी से भरी खाई से घिरी रहती थी। जनपद में कृषक रहते थे, जो खेती करके अपना निर्वाह करते थे। इन कृषकों के घर देहात में ही छोटे-छोटे गांवों में होते थे। देवमंदिरों में पूजा करने, पीठों व बाजारों में अपना माल खरीदने व बेचने तथा इसी तरह के अन्य कार्यों के लिए कृषक लोग जनपद से प्रायः पुर में आते जाते रहते थे। राज्य का संचालन प्रायः जनता के हाथ में होता था। पुर के निवासी जनपद सभा में एकत्र होकर राज्य की बातों पर विचार करते थे। इन सभाओं में विविध कुलों व परिवारों के मुखिया सम्मिलित होते थे चाहे राज्य (गणराज्य) का कोई वंशक्रम से चला राजा हो या लोग, राज्य का संचालन प्रायः जनता के हाथ में ही रहता था।

अग्रोहा भी इस प्रकार का एक वैभवपूर्ण जनपद था।

अग्रोहा और लक्खी तालाब

अग्रोहा में लक्खी तालाब का उल्लेख मिलता है। कहते हैं यह तालाब मीलों दूरी में फैला था और उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। आज भी लोक-कथाओं में उसका गौरव गान बड़े सम्मान के साथ किया जाता है। इस तालाब के निर्माण के पीछे एक बड़ी ही रोचक गाथा है, जो इस प्रकार है-

एक बनजारा था। नाम था-लक्खीसिंह। वह आजीविका की खोज में इधर-उधर भटक रहा था। जब वह घूमते-घूमते अग्रोहा पहुंचा तो उसने सेठ हरभजशाह के विषय में सुना। उस समय सेठ हरभजशाह लोक और परलोक की शर्त पर ऋण दे रहा था। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह हरभजशाह से बड़ी राशि कर्ज के रूप में ले सकेगा और उसे कर्ज भी नहीं चुकाना पड़ेगा। भला परलोक को किसने देखा है? यह सेठ भी कितना भोला और मूर्ख है, जो इस तरह की बेतुकी शर्त पर अपना पैसा लुटा रहा है। कौन ऐसा मूर्ख होगा जो इस लोक में पैसा लौटायेगा? बस अब तो मौज ही मौज है। थोड़े ही समय में उसके हाथ में ढेर सारी राशि होगी और वह भी लखपति बन जायेगा।

मन में प्रसन्न होता हुआ वह हरभजशाह की दुकान पर आया और एक लाख रुपये मांगे। मुनीम ने पूछा कि भुगतान लोक में या परलोक में? बनजारे ने अगले लोक में चुकाने की बात कही। मुनीम ने परलोक वाली बही निकाली और लक्खी बनजारे का अंगूठा लगवा कर एक लाख रुपया दे दिया।

लक्खी बनजारा एक लाख रूपया पा खुश होता हुआ चला गया। उसकी खुशियों का कोई ठिकाना न रहा। अब उसका अपना मकान होगा, कारोबार होगा और अब वह किसी का मोहताज नहीं रहेगा। बीवी और बच्चों की इच्छाएं पूरी कर सकेगा, आभूषणों एवं सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित पत्नी होगी, रह-रहकर एक के बाद एक कल्पनाएं उसके दिमाग में आती जा रही थीं और वह सुनहले स्वप्न संजोने में लीन था।

किन्तु कल्पनाओं का यह प्रवाह अधिक समय तक चालू न रह सका। उसने मन में अनुभव किया कि लाखों करोड़ों का व्यापार करने वाला इतना बड़ा महाजन मूर्ख नहीं हो सकता। उसे परलोक में रूपये चुकाने ही पड़ेंगे। पिछले जन्म में उसने जो पाप किये, उसके कारण उसे ये बनजारा दिन देखने पड़ रहे हैं, अगर वह परलोक में सेठ के लाख रूपये नहीं चुका पाया तो उसका क्या हाल होगा? उसे सेठ का बैल बनकर रूपये चुकाने होंगे। तब तो उसकी हालत और भी बुरी होगी? अब सेठ के रूपये रखना उसके लिए कठिन हो गया। उसने तुरन्त उन्हें लौटाने का निश्चय किया।

एक-एक क्षण उसे भारी प्रतीत होने लगा। उसका मन भारी उधेड़-बुन में था। रह-रहकर यह आशंका उसे उद्वेलित किए थी कि यदि सेठ ने यह पैसा जमा करने से इंकार कर दिया तो फिर क्या होगा? उसे तो बैल बनना ही पड़ेगा। इन्हीं संकल्पों-विकल्पों के बीच वह सेठ की गद्दी पर पहुंच गया और उसने रूपये लौटाने की इच्छा प्रकट की। सेठ जी के मुनीम ने बही देखकर कहा कि यह रूपये तो परलोक की शर्त पर लिए गए थे। अतः इस लोक में जमा नहीं हो सकते।

लक्खी बनजारे ने मुनीम जी की खूब मिन्नत की, हाथ जोड़े किन्तु मुनीम जी का वही उत्तर था। बनजारे का हृदय अथाह निराशा के सागर में डूब गया। उसे अपने आप

पर घृणा होने लगी। वह खिन्न हो निर्जन वनों, पहाड़ों में घूमने लगा। जो भी मिलता, उससे ऋणमुक्ति का उपाय पूछता। घूमते-घूमते उसे वन में एक योगिराज मिले। लक्खी बनजारा उनके पैरों पड़ रोने लगा और योगिराज से प्रार्थना की कि वे कृपा करके उसे ऐसा कोई मार्ग सुझाएं, जिससे उसे अगले जन्म में सेठ का बैल न बनना पड़े। योगिराज ने उसकी स्थिति से दयार्द्र हो उपाय सुझाया कि तुम इन रूपयों से अग्रोहा में एक तालाब खुदवाओ और उसमें स्वच्छ जल भरवा दो। उन्होंने उसे उसके आगे की योजना भी समझाई।

प्रसन्नचित लक्खी बनजारे ने योगिराज के बताए अनुसार ही सब कुछ किया। उसने अग्रोहा के समीप ही एक भव्य तालाब का निर्माण करवा उसमें जल भरवा दिया। उसने उसका ऐसा प्रबन्ध किया कि कोई भी उस तालाब से पानी न भर सके। महिलाएं, बच्चे नर-नारी उस तालाब पर पानी भरने आते और बिना पानी भरे निराश लौट जाते। लक्खी सिंह का सबको एक ही जवाब होता-यह सेठ हरभजशाह की निजी तालाब है। इसमें से किसी को भी पानी भरने या पीने की इजाजत नहीं है। शनैः शनैः यह बात सेठ हरभजशाह के कानों में भी पहुंची। उसे यह बुरा लगा कि उसके नाम से पानी भरने से मना किया जाए और उसकी लोकनिंदा हो।

सेठ हरभजशाह ने लक्खीसिंह को बुला सारी बातें पूछीं और उसके आग्रह को देखते हुए उसका रुपया जमा कर तालाब से पहरा हटाने का अनुरोध किया। लक्खी बनजारा बड़ा प्रसन्न हुआ। तालाब का नाम भी लक्खी तालाब पड़ गया।

यह तालाब कई योजन लम्बा और चौड़ा था। कहते हैं कि यह 150 एकड़ में फैला था। उसका जल अत्यंत ही मधुर और शीतल था। उसे पीने और नहाने मात्र से अनेक रोग ठीक हो जाते थे। उसकी लम्बाई चौड़ाई के सम्बन्ध में अनेक किंवदंतिया प्रचलित हैं। कहा जाता है कि एक बार एक ग्वाला कुछ बछड़ियों को पानी पिलाने के लिए तालाब पर लाया। बछड़ियां पानी पीने के लिए तालाब में घुसी ही थीं कि तालाब के दूसरी ओर गाएं आ गई। उन्होंने जब अपनी बछड़ियों को देखा तो स्नेह के वशीभूत हो वे भी पानी में कूद पड़ीं। एक ओर बछड़ियां और दूसरी ओर से गायें पानी में तैरती चली आ रही थीं, पर तालाब का कोई पारावार न था। कहते हैं, बछड़ियां चलते-चलते थक कर डूब गईं। तब नगरवासियों ने मिलकर यह निर्णय किया कि इस तालाब की लम्बाई को कम किया जाना चाहिए। तब तालाब में मिट्टी डलवाई गई। इस प्राचीन तालाब के अवशेष आज भी अग्रोहा में मौजूद हैं।

सेठ हरभजशाह

एक किवदन्ती के अनुसार एक समय किसी श्रीचंद नामक एक बड़े साहूकार व्यापारी ने ग्यारह सौ ऊंट केशर बेचने के लिए भेजी और अपने कारिंदों से कहा कि इन ऊँटों की केशर एक ही व्यापारी के हाथों बेचना। श्रीचंद के कारिंदे अनेक नगरों व कस्बों में घूमे किन्तु ग्यारह सौ ऊँट केशर एक साथ खरीदने वाला व्यापारी उन्हें नहीं मिला। अंत में घूमते हुए वे महम पहुंचे। उस समय वहाँ का करोड़पति व्यापारी सेठ हरभजशाह अपने रहने के लिए एक विशाल हवेली बनवा रहा था। जब हरभजशाह को बताया गया

कि इस प्रकार ग्यारह सौ ऊँट केशर बिकने आए हैं और बेचने वाले एक ही व्यापारी को सारी केशर बेचना चाहते हैं और अभी तक उन्हें कोई ऐसा खरीददार नहीं मिला है तो हरभजशाह ने इसे अपनी आन-बान-शान के खिलाफ समझा। उसने अनुभव किया कि इससे उसके राज्य का सम्मान कम होगा। अत: उसने सारी केशर तगार में डलवाने तथा उसका मूल्य एक ही मुद्रा में चुकाने का आदेश दिया। उसने कहा कि केशर हवेली का रंग करने के काम आ जायेगी।

जब गुमाश्ते केशर को बेच वापिस पहुंचे और श्रीचंद ने विवरण सुना तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वह अब तक अपने को ही सबसे सम्पन्न समझता था किन्तु अब उसे मालूम हुआ कि उसके समाज में सेठ हरभजशाह जैसे अग्रवाल भी बैठे हैं, जो अपनी जाति और राज्य की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए लाखों रुपया खर्च कर सकते हैं। उसके दिल में भी अग्रोहा को लेकर दर्द था। उसने मन में अनुभव किया कि सेठ हरभजशाह जैसे दानी और सम्पन्न व्यक्तियों के होते हुए अग्रोहा वीरान पड़ा रहे, यह उचित नहीं है। उसने उसी समय सेठ हरभजशाह को एक पत्र लिखा। पत्र में लिखा गया था कि जब तक उसकी पितृभूमि वीरान पड़ी है, यह सब धन-वैभव व्यर्थ है। कौन इसे देखेगा? अत: मकान बनाने से पहले अग्रोहा बसाना जरूरी है। अन्यथा सिर ऊँचा कर चलने का कोई अधिकार नहीं।

सेठ हरभजशाह ने उस पत्र को बार-बार पढ़ा। उसकी आत्मा उसे बार-बार धिक्कारने लगी कि जब तक अग्रोहा नहीं बसता, उसका यह धन-वैभव व प्रतिष्ठा बेकार है। अपनी मूंछों और पगड़ी को रखना तभी सार्थक होगा, जब वह अग्रोहा आबाद कर लेगा। उसने अपनी मूंछों को कटा दिया, पगड़ी उतार दी और प्रतिज्ञा की कि जब तक अग्रोहा नहीं बस जायेगा, वह मूंछें नहीं रखेगा, पगड़ी नहीं पहनेगा, नंगे सिर रहेगा। उसने अग्रोहा से थोड़ी दूरी पर दुकान खोली और यह घोषणा की जो भी व्यक्ति अग्रोहा में आबाद होगा, वह लोक या परलोक में भुगतान की शर्त पर मनचाही रकम का माल और राशि उससे उधार ले सकेगा। राजा रिसालू ने उसकी सब तरह की मदद करने का आश्वासन दिया और थोड़ी ही दूरी पर फौज की व्यवस्था कर दी, ताकि हरभजशाह और वहाँ की जनता को कोई परेशान न कर सके। जब अग्रवालों ने उसकी यह प्रतिज्ञा सुनी तो वे वहाँ आकर बसने लगे और अग्रोहा बस गया।

शीला माता

लक्खी तालाब के समीप ही सतियों की मढ़ियां हैं और वहीं थेह के पार लगभग 300 कदम की दूरी पर शीला माता की मढ़ी या मंदिर स्थित है। शीला माता की अग्रवालों में बड़ी मान्यता है और प्रतिवर्ष भाद्रपद अमावस्या को दूर-दूर के अग्रवाल बंधु अपने बच्चों का मुंडन कराने यहां बड़ी संख्या में आते हैं और मेला जुटता है। अब इस मढी के ऊपर मुम्बई के सेठ स्व. तिलकराज अग्रवाल एवं उनके सुपुत्र श्री शीतलकुमार अग्रवाल ने प्रचुर धन-राशि व्यय करके एक भव्य, मनोहारी मंदिर बनवा दिया है। इस मंदिर तक हरियाणा सरकार ने अब सड़क भी बना दी है, जिससे यात्रियों को काफी सुविधा हुई है। शीला देवी के बारे में प्रचलित कथा इस प्रकार है-

शीला कोट्याधीश सेठ हरभजशाह की पुत्री थी। हरभजशाह की कीर्ति और उसकी यशस्वी दान-गाथा उस समय चारों ओर फैली थी। जब शीला युवती हुई तो उसके विवाह की चिंता हरभजशाह को हुई। उसने वर की खोज में दूत इधर-उधर भेजे और सियालकोट के राजा रिसालू के दीवान महताशाह के साथ उसका सम्बन्ध निश्चित कर दिया।

विवाह की तैयारियाँ बड़ी धूमधाम और चाव से हुईं। सियालकोट से अग्रोहा बारात आई। हरभजशाह ने बारात की आगवानी और स्वागत में पलक-पाँवडे बिछा दिए। कोई कसर न छोड़ी। उसने अपार धनराशि पुत्री को स्नेहस्वरूप भेंट की। शीला ने बड़ी ही उमंगों के साथ पतिगृह में प्रवेश किया। वह बहुत ही गुणवती, सदाचारिणी और पतिव्रता थी। धीरे-धीरे उसके अनुपम सौन्दर्य और रूप की गाथा राजा रिसालू के कानों में पड़ी। वह उससे आकर्षित हो विवाह की इच्छा रखने लगा। मेहताशाह के रहते उसकी इच्छा का पूर्ण होना संभव नहीं था। अत: उसने चाल चली और मेहताशाह को उसने रोहतासगढ़ (संभवत: रोहतक) भेज दिया। मेहता का शीला पर पूर्ण विश्वास था, अत: वह उसे वहीं छोड़ रोहतासगढ़ चला गया। उसकी अनुपस्थिति में राजा रिसालू ने शीला को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अनेक चालें चलीं, तरह-तरह के प्रलोभन दिए किन्तु शीला ने उसकी एक न चलने दी। सब तरह से विफल हो, उसने शीला को बदनाम करने के लिए अंतिम चाल चली। उसने किसी तरह से अपने नाम की खुदी अंगूठी उसके शयनागार में छिपाकर रखवा दी।

कुछ समय बाद मेहता जब रोहतासगढ़ से लौटा तो शयनगृह में सोने के लिए गया तो अकस्मात् उसकी दृष्टि उस अंगूठी पर पड़ गई। अंगूठी पर रिसालू का नाम देखते ही वह आग-बबूला हो गया। उसे शीला के चरित्र पर संदेह हो गया। शीला ने अपनी पवित्रता के अनेक प्रमाण दिए। महताशाह से राजा रिसालू की चाल की ओर ध्यान न देने के लिए अनुनय-विनय की किन्तु मेहताशाह का एक बार आशंका से ग्रस्त मन और अधिक गहराता ही गया। राजा रिसालू का षड्यंत्र सफल हुआ। मेहताशाह ने शीला का परित्याग कर दिया। हरभजशाह ने भी घटना की सूचना पा मेहताशाह को मनाने का प्रयत्न किया किन्तु विफल रहा।

शीला का मन इस प्रबल आघात से मर्माहत और आक्रांत हो उठा। उसे स्वप्न में भी इसकी कल्पना न थी। वह वियोग में बिलखती, विलाप करने लगी। उसकी मन:स्थिति पागलों जैसी हो गई। एक दिन वह इसी शोक-संतप्त अवस्था में पतिगृह को छोड़ प्राण-त्याग के लिए निकल पड़ी और असुध अवस्था में पितृ-गृह पहुंच गई।

उधर मेहताशाह को जब शीला द्वारा गृहत्याग का पता चला तो वह उद्विग्न हो गया। उसने अपने द्वारपाल हीरासिंह और सेविका चंद्रावती से सत्य जानने का प्रयत्न किया। चंद्रावती ने तब सारा वृतांत उसे कह सुनाया। उसने बताया कि किस प्रकार रिसालू ने उस पतिव्रता नारी को डिगाने के लिए तरह-तरह की चालें चलीं और उस ने उसका सामना किया। उसने उस घटना का विवरण भी दिया, जब शीला ने राजा रिसालू को उसके कृत्य के लिए बुरी तरह से फटकारते हुए उसे घर न आने की चेतावनी दी थी और राजा को उससे क्षमा मांग अपना पीछा छुड़ाना पड़ा था। उसने बताया कि शीला ने मेहता शाह अनुपस्थिति में उसे एक क्षण के लिए भी अपने से पृथक न होने दिया और वह उसके

पातिव्रत्य एवं सतीत्व की पूर्ण साक्षी है। उसने मेहताशाह को इस बात के लिए धिक्कारा कि उसने एक पतिपरायणा नारी पर अकारण संदेह कर उसे घर छोड़ने को विवश किया। उसने आशंका प्रकट की कि हो सकता है कि उसने दुःखी हो अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली हो। यदि ऐसा है तो उसका महान पाप महताशाह को भुगतना होगा और वह पाप सरलता से धुलने वाला नहीं है।

अब मेहताशाह को अपनी गलती का बोध होने लगा था। उसने अपने आप को कोसा कि व्यर्थ ही क्रोध में आकर उसने एक सती-साध्वी का अपमान किया और उसे घर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। यदि उसने प्राण-त्याग दिये होंगे तो उसके पाप का प्रायश्चित संभव नहीं है। वह शीला की खोज में निकल पड़ा। उसे शीला का पता न था। वह एक स्थान से दूसरे स्थान, वन-बीहड़ और जंगलों में भटकने लगा। शनैः-शनैः उसकी मानसिक स्थिति विक्षिप्त की सी हो गई। जो भी मिलता, उससे पूछता कि क्या तुमने मेरी प्राणप्रिया शीला को देखा है? लोग उसे पागल समझ आगे बढ़ जाते।

उसकी दशा दीन-हीन हो गई। शरीर सूखकर कांटा हो गया। किसी को विश्वास ही न होता कि यही महताशाह है। कोई उसे पागल बताता और कोई ढोंगी।

मेहताशाह इस तरह विलाप करते-करते एक दिन अग्रोहा पहुंच गया। हरभजशाह की एक सेविका ने उसे शीला-शीला चिल्लाते सुना। तब उसने जिज्ञासावश उससे पूछा कि तुम कौन हो और शीला को क्यों पुकारते हुए फिर रहे हो? तुम्हें मालूम नहीं, शीला सेठ हरभजशाह की पुत्री है? तुम उसका नाम लेते पकड़े गए तो मारे जाओगे।

मेहताशाह को शीला का नाम सुन बड़ा संतोष मिला। उसने कहा-इतने दिनों बाद पहली बार तुमने मेरी प्राण-प्रिया के नाम से जीवन दान दिया है। यदि तुम उसका पता ठिकाना बता दो तो वह उसका आभारी रहेगा। साथ ही उसने पूछा कि उसकी प्राण-प्रिया शीला जीवित है तो वह कहाँ मिलेगी? वह कैसा अभागा है, जो अपनी प्राण-प्रिया के दर्शन तक नहीं कर पा रहा है?

सेविका ने उसकी बातों को प्रलाप समझा। उसका उत्तर दिए बिना वह वहाँ से चल पड़ी और शीला से मिलने पर उसने उसे सब वृत्तांत कह सुनाया। शीला ने अनुभव किया, हो न हो, वही उसका पति है, जो उसकी खोज में इस तरह मारा-मारा फिर रहा है। वह पति-दर्शन की कामना से व्यग्र हो घर से बाहर दौड़ी किन्तु हतभाग्य! वह मेहताशाह के दर्शन कर पाती, उससे पूर्व ही उसके प्राणपंखेरू उड़ चुके थे। अपने पति मेहताशाह को मृत पा वह पछाड़ खा गिर पड़ी। उसकी वेदना का कोई अंत न था। भाव विह्वल हो उसने भी अपने प्राण त्याग दिये। पति-पत्नी दोनों एकाकार हो गए। ज्योति-ज्योति में मिल गई। दोनों का एक ही चिता पर संस्कार हुआ। शीला शरीर से विमुक्त हो गई किन्तु अपने पवित्र पातिव्रत्य धर्म और निश्छल प्रेम की गाथा सदा-सदा के लिए इस धरा पर छोड़ गई।

उधर राजा रिसालू को जब मेहताशाह द्वारा घर त्यागने का पता चला तो उसने उसकी खोज प्रारम्भ की। डगर-डगर घूमता अग्रोहा पहुंचा और उसने वहाँ से दूर अपना डेरा डाला। जब उसे महताशाह और शीला की मृत्यु के बारे में पता चला तो उसे बड़ा दुःख

हुआ। उसे अपने आप पर ग्लानि अनुभव होने लगी। पश्चाताप से उसका हृदय फटने लगा और स्यालकोट का अपना राज्य पुत्र को सौंप स्वयं हरिभजन में लीन हो गया।

अग्रोहा में जिस स्थान पर राजा रिसालू ठहरा, उस स्थान पर आज भी रिसालू टीब्बे के नाम से अवशेष मिलते हैं। वास्तव में वह एक टीबा है और सरकारी कागजातों में मौजा रिसालखेड़ा के नाम से उसका उल्लेख मिलता है। यहाँ कुँए के चिन्ह, मकानों की दीवारें, ईंट आदि अब भी देखने को मिल जाती हैं।

शीला एवं मेहताशाह के अमर प्रेम की स्मृति में अग्रोहा में शक्ति शीला मंदिर का निर्माण हुआ है। असंख्य लोग वहां पधारते हैं, माता की मनौती मनाते हैं, बच्चों का मुंडन संस्कार आदि कराते व चढावा चढ़ाते हैं। उनका विश्वास है कि माता की पूजा से उनकी सकल मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। प्रत्येक भाद्रपद अमावस्या पर वहाँ विशाल मेला भी लगता है।

अग्रोहा की रीत, एक मुद्रा व एक ईंट

महाराजा अग्रसेन व अग्रोहा राज्य के विषय में अनेक कथायें व किंवदन्तियां प्रचलित हैं किन्तु उसमें एक मुद्रा एक ईंट की किंवदन्ती सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसके अनुसार वैभव की अवस्था में अग्रोहा में एक लाख घरों की आबादी थी। ये सब लोग अत्यन्त समृद्धशाली, संगठन प्रेमी और समाज हितैषी थे। जब भी वहाँ कोई नवीन बंधु बसने के लिए आता था तो वहाँ का प्रत्येक परिवार उसे एक मुद्रा और एक ईंट सम्मानस्वरूप भेंट करता था, जिससे वह तत्काल एक लाख मुद्राओं का स्वामी बन जाता और लाख ईंटों से उसका मकान बन जाता था। एक लाख रुपयों से वह अपना व्यवसाय-व्यापार चला लेता, जिससे वहाँ किसी प्रकार की बेकारी, बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न न होती थी। यह परम्परा किसी कारणवश व्यापार में घाटा लगने अथवा प्राकृतिक आपदा के आने पर भी दोहराई जाती थी। इस परम्परा का पालन समानता के आधार पर नवागंतुक को भी करना पड़ता था और उसे भी नये बसने वाले परिवार को एक ईंट व एक रूपया देना पड़ता था। इस प्रकार पारस्परिक सहयोग व समानता की भावना पर आधारित होने के कारण इससे किसी प्रकार की हीनता या छोटे-बड़े की भावना पैदा नहीं होती थी। सभी दाता थे और सभी समान रूप से ग्रहणकर्त्ता।

हो सकता है कि इस किंवदन्ती में कुछ अतिश्योक्ति भी रही हो किन्तु इससे यह तो स्पष्ट ही है कि उस समय अग्रवाल समाज अपने वैभव के जितने चरम शिखर पर था, उतनी ही उसकी उदारता, दानशीलता, धार्मिकता और सामाजिक सहयोग एवं एकत्व अनुभूति की भावना बढ़ी हुई थी। इसी सहयोग, सहानुभूति एवं सबके सुख में अपना सुख देखने की व्यापक भावना तथा उदार दृष्टिकोण के कारण वे अग्रोहा में बसने वाले प्रत्येक परिवार को थोड़ी-थोड़ी सहायता देकर उसे आत्मनिर्भर बना देते थे, जिससे वह अपना स्वतंत्र, सम्मानित, आत्मस्वाभिमानपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।

बिना रक्त की एक बूंद बहाये समाज में समानता लाने तथा वैभव को बांटने का यह प्रयत्न इतिहास में अनुपम है। 'एक सबके लिए-सब एक के लिए,' ''सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय'' पर आधारित ऐसा आदर्श दुर्लभ है।

अग्रोहा के पतन सम्बन्धी गाथाएं

अग्रोहा पर बार-बार विदेशी आक्रमण हुए तथा वह अनेक बार उजड़ा और बसा। जब किसी गणराज्य के अधिवासी किसी आक्रान्ता की अधीनता स्वीकार नहीं करते थे, तो प्राय: आक्रमणकारी लौटते समय उनकी बस्तियों में लूटपाट करते और उसे आग लगा जाते थे। इससे अनेक बस्तियों के राख के अवशेष मिले हैं। अग्रोहा की खुदाई में भी मृण-मोतियों के साथ राख के ढेर मिले हैं। इससे स्पष्ट है कि अग्रोहा को कभी किसी ने जला दिया था। इस सम्बन्ध में कुछ लोककथायें प्रचलित हैं, उन्हें श्री हरपतराय टांटिया ने अपनी पुस्तक 'अग्रोहा दर्शन' में इस प्रकार दिया है-

बाबा धुंगनाथ और उनकी भविष्यवाणी

एक बार एक साधु जिसका नाम धुंगनाथ था, अपने एक शिष्य कीर्तिनाथ के साथ इस नगर में आये और यहां के सुरम्य और शांत वातावरण से प्रभावित हो समाधि लगाने का विचार किया और अपने शिष्य से कहा कि मैं समाधि लगाता हूँ। मेरे समाधि में रहने तक तुम इस नगरी से भिक्षा लाकर अपना काम चलाना और धूनी को चैतन्य करते रहना। इस प्रकार शिष्य को आदेश देकर बाबा ने समाधि लगा ली।

बाबा के आदेशानुसार कीर्तिनाथ भिक्षार्थ नगर में गया और कुम्हारिन से रस्सी और कुल्हाड़ी लेकर वन में प्रस्थान किया तथा जंगल में लकड़ी काट-काट कर महात्माजी की धूनी को प्रज्वलित रखने तथा उन्हें बेच कर अपनी आजीविका चलाने का उपक्रम करने लगा। इस तरह तपस्या करते-करते छ: मास की अवधि व्यतीत हो गई।

उस समय विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमण भारत पर बार-बार होते रहते थे। ये आक्रणकारी राजा द्वारा अधीनता स्वीकार न करने पर क्रुद्ध हो सबक सिखाने की दृष्टि से जाते-जाते नगर को जला जाते अथवा भयंकर तोड़-फोड़ और विनाश कर जाते। तत्कालीन समय में अग्रोहा वैभव के चरम शिखर पर था और आक्रमणकारियों के मुख्य मार्ग पर पड़ता था। उस समय योगियों को दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। वे अपनी दृष्टि से होने वाली घटनाओं को पूर्व में ही जान लेते थे। संभवत: महात्मा धुंगनाथ को भी अपनी दिव्य दृष्टि से ऐसी अनुभूति हुई कि अग्रोहा का शीघ्र ही विनाश होने वाला है। अग्रोहा में निवास करने और तपस्या करने के कारण उनमें अग्रोहावासियों के प्रति ममत्व की भावना उत्पन्न हो गई थी। वे उनके विनाश को अपने नेत्रों से नहीं देख सकते थे। इसलिए उन्होंने दयार्द्र होकर अपनी तपस्या भंग करते हुए शिष्यों तथा कीर्तिनाथ के माध्यम से नगर में डोंडी पिटवा दी कि अग्रोहा का जल्दी ही विनाश होने वाला है। वहां आग बरसेगी और जिसको भी सुरक्षित बचना है, वह यहां से निकल जाए।

इस प्रकार कीर्तिनाथ और उसके साथियों ने आवाज लगा लगाकर नगर के भावी विनाश की सूचना नगरवासियों को दे दी। लकड़ी और रस्सी देकर सहायता करने वाली कुम्हारिन को भी सचेत कर दिया। जिन लोगों ने योगी की भविष्यवाणी पर विश्वास किया, वे नगर को छोड़ किसी सुरक्षित स्थान पर चले गये किन्तु काफी संख्या में लोग इस भविष्यवाणी को कपोल कल्पित समझ वहीं रह गए। कुम्हारिन ने अपना डेरा डण्डा उठा कर पास ही के तीन मील दूर स्थित स्थान पर अपना तम्बू लगा लिया। जिस स्थान

पर उसने डेरा लगाया, वहीं उसके नाम से एक गांव बस गया, जिसका नाम कुम्हारिया चक पड़ा और आज भी वह अग्रोहा के समीप स्थित हैं।

योगिराज के बताये निश्चित समय पर अग्रोहा में भयंकर विनाश हुआ और अग्रोहा देखते-देखते राख का ढेर बन गया। वहीं राख का ढेर आज का लम्बा-चौड़ा 566 एकड़ भूमि में फैला थेह है। थेह के नीचे मकानों, किले आदि के अवशेष स्पष्ट दिखाई देते हैं। बाबा धुंगनाथ की इस भविष्यवाणी के सम्बन्ध में अनेक चमत्कारिक उल्लेख मिलते हैं।

यह भी संभव है कि योगिराज के दूत, चेले, शिष्य आदि दूरस्थ स्थान पर भ्रमण करते रहते हों और अग्रोहा पर होने वाले भावी आक्रमण की पूर्व भनक पाकर उन्होंने उसकी जानकारी योगिराज धुंगनाथ को दे दी हो और दयाभाव से प्रेरित होकर बाबा धुंगनाथ ने उसकी सूचना कुम्हारिन तथा नगरवासियों को दे दी हो तथा बाद में महाराजा के शिष्यों ने इस घटना को भविष्यवाणी का रूप दे दिया हो क्योंकि इस प्रकार की चमत्कारिक घटनाएं अधिकांश योगियों के साथ जुड़ी हुई पाई जाती हैं। जो भी हो, अग्रोहा के थेह में मिलने वाली राख और अंगारों के अवशेष-इसी विनाशगाथा के साक्षी हैं।

सिकन्दर का आक्रमण और अग्रोहा का विनाश

अग्रोहा के विनाश सम्बन्धी एक अन्य वृत्त भी लोक-प्रसिद्ध है। कहते हैं कि यूनान के बादशाह सिकन्दर ने भारत से स्वदेश लौटते समय अग्रोहा के वैभव की कहानी सुनी। उसने वहाँ की समृद्धि एवं वैभव से ललचा कर अपनी सेनाओं को उस पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया किन्तु सफलता न मिलने पर भेदनीति का आश्रय लेते हुए उसने गोकुलचंद और रत्नसेन नामक दो राजवंशी पुरुषों को भारी प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।

अमावस्या की एक घनघोर रात्रि में जबकि अग्रोहावासी निद्रा में मग्न थे, इन देशद्रोहियों की सहायता से सिकन्दर की सेनाओं ने अग्रोहा पर आक्रमण कर दिया। गोकुलचंद और रत्नसेन, द्वारपाल और रक्षकों को धोखा देकर दुर्ग में प्रविष्ट हो गए और अपने ही बंधुओं के विरुद्ध विदेशी सेना का सहयोग कर घोर विश्वासघात का परिचय दिया किन्तु अग्रोहा के वीर सैनिकों ने उनका दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया। बड़ा ही घमासान युद्ध हुआ। सिकन्दर ने अपनी पराजय देख विलियम को पूरे शस्त्र-बल के साथ सेना की सहायतार्थ भेजा। विलियम ने भयंकर रक्तपात किया। उसने नगर का द्वार तोड़कर चकनाचूर कर दिया। उधर सिकंदर ने दूसरी ओर से धावा बोल दिया किन्तु अग्रोहा के सैनिक डटे रहे। इस प्रतिरोध में स्वयं सिकन्दर भी घायल हो गया किन्तु कहते हैं उस समय कुलघाती गोकुलचंद ने एक और नीचता की। उसने अग्रोहा के शस्त्रागार में, जहां भारी मात्रा में गोला-बारूद रखा था, आग लगा दी। इस अकल्पित विनाश दृश्य ने अग्रवीरों को हतोत्साहित कर दिया। शस्त्रों के अभाव में विशाल शत्रु सेना का सामना करना कठिन था। फिर भी वे वीरतापूर्वक लड़े और और संघर्ष करते हुए अमरलोक सिधारे।

इस युद्ध में अग्रवीरों द्वारा प्रदर्शित महान शौर्य और पराक्रम से सिकन्दर अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसने युद्ध से बचे राजकुमारों को बुलाया तथा उनके साथ वीरोचित व्यवहार करते हुए उनका राज्य लौटा दिया। दूसरी ओर गोकुलचंद और रत्नसेन की भर्त्सना की और कहा कि जब तुम अपनों के ही नहीं रहे तो हमारे कैसे बन सकते हो? और उन्हें मौत के घाट उतार दिया। युद्ध की समाप्ति पर सहस्रों स्त्रियां, जिनके पति युद्धभूमि में शहीद हो गए थे, अपने-अपने पतियों के साथ जौहर की ज्वाला में हर हर महादेव कहते हुए लक्खी तालाब के किनारे देश की बलि-बेदी पर अर्पित हो गईं। इतिहास में जौहर की यह सर्वप्रथम घटना थी। इस प्रकार अग्रोहा की ललनाओं ने त्याग और बलिदान का महान इतिहास लिखा।

अग्रोहा की उस समय की स्थिति और सिकंदर के आक्रमण को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, परमेश्वरीलाल गुप्त जैसे सुप्रसिद्ध इतिहासकारों के अनुसार यूनानी इतिहासकारों ने जिस "अग्रलसोई" पर सिंकदर के आक्रमण का उल्लेख किया है, वह वर्तमान अग्रोहा ही रहा होगा। अन्य इतिहासकार इसे सही नहीं मानते हैं। जो भी हो, उस समय अग्रोहावासियों की सामरिक क्षमता प्रबल थी। उन्होंने युद्धभूमि में प्रबल शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया। उनके वीरगति प्राप्त करने पर वहां की वीर ललनाओं ने जौहर की ज्वाला में अपने प्राण समर्पित कर उत्कृष्ट देश-भक्ति का परिचय दिया। एरियन नामक विद्वान् के अनुसार इस युद्ध में 20,000 सैनिक थे, जिन्होंने युद्ध भूमि में असीम शौर्य का परिचय दिया। लगता है कि सिकन्दर के इस आक्रमण के बाद अग्रश्रेणी के लोग अग्रोहा के आसपास बसने प्रारम्भ हो गए थे और बाद में फिर वे अपनी स्वतंत्र सत्ता अग्रोहा में स्थापित करने में सफल हुए थे।

अग्रोहा का विध्वंस और समरजीत

भाटों के गीतों से समरजीत नामक एक राजा का उल्लेख भी मिलता है, जिसने अग्रोहा पर विजय प्राप्त की थी। श्री बहालसिंह ने अपनी पुस्तक में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि यह घटना विक्रमी संवत् 758 में घटित हुई। उस समय धर्मसेन अग्रोहा का राजा था। यह राजा प्रजा का शत्रु था। मालूम होता है कि उस समय अग्रोहा में जो 152 तालुके थे, वे उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। अग्रोहा के धर्मपाल और इन्द्रसेन-चाचा-भतीजा-राज्य से बगावत कर उज्जैन के राजा समरजीत के पास चले गए और उसे प्रेरित कर अग्रोहा पर चढ़ाई करा दी। अग्रोहा का शासक हार गया और उस दिन से अग्रोहा का पतन प्रारम्भ हो गया।

इस विजय के उपलक्ष में राजा समरजीत ने दोनों चाचा-भतीजा को क्रमशः पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल, जो उस समय उसके उपनिवेश थे, पुरस्कारस्वरूप प्रदान कर दिए। यह ई. सन् 701 के लगभग की बात है। कहा जाता है कि इन्हीं धर्मपाल के वंशज राजा महीपाल ने "पालवंश" और राजा वल्लभसेन ने "सेनवंश" की स्थापना की और उन्होंने लगभग 500 वर्ष तक बंगाल पर शासन किया।

इस आक्रमण के फलस्वरूप हो सकता है कि अग्रोहावासी अग्रोहा छोड़कर समीपस्थ पानीपत, नारनौल, झुंझनू आदि स्थानों में जाकर बस गए हों।

इस विषय में शोध कर रहे स्व. हरिराम गुटगुटिया का अनुमान था कि ये पाल और सेनवंशी अग्रवाल ही थे और अग्रोहा से ही गए थे। उन्होंने ही बंगाल पर लगभग 500 वर्ष (702 ई. से 1205 तक) शासन कर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था किन्तु इतिहासकार इन पाल और सेनवंशी राजाओं की जाति के सम्बन्ध में एकमत नहीं हैं। इस सम्बन्ध में और अधिक शोध की आवश्यकता है तथा यदि यह तथ्य प्रमाणित हो जाए कि पाल और सेनवंशी शासक अग्रवाल थे, तो वैश्य अग्रवालों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो सकती है।

अलबरूनी (1080) ने अपने ग्रंथ "किताबुल हिन्द" में लिखा कि उनके दिल्ली जाने वाले रास्ते में एक ध्वस्त नगर के चिन्ह मिले थे, जो पूरी तरह ढह चुका था, वहां कोई रहने वाला नहीं था। ऐसा लगता है कि इस काल के बाद अग्रोहा ने मध्यकाल में एक बार पुन: अपनी समृद्धि प्राप्त कर ली थी क्योंकि जियाऊद्दीन बरनी के उल्लेख से पता चलता है कि मुलतान से दिल्ली यात्रा के मध्य सम्राट फिरोजशाह तुगलक अग्रोहा में ठहरा था। किसी सम्राट का किसी नगर में विश्राम करना यह सिद्ध करता है कि वह उस समय प्रसिद्ध रहा होगा तथा इतना समृद्धिशाली रहा होगा कि जिससे एक राजा अपने पूरे लश्कर के साथ वहां ठहर सके। इतिहासकारों के अनुसार सम्राट ने हिसार-ए-फिरोजा के निर्माण में हिन्दू मंदिरों-नगरों का मलबा काम में लिया था। अग्रोहा जो हिसार से 22 किलोमीटर की दूरी पर था, उसके अवशेष यदि इसके निर्माण में लिए लगाए गए हों तो आश्चर्य नहीं। हिसार के गूजरी महल, फिरोजशाह मस्जिद, जहाज कोठी और फतेहाबाद की मस्जिद आज भी इस सत्य को प्रमाणित करते हैं। लगता है 1254 में शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमण के बाद यह नगर काफी विध्वंस हो चुका था और उसी समय अग्रोहा निवासी वहां से निष्क्रमण कर युक्त प्रदेश, पंजाब, मारवाड़ के भिन्न-भिन्न स्थानों में जा बसे और वणिक-व्यापार से अपनी जीविका चलाने लगे। संभव है उसी समय उन्होंने तलवार को त्याग तराजू मुख्य रूप से ग्रहण कर ली हो, क्योंकि लगातार युद्धों से व्यापार संभव नहीं था।

अग्रोहा से निष्क्रमण

जैसा कि हम पूर्व में उल्लेख कर आए हैं कि अग्रोहा की समृद्धि और उसका वैभव ही उसके लिए एक दिन उसके पराभव का कारण बन गया। यह स्थान भौगोलिक दृष्टि से इतना महत्वपूर्ण, सामरिक दृष्टि से इतना उपयोगी और आर्थिक दृष्टि से इतना समृद्ध था कि किसी भी आक्रांता ने उसे उपेक्षित नहीं किया और इस पर आक्रमणों का सिलसिला लगातार चल पड़ा। किसी भी राज्य के पनपने एवं उसकी खुशहाली के लिए शान्ति और सुव्यवस्था की अपेक्षा होती है और हमलों में सुव्यवस्था का रहना संभव नहीं है। ऐसी दशा में सबसे अधिक कोई समाज प्रभावित होता है तो वह व्यापारी समाज ही होता है। भारतीय इतिहास में ईसा के पांच सौ वर्ष पूर्व से लेकर पांचवीं शताब्दी तक का एक हजार वर्ष का काल साम्राज्यवादी युग रहा। इस दीर्घकालावधि में शशु, नाग, नंद, मौर्य, शुंग, गुप्त, कुषाण आदि अनेक राजवंशों ने राज्य किया। बड़े-बड़े साम्राज्य छोटे-छोटे गणराज्यों पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए प्रयत्नशील रहे। जब भी कोई राज्य

शक्तिशाली बनता, वह छोटे-छोटे गणराज्यों पर आक्रमण कर उसे अपने में मिला लेता किन्तु राज्य शक्ति के कमजोर पड़ने पर वे गणराज्य पुनः स्वतंत्र हो जाते। सत्ता के केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण में लगातार उखाड़-पछाड़ तथा संघर्ष की प्रक्रिया चलती रहती। शान्तिपूर्वक जीवन कठिन हो गया। गौरी, पठानों के हमलों से तो पूरा अग्रोहा ध्वस्त हो गया और इन्हीं परिस्थितियों ने अग्रोहा-निवासियों को अपेक्षाकृत शान्त-मार्ग तथा व्यापार-व्यवसाय के ठिकानों को ढूंढने और वहां बसने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप देश में अनेक नई-नई बस्तियों और व्यापार केन्द्रों का निर्माण हुआ और राष्ट्र ने आर्थिक प्रगति की दिशा में नया मोड़ लिया।

तब से लेकर आज तक इस जाति के सूरमाओं ने पीछे मुड़कर देखना नहीं सीखा और व्यापार-व्यवसाय में वह निष्णातता प्राप्त की कि उसकी तूती सम्पूर्ण विश्व में फैलती गई। आज मारवाड़ी अग्रवालों को दुनियां के श्रेष्ठतम व्यापारियों में गिना जाता है। उनकी ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा, व्यापार कौशल की अपनी ही विशिष्टता है।

अग्रोहा के थेह एवं उनके पुरातात्विक अवशेष

आज अग्रोहा एक कस्बे के रूप में स्थित है, जहां पुराने अग्रोहा की स्मृति स्वरूप 566 एकड़ में 87 फुट ऊंचा विशाल थेह फैला हुआ है। इन थेहों से उसकी प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता का बोध होता है।

अग्रोहा में फैले इन थेहों में उसके उत्थान पतन की गाथा छिपी पड़ी है। इतिहास की इस अमूल्य धरोहर को जानने के लिए पुरातात्विक विभाग एवं अन्य अनेक बंधुओं ने समय-समय पर महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं।

इस सम्बन्ध में पुरातात्विक खनन एवं अध्ययन का सर्वप्रथम प्रयास 1888 ई. में सी. जे. रोजर्स ने किया। उन्होंने एक छोटे टीले की 16 फुट की गहराई तक खुदाई करवाई। इस खुदाई में उन्हें ईंटों की दीवारों, फर्श तथा ईंटों से युक्त गलियों के चिन्ह के अलावा राख के ढेर भी मिले, जिनसे पता चलता था कि यहां कभी भयानक अग्नि कांड हुआ था। वहां कुछ अलंकृत ईंटें भी मिली, जिससे उस अनुश्रुति को बल मिला है, जिसके अनुसार अग्रोहा आने वाले हर व्यक्ति को एक रूपया एक ईंट प्रदान की जाती थी। इसके अलावा उन्हें कुछ सिक्के, मनके, नग्न मूर्तियों के टुकड़े, मिट्टी के खिलौने आदि भी मिले, जिन पर अग्नि कांड के चिन्ह थे। इस खुदाई की रिपोर्ट श्री रोजर्स ने केवल दो ढाई पृष्ठों में दी। यद्यपि इससे अग्रोहा के विषय में कोई ठोस जानकारी नहीं मिली किन्तु डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार जो भी सामग्री मिली, उससे अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि अग्रोहा का जो रूप उस समय सामने आया, वह 12वीं शताब्दी का रहा होगा। इतिहास में 1194 ई. में अग्रोहा पर मोहम्मद गौरी के आक्रमण का उल्लेख मिलता है तथा कहा जाता है कि उसने अग्रोहा को जलाकर राख का ढेर बना दिया था। संभवतः ये अवशेष उसी काल के रहे होंगे।

इसके पश्चात् 1938-39 में भारतीय पुरातत्व विभाग के निर्देशन में श्री हीरालाल श्रीवास्तव ने अग्रोहा के थेह में परीक्षात्मक उत्खनन करवाया। इस खुदाई से पता चला कि टीले के नीचे एक सुनियोजित नगर की बस्ती थी। उसके मकान पक्की ईंटों से बने

थे और निवास गृह एक दूसरे से अलग थे। कमरों में प्रवेश के लिए दरवाजे थे। वहां से मिट्टी की कुछ मोहरें, जली हुई मूर्तियां, जला हुआ अनाज तथा जला हुआ हस्तलिखित ग्रंथ, सोने के एक मनके सहित भी प्राप्त हुआ। ग्रंथ के जल जाने से उसकी विषय वस्तु का पता तो न चल सका किन्तु लिपि के आधार पर उसका समय 9वीं शताब्दी अनुमान किया जाता है। डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार इतने प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ का वहां मिलना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ऐसे किसी प्राचीन ग्रंथ का ज्ञान बहुत कम है। दूसरी वस्तु जो इस खुदाई में मिली, वह है - मिट्टी का पका हुआ एक फलक। उस पर 9वीं सदी की ही एक लिपि में संगीत का सरगम् स नि ध पा मा गा रे सा अंकित है। संगीत के सरगम का इतना प्राचीन लिखित प्रमाण भी अब तक अज्ञात होने से पता चलता है कि अग्रोहा में उस समय भी संगीत कला अपने वैभव की चरम सीमा पर रही होगी।

खुदाई में मिट्टी के बर्तनों के उभारदार अलंकृत डण्डे, टोंटीदार करवे, हांडी, कटोरे, लोटे, छेददार बर्तन, धूपदानी, प्याले, तश्तरी, ताम्बे की तलवार, चम्मच, हाथ का कड़ा, कान के बूंदे तथा एक छोटे मंदिर के अवशेष भी मिले। इनसे पता चलता है कि उस समय वहां के नागरिक व्यवसायी होने के साथ आत्मरक्षार्थ युद्ध भी करते थे और मिट्टी तथा धातुओं से बर्तन एवं औजार बनाने की कला उन्नत रूप में थी। तलवार की मूठों में मणि माणिक्य जड़कर कलाकारी करने की प्रथा भी थी। इनमें सर्वाधिक सुंदर बर्तन मिट्टी की एक तश्तरी है, जिस पर छेद करके नक्शा बनाया गया है। चार रंग के बड़े सुंदर बाक्स हैं। एक अलंकृत घुनघुना है, दो गोल तश्तरियां हैं, प्रथम में मुख देखने का शीशे का आकार है और दूसरे पर पहिया बना है। पक्की मिट्टी के बने हुए खिलौनों में घोड़े, बैल, हाथी और कुत्ते हैं। एक बर्तन की टोंटी भी मिली है, जो मोर के आकार की है। इनमें सभी बर्तन कुषाण तथा गुप्तकालीन प्रतीत होते हैं। मंदिर की मूर्ति देखने से उस समय के मंदिरों की आकृति व बनावट के विषय में भी पता चलता है। घोड़ों के चित्रों से पता चलता है कि उस समय घोड़े सवारी के काम आते थे।

खुदाई से मिले ताम्बे के कड़े तथा कान के बूंदों से पता चलता है कि उस समय स्त्रियां नाना प्रकार के आभूषण धारण करती थीं और वहां आभूषण बनाने की कला विद्यमान थी। मंदिर के अलावा वहां वराह, कुबेर, महिषमर्दिनी दुर्गा की चार हाथों वाली मूर्तियां भी मिली हैं। कुबेर धन के देवता हैं। इससे अनुमान होता है कि अग्रोहा के वैश्य लोग लक्ष्मी के साथ धन के अधिपति कुबेर की पूजा भी करते होंगे। ये मूर्तियां 9वीं सदी की अनुमान की जाती हैं। खुदाई से प्राप्त गृहस्थी के सामान- चकला, बेलन, सिल, लोढा आदि इस तथ्य के परिचायक हैं कि उस समय अग्र परिवारों में इन सब वस्तुओं का प्रयोग होता था और गृहणियां गृहकार्य में दक्ष होती थीं।

स्वामी ओमानंद सरस्वती ने हरियाणा के मुद्रांक में अग्रोहा से प्राप्त कुछ मुद्राओं का उल्लेख किया है। ये मुद्रांक मिट्टी की मोहर की छाप है जो किसी पार्सल पर लगाई जाती थीं। इसका उद्देश्य भेजी जाने वाली सामग्री की गोपनीयता एवं सुरक्षा को बनाये रखना था। इन मुद्राओं में एक की लिपि पहली-दूसरी सदी की है। एक कुषाणकाल लिपि में है, एक उत्तर गुप्तकाल की है, एक मुद्रा ईसा पूर्व की भी है। इससे प्रमाणित होता है कि अग्रोहा ऐसा नगर था जिसका सम्बन्ध ईसा पूर्व काल में विदेशों से था और

ां का वाणिज्य-व्यवसाय इतनी उन्नत अवस्था में था कि गोपनीय खरीतों का आदान-दान भी होता था। एक मुद्रांक तीसरी-चौथी शताब्दी के यौद्धेयगण के एक शासक का इससे अग्रोहा-राज्य के दूसरे गणों के साथ राजनैतिक सम्बन्ध का परिचय मिलता है।

अग्रोहा से प्राप्त विशिष्ट सामग्री उसके सिक्के भी हैं, जो सैंकड़ों की संख्या में भिन्न लिपि तथा चिन्हों को धारण किये हैं। श्री एच. एल. श्रीवास्तव ने जिन सिक्कों ा अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है, उनमें चांदी के पांच सिक्के विशेष हैं, जो मिट्टी बर्तन में गड़े हुए मिले। ये सिक्के पश्चिमोत्तर देशों तथा ग्रीक-राजाओं के हैं, जिनका ाल ईसा पूर्व दूसरी, पहली शताब्दी रहा। इन सिक्कों में अमिन्टास की दास, अपोलोडोटेस टेटो और अमिन्टास के सिक्के प्रमुख हैं। एक आहत मुद्रा भी है, जिस पर सूर्य वृक्ष ादि अंकित हैं। इन सिक्कों से यह प्रमाणित होता है कि यहां की बस्ती गुप्त काल के र्व की है, क्योंकि उस समय इन सिक्कों का चलन उठ गया था।

दूसरे बर्तन में 51 चौकोर सिक्के भी बरामद हुए हैं, जिन पर एक ओर अग्रोदक गाच्च जनपद (अग्रोदक में रहने वाले अगाच नामक जनपद का सिक्का, यह अगाच्च आग्रेय का प्राकृत रूप है) लिखा है तो दूसरी ओर वृषभ या वेदिका की आकृति बनी हुई । इन सिक्कों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि उनसे पता चलता है कि वहां अग्रोहा जनपद का अस्तित्व था और यह अस्तित्व प्रमाण सम्मत है।

स्व. देवकीनंदन गुप्त के अग्रवंश शोध संस्थान में संग्रहीत सिक्कों में एक सिक्का कुषाण शासक विमकदफिस का, एक उत्तरवर्ती कुषाण शासक का और एक गुप्तवंश का चांदी का सिक्का है। इन सिक्कों से प्रमाणित होता है कि कुषाण व गुप्तकाल में अग्रोहा का अस्तित्व विद्यमान था। इसके साथ वहां अन्य मिली मुद्राओं से इस बात की जानकारी मिलती है कि पहली दूसरी सदी ई. पू. तक अग्रोहा में बाहर के लोगों का भी आना जाना था। सिक्कों के आधार पर यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि ईसा पूर्व की दूसरी शती में अग्र लोगों की अपनी एक श्रेणी थी। अग्र या आग्रेय लोगों ने इसे बनाया था तथा ''अग्र'', ''आग्रेय'' और अग्र श्रेणी एक ही जनसमूह के नाम थे।

यूनानी लेखकों व ग्रंथों में अगलस्तोई, अगलस्तेई, अर्गासेनेई, अग्रासिनेई, अगातिनेई का उल्लेख मिलता है। डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त का मत है कि ये अग्रश्रेणी के ही रूप हैं। यदि यह सत्य है तो निश्चित रूप से सिकंदर के समय ''अग्र'' नामक वार्ता शस्त्रोपजीवी एक श्रेणी थी। उसने सिकंदर का डटकर सामना किया था और बाद में जनपद का रूप ले लिया था। श्रेणी एक प्रकार के व्यवसाय, वाणिज्य अथवा शिल्प का संगठन होता था। श्रेणियों को अपने सदस्यों पर अनुशासन बनाए रखने के लिए विधान बनाने का अधिकार था। उनके पास सैनिक बल भी होता था। उनकी सेना इतनी बड़ी संख्या में होती थी कि वे आक्रमण और रक्षा दोनों में समर्थ होती थी। कालान्तर में इन श्रेणियों की राजनैतिक महत्ता भी हो गई और उन्होंने स्वतंत्रगण अथवा जनपद का रूप ले लिया। इस प्रकार की श्रेणियों को वार्ताशस्त्रोपजीवी कहा जाता था। गुप्त जी का मत है कि इसी कारण यूनानी लेखकों ने अग्र नामक समूह का उल्लेख अग्रश्रेणी, अग्रसिनेई आदि रूप में किया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अग्रवंश शोध संस्थान नई दिल्ली के प्रयास से पुरातत्व विभाग, हरियाणा सरकार ने 22 मार्च 1979 से अप्रैल तक एवं 11 जनवरी 1980 से 29 मार्च 1980 तक, 14 जनवरी

1981 से 28 अप्रैल 1981 तक अग्रोहा के अवशेषों की खुदाई की। 1982 और 83 में भी उत्खनन कार्यों को आगे बढ़ाया गया।

1978-79 में बिना प्राकृतिक सतह की मिट्टी तक पहुंचे 4.3 मीटर की गहराई तक खुदाई की गई और शक-कुषाण समय से प्रारम्भिक गुप्तकाल के अवशेष पाए गए। 1979-80 में टीले के उत्तरी ढलान पर प्राकृतिक सतह की मिट्टी तक खुदाई का काम शुरू किया गया। खुदाई से विभिन्न कालों की जानकारी मिली, जो ईसा की 3-4 शताब्दी से लेकर ईसा की 12वीं-13वीं सदी तक के हैं। इस खुदाईयों में टेरीकोटा की एक सील भी पाई गई जिस पर ब्राह्मी लिपि में "श्री नारायणदेव" लिखा है। मिट्टी की एक अन्य सील पर "श्रीसंकसा" लिखा है। ताम्बे के कुछ सिक्के भी मिले हैं, जो पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

1980 में की गई खुदाई में एक चकोर प्लेटफार्मनुमा चबूतरा भी मिला। 1981 में इसके आसपास खुदाई करने पर पता चला कि वहां मूलतः कोई ऊंचा मंदिर रहा होगा किन्तु उसमें प्रतिष्ठित कोई मूर्ति नहीं मिली। इस धार्मिक स्थल के चार अलग-अलग स्वरूप दिखाई पड़ते हैं। यह चारों स्वरूप गुप्तकाल से मुस्लिम काल के बीच 700-800 वर्षों में बने बिगड़े हैं। पुरातत्व विभाग ने इस स्थल के चारों ओर के स्वरूपों की रेखाकृति भी उतारी है। इस स्थल से मिली एक मूर्ति पर शेषनाग अपने फण से छाया किए लगते हैं। एक अन्य मूर्ति खंडित मुद्रा में है। इन खुदाईयों में 31×21×4.5 सेमी. की ईंटों से बने खंडहर, तीसरी-चौथी शताब्दी ई. पू. से दूसरी शताब्दी पूर्व तक के काले रंग की पालिश के बर्तन, लाल रंग के खुरदरे बर्तन, टेरीकोटा, पशु,-पक्षियों की आकृतियां, मनके, गेंद, सिटीली, लोहे और ताम्बे से बनी वस्तुएं तथा दूसरी शताब्दी ई० पू० के पश्चात् के अवशेषों में टेरीकोटा, खिलौना गाड़ी, तस्तरी, लोहे ताम्बे के बर्तन, कांच की चूड़ियों के टुकड़े तथा बहुमूल्य पत्थरों से बनी वस्तुएं हैं।

पुरातत्व विभाग, निदेशालय हरियाणा सरकार ने 1978-79 की रिपोर्ट में लिखा था कि - यह स्थान महाभारत में वर्णित आग्रेय गणतंत्र की राजधानी था। ऐसा विश्वास है कि इसे अग्रवाल समुदाय के महाराजा अग्रसेन ने बसाया था।

अग्रोहा की खुदाई से प्राप्त कुछ वस्तुएं विभिन्न संग्रहालयों में भी सुरक्षित रखी गई हैं। वहां से प्राप्त एक मूर्तिफलक लंदन के विक्टोरिया अलबर्ट म्यूजियम में है। चंडीगढ़ के संग्रहालय में भी यहां से प्राप्त तीन मूर्तियां हैं।

इस सम्बन्ध में जानकारी तभी प्राप्त हो सकती है जबकि अग्रोहा के खंडहरों की पूर्ण रूप से खुदाई होकर उसका प्रतिवेदन प्राप्त हो जाए किन्तु डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त का मत है कि अग्रोहा के ध्वंसावशेष इतने विस्तृत हैं कि इन सबका उत्खनन सम्भव नहीं है। इसलिए उत्खनन का कार्य खंडहरों में यत्र-तत्र किया गया। अब तक पूरे खंडहरों में से केवल चार स्थलों पर ही खुदाई की गई है। खुदाई से नगर के बाहरी भाग में स्थित प्राचीन परकोटे और उसके बाहर खाईयों के अवशेष प्रकाश में आए हैं। उनसे ऐसा आभास होता है कि परकोटे एवं खाईओं के ये अवशेष तीन काल के हैं। सबसे प्राचीन परकोटा कच्चा ईंटों का बना हुआ था। इसकी नींव अक्षत भूमि (Virgin Soil) पर रखी गई थी। इससे यह बात प्रकट होती है कि यहां आकर पहले बसने वाले लोगों ने ही इस परकोटे को बनाया होगा। इसके काल के बारे में हरियाणा पुरातत्व विभाग के अधिकारियों की धारणा है कि यह ईसा पूर्व चौथी शदी जितना पुराना हो सकता है।

इसी कच्चे परकोटे के ऊपर, पक्की ईंटों के दोनों परकोटों के बीच राखनुमा मिट्टी और कंकड़ों की काफी मोटी तह है, जो इस बात की द्योतक है कि पक्की ईंटों का नया परकोटा बनने से पूर्व यह नगर किन्हीं कारणों से ध्वस्त हो गया था और काफी समय तक उजड़ा पड़ा रहा था। इसे बाद में लोगों ने फिर आकर बसाया और नया परकोटा बनाया। ईंटों के आधार पर परकोटे का निर्माण कुषाणकाल में पहली-दूसरी शती का अनुमान किया जाता है। इसी परकोटे का ऊपरी भाग गुप्तकालीन ईंटों से बना है, जिससे गुप्तकाल में अर्थात् चौथी पांचवीं शती ईस्वी में इसकी मरम्मत किये जाने का परिचय मिलता है। गुप्तोतर काल के स्तरों में जो वस्तु अवशेष मिले हैं, वे सभी मंदिरों के ही जान पड़ते हैं और अलग-अलग कालों के तथा एक दूसरे के ऊपर बने हैं। निचले स्तर में जिसे सातवीं-आठवीं शती का अनुमान किया जा सकता है, अगल बगल दो प्रदक्षिणा पथ युक्त सरीखे वास्तु हैं। श्री ओमानंद सरस्वती का कथन है- इस प्राचीन उजड़े हुए नगर अग्रोहा से कुषाणों और यौधेयों के भी हजारों की संख्या में मुद्रायें (सिक्के) प्राप्त हुए हैं, जिन पर एक बहुत बड़ा ग्रंथ लिखा जा सकता है। उनसे ऐसा आभास होता है कि परकोटे एवं खाईयों के ये अवशेष तीन काल के हैं।

स्व. देवकीनंदन गुप्त का मत था- अग्रोहा के खंडहरों में 8वीं-9वीं शती ईसा पूर्व के यदि कहीं अवशेष हैं, तो टीलों के नीचे स्तरों में दबे पड़े होंगे। उनके निकट-भविष्य में प्रकाश में आने की संभावना कम है क्योंकि यह तभी हो सकता जब उत्खनन कार्य का विस्तार हो और उत्खनन ऊपर से नीचे की ओर बढ़े। यह काम पुरातत्वविद तभी अपने हाथों में ले सकते हैं, जब ऊपर के स्तरों का उत्खनन कार्य पूरा हो जाये तथा उसकी रिपोर्ट छप जाए और वे इस स्थिति में हों कि ऊपर मिले वास्तु अवशेषों को समूल नष्ट कर दें। इसके अलावा, वर्षा आदि के समय इन थेहों से प्राचीन सिक्के एवं पुरातत्व महत्व की अनेक वस्तुएं मिलती रहती हैं। इस प्रकार की प्राचीन वस्तुओं, सिक्कों आदि का समय-समय पर स्व. वृंदावन कानूनगो, श्री ओमानंद सरस्वती एवं देवकीनंदन गुप्ता आदि संग्रह द्वारा किया गया जो राष्ट्रीय महत्त्व का हैं।

जो भी हो, अग्रोहा के खंडहर अपने में महान इतिहास छिपाए हैं। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि वहां से अब तक जो सिक्के व प्रमाण मिले हैं, वे अग्रोहा के वैभव व उसकी प्रगति के स्पष्ट प्रमाण हैं। इनसे अनेकानेक तथ्यों की जानकारी हुई है, किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। श्री अग्रसेन और आग्रेय गणराज्य के विषय में अधिक जानकारी के लिए अत्यधिक अनुसंधान एवं 87 फुट गहरे नीचे तक खुदाई की आवश्यकता है। प्राचीन इतिहास के विद्वानों और पुरातत्व विभाग को इस ओर ध्यान देना चाहिये। जैसा कि श्री प्रभुदयाल मित्तल ने कहा है कि यह किसी जाति अथवा राज्य का प्रश्न न होकर राष्ट्रीय महत्व का प्रश्न है और उसकी खोज के लिए इसी दिशा में प्रयत्न होने चाहिएं।

यदि भारत सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा अग्रोहा के थेहों की खुदाई कराई जाए तो वहां से ऐसे महत्वपूर्ण पुरातत्व अवशेष प्राप्त हो सकते हैं जिनसे आग्रेय गणराज्य के प्राचीन इतिहास तथा श्री अग्रसेन और उनके वंशोत्पन्न अनेक राष्ट्रीय महापुरुषों के प्रामाणिक वृत्त का उद्घाटन संभव है। तभी श्री अग्रसेन जी और उनके वंशजों के आदर्श गणराज्य को भी महत्व प्राप्त हो सकेगा और पता चल सकेगा कि वहां महाराजा अग्रसेन का दबा हुआ खजाना और सोने का बना पलंग है या नहीं?

अग्रोहा निर्माण सम्बन्धी प्रयत्न एवं वर्तमान अग्रोहा

अग्रोहा न जाने कितनी बार बना और उजड़ा? लम्बे समय से खेड़े के रूप में पड़ा वह अपने वंशजों से पुनरुत्थान एवं पुनर्निर्माण हेतु आह्वान करता रहा किन्तु सबसे पहले उसकी टीस को सुना अग्रवालों के पुरोहित स्वामी ब्रह्मानंद ने। उन्होंने स्थान-स्थान पर घूम अग्रवालों में यह भावना भरने का प्रयत्न किया कि अग्रोहा ही अग्रवालों की आदि पितृभूमि है तथा उसका पुनरुद्धार करना उनका कर्तव्य है।

उनकी प्रेरणा एवं प्रयत्नों के फलस्वरूप भिवानी के सेठ भोलाराम डालमिया तथा लाला सांवलराम ने अग्रोहा में एक गौशाला की स्थापना की और 1939 में सेठ रामजीदास बाजोरिया ने यहां एक धर्मशाला तथा महाराजा अग्रसेन का मंदिर बनवा दिया। बाद में हालवासिया ट्रस्ट ने धर्मशाला के समीप ही एक कुआं और प्याऊ बना दिए, जिनके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। महाराजा अग्रसेन का यह प्राचीन मंदिर आज भी अपना विशेष महत्व रखता है।

1918 में सेठ जमनालाल बजाज की प्रेरणा से अग्रवाल महासभा की स्थापना हुई। 1919 में महासभा का अधिवेशन वहां हुआ, अग्रोहा निर्माण का संकल्प व्यक्त किया गया। 1952 में उनके पुत्र स्व. कमलनयन बजाज की अध्यक्षता में पुनः सम्मेलन का आयोजन हुआ किन्तु इस दीर्घावधि में अग्रोहा निर्माण की कोई योजना सिरे न चढ़ सकी।

1965 में मास्टर लक्ष्मीनारायण के सद्प्रयत्नों से अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग एंड टेक्निकल सोसायटी के नाम से जमीन खरीदी गई और एक इंजीनियरिंग कालेज खोलने की योजना बनाई गई। मण्डी बसाने पर भी विचार हुआ किन्तु कोई विशेष उपलब्धि न हो सकी।

अग्रोहाधाम के पुनर्निर्माण के प्रयत्नों को अंततः तब सफलता मिली, जब 5-6 अप्रेल, 1975 को श्री रामेश्वरदास गुप्त के प्रयत्नों से दिल्ली में अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में अग्रोहा निर्माण का संकल्प व्यक्त किया गया और 1975 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन हुआ। 29 सितम्बर 1976 को अग्रोहा में निर्माण कार्य की नींव रखी गई। अग्रोहा में निर्माण कार्यों के लिए महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्निकल सोसायटी ने अपनी 23 एकड़ भूमि विधिवत् अग्रोहा विकास ट्रस्ट को सौंप दी। अग्रोहा में निर्माण कार्यों में जल की बाधा को देखते हुए तत्कालीन वित्त मंत्री श्री रामसरनचंद मित्तल के सहयोग से 1977 में वाटर वर्क्स का निर्माण हुआ। वाटर वर्क्स में नहर से सीधा पानी लाने की व्यवस्था हुई।

अग्रोहा निर्माण कार्यों के लिए एक समिति का गठन हुआ। सर्वप्रथम 22 कमरों की धर्मशाला एवं उसके बरामदे बनाने का कार्य हाथ में लिया गया जिसमें श्री तिलक राज अग्रवाल का विशेष सहयोग रहा। जनवरी 1979 में वसन्त पञ्चमी के शुभ अवसर पर मंदिर-निर्माण कार्य का भी श्रीगणेश कर दिया गया। 31 अक्टूबर 1982 को महाराजा अग्रसेन के मंदिर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल एवं स्व. राजीव गांधी भी पधारे। विशाल मेले का आयोजन भी सम्पन्न हुआ।

बाद में इस मंदिर के बाहर की ओर महाराजा अग्रसेन एवं महारानी माधवी द्वारा लक्ष्मी पूजन की झांकी का निर्माण कराया गया, जिससे मंदिर का आकर्षण और बढ़ गया है।

इसके पश्चात् महालक्ष्मी मंदिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ। श्री फूलचंद अग्रवाल मुम्बई वालों ने इस हेतु पांच लाख ग्यारह हजार की राशि भेंट की। 28 अक्टूबर 1985 को मंदिर में महालक्ष्मीजी की मूर्ति प्रतिस्थापना हुई। इस मंदिर का गुम्बद 180 फुट ऊंचा है। गुम्बद पर श्वेत संगमरमर का पत्थर लगाया जा रहा है। यह मंदिर वास्तव में कलाकृति का अद्‌भुत नमूना है। महालक्ष्मी अग्रवालों की कुलदेवी है और उन्हें यह वरदान प्राप्त है कि जब तक उनके कुल में लक्ष्मी की उपासना होती रहेगी, तब तक उनके वंश में धनधान्य की वृद्धि होती रहेगी। अत: इस मन्दिर का महालक्ष्मी सिद्धपीठ के रूप में अत्यधिक महत्त्व है और उसकी उपासना से मन:सिद्धि होती है। मन्दिर के दोनों ओर शेषशायी भगवान विष्णु और गजग्राह की भव्य झांकियां बनाई गई हैं।

1985 में श्री नंदकिशोर गोइन्का ने निर्माण समिति का अध्यक्ष पद संभाला। आपने अग्रोहा के निर्माण कार्यों को अद्‌भुत गति दी और अपना सम्पूर्ण जीवन इसके लिए समर्पित कर दिया। आज जो कुछ अग्रोहा में दिखाई देता है, उसका अधिकांश श्रेय आपको तथा श्री हरपतराय टांटिया को है। 1997-98 में आपका अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष रूप में निर्विरोध निर्वाचन आपकी लोकप्रियता का द्योतक है।

1985 में ही श्री सुभाषचंद्र गोयल, अध्यक्ष जी.टी.वी. एवं एस्सेलवर्ल्ड ने ट्रस्ट का अध्यक्ष पद संभाला और पिता-पुत्र के संयुक्त प्रयासों एवं जनसहयोग से अग्रोहा निर्माण का कार्य तेजी से आगे बढ़ा।

श्री गोयल के प्रयत्नों से शक्ति सरोवर के समीप लगभग दो एकड़ भूमि खरीदी गई। ट्रस्ट परिसर एवं मंदिर के नये सिरे से नक्शे बनाये गए। लगभग 25 एकड़ भूमि को समतल बना वहां स्थान-स्थान पर सजावटी पौधे, वृक्ष एवं घास लगाया गया। ट्रस्ट के चारों ओर चारदीवारी बनाई गई। अतिथिशाला की पहली मंजिल का निर्माण सम्पन्न हुआ एवं भोजनशाला, रसोईघर आदि बनाए गए।

शक्ति सरोवर का निर्माण कार्य हाथ में लिया गया। आपके प्रयत्नों से 300×400 फुट का विशाल सरोवर बन कर तैयार हो गया। 1986 में भारतमाता मंदिर के संस्थापक स्वामी सत्यमित्रानंद जी के सान्निध्य में शक्ति-सरोवर में 41 पवित्र नदियों का जल भरा गया और शक्ति सरोवर स्नानार्थ तीर्थयात्रियों के लिए खोल दिया गया।

नये नक्शों के अनुरूप शक्ति सरोवर के चारों ओर लगभग 15000 फुट बरामदे और उस पर आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त कमरों का निर्माण कराया गया। इनमें समाज के वृद्ध व्यक्तियों के रहने के लिए वानप्रस्थाश्रम की व्यवस्था की गई। भवन में प्राकृतिक चिकित्सा एवं योगाभ्यास केन्द्र का संचालन भी किया जा रहा है। सरोवर के चारों ओर लम्बी पेड़ियों एवं कंकरीट प्लेटफार्म का निर्माण करा उनमें सफेद मार्बल लगाया गया है, जिससे सरोवर के दृश्य एवं उसकी रमणीयता में वृद्धि हुई है। सुप्रसिद्ध शिल्पी श्री परीड़ा के द्वारा समुद्रमंथन की भव्य झांकी का निर्माण भी कराया गया है, जो रंगबिरंगे फव्वारों से युक्त अतीव सुंदर दृश्य प्रस्तुत करती है।

बाद में अतिथिशाला पर 22 कमरों का द्वितीय मंजिल का निर्माण कलकत्ता के बंधुओं के सहयोग से कराया गया, जिसका उद्‌घाटन 23 अक्टूबर 1991 को सम्पन्न हुआ। भोजनालय में दो विशाल भोजनकक्षों का निर्माण भी कराया गया। एक नये

विशाल भोजनालय का निर्माण होने से ट्रस्ट में पधारने वाले यात्रियों की सुविधा में और वृद्धि हुई है।

ट्रस्ट परिसर में महाराजा अग्रसेन टेक्निकल इंस्टीट्यूट का प्रारम्भ कर 1987 में वहां डी. फार्मा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। स्टाफ क्वार्टस एवं 16 कमरों के छात्रावास का निर्माण कराया गया, किन्तु किन्हीं कारणों से 1995 में इस इन्स्टीच्यूट को बंद कर दिया गया।

ट्रस्ट के प्रयत्नों से अग्रोहा के सर्वतोमुखी विकास के लिए हरियाणा सरकार द्वारा 14 फरवरी 1988 को अग्रोहा विकास प्राधिकरण के गठन की घोषणा की गई।

अग्रोहा निर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज, हस्पताल एवं शोध संस्थान का निर्माण है। इस कार्य हेतु हरियाणा सरकार के सहयोग से 278 एकड़ भूमि अधिगृहीत कर विशाल मेडिकल कॉलेज एवं 1000 शैयाओं से युक्त हस्पताल का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया। हरियाणा सरकार ने इस हेतु 50% अनुदान स्वीकृत किया। विविध चरणों में इसके निर्माण हेतु 100 करोड़ रुपयों की योजना है। मेडिकल कॉलेज में प्रवेश का कार्य 1988-89 में प्रारम्भ कर इसकी विधिवत् कक्षाएं मेडिकल कॉलेज, रोहतक में लगनी प्रारम्भ की गईं। पद्मश्री घनश्यामदास गोयल, श्री बनारसीदास गुप्त, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री ओम प्रकाश जिंदल एवं श्री रामकंवार गुप्ता के अथक प्रयत्नों से इसके दो मंजिला भवन का निर्माण पूरा हो गया और इसमें 7 अगस्त 1994 से विधिवत् कक्षाएं लगनी प्रारम्भ हो गईं। मेडिकल कॉलेज के साथ विशाल हस्पताल का निर्माण करा उसे आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित करने की योजना है। इस हेतु 1000 शैयाओं वाले इस अस्पताल की नींव भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच. डी. देवगौड़ा द्वारा दिसम्बर 1996 में रखी गई। इसके अलावा 30 करोड़ की लागत से इसमें कैंसर रोग के सम्बन्ध में अनुसंधान केन्द्र खोले जाने की भी योजना है। इस क्षेत्र में होने वाले पथरी, मधुमेह, एड्स तथा अन्य रोगों के निदान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में शोध की भी इसमें व्यवस्था की गई है। एशिया के ग्रामीण क्षेत्र में खुलने वाला यह सबसे बड़ा हस्पताल है। इससे अग्रोहा की प्रगति के सम्बन्ध में अनगिनत संभावनाओं के द्वार भी खुले हैं। वस्तुतः शिक्षादान एवं चिकित्सा के क्षेत्र से अग्रवाल समाज की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

इसके अलावा ट्रस्ट परिसर में भगवान मारूति की 90 फुट ऊंची प्रतिमा का निर्माण कार्य हाथ में लिया गया है जिसके समीप ही हनुमानजी का एक मंदिर निर्मित किया गया है। इस मंदिर पर प्रतिवर्ष हनुमान जयंती एवं शरद् पूर्णिमा पर विशाल मेले का आयोजन होता है। यह हनुमानजी की विश्व में सबसे ऊंची प्रतिमा है, ऐसा अनुमान लगाया जाता है।

इस प्रतिभा के समीप ही नौकायन के लिए खुदाई करते समय एक सुंदर, दिव्य हनुमान जी की मूर्ति का प्राकट्य 1997 में अग्रोहा की पवित्र धरती पर होने से इसका महत्त्व अत्यंत बढ़ गया है और श्रद्धालु भक्तों की भारी भीड़ जुटने लगी है।

कुलदेवी महालक्ष्मी मंदिर के दाहिने ओर एक विशाल सुंदर वीणावादिनी मां सरस्वती के मंदिर का निर्माण कराया गया है। इस मंदिर के निर्माण हेतु अहमदाबाद के श्री वेदप्रकाश चिड़ीपाल ने 15 लाख रुपयों की राशि प्रदान की है। इस मंदिर में अग्रोहा महाकुम्भ के अवसर पर 1993 में श्वेतवस्त्रावृत्ता माँ सरस्वती की भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है और इसके भव्य गुम्बद का निर्माण कार्य भी सम्पन्न हो गया है।

मुख्य मंदिर के आगे 120×160 साईज का एक विशाल हाल बनाया गया है, जिसमें 5000 व्यक्ति एक साथ बैठ कर किसी भी कार्यक्रम का आनंद ले सकते हैं। हाल को नाना प्रकार से सुसज्जित किया गया है और इसमें महाराजा अग्रसेन से सम्बन्धित चार झांकियों के निर्माण से इसका महत्व बढ़ गया है। दर्शक बड़ी ही जिज्ञासा से इन दर्शनीय झांकियों को देखते हैं। हाल के मुख्य द्वार पर प्रतिपाल स्वरूप दो विशाल हाथी बनाये गये हैं। इसके साथ-साथ एक विशाल रथ का निर्माण करा उसमें कृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश देते हुए दिखाया गया है, जो अग्रवालों के कर्मयोग का प्रतीक है। मुख्य हाल के बाहर की सीढ़ियों के दोनों ओर रेम्पों पर गंगा-यमुना की दुग्ध धवल प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं, जो बहुत ही चित्ताकर्षक हैं। उनमें लगे रंगीन फव्वारे मन को मोह लेते हैं।

1995 में शक्ति सरोवर पर 68 कमरों की द्वितीय मंजिल का निर्माण कार्य भी पूरा हो गया। परिणामस्वरूप अग्रोहा में पधारने वाले यात्रियों के आवास की कोई समस्या नहीं रही है। तीसरी मंजिल पर सुंदर छतरियों का निर्माण भी कराया गया है।

हनुमान जी की मूर्ति के समीप ही मथुरा के अग्रबंधुओं के द्वारा विशाल ब्रजवासी अतिथि भवन का निर्माण कराया गया है, जिसमें राधाकृष्ण के भव्य विग्रह स्थापित किए गए हैं। यहाँ सत्संग एवं भगवद् लीलाओं की व्यवस्था भी की गई है। इस भवन के बनने से अग्रोहा की लोकप्रियता और बढ़ी है।

थेह के दूसरी ओर माता शीला की मढ़ी पर लाल पत्थर से शक्ति शीला माता का एक भव्य मंदिर स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल के प्रयत्न से अग्रोहा विकास संस्थान, मुम्बई द्वारा बनाया गया है। इस मंदिर में राधाकृष्ण, सीता राम, अष्टभुजी दुर्गा, शंकर-पार्वती, मां शेरों वाली, लक्ष्मी-पार्वती, हनुमानजी आदि के विग्रह बहुत ही भव्य हैं। मंदिर के सामने ही लाला तिलकराज की एक प्रतिमा लगाई गई है तथा उद्यानादि का निर्माण करा इसका पर्यटन स्थल के रूप में विकास किया गया है। स्थापत्यकला की दृष्टि से यह मंदिर उत्तर भारत के मंदिरों में विशेष स्थान रखता है। यहां प्रतिवर्ष भाद्रपद अमावस्या को विशाल मेला लगता है और दूर-दूर से श्रद्धालु भक्तगण अपने बच्चों का मुण्डन संस्कार कराने यहां आते हैं। नयनाभिराम आकर्षक प्राकृतिक दृश्यों के कारण पर्यटन स्थल के रूप में भी इसका महत्त्व बढ़ता जा रहा है।

ट्रस्ट परिसर में स्वतंत्र जलगृह, विद्युतगृह आदि की व्यवस्था की गई है। बच्चों के मनोरंजन के लिए 50 लाख रुपयों की लागत से च्यवन ऋषि के नाम पर अप्पूघर का निर्माण कराया गया है। लाखों रुपये व्यय कर नौका-विहार के लिए नौकायन की व्यवस्था की गई है सम्पूर्ण परिसर को नाना प्रकार के वृक्षों एवं हरियाली आदि से सुसज्जित किया गया है। तीन आधुनिक प्याऊओं का निर्माण भी कराया गया है। स्वतंत्र डाकघर, जलपानगृह, श्रमिकों हेतु क्वाटर्स आदि की व्यवस्था की गई है।

ट्रस्ट की ओर से प्रतिमाह नियमित रूप से मासिक पत्रिका अग्रोहाधाम का प्रकाशन किया जाता है, जिसमें अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवालों सहित पूरे परिवार से संबंधित सामग्री का समावेश किया जाता है। इस पत्रिका ने अल्प समय में ही सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में विशिष्ट स्थान बना लिया है और इसकी प्रसार संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है।

अग्रोहा में एक स्वतंत्र केंटीन एवं भोजनशाला की व्यवस्था की गई है, जहां अग्रोहा पधारने वाले यात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की गई है।

अग्रोहा परिसर में स्वतंत्र डाकघर का भी निर्माण कराया गया है। शीघ्र ही वहां महाराजा अग्रसेन बैंक खोले जाने की भी योजना है।

अग्रोहा के प्रचार-प्रसार के लिए अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा महाराजा अग्रसेन के चित्र, बैज तथा अन्य प्रचार सामग्री का भी पर्याप्त मात्रा में प्रकाशन कराया गया है। अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल से संबंधित उच्च कोटि के ग्रंथों के प्रकाशन की भी व्यवस्था की गई है, जिसमें अग्रोहा-एक ऐतिहासिक धरोहर, वीरता की विरासत, अग्रोहा दर्शन, एक ईंट-एक रुपया, अग्रोहा की कहानी चित्रों की जुबानी, महाराजा अग्रसेन चालीसा, अग्रोहाधाम-कविताओं में, महाराजा अग्रसेन चित्र-गाथा, शेर-ए-पंजाब-लाला लाजपतराय, डॉ. राममनोहर लोहिया श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, लाला देशबंधु गुप्ता आदि मुख्य हैं। इस साहित्य को घर-घर पहुंचाने के लिए एक प्रचार वैन की भी व्यवस्था की गई है।

महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा

महाराजा अग्रसेन के समानता, भाईचारे, लोकतंत्र, अंहिसा, सहयोग, सहिष्णुता, समाजवाद, सहकारिता, प्रेम, एक रुपया-एक ईंट जैसे आदर्शों के मानव-मात्र में प्रचार, उनके संदेशों को घर-घर पहुंचाने तथा अग्रवाल वैश्य समाज को संगठन एवं एकता के सूत्र में आबद्ध कर उनकी गौरव-गरिमा को पुन: स्थापित करने की दृष्टि से कर्मयोगी श्री नंदकिशोर गोईन्का एवं श्री हरपतराय टांटिया के प्रयत्नों से अग्रवाल समाज के 5000 वर्षों के इतिहास में प्रथम बार महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा का शुभारम्भ 15 अप्रैल 1995 को श्रीगंगानगर (राज.) से किया गया। टाटा के एक कैंटनर के पीछे महाराजा अग्रसेन की आशीर्वादात्मक मूर्ति लगाकर उसे रथ का रूप दिया गया है।

इस रथयात्रा का प्रारम्भ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाषचंद्र गोयल द्वारा अग्रध्वज लहरा कर श्री गंगानगर से किया गया और श्री हरपतराय टांटिया, श्री बी.डी. गुप्ता तथा अन्य विशिष्ट अग्रविभूतियों के कुशल संयोजन में यह यात्रा राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, केरल, मुंबई, दिल्ली, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल आदि विभिन्न प्रदेशों का सफलतापूर्वक भ्रमण कर चुकी है और समाज में संगठन एवं एकता की दिशा में यह यात्रा वरदान सिद्ध हुई है।

लगभग 4 वर्ष तक लगातार चल कर 3 लाख किलोमीटर की दूरी पार कर भारत के कोने-कोने में जाकर महाराजा अग्रसेन के आदर्शों का संदेश देने वाली यह यात्रा वास्तव में विश्व में एक नया कीर्तिमान है और इसका श्रेय अग्रोहा विकासट्रस्ट को है।

अग्रोहा में मेले और कुम्भ

अग्रोहा में प्रतिवर्ष भाद्रपद अमावस्या को शीलामाता मंदिर पर भव्य मेला लगता है। वहां घुटने टेक पत्र-पुष्प चढ़ाने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, ऐसी मान्यता है। बच्चों का मुण्डन कराने की भी वहां परम्परा है। श्रद्धालुभक्त दूर-दूर से आकर शीला माता का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

अग्रोहा में शरद पूर्णिमा के अवसर पर अग्रोहा विकास ट्रस्ट की ओर से प्रतिवर्ष विशाल कुम्भ का आयोजन होता है। इस कुम्भ में देश विदेश के अग्रवाल बंधु भारी संख्या में भाग लेते हैं। शक्ति सरोवर में स्नान, महालक्ष्मी, अग्रसेन, सरस्वती की आरती,

पूजा-अर्चन आदि का कार्य चलता है, खुले अधिवेशन में देशभर के अग्रवाल प्रतिनिधि सामाजिक समस्याओं पर विचार विमर्श करते और सामाजिक विचारों पर प्रस्ताव पारित करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान करने वाली अग्रविभूतियों का सम्मान एवं अभिनन्दन किया जाता है। रात्रि को भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम, सम्मेलन, जादू शो आदि के कार्यक्रम होते हैं।

अग्रोहा में सर्वप्रथम कुम्भ का आयोजन 30-31 अक्टूबर 1982 को हुआ और तब से यह क्रम निरन्तर चालू है। अग्रवाल समाज को एकता एवं संगठन के सूत्र में बांधने तथा अपनी पितृभूमि अग्रोहा से भावात्मक तादात्म्य स्थापित करने में इन कुम्भ तथा मेलों का अत्यधिक योगदान रहा है। अग्रोहा में प्रतिवर्ष चैत्र शुदी पूर्णिमा को हनुमान जी का विशाल मेला भी लगता है। इस अवसर पर रात्रि जागरण, हनुमान जी का कीर्तन-भजन, सवामनी के प्रसाद का वितरण आदि कार्यक्रम होते हैं। मेले में हजारों श्रद्धालुगण दूर-दूर से आते हैं। हनुमानजी की मूर्ति के अग्रोहाधाम में प्रकट होने से आशा है कि प्रति वर्ष हनुमान जयंती पर लगने वाला मेला भी शीघ्र ही सालासर मेले के समान महत्व प्राप्त कर लेगा और भक्तगण हनुमान जी की मनौती मना अपनी कामनाओं को पूर्ण कर सकेंगे। अग्रोहा के हनुमानजी की इष्ट-ऋद्धि-सिद्धि के दाता के रूप में ख्याति है।

अग्रोहा पाँचवां धाम

अब तक अग्रवालों में चार धाम ही प्रचलित थे-बद्रिकाश्रम, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम् और द्वारिकापुरी। अब अग्रोहा के रूप में पांचवे धाम का विस्तार हो रहा है। शास्त्रों में 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव' कहकर जन्म देने वाले पिता को ईश्वर से भी बड़ा बताया गया है। जो मनुष्य सब तीर्थधामों का भ्रमण करले किन्तु अपनी मातृ और पितृभूमि का दर्शन नहीं करे तो उसके सब तीर्थों का पुण्य अधूरा ही रहता है। इसलिए भगवान् राम ने स्वर्ण से बनी लंकानगरी पर विजय प्राप्त करने के बाद लक्ष्मण से कहा था कि हे लक्ष्मण! लंका नगरी सोने से बनी है किन्तु मुझे तो अपनी मातृभूमि अयोध्या ही प्रिय लगती है क्योंकि माता तथा मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होते हैं। इसलिए प्रत्येक जाति और धर्म के लोग आदि मूल स्थानों में अपने बच्चों का मुंडन कराने, जात देने जाते और उसके दर्शन कर अपने को अहोभाग्य समझते हैं। अपनी जन्मभूमि का भी व्यक्ति पर एक ऋण होता है, जिसे वह दर्शन कर चुकाता है।

इसलिए ईसाईयों में जो महत्व यरूशलम का, मुसलमानों में मक्का और मदीना का, पारसियों में जरुथष्ट्र का, सिक्खों में अमृतसर एवं ननकाना साहिब, बिश्नोईयों का मुकाम में है, वही महत्व अग्रवालों के लिए अग्रोहा का है। यह उनकी पवित्र जन्मस्थली ही नहीं, पितृस्थली भी है। यहीं उनके पूर्वजों ने जन्म लिया, प्राणों की बाजी लगाई और उसके गौरव को स्थापित किया। उस स्थान की माटी का कण-कण उनके लिए चंदन है।

संसार में कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे अपनी जननी, जन्मभूमि प्रिय नहीं? स्वामी विवेकानंद जब अमेरिका से वापिस अपने देश लौटे तो जहाज से उतरते ही तट पर उसकी रेत में लोटपोट हो अपने को पवित्र करने लगे थे। इजरायली प्रथम युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद जेरूसलम पहुंचे तो वहां की दीवारों से चिपक-चिपक कर रोए थे। शायद ही कोई सिक्ख ऐसा होगा, जिसने पवित्र स्वर्ण मंदिर के दर्शन न किये हों। दुनिया में फैले मुट्ठीभर इजरायलियों ने आज यरूशलम को अपने परिश्रम से चमने गुलजार बना दिया है, क्योंकि यह पितृभूमि होने के कारण उनकी आन-बान-शान है।

अग्रोहा नरेश - महाराजा अग्रसेन

तीर्थधाम अग्रोहा चित्रमय झलकियां

मुख्य मंदिर अग्रोहाधाम

शक्ति सरोवर एवं समुद्र मंथन एक भव्य दृश्य

अग्रोहा के प्राचीन [illegible]

शक्तिशीला माता मंदिर

महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज एवं हस्पताल

अतिथिशाला अग्रोहाधाम

अग्रोहा की कुलदेवी - माँ महालक्ष्मी

द्वितीय खण्ड

अग्रोहाधिप महाराजा अग्रसेन

अग्रोहा और अग्रसेन

अग्रोहा के साथ महाराजा अग्रसेन का नाम गहन रूप से जुड़ा है। वे अग्रोहा राज्य के संस्थापक ही नहीं, अपितु उन महान विभूतियों में थे, जो अपने सर्वजनहिताय कृत्यों द्वारा युग-युग तक अमर हो जाते हैं। संस्कृत में एक कहावत है-''कीर्ति यस्य: स जीवति' (जिसका यश है, वही जीवित है)। कीट-पतंगों की तरह इस विश्वरूपी रंगमंच पर प्राणी आते हैं, चले जाते हैं। जातियां उत्पन्न और विकसित होती हैं और काल के गाल में समा जाती हैं। यदि कुछ शेष रहता है तो उनके कार्यों की यश गाथा। इसी प्रकार की अमर विभूति थे-महाराजा अग्रसेन।

महाराजा अग्रसेन हजारों वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए, किन्तु आज भी अपनी प्रजावत्सलता, धार्मिकता, न्याय, दानशीलता, लोकोपकारी प्रवृत्तियों और श्रेष्ठ आदर्शों के कारण अमर हैं। आज के इस प्रगतिशील और विश्वबंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत वैज्ञानिक युग में विकसित शासन प्रणालियां भी नवागंतुक को एक ईंट तथा एक रूपया देकर अपने ही समान बना लेने की शासन प्रणाली को विकसित करने में सक्षम नहीं हो सकी हैं, जबकि उस युग में महाराजा अग्रसेन ने सहकारिता और समता के आधार पर भेदभाव रहित एक आदर्श समाज और राज्य की रचना कर इतिहास में अपना गौरवान्वित स्थान बनाने में सफलता प्राप्त की। वास्तव में महाराजा अग्रसेन के गुणों, आदर्शों व महान कार्यों को जाति व काल की सीमाओं में आबद्ध नहीं किया जा सकता। वे अपने सत्कार्यों द्वारा समस्त मानव जाति को युगों-युगों तक प्रेरणा देते रहेंगे।

अधिकांश प्राचीन महापुरुषों का अवतरण, अस्तित्व और उनका कार्यकाल ऐतिहासिक प्रमाणों एवं तथ्यों के अभाव में विवादास्पद रहता आया है। खेद है कि प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की क्रमबद्ध परम्परा के न होने एवं विदेशी आक्रांताओं द्वारा इतिहास की अधिकांश सामग्री नष्ट अथवा क्षतविक्षत कर दिए जाने के कारण अनेक अमूल्य तथ्य नष्ट हो गए अथवा उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में पुरातत्व अवशेषों, लोकगाथाओं, जनश्रुतियों और किंवदंतियों के द्वारा जो जानकारी प्राप्त होती है, उसी के माध्यम से महापुरुषों के जीवन, कार्यों, उपलब्धियों आदि का मूल्यांकन संभव होता है।

महाराजा अग्रसेन के सम्बन्ध में भी कोई विशेष ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं मिलते। उनका उल्लेख महालक्ष्मीव्रत कथा, श्री मद्भागवत के उपाख्यान उरूचरितम, जनश्रुतियों

तथा प्राचीन संग्रहीत वंशावलियों में ही मिलता है। उनकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतैक्य नहीं है। डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त की मान्यता है कि "अग्रवंश वैश्यानुकीर्तनम् प्रक्षिप्त ग्रंथ है तथा उरूचरितम् की प्रामाणिकता संदिग्ध है किन्तु डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार का मत है कि "अग्रवंशवैश्यानुकीर्तनम् तथा उरूचरितम् दोनों ही ग्रंथ वैश्यकाल की प्राचीन अनुश्रुति पर आधारित हैं जिनकी कल्पना और निर्माण कोई कुशल पंडित नहीं कर सकता। अत: जब तक महालक्ष्मी व्रत कथा के विरुद्ध कोई ठोस साक्ष्य नहीं मिल जाता, तब तक उसे अप्रामाणिक मानना तर्कसंगत नहीं है। दोनों ही ग्रंथों में जिन मान्यताओं, परम्पराओं का उल्लेख मिलता है, वे हजारों वर्ष बाद आज भी अग्रवालों की रीति-रिवाज और संस्कारों का अंग बनी हुई हैं। अत: उन पर अविश्वास का कारण नहीं है। यह सुनिश्चित है कि प्राचीन समय में आग्रेयगण (अग्रोहा) का अस्तित्व था और उसकी स्थापना अग्र या अग्रसेन नामक किसी राजन ने की थी। अत: अग्रसेन का अस्तित्व स्वयं प्रमाणित है। हो सकता है, अग्रोहा के थेहों की खुदाई से इस प्रकार के अन्य प्रमाण भी मिल जाएं किन्तु इस प्रकार के प्रमाणों के अभाव में महाराजा अग्रसेन का अस्तित्व नकारना सत्य को झुठलाना मात्र है। अग्रसेन के सम्बन्ध में जो गाथाएं, अनुश्रुतियां, लोक कथाएं प्रचलित हैं, वे उनके अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं और उन्हें अविश्वसनीय मानना भारत की महान परम्पराओं को विस्मृत करना है। ये गाथाएं प्राचीन इतिहास की अनमोल थाती अपने में संजोये हैं और इसी संदर्भ में महाराजा अग्रसेन ऐतिहासिक पुरुष हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सबसे पहले महाराजा अग्रसेन का जीवन चरित्र लिखते हुए अग्रवालों की उत्पत्ति नामक एक लघु पुस्तिका लिखी। इसका आधार उन्होंने भविष्यपुराणोक्त महालक्ष्मी व्रत कथा को बनाया, जो उनके कथनानुसार उन्हें एक पुस्तकालय में मिली थी। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने उसी का उल्लेख करते हुए लिखा है कि महालक्ष्मी व्रत कथा के नायक राजा अग्र हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यही राजा अग्र बाद में अग्रसेन के नाम से पुकारे जाने लगे। इसी अग्रनाम के कारण उनके वंश का नाम अग्रवंश पड़ा होगा और उन्होंने जो नगर बसाया, उनका नाम भी बाद में आग्रेय ही पड़ा।

जन्म

महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार महाराजा अग्रसेन का जन्म प्रतापनगर के राजा धनपाल के वंश की छटी पीढ़ी में राजा वल्लभ के घर हुआ। उनके जन्मते ही सारे राज्य में अपूर्व आनंद छा गया। वंदनवार बंधे, ध्वजा फहराई गई, बाजे बजने लगे और घर-घर बधाईयां दी जाने लगी। स्त्रियों ने मंगलाचरण किए। मिठाईयां बांटी गई और प्रजा ने एक नए आनन्द और उल्लास का अनुभव किया। ब्राह्मणों ने राजपुत्र को चक्रवर्ती होने का आशीर्वाद दिया। इस प्रकार कई दिनों तक निरन्तर राज्य में हर्षोल्लास चलता रहा। जन्म के 12वें दिन शिशु का नामकरण हुआ। नाम अग्र रखा गया। इसी खुशी में महाराजा वल्लभ ने यमुना नदी के किनारे एक नये नगर की स्थापना की, जिसका नाम अग्रपुर रखा गया, जो बाद में आगरा नाम से प्रसिद्ध हुआ। अग्रसेन का लालन-पालन बड़े लाड़-चाव के वातावरण में हुआ। वे बचपन से ही बड़े प्रतिभाशाली थे। बड़े होने पर प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार उनकी शिक्षा का प्रबंध किया गया। अग्रसेन ने बचपन में ही वेदशास्त्र, अस्त्र-शस्त्र, राजनीति, अर्थनीति आदि का ज्ञान प्राप्त किया। वे सभी विद्याओं में पारंगत थे।

विवाह

सब प्रकार से सुयोग्य होने पर महाराजा अग्रसेन का विवाह हुआ। उनके विवाह के सम्बन्ध में जो कथा मिली है, वह इस प्रकार है-

एक समय नागलोक से नागों का राजा कुमुद अपनी कन्या माधवी को लेकर भूलोक में आया। इन्द्र ने उसे चाहा और उसने नागराज से वह कन्या मांगी, पर नागराज ने सब प्रकार से अग्रसेन को सुयोग्य जानकर उसका विवाह अग्रसेन से कर दिया। यही माधवी अग्रवालों में पूजनीय है और माता के समान उसकी प्रतिष्ठा है। सुप्रतिष्ठित नागवंश से संबंन्धित होने के कारण अग्रवाल लोग आज भी सर्पों को मामा कहते हैं। उनके घरों में नाग पंचमी के दिन सर्पों की पूजा होती है और उन्हें दूध पिलाया जाता है। विवाह के समय सांप के फन के आकार की चुण्डी बांधी जाती है। यह नाग जाति कौन थी और उसका मानव जाति से क्या सम्बन्ध था, इस विषय में हम आगे अलग से प्रकाश डालेंगे, किन्तु यह तथ्य सुनिश्चित है कि महाराजा अग्रसेन का विवाह एक महान् वैभवशाली नागवंश में अत्यन्त ही रूपवान, गुणशील कन्या के साथ हुआ। इस वैवाहिक संबन्ध के कारण महाराजा अग्रसेन और देवराज इन्द्र के मध्य शत्रुता हो गई। ब्रह्मा ने बीच में पड़ युद्ध को रोका।

ऐतिहासिक तथ्यों से यह निर्विवाद प्रमाणित हो गया कि नागजाति भारत की अत्यन्त शक्तिशाली जातियों में से एक थी। इस जाति में अनेक वंश हुए, जिन्होंने देश के विभिन्न भागों में शासन किया। ये नागवंशीय राजा वास्तव में मनुष्य ही थे, न कि जानवर विशेष, जैसा कि किंवदंतियों में पाया जाता है।

देवराज इन्द्र के साथ यह युद्ध की घटना कुछ अटपटी सी लगती है। सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में इस प्रकार की अलौकिक घटनाएं भरी पड़ी हैं। अत: इसका तार्किक विश्लेषण उपयुक्त होगा। इन्द्र वायु लोक का राजा है, जिसके अधीन वर्षा का होना माना गया है। भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि का सम्बन्ध सदा वर्षा से रहा है। अतिवृष्टि या अनावृष्टि से यहां दुर्भिक्ष या अकाल जैसी स्थिति उत्पन्न होती रहती है। महाराजा अग्रसेन के राज्य में भी इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने पर उन्होंने दृढ़तापूर्वक अकाल या दुर्भिक्ष का सामना किया। इसे ही सांकेतिक या प्रतीक रूप में इन्द्र से युद्ध कहा जा सकता है।

श्री सालिक राम अग्रवाल के शब्दों में-'यह युद्ध आज भी चल रहा है। अनावर्षण, अतिवृष्टि आदि की स्थिति में बांध, नहर आदि से उन पर किसी न किसी रूप में विजय प्राप्त होती है। राजा अग्रसेन के राज्य में अकाल पड़ा, उन्होंने अकाल पर विजय पाई, यही इन्द्र से युद्ध और सन्धि का तात्पर्य है।'

महाराजा अग्रसेन का काल

अग्रसेन उपाख्यानम् एवं उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है कि महाराजा अग्रसेन महाभारत के समकालीन थे। उनका काल द्वापर का अंतिम चरण और कलियुग का प्रारम्भ था। इस सम्बन्ध में महाभारत के निम्न श्लोक को उद्धृत किया जा सकता है, जो राजा कर्ण के दिग्विजय प्रसंग में आया है-

भद्रान, रोहितकांश्चैव आग्रेयानमालवानपि।
गणान् सर्वान् विनिर्जित्यनीतिकृत प्रहसन्निव॥

महाभारत वन पर्व-255:20

विवाह

सब प्रकार से सुयोग्य होने पर महाराजा अग्रसेन का विवाह हुआ। उनके विवाह के सम्बन्ध में जो कथा मिली है, वह इस प्रकार है–

एक समय नागलोक से नागों का राजा कुमुद अपनी कन्या माधवी को लेकर भूलोक में आया। इन्द्र ने उसे चाहा और उसने नागराज से वह कन्या मांगी, पर नागराज ने सब प्रकार से अग्रसेन को सुयोग्य जानकर उसका विवाह अग्रसेन से कर दिया। यही माधवी अग्रवालों में पूजनीय है और माता के समान उसकी प्रतिष्ठा है। सुप्रतिष्ठित नागवंश से संबंन्धित होने के कारण अग्रवाल लोग आज भी सर्पों को मामा कहते हैं। उनके घरों में नाग पंचमी के दिन सर्पों की पूजा होती है और उन्हें दूध पिलाया जाता है। विवाह के समय सांप के फन के आकार की चुण्डी बांधी जाती है। यह नाग जाति कौन थी और उसका मानव जाति से क्या सम्बन्ध था, इस विषय में हम आगे अलग से प्रकाश डालेंगे, किन्तु यह तथ्य सुनिश्चित है कि महाराजा अग्रसेन का विवाह एक महान् वैभवशाली नागवंश में अत्यन्त ही रूपवान, गुणशील कन्या के साथ हुआ। इस वैवाहिक संबन्ध के कारण महाराजा अग्रसेन और देवराज इन्द्र के मध्य शत्रुता हो गई। ब्रह्मा ने बीच में पड़ युद्ध को रोका।

ऐतिहासिक तथ्यों से यह निर्विवाद प्रमाणित हो गया कि नागजाति भारत की अत्यन्त शक्तिशाली जातियों में से एक थी। इस जाति में अनेक वंश हुए, जिन्होंने देश के विभिन्न भागों में शासन किया। ये नागवंशीय राजा वास्तव में मनुष्य ही थे, न कि जानवर विशेष, जैसा कि किंवदंतियों में पाया जाता है।

देवराज इन्द्र के साथ यह युद्ध की घटना कुछ अटपटी सी लगती है। सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में इस प्रकार की अलौकिक घटनाएं भरी पड़ी हैं। अत: इसका तार्किक विश्लेषण उपयुक्त होगा। इन्द्र वायु लोक का राजा है, जिसके अधीन वर्षा का होना माना गया है। भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि का सम्बन्ध सदा वर्षा से रहा है। अतिवृष्टि या अनावृष्टि से यहां दुर्भिक्ष या अकाल जैसी स्थिति उत्पन्न होती रहती है। महाराजा अग्रसेन के राज्य में भी इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने पर उन्होंने दृढ़तापूर्वक अकाल या दुर्भिक्ष का सामना किया। इसे ही सांकेतिक या प्रतीक रूप में इन्द्र से युद्ध कहा जा सकता है।

श्री सालिक राम अग्रवाल के शब्दों में–'यह युद्ध आज भी चल रहा है। अनावर्षण, अतिवृष्टि आदि की स्थिति में बांध, नहर आदि से उन पर किसी न किसी रूप में विजय प्राप्त होती है। राजा अग्रसेन के राज्य में अकाल पड़ा, उन्होंने अकाल पर विजय पाई, यही इन्द्र से युद्ध और सन्धि का तात्पर्य है।'

महाराजा अग्रसेन का काल

अग्रसेन उपाख्यानम् एवं उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है कि महाराजा अग्रसेन महाभारत के समकालीन थे। उनका काल द्वापर का अंतिम चरण और कलियुग का प्रारम्भ था। इस सम्बन्ध में महाभारत के निम्न श्लोक को उद्धृत किया जा सकता है, जो राजा कर्ण के दिग्विजय प्रसंग में आया है–

भद्रान, रोहितकांश्चैव आग्रेयानमालवानपि।
गणान् सर्वान् विनिर्जित्यनीतिकृत प्रहसन्निव॥

महाभारत वन पर्व-255:20

इस श्लोक में जिस आग्रेयानगण का उल्लेख हुआ है, वह आग्रेयगण ही था। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकर, डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त, डॉ. राधा कमल मुकर्जी आदि ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि श्लोक में आग्रेयान गण की जो स्थिति दी गई है, वह वर्तमान अग्रोहा की भौगोलिक स्थिति से मिलती है।

इसके अलावा काठक संहिता, आपस्तंब श्रोत सूत्र तथा पाणिनी व्याकरण में आग्रेयगण का उल्लेख इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि अग्रोहा-जिसका प्राचीन नाम आग्रेयगण था, महाभारतकाल में उसका अस्तित्व था। इसका प्रमाण वे सिक्के भी हैं, जिन पर "अग्रोदके अगाच्च जनपदस" लिखा हुआ है।

इससे पहले के ग्रंथों में आग्रेयगण का कोई विशेष प्रामाणिक उल्लेख नहीं मिलता। इससे स्पष्ट है कि महाराजा अग्रसेन इसी समय में हुए और उन्होंने अग्रोहा राज्य की स्थापना की। इस सम्बन्ध में श्री सालिकराम का यह कथन उचित जान पड़ता है-

"महाराजा अग्रसेन जिस काल में हुए, उस काल की राजनीतिक व्यवस्था क्या थी? यह प्रश्न उनके कालक्रम के बारे में अधिक संगत जान पड़ता है। उरूचरितम तथा महालक्ष्मी व्रतकथा में राजा अग्रसेन के राज्य की जो व्यवस्था दी गई है, वह लोकतंत्रीय प्रणाली पर आधारित राजतंत्रीय व्यवस्था थी। अग्रोहा से प्राप्त सिक्कों में भी जनपद युगीन व्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं। महाभारत के भीष्म पर्व के 9वें अध्याय में 250 जनपदों के नाम स्पष्ट रूप से बताये गये हैं, जिससे पता चलता है कि इस प्रकार की व्यवस्था उस युग में थी।"

"अग्रवैश्यवंशानुकीर्तनम्" के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने कलियुग संवत् के 108वें वर्ष तक राज्य किया और अंत में वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन अपने पुत्र विभू को राजगद्दी पर अभिषिक्त किया। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकर का मत है कि यह सही प्रतीत होता है कि कलियुग संवत् 108 में राजा अग्रसेन अपना राज्य विभू को देकर विरक्त हो गए। उनके राज्य का काल द्वापर युग की अंतिम वेला और कलियुग का प्रारम्भ था। स्पष्ट है कि इसी समय में अग्रसेन गद्दी पर बैठे और उन्होंने नये राज्य अग्रोहा की स्थापना की। यही वह काल था जब कुरुवंश की शक्ति क्षीण होने लगी थी और भारत में नये-नये गणराज्यों का निर्माण हो रहा था। छोटे-छोटे राजा किसी विशेष भू-भाग को संगठित कर अपने राज्य स्थापित करने लगे थे।

उरूचरितम् की कथा भी इसी काल से संबंधित है। वासुकि नागवंश का अस्तित्व भी इसी काल में विद्यमान था, जिसमें महाराजा अग्रसेन का विवाह हुआ था।

एक अन्य तथ्य भी है। महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास थे। उन्होंने अपने महाकाव्य में 18 संख्या को प्रधानता दी। 1+8 का योग 9 होता है। नौ सबसे बड़ी और पूर्ण संख्या मानी गई। इसलिए महाभारत की अधिकांश घटनाएं 9 से संबंधित हैं। महाभारत के 18 पर्व हैं। महाभारत का युद्ध 18 दिन हुआ, दोनों दलों की सैन्य संख्या 18 अक्षोहिणी थी, श्रीमदभागवत् में भी 18 अध्याय हैं, पुराण संख्या भी 18 है, श्रीमद्भागवत् के श्लोकों की संख्या भी 18000 है। महाराजा अग्रसेन की जीवन घटनाओं से भी इस संख्या का मेल खाता है, जैसे उनके द्वारा 18 यज्ञों का आयोजन, राज्य का 18 गणों में विभाजन, 18 पुत्र, 18 रानियां, 18 गोत्र आदि। इससे अनुमान लगता है कि महाराजा अग्रसेन इसी परम्परा के काल से सम्बद्ध रहे होंगे।

इन सब साक्ष्यों के आधार पर महाराजा अग्रसेन का काल द्वापर का अंत और कलियुग का प्रारम्भ सिद्ध होता है और उन्होंने कलियुग सम्वत् के 108वें वर्ष तक राज्य किया। विभिन्न मतमतान्तरों के होते हुए भी यह काल वर्तमान अवधारणाओं के अनुसार अब से लगभग 5122 (सन् 1998) वर्ष पूर्व निर्धारित होता है और इसे मानना ही समीचीन होगा। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने भी इसी आधार पर 1976 में महाराजा अग्रसेन की 5100वीं जयंती पर डाक टिकट प्रकाशन की मांग की थी और भारत सरकार ने उसे मान्यता देते हुए डाक टिकट प्रकाशित की थी। श्री बालचंद मोदी अपने इतिहास में लिखते हैं कि "महाराजा अग्रसेन का जन्म काल चाहे द्वापर के शेष में हो या कलि के प्रथम चरण के आरम्भ में अथवा अन्य कोई समय रहा हो। इसमें संदेह नहीं कि वह समय बहुत अच्छा था। हिन्दू-जाति का राज्य था। देश में अधर्म न था, धर्म था, विद्या का प्रचार था और चारों वर्ण अपने-अपने कर्म से रहते थे। गुण-कर्म की इज्जत थी। सच्चे की कदर थी और सब लोग सुखी और संतुष्ट थे। ब्राह्मण त्यागी थे, क्षत्रिय रक्षक थे, वैश्य सच्चे थे और शुद्र विनयी थे। ऋषि-मुनि विद्वान थे और उन्हीं की आज्ञा से राजा राज्य करते थे। सब वर्णों में परस्पर प्रेम था और धर्म ही लक्ष्य था। धर्म के निमित्त ही सब कार्य किये जाते थे और अत्याचार, दुराचार या व्यभिचार कोई नहीं जानता था। वीरता और बल में भारतवर्ष की उस समय कोई सानी नहीं थी। देश-देशान्तर के लोग भारत आकर यहां के विश्वविद्यालयों में पढ़ते थे और भारत की कीर्ति दिग्दिगन्त में फैली हुई थी।

पुरुषों में बहु-विवाह प्रचलित हो गया था, पर स्त्रियों का सतीधर्म प्रकाशमान था। पुरुषों में भी धर्म का भाव था, विद्या थी और बल था। भारत के तेजस्वी नेत्रों से कोई देश अपने नेत्र नहीं मिला सकता था। सर्वत्र धर्मराज्य का बोलबाला था।"

कतिपय विद्वानों ने भाटों के गीतों के अनुसार उन्हें त्रेतायुग का बताया है। वे इसके समर्थन में निम्न पंक्तियां उद्धृत करते हैं-

अश्विनी शुक्ल प्रतिपक्ष त्रेता पहले चर्ण।
अग्रवाल उत्पन्न हुए, सुनि भाखे शिव कर्ण॥

इन पंक्तियों के अनुसार परशुराम की अग्रसेन से भेंट हुई। उन्होंने अग्रसेन को क्षत्रिय धर्म का परित्याग करने को कहा किन्तु उनके द्वारा इन्कार करने पर उन्होंने अग्रसेन को श्राप दे दिया किंतु इस प्रसंग के पीछे किसी प्रकार का कोई ठोस आधार न होने से इसे मात्र भाटों की किंवदन्ती ही माना जा सकता है।

राज्य भार

अग्रसेन बचपन से किशोरावस्था को प्राप्त हुए और नाना प्रकार से प्रजा का रंजन करने लगे। वे जब सब प्रकार से राज्य का शासन करने योग्य हो गए तो उनके पिता ने प्रसन्न होकर सन्यास ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की। उस समय वर्णाश्रम धर्म का पालन होता था। अग्रसेन की अवस्था उस समय 35 वर्ष हो चुकी थी। वे सब प्रकार से सुयोग्य थे, इसलिए प्रजा ने भी महाराजा की इच्छा का स्वागत किया। महाराजा ने शुभ मुहूर्त में महाराजा अग्रसेन का राजतिलक किया और स्वयं वन में तपस्या करने चले गए और कुछ काल बाद वहीं उनका शरीर शांत हो गया।

महाराजा अग्रसेन ने राजपाट पाकर कई बार विजय-यात्राएं की और अपने राज्य का विस्तार किया। इनके अधीन चम्पावती आदि अनेक माण्डलिक राज्य थे। उनका प्रताप दिन दुगुना और रात चौगुणा बढ़ रहा था, जिसे देखकर प्रजा बहुत प्रसन्न थी।

अग्रोहा राज्य स्थापना की कथा

अपने पिता की मुक्ति हेतु महाराजा अग्रसेन ने गया जाकर पिण्डदान किया। कहते हैं, राजा वल्लभ ने उनके द्वारा दिया गया पिण्डदान नहीं लिया। अग्रसेन इससे बहुत दुखी हुए। धर्मप्रिय होने के कारण ब्राह्मणों एवं अन्य मंत्रिगण से उन्होंने परामर्श किया तो मालूम हुआ कि-

एक बार राजा वल्लभ की सवारी निकल रही थी। उसी समय एक सुन्दर ब्राह्मण कन्या जल में स्नान कर रही थी। राजा को उसका सौन्दर्य बहुत पवित्र लगा। वह सोचने लगे कि मेरी कन्या भी इसी प्रकार की होती तो कितना अच्छा होता? राजा को वहां रुका देख, ब्राह्मण कन्या ने अकारण ही उन पर शंका कर श्राप दे दिया कि तुमने एक परायी स्त्री पर कुदृष्टि डाली है, अत: तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी।

महाराजा अग्रसेन बड़े चिन्तित हुए। पंडितों ने बताया कि यदि वे लोहागढ़ में जाकर पिण्डदान करें तो महाराजा को मुक्ति हो सकती है। लोहागढ़ पंजाब का ही एक स्थान है। महाराजा ने ब्राह्मणों के कथनानुसार वहीं जाकर पिंडदान किया। उनके पिंडदान से महाराजा वल्लभ को मुक्ति मिली। महाराजा अग्रसेन बड़े ही प्रसन्न हुए।

पिण्डदान कर राजधानी लौटते समय जब महाराजा अग्रसेन एक जंगल से होकर निकल रहे थे तो एक अद्‌भुत घटना घटी। एक सिंहनी उसी समय प्रसव कर रही थी, अग्रसेन जी के लाव-लश्कर से उसके प्रसव में बाधा पड़ी। सिंह के क्रुद्ध बच्चे ने जन्म लेते ही राजा के हाथी पर प्रहार किया और अकल्पनातीत शौर्य को प्रदर्शित किया। यह देखकर राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। राजा को आश्चर्य में पड़ा देख राजा के साथ चल रहे धर्माचार्यों ने कहा कि वास्तव में यह स्थान वीर-प्रसूता है। आप अपने राज्य की राजधानी भी यहीं बनायें। महाराजा अग्रसेन उस भूमि के महान शौर्य, पराक्रम, प्राकृतिक वैभव एवं धर्माचार्यों के परामर्श से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने वहीं अपनी राजधानी बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी पुरानी राजधानी का प्रबंध अपने छोटे भाई को सौंप दिया और स्वयं अग्रोहा में नई राजधानी बनाकर राज्य करने लगे।

महाराजा अग्रसेन का अग्रोहा में राजधानी बनाने का यह कार्य सर्वथा बुद्धिमता पूर्ण एवं तत्कालीन परिस्थितियों में अनुकूल था। पंजाब की शस्य श्यामला भूमि एवं वहां की समृद्धि सदैव से विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रही है और इसी समृद्धि और वैभव से आकर्षित होकर उस पर समय-समय पर आक्रमण होते रहे हैं। अत: इस प्रकार के आक्रमणों के मध्य प्रजा के लिए सुख-शान्ति पूर्ण राज्य अथवा उनके चहुंमुखी विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। अग्रोहा को इन आक्रमणों से दूर रखने का एक मात्र उपाय यही था-उसे जलमार्ग से दूर राज्य की भीतरी सीमाओं से स्थापित करना ताकि आक्रमणकारी वहां पहुंचने का साहस न कर सकें। यह भी आवश्यक था कि वहां पानी के स्रोत विद्यमान हों, ताकि प्रजा को पीने के लिए पानी और खेतीबारी के लिए जल उपलब्ध हो सके।

महाराजा अग्रसेन ने इसी हेतु बीहड़ जंगल को अपनी राजधानी के लिए चुना क्योंकि जंगल में जमीन के नीचे पानी के स्रोत पर्याप्त मात्रा में रहते हैं। साथ ही उन्होंने वहां विशाल तालाब बनवाया। संभवत: जल अथवा तालाब के इसी महत्व को देखते हुए उन्होंने अग्रोहा का नाम अग्रोदक रखा, जिसका अर्थ है-अग्र का तालाब। कालान्तर में यही नाम अग्रोहा रूप में परिवर्तित हो गया।

महाराजा अग्रसेन द्वारा 18 यज्ञों का आयोजन

इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने सुखपूर्वक राज्य किया और अपने राज्य का विस्तार किया। उनका राज्य सब प्रकार की सुख समृद्धि से परिपूर्ण था, किसी प्रकार का अभाव जन को न था। धर्म में उनकी अगाध श्रद्धा थी। धर्म उनके लिए प्रजा में नैतिक अभ्युदय का स्रोत था। उस समय बड़े-बड़े राजा धर्म सिद्धि के लिए विशाल अश्वमेध यज्ञों का आयोजन करते थे। ये यज्ञ उनकी प्रतिष्ठा के मापदण्ड तो थे ही, राष्ट्र की भावनात्मक एकता एवं जन-जन से जुड़ने के माध्यम भी थे। सम्पूर्ण राज्य उनमें भाग लेता था और पवित्र द्रव्यों की आहूति द्वारा अपने तथा मानवमात्र के कल्याण की कामना करता था। इससे राजा एवं प्रजा दोनों की चित्तवृत्तियां शुद्ध होतीं, जिससे समाज में सदाचार की वृद्धि होती थी। लोग मानसिक व्यभिचार एवं अनाचार से बचते, उनकी भावनाएं पवित्र होतीं और सम्पूर्ण राष्ट्र अंधकार से प्रकाश, अनय से नय की ओर बढ़ता।

इस प्रकार यज्ञों के माध्यम से जहां उन्होंने अपने राज्य की प्रजा को सदाचार और नैतिकता की ओर अग्रसर करने का प्रयास किया, वहां गोत्रों के प्रवर्तन द्वारा अग्रोहा राज्य की जनता को एकता एवं संगठन के सूत्र में आबद्ध किया। यह उनकी अद्‌भुत संगठन क्षमता का ही परिणाम था कि शताब्दियां व्यतीत हो जाने पर आज भी अग्रवाल जाति संगठित रूप में विद्यमान है और वह अपने श्रेष्ठ चारित्रिक गुणों द्वारा राष्ट्र एवं मानव मात्र के कल्याण तथा श्रीवृद्धि में संलग्न है।

यज्ञ के अधिष्ठाता स्वयं महाराजा बने। ब्रह्मा का आसन गर्ग मुनि ने ग्रहण किया। दूर-दूर स्थानों एवं राज्यों को यज्ञ का निमंत्रण भेजा गया। यज्ञ में बड़े-बड़े मुनि, विद्वान और मनीषी सम्मिलित हुए। अतिथि सत्कार का कार्य शूरसेन ने संभाला।

कहते हैं, 17 यज्ञ पूर्ण विधि-विधान पूर्वक निर्विघ्न सम्पन्न हो गए किन्तु 18वें यज्ञ के पूर्व महाराजा के मन में की जाने वाली पशु बलि को लेकर द्वंद्व पैदा हो गया। उन्होंने सोचा कि यज्ञ जैसे पवित्र कार्य में पशु बलि जैसा अपवित्र कार्य क्यों? वैश्यों का कर्म तो पशुपालन और उनकी रक्षा है, फिर उनकी बलि क्यों दे?

इन प्रश्नों ने उनके मानस को मथ कर रख दिया। अंत में सत्य, न्याय और अहिंसा की विजय हुई। महाराजा अग्रसेन ने यज्ञ में पशु बलि न करने का निश्चय किया।

यज्ञ के पुरोहितों एवं विशिष्ट जनों ने महाराजा को समझाया कि अब केवल एक यज्ञ शेष बचा है, उसे पूरा कर लिया जाये। इसके बाद भविष्य में पशु-बलि का निषेध कर दिया जाये। किन्तु महाराजा टस से मस नहीं हुए। उन्होंने उपस्थित सभासदों को समझाते हुए कहा कि मनुष्य जितना पाप कर्म से बच सके, उतना ही श्रेष्ठ है। पशु हिंसा दुष्कर्म ही नहीं, दुष्पाप भी हैं। यदि हम किसी को जीवनदान नहीं दे सकते, तो उनके

प्राण लेने का हमें कोई हक नहीं है। भगवान ने वैश्य जाति को पशु-रक्षा एवं पालन के लिए बनाया है, न कि उनके प्राण लेने के लिए। यज्ञ श्रेष्ठ कर्म है, उसमें पशु-बलि अत्यंत अपवित्र है। हाय! मैंने जो अब तक दुष्कर्म किया, उसका पता नहीं, कितना प्रतिफल अगले जन्म में भुगतना पड़ेगा? मैं भी कैसा पापी हूं, जो मेरे मस्तिष्क में यह विचार पहले न आया।

सबने देखा महाराजा अत्यन्त ही व्यथित मुद्रा में थे। महाराजा का निश्चय अटल था। सबने कहा-यज्ञ का समय टलता जा रहा है। महाराज जल्दी कीजिए, जैसा आप उचित समझें, कीजिए।

महाराजा अग्रसेन के इन विचारों से महाराजा शूरसेन और सभी व्यक्ति बड़े प्रभावित हुए। सबके मन में हिंसा के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो गई। महाराजा अग्रसेन ने यज्ञ स्थल से घोषणा करते हुए कहा कि-

अहं स्वभ्रातृन् पुत्रांश्च तथां कन्या: कुटुम्बिन:
इदमेवोपदिशामि न कश्चिद्धधमाचरेत्॥

यज्ञ में पशु हिंसा से मुझे घृणा हो गई है। अत: मैं अब अपने समस्त बंधु-बांधवों, पुत्रों, कन्याओं, कुटुम्बियों तथा वैश्य कुलों को यही उपदेश देता हूं कि वे कोई हिंसा न करें।

महाराजा अग्रसेन का यह हृदय परिवर्तन उनके अहिंसाप्रिय, स्नेहिल स्वभाव के अनुकूल ही था। उन्होंने अपने सिद्धान्तों की बलि देते हुए किसी ऐसे अधार्मिक कार्य को करने से सर्वदा मना कर दिया, जिससे मनुष्यों को तो क्या, मूकजीवों को भी कष्ट की अनुभूति होती हो। यह हिंसा पर अहिंसा, क्रूरता पर करूणा एवं स्नेह तथा पाशविकता पर मानवता की श्रेष्ठतम विजय थी।

महाराजा अग्रसेन की इस विचारधारा का अग्रवाल एवं वैश्य जाति पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। यह उनकी विचारधारा का ही प्रभाव था कि आज भी अग्रवाल जाति निरामिष, शाकाहारी, अहिंसक एवं धर्मपरायण जाति के रूप में प्रतिष्ठित है। आज जबकि विश्व के सम्पूर्ण राष्ट्र और विदेशों में भी अहिंसा की ओर प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, उससे महाराजा अग्रसेन की दूरदर्शिता का परिचय मिलता है।

महाराजा अग्रसेन के पूर्वज तथा उनकी वंशावली

विभिन्न इतिहासकारों एवं लेखकों ने अपने-अपने विवेकानुसार महाराजा अग्रसेन की वंशावली प्रस्तुत की है उनमें पर्याप्त अन्तर व मतभेद मिलते हैं। फिर भी हम डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा "लक्ष्मी व्रत कथा" के आधार पर प्रस्तुत वंशावली दे रहे हैं, जो सर्वाधिक प्रामाणिक एवं मान्य समझी जाती है-

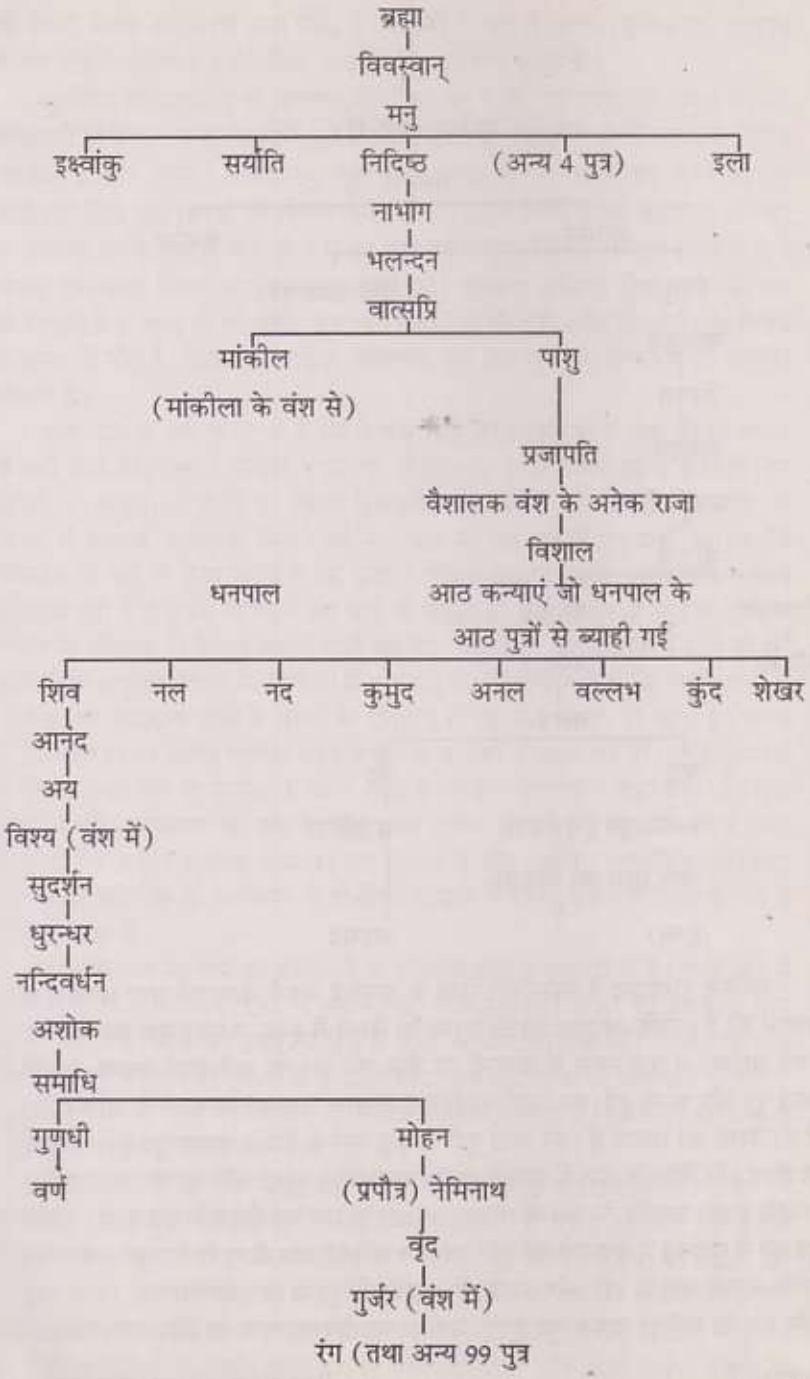
ब्रह्मा
विवस्वान्
मनु
इक्ष्वांकु
सर्याति
निदिष्ठ
(अन्य 4 पुत्र)
इला
नाभाग
भलन्दन
वात्सप्रि
मांकील
(मांकीला के वंश से)
पाशु
प्रजापति
वैशालक वंश के अनेक राजा
विशाल
धनपाल
आठ कन्याएं जो धनपाल के
आठ पुत्रों से ब्याही गई
शिव
नल
नद
कुमुद
अनल
वल्लभ
कुंद
शेखर
आनंद
अय
विश्य (वंश में)
सुदर्शन
धुरन्धर
नन्दिवर्धन
अशोक
समाधि
गुणधी
वर्ण
मोहन
(प्रपौत्र) नेमिनाथ
वृद
गुर्जर (वंश में)
रंग (तथा अन्य 99 पुत्र

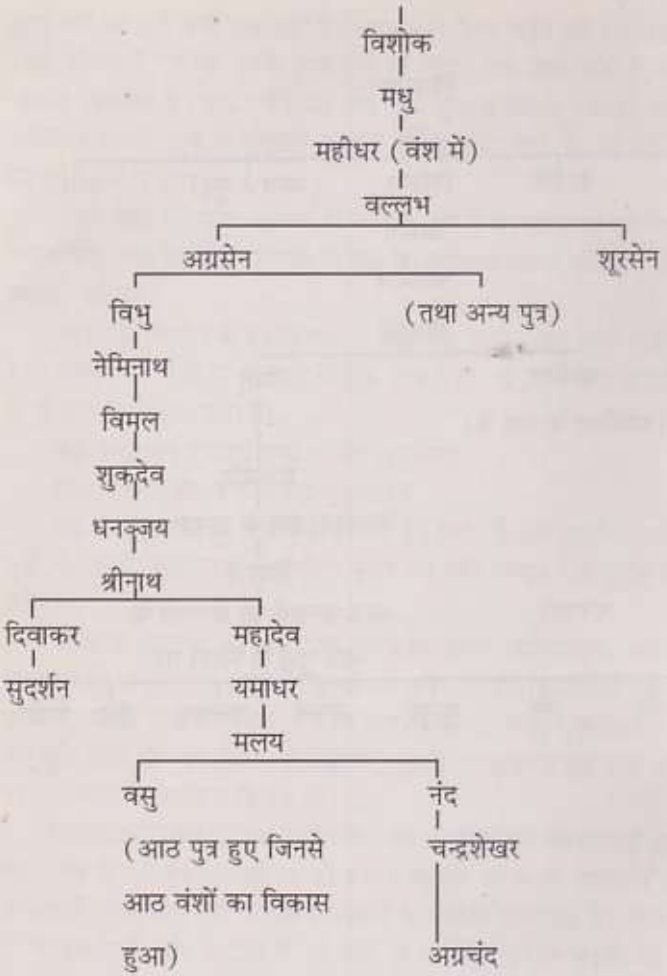

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने महालक्ष्मी कथा के अनुरूप अपनी वंशावली राजा धनपाल से प्रारम्भ की है। उनके अनुसार पहला मनुष्य जो वैश्यों में हुआ, उसका नाम धनपाल था, जिसे ब्राह्मणों ने प्रतापनगर में राजगद्दी पर बैठा कर धन का अधिकारी बनाया। उसके आठ पुत्र और कन्या हुई। इन आठों का विवाह विशाल राजा की कन्याओं के साथ हुआ। वे ही वैश्यों की माताएं हैं। इन आठ पुत्रों में एक नल के विश्य नामक पुत्र हुआ, विश्य के वैश्य और वैश्य के वंश में सुदर्शन हुआ। उसका पुत्र धुरंधर और धुरन्धर का पड़पौता समाधि हुआ। समाधि के वंश में मोहनदास और उसका पड़पौत्र नेमिनाथ हुआ। उसके पुत्र वृंद ने वृंदावन में वृंदादेवी की मूर्ति स्थापित की। इस वंश के गुर्जर ने गुजरात बसाया। इसके आठवें वंश में हरि और उसके रंग आदि सौ पुत्र थे। रंग के विशोक, उससे मधु और मधु के महीधर नामक पुत्र हुआ। महीधर महादेव का भक्त था और उसने महादेव

को प्रसन्न करके अनेक वर प्राप्त किए थे। महीधर के वंश में वल्लभ हुआ। इसी वल्लभ के घर प्रतापी अग्रराजा हुआ, जिसे अग्रसेन या अग्रनाथ कहते हैं।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार श्री बालचंद मोदी का मत है कि यह वंशावली अपूर्ण है। इस वंशावली में केवल उन्हीं राजाओं का उल्लेख हुआ है, जिन्होंने अपने काल में विशेष पराक्रम प्रदर्शित किया। बाकी नाम भूल गए। संभव है कि अनुसंधान करने से पूरी वंशावली मिल जाए। अभी जो वंशावली सामने है, उससे स्पष्ट है कि महाराजा अग्रसेन के अलावा उनके वंश में कम से कम 18 ऐसे पूर्वज हुए, जिन्होंने विशेष पराक्रम द्वारा अपना नाम अमर किया, क्योंकि यदि उन्होंने कोई पराक्रम न किया होता तो उनके नाम भी वंशावली से लुप्त हो गए होते। इन 18 राजाओं में भी अधिकांश के जीवन के विषय में जानकारी नहीं है। केवल मोहनदास, नेमिनाथ, वृंद और गुर्जर के विषय में ही उल्लेख मिलता है।

मोहनदास के बारे में लिखा है कि वे बड़े भक्त थे। इनकी श्री रंग नाथ जी के चरणों में बड़ी प्रीति थी। उन्होंने कावेरी के तट पर श्री रंगनाथ जी के अनेक मंदिर बनवाये। इन मंदिरों का अनुसंधान करने पर किसी शिलालेख के मिलने और उससे मोहनदास के विषय में अधिक जानकारी मिलने की संभावना की जा सकती है। इन्हीं के पड़पौते नेमिनाथ के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने नेपाल बसाया। यदि नेपाल बसाने वाले नेमिनाथ यही हैं तो इनके विषय में यह बात भी मालूम हो जाती है कि वे मुनि थे, क्योंकि नेपाल के इतिहास में नेपाल बसाने वाले का नाम नेमुनि है, जो वास्तव में मुनि ही थे। श्रीमोदी के अनुसार नेपाल के इतिहास में इस बात का उल्लेख नहीं है कि नेमुनि कहां से आए थे, पर अग्रवाल जाति के पुरुषों के इतिहास से यह बात मालूम हो जाती है। संभव है, नेमिनाथ विरक्त होकर तपस्या करने नेपाल के तपोवन में पहुंच गए हों। इन्हीं नेमिनाथ के पुत्र वृंदा का नाम भी परम्परा से चला आता है। उन्होंने वृंदावन में यज्ञ किया और वृंदा देवी का मंदिर बनवाया था। वृंद के बाद गुर्जर नामक राजा हुआ, जिसके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने गुजरात बसाया। इस विषय में और अधिक प्रामाणिक जानकारी गुजरात के इतिहास के अध्ययन से ही मिल सकती है किन्तु इतना निश्चित है कि वे यशस्वी राजा थे।

राजा महीधर का नाम भी वंशावली के इतिहास प्रसिद्ध राजाओं में है। इनके बारे में उल्लेख है कि वे भगवान शंकर के महान भक्त थे और उन्होंने शंकर की आराधना द्वारा अनेक वर प्राप्त किये थे। उन्हीं के वंश में आगे चलकर वल्लभ और उनके महाराजा अग्रसेन हुए। धनपाल के पूर्वजों के नाम भी महालक्ष्मी व्रत कथा की वंशावली में नहीं है जबकि एक अन्य ग्रन्थ उरूचरितम् में उनका उल्लेख मिलता है। हस्तलिखित ग्रन्थ में ब्रह्मा से धनपाल की वंशावली भी दी हुई है।

उरूचरितम् के अनुसार ब्रह्मा से विवस्वान और उससे मनु पैदा हुए। मनु के पुत्र नेदिष्ट और इला हुए। इला के पुत्रों से क्षत्रिय वंश चला। नेदिष्ट के अनुभाग और उससे भलंदन उत्पन्न हुए। भलंदन के वत्सप्रिय और उसका पुत्र मांकिल हुआ, जो विद्वान एवं महादृष्टा था। इसी मांकिल के वंश में धनपाल हुआ। धनपाल से अग्रसेन तक की वंशावली उसी प्रकार है, जैसी महालक्ष्मी व्रत कथा में है। जैसा कि हम उल्लेख कर आए हैं, विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से वंशावली दी है और उनमें पर्याप्त वैषम्य के

भी दर्शन होते हैं। फिर भी यह वंशावली अधिक प्रामाणिक मानी गई है, अत: हमने उसे ही उद्धृत किया है। नये तथ्य ज्ञात होने पर इसमें संशोधन संभव है।

महाराजा अग्रसेन के पुत्र-पुत्रियां और वंश

महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने राज्य की स्थापना के बाद अपने वंश का विस्तार किया और विभिन्न जातियों का सब प्रकार से संवर्द्धन किया।

ये सब पुत्र-पुत्रियां जो यज्ञ द्वारा हुए, रूपवान, गुणों से परिपूर्ण तथा धन-धान्य से समृद्ध थे। उनमें से कोई धन या सन्तान से रहित न था। सब दैवी-द्युति से विभूषित, उदार और निर्मल कीर्ति वाले थे। वे पृथ्वी पर देवताओं के समान थे। उनमें सत्य, धर्म, भूतों पर दया, प्रिय भाषण, द्विजातियों और अतिथियों की सेवा का भाव प्रबल था। ये सब संतानें राजा अग्र की थीं। उनके भी क्रमश: तीन-तीन पुत्र, पौत्र और प्रपोत्र हुए। उन सब के साथ राजा अग्रसेन ने कलि के 108 वर्ष बीतने तक राज्य का उपभोग किया।

राजा अग्र की संतानों के विषय में बताते हुए महालक्ष्मी व्रत कथाकार ने बताया है कि राजा के बड़े पुत्र विभु ने अपने पिता के राज्य का शासन किया। जब कोई कुटुम्बी दरिद्र हो जाता था, तो वह लाख मुद्रायें देता था।

सौ वर्ष बीत जाने पर जब वह अपने पुत्र नेमिरथ को राज्य में अभिषिक्त कर चुका तो उसकी मृत्यु हो गई। उसने अपनी पत्नी के साथ सुखपूर्वक परलोक गमन किया।

फिर विमल, शुकदेव, फिर उसका लाडला धनंजय-ये सब राजा पद के अधिकारी हुए। उसके बाद श्रीनाथ का पुत्र दिवाकर हुआ।

दिवाकर ने जैनमत ग्रहण किया और उसने पर्वत शिखर पर जाकर जैनों के समूह से घिरे रहकर जैन मत का पालन किया।

उसके अनन्तर सुदर्शन राजा हुआ। उसने अपने पुत्र को बिठा कर स्वयं वाराणसी तीर्थ में जाकर सन्यास द्वारा शरीर त्याग दिया।

श्रीनाथ का महादेव, उसका लाडला यमाधर, उसका शुभांग, फिर मलय और बसु हुए।

वसु के दाशीदश आदि अनेक पुत्र हुए जिनसे आठ शाखाएं हुई। मलय के बाद नदी, फिर विरागी और चन्द्रशेखर हुए। चन्द्रशेखर के बाद अग्रचंद हुआ, जिसने कलि में राज्य किया। उसके पुत्र-पौत्रों तथा वंशजों से नगर सदा सुखी रहा।

इस प्रकार महाराजा अग्रसेन के पुत्रपौत्रादि हुए। महालक्ष्मी व्रत कथा में इन सबका उल्लेख मिलता है।

महाराजा अग्रसेन और लक्ष्मी पूजा

अग्रवालों का महालक्ष्मी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। वे उसे अपनी कुलदेवी मानते और उसकी उपासना करते हैं। दीपावली के दिन विशेष रूप से लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। लक्ष्मी धन और सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी हैं, अत: उसका अग्रवालों के साथ विशेष सम्बन्ध है।

महाराजा अग्रसेन धार्मिक प्रकृति के पुरुष थे। धर्म में उनकी गहरी रूचि थी। वे साधना में विश्वास करते थे। उनका मत था कि देवी देवताओं की उपासना से व्यक्ति की शुद्धि और उनके प्रसन्न होने से कार्य सिद्धि होती है, इसलिए उन्होंने अपने जीवन में बार-बार लक्ष्मी की आराधना की और कठोर तपस्या द्वारा लक्ष्मी से यह वरदान प्राप्त किया कि जब तक उनके कुल में लक्ष्मी की उपासना होती रहेगी, तब तक अग्रकुल धन व वैभव से सम्पन्न रहेगा।

महालक्ष्मी व्रतकथा के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा राज्य की स्थापना के साथ ही नगर के बीचों बीच एक विशाल महालक्ष्मी मंदिर बनवाया था, जहाँ अहर्निश लक्ष्मी की पूजा-अर्चना चलती रहती थी। उनकी कृपा का ही परिणाम था कि अग्रोहा में सुख-शान्ति का साम्राज्य था। वहाँ के वैभव और सम्पन्नता को देखकर देवराज इन्द्र को भी ईर्ष्या होती थी। कहा जाता है कि इसी ईर्ष्या के वशीभूत हो इन्द्र ने अग्रसेन के राज्य में वर्षा बंद कर दी। परिणामस्वरूप सारे राज्य में भंयकर अकाल पड़ गया। नदी, तालाब, जलाशय सूख गए। पृथ्वी बंजर हो गई। अन्न व चारे के अभाव में मनुष्य व पशु-पक्षी त्राहि-त्राहि करने लगे। ऐसी विषम स्थिति में महाराजा ने लक्ष्मी की पूजा की। लक्ष्मी उनकी कठोर तपस्या, दृढ़ता, साहस और भक्ति से प्रसन्न हुई। उन्होंने महाराजा अग्रसेन से वर मांगने को कहा। अग्रसेन ने लोक-कल्याण की कामना से इन्द्र पर विजय प्राप्ति की कामना प्रकट की तो महालक्ष्मी ने उन्हें वरदान प्रदान किया और कोल्हापुर जाकर नाग राजाओं से सम्बन्ध स्थापित करने की आज्ञा दी तथा कहा इससे कुल तथा वंश दोनों की वृद्धि होगी। महालक्ष्मी की कृपा से महाराजा अग्रसेन की प्रजा में जयजयकार होने लगी।

कहते हैं महाराजा अग्रसेन को जब राज्य करते हुए काफी समय व्यतीत हो गया तो अपने तपस्वी स्वभाव एवं महालक्ष्मी के प्रति उपास्य भावना के कारण राज्य का भार अपने छोटे भाई सूरसेन को संभलवा यमुना-नदी के तट पर महालक्ष्मी की उपासना करने चले गए और घने जंगलों के मध्य कठोर तपस्या प्रारम्भ कर दी। महालक्ष्मी की आराधना करते-करते उन्हें लम्बा समय व्यतीत हो गया। महालक्ष्मी उनकी इस कठोर तपश्चर्या से बड़ी प्रसन्न हुई और कहा-

तव वंशे मही सर्वा पूरिता च भविष्यति तर वंशे जातिवर्णेषु कुल नेता भविष्यति।
अद्यारभ्य कुले-तव नाम्ना प्रसिध्यति अग्रवंशीया हि प्रजाः प्रसिद्धाःभुवनत्रय।
भुजा प्रसादं तव वसेत् नान्यस्मै प्रतिदापयत् येन सा सफला सिद्धिर्भूयात् तव युगे-युगे।
मम पूजा कुले यस्य सोऽग्रवंशी भविष्यति इत्युक्त्वान्तदधे लक्ष्मी समुद्दिश्य महावरम्।

हे राजन! हे वैश्य वंश के प्रकाश। इस तप को बंद करो। गृहस्थ धर्म बड़ा अनुपम है, इस सनातन धर्म को समझो। सब आश्रम और वर्ण गृहस्थ में ही व्यवस्थित हैं। तुम मेरी आज्ञा के अनुसार करो, मैं तुम्हें सब वैभव और ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करूंगी।

यह सम्पूर्ण पृथ्वी तेरे वंश से पूरित होगी। आज से यह कुल तेरे नाम से प्रसिद्ध होगा। अग्रवंशी प्रजा तीनों लोकों में प्रसिद्ध होगी।

तेरी भुजाओं में सदा प्रसाद रहे। युग-युग में तेरी सिद्धि सफल हो। जिस कुल में मेरी सदा पूजा होती है, ऐसा यह अग्रवंश है।

ऐसा कह तथा वरदान प्रदान कर महालक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो गई।

महालक्ष्मी की इस तपस्या के फलस्वरूप महाराजा अग्रसेन को सुख-सौख्य की प्राप्ति हुई। राज्य में सुख-मंगल की वर्षा हुई। तभी से अग्रवंश में महालक्ष्मी की कुलदेवी के रूप में पूजा होती है और महालक्ष्मी की कृपा से अग्रवाल समाज धन-धान्य से परिपूर्ण और सुख सम्पन्न है। अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन के मंदिर के समीप ही मां महालक्ष्मी के भव्य मंदिर का निर्माण इसी भावना को प्रकट करता है। यह महालक्ष्मी का मंदिर हिन्दुस्तान के मंदिरों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है क्योंकि विश्व में ऐसे महालक्ष्मीजी के मंदिर बहुत कम हैं। महालक्ष्मी के वरदान के बाद महाराजा अग्रसेन ने विष्णु की प्रतिष्ठा में 18 यज्ञ कराये। इसी संदर्भ में महालक्ष्मी मंदिर के दोनों ओर शेषशायी भगवान विष्णु और गजेन्द्र मोक्ष की भव्य झांकियां बनाई गई हैं क्योंकि लक्ष्मी का आवास तब तक स्थायी नहीं होता, जब तक विष्णु विद्यमान न हों।

महालक्ष्मी व्रतकथा का प्रतीकार्थ लिया जाए तो उसका आशय यही होगा कि लक्ष्मी की प्राप्ति कठोर तपस्या के बिना संभव नहीं अर्थात् अनवरत परिश्रम, दृढ लग्न एवं साधना से ही व्यक्ति को श्री एवं वैभव प्राप्ति होती है। जब तक व्यक्ति इस प्रकार की कठोर साधना करता रहता है, लक्ष्मी उससे दूर नहीं होती। कुल में लक्ष्मी पूजा का यही आशय है। अग्रवाल लोग बड़े ही परिश्रमी, लग्नशील एवं उद्यमी होते हैं। शेखावाटी और मारवाड़ जैसी रेतीली बंजर भूमि पर जन्म लेकर दुनिया भर के उद्योग धंधों पर वर्चस्व प्राप्त करना उनकी इसी उद्यमशीलता का ही परिणाम और यही उनकी सुख समृद्धि का राज है। आज देश में जो कुछ प्रगति दिखाई देती है, यदि उसका मुख्य श्रेय देश के अग्रवाल समाज व वैश्य वर्ग को दिया जाये तो अतिश्योक्ति न होगी।

कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जब वृद्ध हो गए तो महालक्ष्मी ने उन्हें प्रेरणा दी कि वे अपने पुत्र विभू को राज्य भार संभलवा स्वयं वानप्रस्थ धर्म का पालन करें। अग्रसेन ने ऐसा ही किया।

इससे परिलक्षित होता है कि व्यक्ति को अपने जीवन में एक सीमा तक राज्य एवं सांसारिक कार्यों में व्यस्त रहना चाहिए। पूरे जीवनभर धन, परिवार और राज्य के मोह में पड़े रहना उपयुक्त नहीं। व्यक्ति के लिए उचित है कि वह अपने जीवन के अंतिम भाग में धन-परिवार राज्य की लालसा त्याग, समाज सेवा एवं सच्ची आत्मिक शान्ति के लिए अपने आप को समर्पित कर दे क्योंकि जीवन का अंतिम लक्ष्य यही है। अग्रोहा का वानप्रस्थाश्रम इसी का प्रतीक है।

महाराजा अग्रसेन : वैश्य या क्षत्रिय

महाराजा अग्रसेन वैश्य थे या क्षत्रिय? इस सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतवैभिन्य है। वे परमवीर थे, महान योद्धा थे, जिन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की और एक ऐसे सुदृढ़ राज्य की स्थापना की, जो शताब्दियों तक देशी-विदेशी आक्रमणकारियों से लोहा लेता रहा। अत: उनकी कल्पना एक क्षत्रिय सम्राट के रूप में की जाती है और किंवदन्ती प्रचलित है कि उन्होंने परशुराम के कहने पर क्षत्रिय वर्ण से वैश्य वर्ण में अपने को परिवर्तित कर लिया। यज्ञ में पशु बलि का त्याग भी इसी का प्रतीक माना जाता है। प्राचीन समय में क्षत्रिय सम्राटों द्वारा बड़े-बड़े राज्यों की स्थापना

और उनकी रक्षार्थ युद्ध ही इस कल्पना के पीछे आधार है किन्तु यथार्थ की कसौटी पर कसने से कहीं प्रमाणित नहीं होता कि अग्रसेन मूलत: क्षत्रिय थे और उन्होंने अपना वर्ण परिवर्तन कर लिया था।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने महाराजा अग्रसेन की जो वंशावली दी है, उसमें मूल पुरुष धनपाल को वैश्यवंशी ही माना जाता है। उन्हीं के कुल में महाराजा वल्लभ जैसा यशस्वी सम्राट हुआ, जिनके यहाँ अग्रसेन का जन्म हुआ। धनपाल की कितनी पीढ़ी बाद अग्रसेन का जन्म हुआ, यह इस वंशावली में स्पष्ट नहीं है क्योंकि यह बीच-बीच में से खंडित है। खंडित होने का कारण यह है कि उस समय आजकल की पद्धति से इतिहास लेखन की परम्परा न थी। इतिहास में प्राय: उन्हीं राजाओं का उल्लेख होता था, जो अपने शौर्य और पराक्रम के लिए प्रसिद्ध होते थे।

भारतेन्दु जी ने जो वंशावली दी है उसमें मोहनदास, नेमिनाथ, वृंद, गुर्जर जैसे अनेक यशस्वी, पुण्य प्रतापी राजाओं का उल्लेख मिलता है, जिनकी गौरवपूर्ण परम्परा में ही महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ।

जैसा कि हम महाराजा अग्रसेन के काल-निर्णय में उल्लेख कर आए हैं कि महापुरुषों के जीवन के साथ इस प्रकार की घटनाएं कालचक्र से जुड़ जाती हैं, जो वास्तव में सत्य नहीं होती, फिर भी वे उनके पराक्रम एवं शौर्य को प्रकट करती है। इसी प्रकार का प्रसंग परशुराम के साथ युद्ध का है। भरत के कैकेय प्रदेश से अयोध्या लौटते समय जिस जनपदों का उल्लेख बाल्मीकि ने किया है, उनमें एक आग्रेय भी है, ऐसा कुछ इतिहासकारों का मत है, जबकि दूसरे इतिहासकारों की मान्यता है कि यह शब्द आग्रेय नहीं आग्नेय है। रामायण की अनेक प्रतियों में यही शब्द विद्यमान है। अत: वह संदिग्ध है। इसके अलावा भाटों के गीतों में त्रेता का उल्लेख है, जिसका इतिहास से पुष्ट कोई प्रमाण नहीं मिलता, अत: महाराजा अग्रसेन के त्रेता युग में होने, परशुराम के साथ भेंट, युद्ध करने, निसंतानता का श्राप, वैश्य वर्ण में परिवर्तन आदि तथ्य आधारहीन ही अधिक प्रतीत होते हैं। लगता है इनकी कल्पना भाटों ने महाराजा अग्रसेन की संस्तुति में कर ली थी।

उपलब्ध प्रमाणों एवं साक्ष्यों के आधार पर महाराजा अग्रसेन के मूलत: वैश्य वंशी होने की बात ही अधिक यथार्थ मालूम होती है। भारत की प्राचीन जातियों और स्थापित जनपदों में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिनमें एक ही जाति के लोग विभिन्न स्थानों पर जाकर बसे और अपनी जाति अथवा पूर्व पुरूष के नाम पर पृथक-पृथक नये जनपदों की स्थापना की। भारत वर्ष के प्राचीन इतिहास में जातियों के इस रूप में विकास के अनेक उदाहरण मिलते हैं। वस्तुत: ये गणराज्य बहुत अधिक थे, जो छोटे-छोटे राज्यों में फैले थे। तब संस्कृति के केन्द्र नगर और ग्राम ही थे।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में एक ही प्रकार के व्यवसाय, वाणिज्य अथवा शिल्प करने वाली श्रेणियों के संगठन का उल्लेख है। इन श्रेणियों को अपने सदस्यों पर अनुशासन के लिए विधान बनाने का अधिकार था। अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि उनके पास बहुत बड़ा सैनिक बल भी होता था। उनकी सेना इतनी बड़ी संख्या में होती थी कि वे आक्रमण और रक्षा दोनों में समर्थ होती थीं। कालांतर में इन्हीं व्यावसायिक श्रेणियों ने राजनैतिक महत्व

भी प्राप्त कर लिया और स्वतंत्र संघ अथवा जनपद का रूप ले लिया था। इस प्रकार के संघ श्रेणिराज्यों को वार्ताशस्त्रोपजीवी श्रेणी कहा जाता था।

इस प्रकार के वार्ताशस्त्रोपजीवी श्रेणी के लोग कृषि, पशुपालन, व्यापार के साथ शस्त्र-विद्या में भी निष्णात होते थे। वे वाणिज्य, व्यवसाय, कृषि द्वारा अपने राज्य की समृद्धि में योग देते थे और आवश्यकता पड़ने पर शस्त्र धारण कर शत्रु से लोहा भी लेते थे।

आग्रेयगण भी इसी प्रकार वार्ताशस्त्रोपजीवी जनपद था। वहाँ के लोग कृषि, पशुपालन व व्यापार के साथ शस्त्र संचालन में भी कुशल थे। इसी अग्र वार्ता शस्त्रोपजीवी श्रेणी ने अलेक्जंडर का दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया था तथा विदेशी आक्रमणकारियों से लोहा लेकर अपूर्व शौर्य एवं पराक्रम का परिचय दिया था। क्षत्रिय कर्म करने पर भी वे मूलत: वैश्य ही थे।

इतिहास में अनेक ऐसे गुप्तवंशी सम्राटों का उल्लेख मिलता है, जो मूल रूप से वैश्य थे किन्तु उन्होंने बड़े-बड़े राजवंशों की स्थापना की और चक्रवर्ती सम्राट होने का गौरव प्राप्त किया।

कहने का अभिप्राय यही है कि भारत का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि केवल क्षत्रियों या राजपूतों ने ही युद्धभूमि में शौर्य का प्रदर्शन नहीं किया अपितु वैश्य व अग्रवाल भी उनके सहभागी रहे हैं। प्राचीन काल में जबकि नियमित सेना का प्रचलन नहीं था और व्यापार मार्ग सर्वथा असुरक्षित थे, बीहड़ जंगलों एवं सुनसान मार्गों में, जहाँ चोर, डाकुओं, लूटेरों का सदैव भय बना रहता था, व्यापारी स्वयं अपने शक्तिबल एवं साहस से अपने धन व प्राणों की रक्षा करते थे। देश व मातृभूमि पर संकट आने की स्थिति में सैनिक कर्तव्य का पालन उनकी गौरवपूर्ण परम्परा रही है।

महाराजा अग्रसेन इन्हीं वैश्यकुलोत्पन्न शासकों में थे, जिन्होंने अपनी सूझबूझ, तपस्या और लग्न से क्षत्रियों के समान ही वैश्यों के एक गणराज्य की स्थापना की, वैश्यों में इस गणराज्य की रक्षा हेतु क्षत्रियोचित गुण भरे और महाराजा की उपाधि धारण की। जिससे वे उद्योग-व्यवसाय, धर्म-पालन एवं उत्तम संस्कारों के साथ राष्ट्र की रक्षा में भी योगदान दे सके। इसके लिए उन्होंने वैश्यों को शस्त्र विद्या में भी निपुण किया।

महाराजा अग्रसेन पहले वैश्य थे, जिन्हें वैश्य होते हुए भी महाराजा की पदवी से विभूषित किया गया तथा क्षत्रिय राजाओं के समान छत्र, चंवर रखने की अनुमति दी गई। उन्होंने यह प्रमाणित किया कि वर्ण और धर्म की अपेक्षा कर्म ही मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण है। इसलिए वे जन्मना वैश्य होते हुए भी कर्मणा क्षत्रिय बन गए थे। प्राचीन काल में जबकि राजा की पदवी का अधिकार केवल क्षत्रिय को ही हो सकता था, इसी कारण वैश्य होते हुए भी महाराजा अग्रसेन को क्षत्रिय समझने की भ्रांति हो जाती है।

वास्तव में महाराजा अग्रसेन मूलत: वैश्यवंशी ही थे। उनका महालक्ष्मी की उपासना करना, नागवंशी वैश्य राजाओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने, यज्ञ में पशु बलि का निषेध, उनके द्वारा प्रवर्तित अग्रवाल जाति में निरामिष भोजन, धार्मिक जीवन, सत्यनिष्ठ, त्याग और बलिदान से ओत-प्रोत मितव्ययी एवं संयमित जीवन-इसी सत्य को प्रतिपादित करते हैं। महालक्ष्मी हमेशा से वैश्यों की कुलदेवी रही है, वैश्य समाज में उसकी पूजा और उपासना होती है, अत: महाराजा अग्रसेन द्वारा लक्ष्मी की आराधना,

लक्ष्मी द्वारा महाराजा अग्रसेन को वरदान तथा अग्रकुल में पूजा होते रहने तक धन-धान्यपूर्ण बने रहने का आशीर्वाद भी इसी तथ्य की ओर इंगित करते हैं।

हाँ, यह संभव है कि बार-बार अग्रोहा पर विदेशी आक्रमणों एवं अग्रोहा के नेस्तानाबूद होने पर अग्रोहावासियों को जब अग्रोहा छोड़कर देश के विभिन्न भागों में प्रस्थान करना पड़ा, तब उन्होंने अस्त्र-शस्त्र के स्थान पर तुला, तराजू तथा वैश्योचित कर्मों को ही अपना लिया हो, क्योंकि युद्ध के वातावरण में उद्योग-व्यवसाय का पनपना संभव नहीं होता। इसे चाहे तो क्षत्रिय वर्ण का परित्याग तथा वैश्य वर्ण का अंगीकार कह सकते हैं। तत्कालीन समय में बौद्ध धर्म के प्रभाव से अहिंसा वृद्धि भी इसमें सहायक रही।

इस सम्बन्ध में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि आज तक किसी सैनिक समूह के व्यावसायिक जाति में सामूहिक परिवर्तन का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता, जबकि व्यावसायिक जातियों के समय-समय पर रणक्षेत्र में जाकर वीरता दिखाने के अनेक उदाहरण मिलते हैं। अग्रवाल जाति का महाराजा अग्रसेन को अपना पूर्वज मानना और उन पर गर्व करना इसी तथ्य का परिचायक है कि महाराजा अग्रसेन मूलत: वैश्य ही थे। उनके द्वारा 18 गोत्रों का प्रवर्तन और अग्रवाल जाति में ही परस्पर विवाह सम्बन्धों की परम्परा के सूत्रपात से संदेह नहीं रह जाता कि वे वैश्य ही रहे होंगे। विशेषकर उन परिस्थितियों में जबकि ब्राह्मणों एव राजपूतों का वर्चस्व चरम सीमा पर था और वैश्य समुदाय को हीन से हीन स्थिति में पहुंचा उनके अधिकारों को सीमित करने के प्रयत्न चालू हो गये थे। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि कोई यशस्वी सम्राट अपने क्षत्रिय धर्म को त्याग वैश्य वर्ण में प्रवेश करे।

महाराजा अग्रसेन की राज्य व्यवस्था और आदर्श

महाराजा अग्रसेन आग्रेय जनपद के गौरवशाली राजा थे। आग्रेयगण (अग्रोहा) उनकी राजधानी थी। वे बड़े ही वीर, धीर, धर्मात्मा और प्रजापालक थे। प्रसिद्ध है कि उनके राज्य में एक लाख परिवार बसते थे। उन्होंने अपने राज्य में यह व्यवस्था स्थापित की थी कि जो भी नया परिवार अग्रोहा में आकर बसता था, राज्य में बसने वाला प्रत्येक परिवार उसे एक रूपया और ईंट भेंट करता था। व्यापार में घाटा लगने अथवा किसी प्राकृतिक विपदा के आने पर यही प्रक्रिया दोहराई जाती थी। इससे राज्य के नागरिकों की रोटी, रोजी और मकान की कोई समस्या न रही।

महाराजा अग्रसेन ने एक ऐसे आदर्श राज्य की नींव रखी, जहाँ न कोई गरीब था और न कोई अमीर। सब व्यक्तियों को जीवन की सुख-सुविधाएं समान रूप से उपलब्ध थीं। इस प्रकार इतिहास में उन्हें एक ऐसे आदर्श लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना का श्रेय प्राप्त है, जहाँ वर्ग संघर्ष के बिना स्वतंत्रता समानता, लोकतंत्र, भाईचारे जैसे आदर्श साकार रूप में विद्यमान थे। यह दृष्टव्य है कि वर्ग संघर्ष एवं हिंसा जैसे आदर्शों पर आधारित साम्यवाद जहाँ रूस में टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया और अन्य देशों में अंतिम सांसे ले रहा है, वहाँ महाराजा अग्रसेन का समाजवाद आज भी अपनी यशोपताका फहरा रहा है।

महाराजा अग्रसेन का जन्म महाभारत के बाद हुआ। उस समय के इतिहास एवं ग्रंथों से पता चलता है कि राजा अनाचार में डूबे हुए थे। एक दूसरे पर अत्याचार, भाई-भाईयों में कलह, जुआखोरी आदि का बोलबाला था। नारी-जाति का अपमान सामान्य बात थी। राजाओं का समय वैभव प्रदर्शन एवं पारस्परिक युद्धों में ही अधिक व्यतीत होता था। देश में अराजकता का बोलबाला था। यज्ञों में पशु बलि सामान्य बात थी। भाई-भाई के खून का प्यासा बना हुआ था। ऐसे समय में महाराजा अग्रसेन ने वैश्य जनपद आग्रेयगण की स्थापना की।

उन्होंने धर्म एवं जनकल्याण को अपने राज्य का आधार बनाया। किसी भी राज्य की नींव सुविचारों एवं अच्छे आदर्शों पर ही निर्भर होती है। जहाँ सदाचार होता है, वहां, चोरी, डाकेजनी, छलकपट, लूटमार, हत्या जैसे जघन्य कर्म पनप ही नहीं सकते। सदाचार तभी पनपता है जबकि पेट भरा हो। भूखे व्यक्ति को सदाचार और नैतिकता के उपदेश व्यर्थ ही सिद्ध होते हैं। अत: महाराजा अग्रसेन ने एक रूपया एक ईंट के आदर्श द्वारा जहाँ एक ओर अपने राज्य को बेकारी, बेरोजगारी, निर्धनता जैसे अभिशापों से मुक्त कर दिया, वहाँ सदाचार की भी गहरी नींव रखी

उन्होंने अपने राज्य में 18 यज्ञ कराए। उस समय यज्ञ धार्मिक एवं नैतिक भावनाओं के प्रचार के श्रेष्ठ माध्यम थे। महान मुनियों के सान्निध्य में किए जाने वाले इन यज्ञों में अग्रोहा की भूमि को भी यज्ञमय बना दिया। महाराजा अग्रसेन ने यज्ञों में होने वाली पशुबलि को भी बन्द करा दिया और घोषणा की कि उनके राज्य में भविष्य में हिंसा न होगी। इस प्रकार उन्होंने अपने राज्य में जीवमात्र के प्रति करूणा, प्रेम एवं सहानुभूति का नया नारा दिया। उसी का परिणाम है कि आज भी अग्रवाल जाति हिंसा से दूर है। जीवमात्र के प्रति दया एवं करुणा भाव से प्रेरित होने के कारण यह समाज न केवल असंख्य निराश्रितों और असहायों के लिए आश्रय की व्यवस्था करता है अपितु चीटिंयों के लिए दाना, पक्षियों के लिए चुग्गा और असहाय पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था कर आत्मीय सुख शान्ति का अनुभव करता है। यह अग्रसेन की प्राणि-मात्र के प्रति करूणा एवं स्नेह भावना का ही प्रसार है।

आज सम्पूर्ण जाति युद्धों एवं हिंसा से त्रस्त है। विभिन्न गुटों में विभक्त देश एक दूसरे के खून के प्यास बने हुए अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण पर भारी धन खर्च कर रहे हैं। ऐसे समय में महाराजा अग्रसेन का यह प्राणिमात्र के प्रति करुणा, स्नेह, अहिंसा का भाव ही युद्ध-त्रस्त मानवता की रक्षा का अमोघ साधन सिद्ध हो सकता है।

आज हम पर्यावरण शुद्धि की चर्चा करते हैं। जलवायु-प्रदुषण को रोकने के लिए करोड़ों अरबों रुपयों की योजना प्रतिवर्ष बनाते हैं परन्तु प्रदूषण बढ़ता ही जाता है। रुकने का नाम नहीं लेता। महाराजा अग्रसेन ने यज्ञों द्वारा मानव मन की शुद्धि के साथ-साथ वातावरण शुद्धि की ओर भी ध्यान दिया था। यज्ञों में घृत एवं सुगंधित कीटनाशक द्रव्यों की हवि से वातावरण शुद्ध होता। उससे परमाणुविहीन बादल बनते। बादल शुद्ध जल की वर्षा करते। परिमामस्वरूप नदियों, नहरों का जल शुद्ध होता। पेड़-पौधे, फल, वनस्पतियां प्रदूषण रहित होकर अपनी स्वच्छ, शीतल, सुगंधित वायु से वायुमंडल को शुद्ध बनाती है। इससे सभी का स्वास्थ्य अच्छा रहता। लोग हृष्ट-पुष्ट होते। यही कारण है कि वहां

के वीरों ने हर आक्रमणकारी का दृढ़ता से मुकाबला किया। यज्ञ उनके लिए आत्म शुद्धि के साथ-साथ वातावरण शुद्धि का भी श्रेष्ठ साधन था।

अहिंसा तत्व भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। गौतम, महावीर, नानक सभी संतों ने समान रूप से इसका उद्घोष किया है। अतः महाराजा अग्रसेन का यह आदर्श भारतीय संस्कृति के आदर्शों के सर्वथा अनुकूल है।

महाराजा अग्रसेन के समाजवाद में समृद्ध व्यक्तियों की समृद्धि की ओर निठल्ले बैठे ललचाए जाने का कोई स्थान न था। उनके समाजवाद की व्याख्या थी-"प्रत्येक नागरिक परिश्रम करता हुआ राष्ट्र के सामूहिक उत्थान में योगदान दे। प्रत्येक व्यक्ति सबके लिए जिए और सब एक के लिए जिएं। उनका आदर्श था- "**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्**" जिस राज्य की जनता अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुरूप कर्म करती हुई फल की चिंता न करें, उस राज्य में कैसा अभाव, कैसी विषमता? जीओ और जीने दो-उनका आदर्श था।

महाराजा अग्रसेन के राज्य में प्रत्येक को अपने विश्वास के अनुसार धर्म पालन की पूर्ण स्वतंत्रता थी। कोई शिव की उपासना करता तो कोई लक्ष्मी की। वहाँ सभी जातियों, धर्मों के लोग सुख-शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करते। स्वयं महाराजा अग्रसेन उन्हें माला के धागे की तरह एकता के सूत्र में पिरोये रखते।

महाराजा अग्रसेन की विदेश नीति पारस्परिक समानता, शान्ति एवं सद्भाव पर आश्रित थी। उन्होंने न कभी किसी पर आक्रमण ही किया और न कभी विजेता बन चक्रवर्ती सम्राट बनने की इच्छा की। उनकी शक्ति बलपूर्वक दूसरे राज्यों पर अधिकार करने की अपेक्षा अपने राज्य के आर्थिक विकास की योजनाएं बनाने की और अधिक केन्द्रित रहती क्योंकि वे अर्थ को राज्य की सुव्यवस्था का मूल केन्द्र समझते थे। उनका विश्वास था कि उत्पादन का चक्र हर समय चलता रहना चाहिए। ताकि अभावों से जूझती जानता की आवश्यकता पूर्ण कर उनके जीवनस्तर को ऊंचा किया जा सके।

महाराजा अग्रसेन का मूल मंत्र था-परिश्रम और उद्योग से अर्थार्जन और उसका समान रूप से वितरण। वे कहते थे कि उत्पादन का कुछ भाग पूंजी के रूप में परिवर्तित करो। आय से अधिक खर्च करना न केवल पाप अपितु घातक भी है। किसी भी देश के आर्थिक विकास और प्रगति के लिए यह नितांत आवश्यक है कि देश की संचित पूजी में निरन्तर वृद्धि होती रहे क्योंकि यह संचित पूंजी ही वितरण और नये-नये उद्योग संचालन का आधार बनती है। फिर भी वे अपना निर्णय किसी पर नहीं थोपते थे।

महाराजा अग्रसेन के समय वंशानुगत शासन था किन्तु उन्हें अपने राज्य को 18 गणों (कुलों) में विभक्त कर तथा उनका एक-एक निर्वाचित प्रतिनिधि शासन परिषद् में लेकर तथा उनकी सलाह से राज्य का प्रशासन चलाकर लोकतंत्रात्मक गणराज्य की नींव डाली। अपनी प्रजा को पुत्रवत प्यार करने के कारण ही ये गणपति महाराजा अग्रसेन को पितृतुल्य मानते थे। यही कारण है कि कभी-कभी इन गण-प्रतिनिधियों को उनका पुत्र मानने का भ्रम हो जाता है।

महाराजा अग्रसेन के समय वैश्य जाति के अधिकार छीने जा रहे थे। उनके वेदाध्ययन एवं यज्ञ के अधिकार को समाप्त करने का षडयंत्र चल रहा था। महाराजा अग्रसेन ने यज्ञों

के आयोजन द्वारा वैश्य समुदाय के अधिकारों की रक्षा की साथ ही अग्रवाल जाति के रूप में ऐसा सुदृढ़ संगठन स्थापित किया, जिसका शताब्दियों बाद देश की आर्थिक व्यवस्था में गहरा योगदान है।

वैश्य जाति को उन्होंने तराजू प्रदान करने के साथ वार्ताशस्त्रोपजीवी भी बनाया। ये वैश्य लोग सामान्य समय में व्यापार-व्यवसाय करने के अतिरिक्त युद्ध एवं शस्त्र संचालन में भी दक्ष होते थे और आवश्यकता पड़ने पर अस्त्र हाथ में उठा आत्मरक्षा के साथ देश की रक्षा भी करते थे। उनकी गणना भी मार्शल कौमों में की जा सकती है।

आग्रेयगण पर जब जब भी संकट आया अथवा उसके कल्याण की बात आई, महाराजा अग्रसेन ने राज्य सुखों को त्याग तपश्चर्या का मार्ग अपनाया और भगवान शंकर, महालक्ष्मी आदि की कठोर साधना करके प्रजा के कल्याण की कामना की। इस प्रकार के आदर्श इतिहास में बहुत कम मिलते हैं। उन्होंने आदर्श प्रस्तुत किया कि राजा को प्रजा, जन एवं देशहित के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। राजा का सुख प्रजासुख में ही निहित है। उन्होंने अववर्षण से पीड़ित प्रजा की भलाई के लिए जो कठिन तपस्या की, वह उनके लोकानुराग को प्रगट करने के लिए पर्याप्त है। यही वह आदर्श है, जिसे अपना कर आज भी राष्ट्रहित की साधना की जा सकती है।

यदि यह कहा जाए कि महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य में भारतीय संस्कृति के चार तत्वों-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को समान महत्व दिया तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। उनका यह धर्म किसी प्रकार के वैराग्य अथवा अनासक्ति भाव पर आधारित नहीं था। उन्होंने जीवन में कर्म को ही सदैव धर्म माना और अपने राज्यवासियों को कर्म करने की प्रेरणा दी। उनकी इस प्रवृत्ति का परिणाम है कि अग्रवाल जाति कभी निठल्ले बैठना पसन्द नहीं करती। कर्म में ही लक्ष्मी का निवास होता है और यही अग्रवाल वैश्य जाति के वैभव एवं उत्कर्ष का मूल कारण है।

इसके अलावा महाराजा अग्रसेन ने सरलता, सादगी, मितव्ययता आदि पर बल दिया। यदि आज के बढ़ते हुए फैशन एवं पाश्चात्य प्रभाव को छोड़ दिया जाए तो अग्रवाल जाति सदैव सरलता एवं सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करती आई है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति उसका पूर्ण अनुराग रहा है।

इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने एक आदर्श राज्य पद्धति को जन्म दिया। यह स्मरणीय है कि महाभारत के युद्ध में भाग लेने वाले राजपरिवारों का आज कोई नामलेवा भी दिखाई नहीं देता, जबकि महाराजा अग्रसेन जी के आदर्शों पर आधारित अग्रवाल समाज आज 5000 वर्ष की दीर्घकालावधि के बाद अक्षुण्ण ही नहीं, उन्नति के चरम शिखर पर भी है। जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र होगा, जहां उसकी अग्रगामिता न हो।

मिश्र की सभ्यता नष्ट हो गई। रोम और यूनान की सभ्यता आज केवल इतिहास के पन्नों में ही पढ़ने को मिलती है। यहां तक की सिकंदर के काल की अनेक जातियों का नामोनिशान भी नहीं है, किन्तु अग्रवाल जाति और अग्रोहा का अस्तित्व आज भी बना हुआ है। यह सामान्य बात नहीं है। किसी ने ठीक ही कहा है,-यूनान, मिश्र और रोम सब मिट गए जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, इसका श्रेय महाराजा अग्रसेन की आदर्श राज्य व्यवस्था को ही है।

महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल जाति

महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के प्रवर्तक थे। भारतीय इतिहास में ऐसे बहुत कम सम्राट हुए हैं, जिन्हें किसी नये वंश-प्रवर्तन का श्रेय मिला हो। महाराजा अग्रसेन ऐसे ही अहोभागी सम्राट थे। वे एक महान राजा होने के साथ-साथ एक पृथक वंश के कर्ता भी थे। वे वैशालक वंश में उत्पन्न हुए किन्तु उन्होंने अपनी अद्वितीय प्रतिभा एवं क्षमता के बल पर एक नए नगर और राज्य की स्थापना की। उनका यह राज्य उन्हीं के नाम पर आग्रेय गण (अग्रोदक) कहलाया। उन्होंने वहां गण पर आधारित लोकतंत्रीय शासन पद्धति का प्रचलन किया। उन्होंने अपने राज्य को 18 श्रेणियों या कुलों में विभक्त कर दिया जो वास्तव में उनके प्रतिनिधि थे। इन्हीं प्रतिनिधियों की सहायता से वे अपने राज्य का संचालन करते थे। अपने राज्य को सुगंठित करने की दृष्टि से उन्होंने अपने राज्य में 18 यज्ञों का आयोजन किया और इन 18 कुलों को संगठित कर 18 गोत्रों का प्रवर्तन कर यह व्यवस्था बना दी कि भविष्य में अपने गौत्र को छोड़कर इन्हीं कुलों में परस्पर विवाह सम्बन्ध होंगे। महाराजा अग्रसेन की इसी संगठित शक्ति का परिणाम था कि विभिन्न परिस्थितियों के कारण अग्रोहा छोड़ने वाले निवासियों ने अपने को अग्रोहा एवं महाराजा अग्रसेन से सम्पृक्त रखा और वे अग्रोहा से सम्बन्धित होने के कारण अग्रवाल कहलाए। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के प्रवर्तक कहे जा सकते हैं, न कि जनक! महाभारत ने ऐसी ही महान विभूतियों को "पृथक् वंशकर्ता" के नाम से सम्बोधित किया है।

महाराजा अग्रसेन और उनकी जयन्ती

महापुरुष किसी भी जाति या समाज के प्रेरणास्रोत होते हैं, जिनकी जयन्ती मना कर लोग उनके आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

महाराजा अग्रसेन राष्ट्र-पुरुष ही नहीं, विश्ववंद्य भी थे, किन्तु उनकी वास्तविक जन्म तिथि की सही जानकारी न होने से अग्रसेन जयंती मनाने का विशेष प्रचलन न हो सका। इस सम्बन्ध में अग्रवालों के पुरोहित स्वामी ब्रह्मानंद महाराजा ने घोषणा की कि सभी अग्रवाल आसोज शुदी एक को उनकी जयंती मनायें। उन्होंने अग्रोहा में इस हेतु एक भव्य आयोजन भी किया।

अंतत: 1923 में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के मुम्बई अधिवेशन में सर्व-सम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि सभी अग्रबंधु महाराजा अग्रसेन का स्मारक उत्सव प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को मनावें और व्रत रखें। तब से महाराजा अग्रसेन जयंती को पूरे भारत में विशेष प्रसार मिला।

तृतीय खण्ड

अग्रोहा और अग्रवाल

अग्रोहा और अग्रवाल-पारस्परिक सम्बन्ध

अग्रोहा और अग्रवाल में उसी प्रकार का सम्बंध है, जिस प्रकार शरीर का आत्मा से। महाराजा अग्रसेन ने अग्रोदक राज्य की स्थापना की, जो आगे जाकर अग्रोहा के नाम से प्रचलित हो गया। इसी कारण से अग्रोहा के रहने वाले अग्रवाल कहलाये किन्तु इस जाति का इतिहास उससे कहीं अधिक प्राचीन है और उसका सम्बन्ध सृष्टि के आदि क्रम से है।

अग्रवालों की पृष्ठभूमि एवं इतिहास

अग्रवाल जाति का सम्बन्ध वैश्य समुदाय से है। भारतीय परिकल्पना के अनुसार ब्रह्मा ही सृष्टि के आदिकर्त्ता हैं। उन्हें विराट पुरुष की संज्ञा दी गई है। ब्रह्मा ने एक से बहुल होने की कामना से सृष्टि का विस्तार किया। ऋगवेद के पुरुषसूक्त में उसकी सुंदर व्याख्या मिलती है। सम्पूर्ण सृष्टि को उस विराट पुरुष का अंग मानते हुए उसकी कल्पना शरीर के चार अंगों के रूप में की गई है। उसके अनुसार ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मणों की, भुजाओं से क्षत्रियों की, जंघाओं से वैश्य की और पैरों से शुद्रों की उत्पत्ति हुई।

इस परिकल्पना के मूल में समाज को सुचारू रूप से चलाने की भावना ही थी। यह व्यवस्था गुण-कर्ण के आधार पर थी और उसमें समाज के कार्यों का चार वर्णों में इस तरह विभाजन कर दिया गया था, जिससे सृष्टि का क्रम ठीक ढंग से चलता रहे।

इससे वैश्य वर्ग का निर्धारण कर्म के आधार पर एक ऐसे समवाय के लिए किया गया, जिसका मुख्य कार्य कृषि, पशुपालन और व्यापार माना गया। श्री वामन पुराण में कहा गया कि वैश्यगण यज्ञाध्ययन से सम्पन्न दाता, कृषिकर्त्ता तथा वाणिज्यजीवी हों तथा पशुपालन का कर्म करें।

ऋगवेद में वैश्यों के अनेक उल्लेख मिलते है। इन्हें विश, पणि आदि संज्ञायें प्रदान की गई हैं। यास्काचार्य ने पणियों को ही व्यापारी कहा है-'पणिरवनिको भवति'।

प्राचीन समय में जबकि मुद्रा का प्रचलन न था, वस्तुओं का आदान-प्रदान ही वस्तु प्राप्ति का साधन था। वस्तुओं के आदान-प्रदान करने वालों को पणि की संज्ञा दी गई। बाद में आर्यों के प्रसार के कारण समाज का विभाजन जब आर्य और अनार्य में होने लगा

तो आर्यों ने पणि लोगों को अपने में मिला लिया क्योंकि उनकी कृषि, गौपालन, शाकाहार आदि की परम्पराएं उनसे मिलती-जुलती थीं। जब वे पूर्ण रूप से उनमें घुल-मिल गये तो उनकी सतत पर्यटनशील वृत्ति के कारण उनका एक नाम वैश्य पड़ गया।

वैश्य शब्द विश धातु में क्विप प्रत्यय लगाने से बना है। विश धातु का अर्थ है-विशति-प्रविशति-देश-विदेश में व्यवसाय या व्यापार के लिए घूमने वाले लोग। अतः पाणिनी ने पणि को ही वणिक या वैश्य की संज्ञा दी है।

जो भी हो, अग्रवाल जाति का उल्लेख पणि, वणिक, वैश्य आदि नाना रूपों में वैदिक काल से ही मिलता है और यह समुदाय वाणिज्य व्यवस्था द्वारा सभ्यता के प्रारम्भकाल से ही अपनी विशिष्ट छाप अंकित करता आया है।

प्रारम्भ में यह वर्ण व्यवस्था गुण कर्म के आधार पर थी किन्तु बाद में इसका स्थान जन्म ने ले लिया और उद्योग-व्यवसायों की विभिन्नता एवं अन्याय कारणों से यह समाज विभिन्न वर्गों-उपवर्गों, जाति-उपजातियों में बंटता गया। कुछ व्यवसाय जो उच्च थे, उनको करने वाले वैश्य वर्ग में सम्मिलित होते गए, अन्य श्रेणी के व्यवसाय वालों ने अपने अलग से संगठन बना लिये, जिससे कुम्भकार, लुहार, चर्मकार, रथकार आदि अनेकानेक स्वतंत्र जातियों का गठन होता गया।

वैदिक साहित्य से पता चलता है कि पणि बहुत ही कुशल व्यापारी थे। उनका व्यापार देश-विदेश में फैला था। उन्होंने बड़ी-बड़ी नौकाओं तथा जलयानों का निर्माण किया था और एशिया, बेबीलोन, मिश्र, चीन, यूनान, यूरोप तथा दक्षिणी अमेरिका आदि देशों तक उनका व्यापार फैला था। उन्होंने इन देशों में जाकर न केवल विदेशी व्यापार को बढ़ाया अपितु भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का आलोक फैलाने में भी उनका महत्त्वपूर्ण हाथ रहा। कहा जाता है कि उन्होंने ही पश्चिम के देशों में स्वरलिपि पहुंचाई थी तथा नाना प्रकार के वस्त्र, कांच के समान, सोने-चांदी आदि के व्यापार में दक्षता प्राप्त की थी।

कोलम्बस को जब अमेरिका का ज्ञान भी न था, तब इन्हीं हिन्दू वणिकों ने विदेशों में जाकर अपनी सभ्यता-संस्कृति एवं सर्वप्रथम कांच निर्माण, वर्णलिपि प्रचलन, समुद्रपोत संचालन आदि द्वारा समस्त जगत को विस्मय मुग्ध कर दिया था। उस समय भारत के सभी प्रमुख व्यापारिक केंद्रो एवं दूरस्थ देशों में इन वणिकों की व्यापारिक कोठियां और उपनिवेश थे। ईसा से लगभग 700 वर्ष पूर्व भारतीय वणिकों ने चीन में अपने स्थायी उपनिवेश बसा लिये थे। कम्बोज, (वर्त्तमान कम्बोडिया) वियतनाम, इण्डोनेशिया, थाईलैंड आदि तक में उनका प्रसार था। वहाँ उनके द्वारा बनवाए गए सैकड़ों मंदिरों का अस्तित्व आज भी देखने को मिलता है।

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त का मत है कि वैदिक काल के आरम्भ में सारी जनता विश नाम से पुकारी जाती थी। उनके अनुसार विशः का मूल अर्थ है-बैठना। घूमने-फिरने के बाद जब आर्य लोग एक स्थान पर बैठ कर स्थायी रूप से व्यवसाय करने लगे तो उनकी बस्ती विश कहलाने लगी और धीरे-धीरे वहां बसने वालों का नाम विश या वैश्य हो गया। बाद में जब ब्राह्मण और क्षत्रिय समुदाय ने अपने आपको जनसमाज से अलग कर लिया तो शेष जनों की उपाधि विश हो गई और यही विश वर्ग धीरे-धीरे विश्य और बाद में वैश्य कहलाने लगा।

प्राचीन वैश्य वंश

इस प्रकार अग्रवाल जाति प्राचीन वैश्य वंश परम्परा का ही एक अंग है और उसका इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। इतिहास में ऐसे अनेक कुलों का उल्लेख मिलता है, जो वैश्य थे और जिन्होंने व्यापार-व्यवसाय के साथ उच्चकोटि की राज्य एवं प्रशासनिक प्रतिभा का परिचय दिया।

महाभारत में उल्लेख आया है कि सर्वाधिक धनाढ्य होने के कारण राज्य को सर्वाधिक कर देने वाला वर्ग वैश्य ही था।

महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल जाति-महाभारत युद्ध से 51 वर्ष पूर्व अग्रोहा या अग्रजनपद की स्थापना हो चुकी थी और महाराजा अग्रसेन वहाँ के प्रतापी राजा थे। उनके राज्य में एक लाख आबादी थी और उनका राज्य दूर-दूर तक फैला था। उन्हीं महाराजा अग्रसेन से आगे जाकर अग्रकुल परम्परा चली और अग्रवाल समाज के रूप में एक नये गौरवपूर्ण समाज का आविर्भाव हुआ।

महाजनपदों का उदय और विकास-कालान्तर में भारत के राजनीतिक मानचित्र पर सोलह महाजनपदों का उत्कर्ष हुआ। यह काल बुद्ध से भी 150-200 वर्ष पूर्व था। इस काल में अहिच्छत्र (पांचाल), अयोध्या (कौशल), कौशाम्बी और मथुरा जनपदों में अनेक वैश्य राजाओं के राजवंशों ने शासन किया। इस सम्बन्ध में मूलदेव, वायुदेव, विशाखादेव, धनदेव, वृहस्पति मित्रा, वरुणमित्रा, अश्वघोष, ब्रह्म मित्र, उत्तमदत्त, रमादत्त, शिवदत्त, भावदत्त आदि अनेक राजाओं का उल्लेख मिलता है।

अनेक जनपदों में वैश्य राज्य या गणराज्य के प्रधान तो नहीं थे किन्तु राज्य के मंत्रिमंडल में उनका पूर्ण स्थान था। धन और साधन सम्पन्नता के कारण वे राज्य को आवश्यकता पड़ने पर सहायता भी करने लगे थे।

मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा सभ्यता-भारत की प्राचीन सभ्यता के अवशेष मोहन जोदड़ो तथा हड़प्पा सभ्यता में मिले हैं। इस सभ्यता से प्राप्त अवशेषों से उस समय के वैश्य समुदाय (वणिकों) की आश्चर्यजनक प्रतिभा का परिचय मिलता है। उस समय वैश्यों ने जिन नगरों का निर्माण कराया वैसे वैज्ञानिक ढंग से बने नगर विश्व में अन्यत्र नहीं मिलते। उस समय के नगर आज के श्रेष्ठ नगरों न्यूयार्क, पेरिस, लंदन आदि से कहीं अधिक व्यवस्थित थे। उनमें जल-निकास, सफाई आदि की व्यवस्था कहीं अधिक स्वच्छ और वैज्ञानिक थी। ललित कला, शिल्प कला और निर्यात व्यापार पराकाष्ठा पर थे तथा मानव निर्मित बंदरगाहों से पूरे विश्व को सोने-चांदी के गहनों से लेकर पीतल के बर्तनों तक अनेक वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। उनकी नाप-तौल तथा दशमलव प्रणाली अत्यन्त विकसित थी।

उल्लेख के अनुसार 2000 ई०पू० यहूदी नरेश सुलेमान ने चंदन तथा हाथी दांत के सामान तथा बहुमूल्य वस्त्रों का भारतीय वणिकों से पर्याप्त मात्रा में आयात किया था। मेसोपटामिया, बेबीलोन तथा सीरिया आदि देशों में भारतीय व्यापारियों के कार्यालय खुले हुए थे, जहाँ भारी मात्रा में उद्योग-व्यवसाय का संचालन होता था।

कृत्रिम बंदरगाहों का सृजन, पानी का कृत्रिम ढंग से नियन्त्रण तथा रसायनों का निर्माण, अद्भुत भवन निर्माण कला तथा नये-नये औजारों का आविष्कार उनके प्रतिभा कौशल को प्रकट करता है।

जैन तथा बौद्ध धर्म काल–700 ई. पू. तक भारत के वणिक वैदिक धर्म का ही पालन करते आये थे किन्तु 600 ई. पू. भारत में जैन तथा बौद्ध धर्मों का उदय हुआ। इन धर्मों के काल में भी वैश्य समाज की परम्पराएं अक्षुण्ण बनी रहीं।

उस समय के साहित्य से पता चलता है कि तत्कालीन समय में अनेक वैभवशाली वैश्य विद्यमान थे। उनके पास अपार सम्पत्ति तथा वैभव था। उपासुक दशासूत्र नामक एक जैन ग्रंथ में आनंद नामक एक वैश्य का उल्लेख मिलता है, जिससे उस समय के वैश्यों की प्रतिष्ठा का अनुमान लगता है। इस आनन्द नामक वैश्य का 4 करोड़ रुपये का सोना ऋण रूप में बंटा हुआ और 4 करोड़ का सोना भूमि आदि में लगा हुआ था। उसके पास 40 हजार गायें और भैंसे थी। 500 गाड़ियां विदेश में तथा उतनी ही स्वदेश में व्यापार के लिए चलती थी। उसके 4 जलयान विदेशों में तथा 4 ही जलयान स्वदेशी व्यापार में लगे थे।

इस काल में श्रेष्ठिवर्ग और नगरसेठ जैसी संस्थाओं का विकास होने लगा था और समाज में उन्हें उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त थी इस युग के साहित्य से पता चलता है कि उस समय श्रेष्ठि चत्वरों के बड़े-बड़े समूह थे। बौद्ध मठ एवं तक्षशिला, नालंदा जैसे बड़े-बड़े विश्वविद्यालय उनके अनुदान से चलते थे। उन्हें समाज में श्रेष्ठि, महाजन तथा गृहपति की संज्ञा प्राप्त थी। मृच्छकटिक नाटक में राजधानी के बीच श्रेष्ठि चत्वर का उल्लेख मिलता है। इस श्रेष्ठि चत्वर में धन-कुबेर लोग रहा करते थे। भारत के सभी प्रधान केन्द्रों में उनकी कोठियां थी। नाना प्रकार के जवाहरात, रेशमी और मूल्यवान वस्त्रों का उनका व्यवसाय था। आवश्यकता होने पर राजाधिराजों को भी उनसे ऋण लेना पड़ता था।

जातक में अनेक ऐसे श्रेष्ठियों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने भिक्षु संघ, राज्य तथा समाज को करोड़ों रुपयों का दान प्रदान किया था। मगधनिवासी एक सेठ द्वारा भिक्षुसंघ को 80 करोड़ कार्यापण दान का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार भृगार श्रेष्ठि की कथा तथा विशाखा द्वारा श्रावस्ती में 9 करोड़ की लागत से बुद्ध के लिए चैत्यालय स्थापित करने का विवरण मिलता है।

बौद्ध तथा जैनकाल में इन्ही 'वणिकों' ने विदेशों में भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार में बहुमूल्य योगदान दिया था। उन्होंने भारतीय धर्म, दर्शन और विज्ञान से सम्बन्धित हजारों ग्रंथों का अनुवाद कराया, जो आज भी वहाँ उपलब्ध है। इस काल में वैश्यों का प्रभाव इतना अधिक बढ़ा हुआ था कि राजाओं का चुनाव भी वैश्यों द्वारा किया जाता था।

इस काल में जैन तथा बौद्ध धर्म के उत्थान में वैश्यों का महान योगदान रहा। वैश्यों और शिल्पियों के विशाल संघ बने और वैश्यों ने भिक्षु बन कर देश-विदेश में धर्म प्रचार किया। बुद्ध के प्रथम 500 सदस्यों में 400 से अधिक वैश्य थे और वैश्यों ने भारी संख्या में तीर्थों, स्तूपों तथा मंदिरों का निर्माण करा अपनी दानवीरता तथा उदारता का परिचय दिया था।

ईस्वी सन से लगभग 350 वर्ष पूर्व अर्थशास्त्र की रचना हुई इस अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने जो वर्णन किया है, उससे पता चलता है कि भारत के वैश्य लोग उस समय नाना प्रकार के सुंदर दुकूलों क्षौम वस्त्रों, हीरे जवाहरात एवं सुगन्धित द्रव्यों का व्यापार करते थे।

वैश्य-साम्राज्य

वैसे तो भारतीय वैश्यों ने देश-देशान्तर में अपने व्यवसाय एवं उद्योग की धाक जमा अन्तरराष्ट्रीय ख्याति को प्राप्त किया किन्तु उनकी महत्त्वाकांक्षा केवल व्यवसाय तक सीमित न रही अपितु उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय दिया और अनेक राज्यों की स्थापना कर अपना बल-वैभव और पराक्रम प्रदर्शित किया।

नंद की मां वैश्य थी और राधा यशोदा के सगे भाई वृषभानु वैश्य की पुत्री थी, इस प्रकार का उल्लेख भी मिलता है। इसी प्रकार कृष्ण द्वारा इन्द्र को पराजित किये जाने की गाथा वैश्यों द्वारा क्षत्रियों को परास्त करने की गाथा से जुड़ी है। महाराजा अग्रसेन पर भी इन्द्र ने आक्रमण किया था और जब युद्ध में इन्द्र अग्रसेन को परास्त न कर सका तो उसने उनसे समझौता कर लिया था।

मौर्य साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त था। यह चन्द्रगुप्त कौन था? इसको लेकर इतिहासकारों ने विभिन्न मतों की कल्पना की है जहां कुछ आधुनिक इतिहासकारों ने उन्हें क्षुद्र वंशीय घोषित किया है, वहाँ जैन और बौद्ध ग्रंथों में उन्हें क्षत्रिय लिखा गया है किन्तु इतिहासकार नगेंद्रनाथ वसु ने अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि मौर्य साम्राज्य के संस्थापक सम्राट चंद्रगुप्त न क्षुद्र थे, न क्षत्रिय, अपितु वे वैश्यकुलोत्पन्न थे। उनका मत है कि पारस्कर गृह्यसूत्रों के अनुसार नाम के अंत में गुप्त उपाधि केवल वैश्य ही धारण करते थे-गुप्तेति वैश्यस्ये। चंद्रगुप्त के नाम में गुप्त उपाधि का होना उसके वैश्य होने का परिचायक है। गिरनार पर्वत से मिले एक प्राचीन शिलालेख से पता चलता है कि चंद्रगुप्त मौर्य का विवाह एक वैश्य कन्या से हुआ था और उनके साले का नाम पुष्यगुप्त था, जो वैश्य वंशी था। इसी प्रकार के अनेक तर्क देकर डॉ० नगेन्द्रनाथ वसु ने प्रमाणित किया है कि भारत वर्ष में सबसे प्रथम एकच्छत्री साम्राज्य स्थापित करने वाला, भारतीय इतिहास का प्रथम प्रतापी सम्राट वैश्यकुलोत्पन्न ही था। उसने न केवल यूनानियों को पराजित किया अपितु उनके शासक सेल्यूकस को पराजित कर उसकी पुत्री हेलन से विवाह किया। सेल्यूकस ने मगध साम्राज्य में अपने एक दूत मेगस्थनीज को नियुक्त किया था, जिसके वर्णनों से चंद्रगुप्त के महान साम्राज्य का पता चलता है। उसने लिखा है उसके समय में देश मे भरण-पोषण के प्रचुर साधन, उच्च जीवनस्तर, विभिन्न कलाओं का अभूतपूर्व विकास और समाज में ईमानदारी, वैश्यों के कारण है।

इसी मौर्य वंश में विम्बसार, सम्राट अशोक जैसे महान राजा उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपने श्रेष्ठ शासन एवं प्रजावत्सलता द्वारा भारतीय शासन में विशेष स्थान प्राप्त किया। अशोक ने बौद्धधर्म एवं सत्य तथा अंहिसा के प्रचार-प्रसार के लिए जो कुछ किया, सर्वविदित ही है। उसने स्वयं अपना विवाह विदिशा की एक वैश्य श्रेष्ठि कन्या से किया था।

गुप्त-वंश

गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है। वैसे तो इस काल के राजाओं की जाति को लेकर अनेक मतभेद हैं किन्तु ऐतिहासिक प्रमाणों से पता चलता है कि गुप्तवंशी शासक वैश्य सम्राट ही थे। जैसा कि उनकी गुप्त उपाधि से ही स्पष्ट है, वे

वैश्य वंशी थे क्योंकि मनुस्मृति बोधायन गृह सूत्र तथा पारस्कर संहिता में उल्लेख मिलता है-वैश्यान्त! गुप्तेति! इस वंश के सभी राजाओं ने गुप्त उपाधि का प्रयोग कर अपना वैश्य होना प्रकट किया है। मंजुश्री कल्प नामक ग्रंथ में उनके वैश्य होने तथा एक शिलालेख में प्रभावती गुप्ता का धारण गोत्र का उल्लेख इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि वे धारण गोत्री अग्रवाल ही थे, क्योंकि धारण गोत्र अग्रवालों में ही मिलता है।

इसके अलावा गुप्त शासकों के वैवाहिक सम्बंध वर्द्धन और नागवंश कन्याओं से होना, वहां खुदाई से प्राप्त मुद्राओं पर अग्रवालों में पूजनीया लक्ष्मी, विष्णु, कुबेर, गरुड़ आदि के चित्र अंकित होना, उनकी दानप्रियता, उदार दृष्टिकोण, धर्म के प्रति रूचि, शुद्ध-सात्विक-पवित्र जीवन, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति लगाव, लोककल्याणकारी प्रशासन, महाराजा अग्रसेन के समान ही इस वंश के राजाओं के नागवंश के साथ वैवाहिक सम्बंध, उदारवादी समाजवादी परम्परा आदि से स्पष्ट होता है कि गुप्त वंशी सम्राट निश्चित रूप से वैश्य अग्रवाल ही रहे होंगे इसके अलावा गुप्त वंशजो का उदय उत्तरी भारत में माना जाता है। अग्रसेन जी का राज्य भी हिमालय से गंगा यमुना तक, पश्चिम में मारवाड़, पूर्व में आगरा तथा दक्षिण में अग्रोहा तक था। इससे उनके अग्रवंशी होने का परिचय मिलता है।

श्री गुप्त ने महाराजा की पदवी धारण की। उनका शासन 275 से 300 ई. माना जाता है। इसका पुत्र घटोत्कच लगभग 300 से 319 ई. तक था।

सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम-इसी वंश में महान प्रतापी सम्राट चंद्रगुप्त प्रथम (320 से 335 ई०) हुआ, जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की और पाटलीपुत्र, वैशाली सहित बिहार, उत्तर प्रदेश तथा बंगाल के अनेक भागों को मिला कर राज्य का विस्तार किया। उसने अपने नाम से गुप्त सम्वत् का प्रवर्त्तन किया। स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किया।

समुद्र गुप्त-चंद्रगुप्त प्रथम का यशस्वी पुत्र समुद्रगुप्त हुआ, जिसने आसमुद्र दिग्विजय पताका फहरा कर अथाह पराक्रम का परिचय दिया। उसे भारतीय इतिहास का नेपोलियन कहा जाता है। उसने सैंकड़ों राज्यों पर विजय प्राप्त करते हुए लगभग 3000 मील से अधिक की दिग्विजय यात्रा की और एक बार भी पराजित नहीं हुआ और न ही कभी रणक्षेत्र से कदम पीछे हटाया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय-समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय हुआ जिसने 36 वर्ष तक शासन किया। यह वही चन्द्रगुप्त था, जो इतिहास में विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध है और जिसकी न्यायप्रियता की गाथायें आज भी प्रचलित है। इसी चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने विक्रम सम्वत् का प्रचलन कर इतिहास में एक नये युग के प्रवर्त्तन का श्रेय प्राप्त किया। इसका काल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक-सभी दृष्टियों से भारतीय राजनीति का स्वर्णयुग था और इस काल में विज्ञान कला, शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इस काल के विषय में कवि कालिदास ने कहा है-

'रघु' (समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय के सम्मिलित तेजपुञ्ज) के शासन में बिहार के लिए जाती, राह में मदाधिक्य से निद्रागत नर्तकियों के वस्त्रों को जब वायु भी छूने का साहस नहीं करती थी, फिर चोरी के लिए कौन हाथ बढ़ाता?

उसी के काल में चीनी यात्री फाह्यान आया। उसने लिखा, है कि विक्रमादित्य के शासन काल में वह चौदह वर्षों तक नगरों, जनपदों, वनों, मार्गों में दुर्गम पथों पर चलता रहा किन्तु उसे कहीं भी एक बार चोर या डाकूओं का सामना नहीं करना पड़ा।

फाह्यान के वर्णन से चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के राज्य का जो रूप निखरता है, वह भारत के अग्रवाल वैश्यों के सर्वथा अनुरूप है। उसके अनुसार चंद्रगुप्त के राज्य में बहुसंख्यक जनता सुख से निवास करती थी। किसी को भी न्यायाधीश के सामने नहीं जाना पड़ता था। राजा अपने शासन में किसी अपराधी को मृत्यु या शारीरिक दण्ड नहीं देता था। अपराधियों पर केवल जुर्माना किया जाता था। हर मुकद्दमे की वास्तविक स्थिति के अनुसार यह जुर्माना कम या ज्यादा होता था। कई बार राजद्रोह का दुःस्साहस करने वालों का केवल दाहिना हाथ काट दिया जाता था।

अन्य गुप्त सम्राट–महाराजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के बाद गुप्त वंश में कुमारगुप्त, स्कदंगुप्त, नृसिंह गुप्त, बुद्धगुप्त, भानुगुप्त, तथागत गुप्त, कृष्ण गुप्त, हर्ष गुप्त, जीवित गुप्त, कुमार गुप्त द्वितीय आदि अनेक शासकों ने राज्य किया। स्कंदगुप्त ने यवन, वाल्हिक, कुशान आदि विदेशी शक्तियों से लोहा लिया और उन्हें भूमि चाटने को विवश कर दिया। स्कदंगुप्त ने हूणों पर विजय प्राप्त की। कुमार गुप्त द्वितीय ने भी हूणों का सामना किया किन्तु धीरे-धीरे उसके राज्य की शक्ति कमजोर पड़ती गई और गुप्त वंश के शासन का अंत हो गया।

गुप्त वंश वास्तव में भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग था। इतिहासकार वर्नेट के अनुसार भारतीय इतिहास में गुप्त काल का वही स्थान है, जो यूनानी इतिहास में पेरीक्लीज और रोमन इतिहास में अगस्टस सीजर का है? मिसेंह स्मिथ के अनुसार गुप्त सम्राटों का युग निस्संदेह सर्वाधिक मानवीय एवं संतोषजनक था।

इस युग में विज्ञान, साहित्य, कला, संस्कृति, अर्थ, धर्म, सभी क्षेत्रों में पर्याप्त प्रगति हुई। इसी काल में साहित्य जगत में कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तलम्, शुद्रक का मृच्छकटिक, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, भारवि का किरातार्जुनीयम आदि नाटक लिखे गये। विष्णुगुप्त का पंचतंत्र-जिसका संसार की समस्त भाषाओं में अनुवाद हुआ, इसी काल में लिखा गया। इसी काल को दण्डी, वाणभट्ट, सुबंधु जैसे साहित्यकारों ने गौरवान्वित किया। संस्कृत भाषा का अमरकोष लिखा गया। जैन तथा बौद्ध साहित्य के अनेकानेक ग्रंथों तथा दिव्यावदान की रचना हुई। अश्वघोष के 'बुद्धचरित्र' तथा सुंदरानंद, जैसे प्रबंध काव्यों का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। योग सूत्रों का योगभाष्य भी गुप्त काल में लिखा गया।

आयुर्वेद के क्षेत्र में धन्वन्तरी जैसे शल्यचिकित्सक इसी युग में हुए। रस विद्या के ग्रंथों की रचना हुई और रसायन तथा चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग हुए। वाणभट्ट ने अष्टांग सग्रंह एवं अष्टांग हृदय जैसे ग्रंथों की रचना की।

ज्योतिष के क्षेत्र में वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने इसी काल में सूर्य तथा चन्द्रग्रहण के सम्बंध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया। भारतीय ज्योतिष के तीन स्तंभ-आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त ने इसी काल में अपने ज्योतिष ग्रंथों की रचना की। आर्यभट्ट इस युग का पहला वैज्ञानिक था, जिसने पृथ्वी को गोल माना और अपनी धूरी पर घूमना सिद्ध किया। अंक गणित, बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति आदि के क्षेत्र में भी आर्यभट्ट ने मौलिक खोज की। इसी काल में दशमलव सिद्धांत का आविष्कार हुआ जिसका संख्या शास्त्र में अत्यधिक महत्त्व है। मूर्तिकला की दृष्टि से इस युग में अपूर्व

उन्नति हुई। इस युग में मथुरा, पाटलिपुत्र और बनारस मूर्ति कला के प्रसिद्ध केंद्र थे। एलोरा और अजन्ता की गुफाओं की विश्वप्रसिद्ध चित्रकारी भी इस युग की देन हैं। इस काल के 300 वर्षों में जितनी सुंदर मूर्तियों का निर्माण हुआ, वैसा विश्व इतिहास के पांच हजार वर्षों में भी नहीं हुआ। इस युग में सांची, हिगावा तथा ऐरन के ऐतिहासिक मंदिरों की रचना हुई। बौद्ध गया के महाबोधि मंदिर का निर्माण हुआ। फाह्यान के उल्लेखों से पता चलता है कि गुप्त शासकों ने सम्पूर्ण देश एवं अफगानिस्तान में सैकड़ों बौद्ध स्तूपों, विष्णु एवं शिवमन्दिरों का निर्माण कराया था।

मनुष्यों के लिए ही नहीं, पशु-पक्षियों के लिए भी चिकित्सालयों का निर्माण इस युग के उदार दानदाता राजाओं द्वारा कराया गया।

कला एवं धातु विज्ञान की दृष्टि से मेहरौली का लौहस्तंभ इस युग का उत्कष्ट नमूना है। इसके सम्बंध में एक विद्वान अल्तेकर ने लिखा है–

ऐसे समय में जबकि लोहे को ढालने का यूरोप को अधूरा ज्ञान था, हिंदू धातु-वैज्ञानिकों ने ऐसी निपुणता से इतने भारी लोहे के स्तंभ को बनाया, जो 1500 वर्ष की धूप सहने और वर्षा में खड़े रहने के बाद भी न तो खराब हुआ है और न ही जंग लगी है। नालंदा में स्थापित 80 फुट ऊंची ताम्बे से बनी बुद्ध की मूर्ति धातु विज्ञान की उन्नति का एक और प्रमाण है।

संक्षेप में गुप्त काल के इस युग में भारतीय सीमाओं का जो विस्तार हुआ, धार्मिक दृष्टि से पारस्परिक सद्भाव देखने को मिला, वैसा अन्य युग में दुर्लभ है।

इस युग का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि भारत में आने वाले सभी विजातीय लोग यहाँ से धर्म, मैत्री, करुणा, प्रेम, मानवता आदि गुणों का संदेश अपने-अपने देश में ले गए। परिणामस्वरूप अनेक बर्बर जातियां सभ्य हो गई और अधिकांश व्यापार मार्ग सुरक्षित हो गए। दुनिया के कोने में भारत की यश-गाथायें गूंजने लगी। यह युग अग्रसमाज की अग्रगामिता का प्रमाण है।

वर्द्धन वंश

गुप्त काल के बाद भी अग्र/वैश्य कुल द्वारा राज्य की यह परम्परा अविरत रूप से किसी न किसी रूप से चलती रही। गुप्त काल के पतन के बाद 569 ई० में वर्द्धनवंश का उल्लेख मिलता है। मञ्जुश्री कल्प एवं अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि वर्द्धन वंशी सम्राट गुप्त वंश के दौहित्र थे और उनका सम्बन्ध वैश्य समुदाय से था। राय गोविन्दचन्द्र ने उन्हें धारणगोत्री बताया है, जो अग्रवालों का एक गोत्र है। हर्ष चरित्र में भी बाणभट्ट ने हर्ष को वैश्यकुलोत्पन्न बताया है।

इस काल में आदित्यवर्द्धन, प्रभाकरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन, हर्षवर्द्धन जैसे अनेक यशस्वी सम्राट हुए। इनका राज्य थानेश्वर (कुरुक्षेत्र) था, जो अग्रोहा के बिल्कुल समीप है। हर्षवर्द्धन का शासन काल 606 ई. से 649 ई. तक का माना जाता है। कहा जाता है, वह अत्यंत ही उदार और प्रतापी सम्राट था। उसने अपने बल और पराक्रम से कलिंग और दक्षिण कौशल जैसे राज्यों पर आधिपत्य स्थापित किया और चक्रवर्ती सम्राट बनने की इच्छा से उसने उत्तर तथा दक्षिण के अनेक राज्यों पर अधिकार कर लिया था किन्तु अंत में दक्षिण के राजा पुलिकेशी से उसे पराजय का सामना करना पड़ा था।

हर्षवर्द्धन के समय में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। उसके उल्लेख से पता चलता है कि हर्षवर्द्धन परम विद्यानुरागी और दानी सम्राट था। वह हर चौथे वर्ष कुम्भ पर जाया करता था और अपना सर्वस्व दान कर देता था। धोती और पहनने के वस्त्रों को ही अपने पास रखता था। उसके राज्य में बड़े-बड़े विद्वान सुशोभित होते थे।

वर्धन राजाओं का काल 700 ईस्वी तक रहा। इस युग में वैश्य समुदाय ने बड़ी प्रगति की। अधिकांश वैश्यों ने कृषि और पशुपालन त्याग उद्योग-व्यापार को अपना लिया। धनी वैश्यों ने उद्योगधंधों पर अधिकार जमाना प्रारम्भ कर दिया था और अंत में राजसत्ता भी प्राप्त करने में सफल हुए।

वल्लभी वंश

इतिहास में मालवगण के संस्थापक मेंत्रक वैश्य ही थे। इनकी ख्याति वल्लभी नाम से हुई। इस वंश में धनसेन, ध्रुवसेन, महासेन, धरसेन, शिलादित्य आदि अनेक सम्राट हुए, जिन्होंने 525 ई० से लेकर 767 तक शासन किया।

काकाटक वंश

वैश्य वंश की एक शाखा काकाटक वंश भी थी। इसमें बालटका, प्रवरसेन, भद्रसेन, पृथ्वीसेन, सर्वनाग, सर्वसेन, विध्यंसेन, देवसेन, हरिसेन जैसे अनेक राजा हुए, जिन्होंने 7वीं सदी तक राज्य किया।

नागवंश भारशिव वंश

दक्षिण-पश्चिम का नागवंश भी वैश्य राज्य था। डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल एवं अन्य इतिहासकारों ने प्रमाणित किया है कि सुप्रसिद्ध नागवंशी सम्राट वैश्य थे। इस वंश ने 200 वर्ष तक शासन किया तथा इस वंश में शेषनाग, भोगिन, रामचन्द्र, धर्म वंगा, भूतन दी, शिशु नदी, यशनदी जैसे अनेक सम्राट हुए। ये नागवंशी अत्यंत ही प्रतापी सम्राट थे और उनसे सम्बन्ध स्थापित होना गौरव का विषय माना जाता था। महाराजा अग्रसेन तथा उनके पुत्रों का विवाह नागवंश में ही हुआ था। इसी वंश में कुशाक शासन से भारत को मुक्त कराने वाले भारशिव वंश का उदय हुआ, जिसने सन् 315 में अपनी शक्ति संचित कर भारत को विदेशी दासता से मुक्त कराने में विशेष योगदान दिया था। इन नागवंशी राजाओं का शासन 110 ई. से लेकर 25-30 ईस्वी तक रहा।

मुगलकाल एवं अंग्रेज–काल

मध्य एवं अंग्रेजी शासन काल में भी भारत में अनेक अग्रवाल हुए जिन्होंने अपने कार्यों से समाज का गौरव बढ़ाया। इस संदर्भ में झुंझनू के सेठ तुलसीराम जालीराम, पोद्दार वंश के प्रवर्त्तक सेठ रामचंद्र, गोयन वंश के पूर्वज सेठ गोविंदराम, खेतान वंश के सेठ खेतसी दास, नोपानी वंश के सेठ नोपचंद, बागला वंश के बागमल, खेमका वंश के सेठ खेमचंद, मानसिंहका वंश के सेठ मानसिंह आदि का नाम उल्लेखनीय है।

मुगलकाल में अग्रवाल वैश्य महत्त्वपूर्ण पदों पर थे। राज्य के अधिकांश मोदीखानों का उत्तरदायित्व उन्होंने संभाला हुआ था। युद्ध के समय वे ही सेना को अस्त्र-शस्त्र और रसद सामग्री पहुंचाने का कार्य करते थे। उन्हें सेना और प्रशासन दोनों में उच्च पद प्राप्त

थे। उनके राज्य में ही अग्रवंशी मधूशाह हुए। राय रामप्रताप और लाला राजाराम को भी इस युग में पर्याप्त ख्याति पाई। रामप्रताप राय के कर्त्तव्य परायणता से प्रसन्न होकर अकबर ने उन्हें आली खानदान का सम्मान और राय का खिताब प्रदान किया था। लाला राजाराम को भी उसने राजकीय सेवा से प्रसन्न होकर बड़ी जागीर भेंट की थी।

मुगल सम्राट राय रामप्रताप के वंशज राय इन्द्रभान शाहजहाँ के काल में दीवान के महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्त थे। शाहजहाँ ने उन्हें राजा का खिताब प्रदान किया था।

मुगल सम्राट फरूखसियर के शासन काल में जानसठ के निवासी राजा रतन चन्द्र अग्रवाल अत्यन्त प्रभावी मनसबदार थे। उन्होंने प्रशासनिक और सैनिक दोनों क्षेत्रों में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की। वे सैयद बंधुओं के घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने सैयद बंधुओं के साथ मुगल साम्राज्य के संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। मुगल सम्राट ने उनकी इस कार्यकुशलता से प्रसन्न हो उन्हें प्रथम दो हजारी, फिर पांच हजारी और बाद में 'राजा' की पदवी प्रदान की। उन जैसा प्रभावी मनसबदार मुगल साम्राज्य में अन्य कोई अग्रवाल नहीं हुआ। उन्होंने अग्रवालों के एक नये संगठन का प्रवर्त्तन भी किया, जो राजवंशी कहलाया।

मुगल सम्राट शाह आलम के शासनकाल (सं. 1816 से 1863) में राजा कालीराम बिहार सूबे के नायब दीवान थे। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उन्हें राजाबहादुर की उपाधि प्रदान की थी। इसी समय दिल्ली के जयसिंह अग्रवाल दीवान के प्रशासनिक पद पर नियुक्त थे। सम्राट शाह आलम ने उन्हें शाही तोपखाने का हाकिम बनाया था। उनके वंशज आज भी इसी कारण तोपखाने वाले कहलाते हैं।

इतिहास से ज्ञात होता है कि सिक्ख राज्य पटियाला की गद्दी पर जब सन् 1765 में अमर सिंह आसीन हुए तो उन्होंने लाला नन्नूमल को अपना दीवान नियुक्त किया था। लाला नन्नुमल में जहाँ अद्‌भुत प्रशासनिक योग्यता थी, वहाँ वीरता और सैन्य संचालन में भी वे अनुपम थे। उन्होंने अनेक युद्धों में सफलता प्राप्त कर पटियाला राज्य का विस्तार किया था। यहाँ तक कि उन्होंने दिल्ली के मुगल सम्राट के अधीनस्थ फतेहाबाद, सिरसा, हांसी और हिसार जैसे महत्त्वपूर्ण नगरों को भी पटियाला राज्य में सम्मिलित कर लिया था। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने अग्रोहा की रक्षार्थ एक किला बनवाया था, जो बाद में नष्ट हो गया और जिसके ध्वंसावशेष आज भी अग्रोहा के खण्डहरों में मिलते हैं।

इस युग में लाला नाढ़ोमल-गुड़वाला, सेठ पतरामदास-भिवानी, बाबू मनोहरदास शाह-बनारस, लाला पीरूमल-इलाहाबाद, दीवान परतीराय तथा दीवान जादोराय, राजा शिव प्रसाद बहादुर-बिजनौर, लाला फतेहचन्द-सिरसा, राय ख्यालीराम बहादुर, राजा पटनीमल बहादुर, लाला अमी चंद शाह, गोविन्दचंद दीवान, हट्टीराम जी, दलपतराय कानूनगो आदि अनेक विभूतियां हुईं।

लाला नाढ़ोमल गुड़वाला के विषय में प्रसिद्ध है कि वे अत्यंत ही सम्पन्न रईस थे और करोड़ों रुपये समय-समय पर शाही परिवारों को बिना ब्याज देते रहते थे। उनकी हुण्डी सम्पूर्ण भारत में चलती थी और दान धर्म के क्षेत्र में भी उनका नाम अग्रणी था। उन्होंने स्थान-स्थान पर पशुओं के लिए गुड़ बंटवाने की व्यवस्था कर रखी थी। इसलिए उनका खानदान गुड़वालों के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

लाला राधाकृष्ण तथा छीतरमल गुड़वाला ने सन् 1732 में जब मुहम्मदशाह अब्दाली ने मथुरा में भारी लूट-पाट मचाई, उस समय दीन-असहायों की खूब सहायता की और जगह-जगह कुंओं, बगीचों, धर्मशालाओं आदि का निर्माण करा अतिशय दानवीरता का परिचय दिया था।

सेठ पतरामदास भिवानी अपने समय के सुप्रसिद्ध व्यापारी थे। उस समय जबकि यातायात के साधनों का अभाव था, देश के कोने-कोने में आपकी 52 कोठियां फैली हुई थीं। आपने ही संवत् 1874 में भिवानी मण्डी की नींव डाली थी। आज भी भिवानी में इनके नाम से पतरामदास बाजार और पतरामदास बारद विद्यमान है।

बाबू मनोहरदास शाह और बाबू भईयासाब बनारस के सुप्रसिद्ध खानदानी रईस थे। बाबू भैयासाब की 1770 के लगभग भारत के प्रधान व्यापारिक केन्द्रों में 52 से अधिक शाखायें थीं। इसी प्रकार बाबू मनोहरदास ने व्यापार-व्यवसाय में महान प्रगति की थी। आपको टीपू सुल्तान ने एक कीमती तलवार भेंट की थी। आपका व्यापार उस समय भी करोड़ों में था और आपने कलकत्ता में मनोहरदास का कटरा तथा बनारस में बड़ी-बड़ी हवेलियाँ बना बड़ा सुयश प्राप्त किया था।

लाला बद्रीदास कोतवाल वालों ने लार्ड लारेंस की आज्ञा से फिरोजपुर छावनी को बसाया। कोतवाल के पद पर कुशलता पूर्वक कार्य करने से उन्हें कोतवाल की उपाधि मिली।

दीवान परतीराय और दीवान जादोराय मुगल और मराठा शासन में दीवान पद पर रहे और पद की गरिमा बढ़ाने के कारण दीवान पदवी के विभूषित हुए।

लाला पीरूमल ने गदर के समय विपत्ति में फंसे लोगों की मदद कर पर्याप्त नाम कमाया। आपके अनेक सदावर्त भी चलते थे।

दीवान श्रीराम अलवर पंजाब में एम.ए.की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। इनकी बुद्धिमता को युवराज मंगलसेन बहादुर पर इतना प्रभाव पड़ा था कि उन्होंने आपको अपना दीवान बनाया तथा आपको 'ताजिम' जागीर की उपाधि दी।

लाला फतेहचन्द का परिवार सिरसा का प्रसिद्ध खानदानी परिवार था। आपने सिरसा को आबाद करने में विशेष योगदान दिया था। इन्हें इनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप खजांची पद पर नियुक्त किया गया और आपका परिवार खजांची वालों के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनके पुत्र श्री रामसुखदास ने भी पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की।

राजा शिवप्रसाद बहादुर बिजनौर को निजाम सरकार ने इन्तजामें फौजी नियुक्त किया। आपने लुटेरे कौम पिंडारी पर विजय प्राप्त कर अपनी अद्‌भुत पराक्रम शक्ति का परिचय दिया था। उससे प्रसन्न होकर बादशाह निजाम ने आपको 'मंसवेहफत हजारी तथा राजबहादुर की उपाधि प्रदान की थी तथा अनेक बहुमूल्य हीरे जवाहरात भेंट किए थे।

चौधरी चोखाराम के कार्यों से प्रसन्न हो औरंगजेब ने उन्हें कानूनगो का खिताब प्रदान किया था। इन्हीं के वंशज श्री दलपतराय से प्रसन्न हो उन्हें मुगल सम्राट आलम ने 1776 में शाही फरमान प्रदान किया था।

इसी प्रकार लाला हट्टीराम जी जींद स्टेट में दीवान रहे। इनका वहां बहुत प्रभाव था। बाद में इनका खानदान तोपखाना वाला के नाम से विख्यात हुआ।

सेठ मिर्जामल पोद्दार महाराजा रणजीतसिंह के अत्यंत विश्वासपात्र व्यक्तियों में से थे। महाराजा ने आपसे प्रसन्न हो नगारे का निशान तथा मोतियों का हार भेंट में दिया था।

आपने बीकानेर नरेश की भी तत्कालीन समय में पर्याप्त सहायता की और लाखों रूपये उधार दिये थे। आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर बीकानेर महाराजा ने आपको प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया और उन्हें यह विशेषाधिकार प्रदान किया कि इनके खिलाफ शत्रुओं की कोई बात नहीं सुनी जाएगी, इनके कर्ज की वसूली में सरकार मदद करेगी तथा उनके सम्मान में किसी प्रकार का परिवर्तन न होगा। आप अपने समय के अत्यंत ही प्रभावी व्यक्ति थे। आपने चुरू के उजड़े गांव को बसा असीम शौर्य का परिचय दिया था।

यह इस समाज के लोगों का विशिष्ट प्रभाव ही था कि कट्टर मुस्लिम शासकों को भी उन्हें अपने राज्य में उच्चपदों पर नियुक्त करना पड़ा। परिणामस्वरूप कट्टर विधर्मियों के शासन में भी हिंदुओं पर विशेष आंच न आ पाई।

मध्यकालीन सुलतानों, बादशाहों और राजाओं के दरबारों में वैश्य समाज के लोग सेनाओं के संचालन में भी पीछे नहीं रहे। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़, बीकानेर आदि रियासतों में न जाने कितने ही अग्र/वैश्य मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री वगैरह बनते रहे।

यदि भाग्य ने मुंह न मोड़ लिया होता और हुमायूं की मौत के बाद हुई पानीपत की दूसरी लड़ाई में महाराजा हेमराज विक्रमादित्य की आंखों में तीर न लगा होता तो शायद आज भारतीय उपमहाद्वीप का इतिहास ही दूसरा होता।

शेरशाह सूरी के साम्राज्य में एक छोटे से राजस्व अधिकारी के रूप में काम शुरू करके वीर हेमू ने (जिसे हेमू वक्काल भी कहा जाता है) सैन्य संचालन और नगर प्रशासन में अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया और शेरशाह के उत्तराधिकारी आदिलशाह सूरी के प्रधान सेनापति बन गये। इसी वीर वैश्य सेनापति के नेतृत्व में अफगान सेनाओं ने बीस लड़ाईयां जीतीं। उन्हें अपने बल-पराक्रम और पौरुष के कारण वीर विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्त हुई तथा उन्हें सेनापति के साथ प्रधानमंत्री भी बनाया गया।

यह वही वीर हेमूशाह थे, जिनके नाम से मुगल सेनाएं कांपने लगती थी और जिन्हें मुगल सेना का काल समझा जाता था किन्तु पानीपत की लड़ाई में आंख में तीर लगने से पासा ही पलट गया।

अंग्रेजी शासन काल में भी अनेक अग्रवालों ने विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित करने के साथ अपार वैभव का भी अर्जन किया था। ऐसे व्यक्तियों में पटना और बनारस के राय गोविंद एवं उनके यशस्वी पुत्र पटनीमल, बंगाल के सेठ अमीचंद, दिल्ली के लाला सालिगराम खजांची, लाला हरसुखराय जैन, मेरठ के लाला दलपतराय, लखनऊ के शाह गोविन्दचंद्र तथा शाह कुंदन लाल आदि नामों का उल्लेख ही पर्याप्त है।

राय ख्यालीराम बहादुर को ब्रिटिश शासन में डिप्टी गवर्नर का सम्मानपूर्ण पद प्राप्त हुआ और लार्ड क्लाईव ने उनके कार्यों से प्रसन्न हो उन्हें राजाबहादुर का सम्मान प्रदान किया था। बिहार में गड़बड़ी होने पर पूरा सूबा उन्हें इस्ट इण्डिया कम्पनी ने लीज पर दे दिया था। ये पटना के दीवान भी रहे।

आपके ही पुत्र राजा पटनीमल बहादुर थे। सन् 1803 में मेजर जनलर बेलेजली के साथ अवध गोहद और ग्वालियर के महाराजाओं के साथ जो संधियां हुई उनमें आपका विशेष योगदान था। आप अत्यन्त ही धार्मिक प्रवृति के थे। आपने कई मंदिरों, तालाबों का निर्माण कराया। मथुरा में 3,00,000/- रुपये की लागत से सुप्रसिद्ध शिवताल तालाब तथा बनारस जिले की कर्मनाशा नदी पर पत्थर का मजबूत बांध बनवाया, जिसकी

सरकार ने भी अत्यधिक प्रशंसा की और प्रसन्न होकर आपको राजा की उपाधि प्रदान की। दिल्ली में अब भी इनके नाम से पटनीमल की हवेली तथा गली राजा पटनीमल मिलते हैं।

लाला अमीचंद मुगल साम्राज्य के पतन के साथ बंगाल के प्रसिद्ध प्रतिष्ठित सेठों में थे। इनका दिल्ली दरबार से गहरा सम्बन्ध था। 1636 में जब शाहजहां का पुत्र शाहशुजा बंगाल का सूबेदार बना तो आपके पूर्वज भी बंगाल चले आये थे। इन्होंने व्यापार द्वारा इतनी सम्पत्ति अर्जित कर ली थी कि अंग्रेज व्यापारी भी इनसे ऋण लेकर बंगाल में अपना व्यापार करते थे। सुप्रसिद्ध कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र आपके कुल में ही पैदा हुए थे।

इस काल में उनकी दोहरी भूमिका रही। अंग्रेजी साम्राज्य के प्रारम्भ में जहां वैश्य/अग्रवालों ने अपने कौशल से अंग्रेजी कम्पनियों में स्थान बना व्यापारिक कौशल को प्रकट किया, वहां राष्ट्रीय हित का प्रश्न आने पर उन्होंने उनका विरोध करने में भी संकोच नहीं किया। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भी इस समाज की राजनीति एवं अन्य क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसका विवेचन अग्रवाल समाज को राष्ट्र सेवाओं के अन्तर्गत किया गया है।

अग्रवाल शब्द की व्युत्पति तथा नामकरण

अग्रवाल शब्द की व्युत्पति के सम्बंध में विभिन्न मत हैं और अलग-अलग विद्वानों ने अपने ढंग से इसकी व्याख्या की है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार अग्रवाल शब्द अग्र+वाल दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है अग्र की संतान अर्थात महाराजा अग्रसेन का बालक, किंतु अग्रवाल शब्द की यह व्याख्या उपयुक्त प्रतीत नहीं होती। प्रथम तो वाल प्रत्यय है, बाल नहीं। दूसरा यह है कि अन्य जाति सूचक शब्दों में भी वाल का प्रयोग हुआ है किंतु इस अर्थ में नहीं। जैसे ओसवाल, खण्डेलवाल, पालीवाल आदि में वाल प्रत्यय प्रयुक्त है किंतु यह प्रत्यय बालक या संतान का सूचक न होकर स्थान विशेष के निवासियों का द्योतक है, जैसे ओसिया के रहने वाले-ओसवाल, खंडेला के खंडेलवाल, पाली के पालीवाल। अतः अग्रवाल का अर्थ महाराजा अग्रसेन का बालक करना उपयुक्त नहीं है।

अन्य विद्वानों ने भी अपने मत इस सम्बंध में प्रकट किए हैं। जगन्नाथप्रसाद रत्नाकर का मत है कि अग्रवाल सेना के अग्रभाग की रक्षा करते थे, इसलिए उसका नाम अग्रपाल पड़ा, जो अग्रवाल शब्द के रूप में परिवर्तित हो गया। इसी से मिलते जुलते एक मत के अनुसार अग्रसेन का अर्थ है-सेना के अग्रभाग में रहने वाले और अग्रवाल क्योंकि सदैव सेना की अगली पंक्ति में रहते थे, इसलिए उनका नाम अग्रवाल पड़ा।

यह भी कहा जाता है कि प्राचीन समय में यज्ञ की अधिकता के कारण जो लोग अगर (एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी, जो यज्ञ में प्रयक्त होती है) का व्यापार करते थे, वे अगरवाल या अग्रवाल कहलाए। इसी प्रकार कहा जाता है। कि महाराजा अग्रसेन वैश्य समुदाय में सबसे अग्रगण्य पुरुष थे, इसलिए उनकी संतान अग्रवाल कहाई।

जो सबसे अग्र रहे, वह कहलाता है अग्रवाल। इस प्रकार की व्याख्या भी अग्रवाल शब्द की की गई है।

"अगर" का व्यापार करने वाले ही अग्रवाल नहीं कहला सकते क्योंकि इस समुदाय के लोग विभिन्न वस्तुओं का व्यापार भी करते हैं। फिर अगर का व्यापार तो कोई भी जाति कर सकती है। उस पर एक जाति या समुदाय विशेष का अधिकार मानना उपयुक्त नहीं है। इसी प्रकार सेना के अग्रभाग में रहने अथवा सेना के अग्रभाग का पालन करने वालों के लिए अग्रवाल सम्बोधन उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। फिर सेना के अग्रभाग में तो किसी भी जाति या समुदाय के लोग हो सकते हैं। अत: उन सबको अग्रपाल या अग्रवाल की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इसलिए ये मत अपूर्ण एवं एकांगी प्रतीत होते हैं। किसी एक महान पुरुष के नाम पर उसकी सम्पूर्ण जाति का नाम पड़ा हो, ऐसा कोई उदाहरण भी नहीं मिलता। हाँ अल्ल या बंक जरूर प्रचलित हो जाते हैं, जैसे जीवराज का परिवार जीवराजका, मानसिंहका परिवार-मानसिंहका। अत: पूरी जाति को महाराजा अग्रसेन की संतान मानना अथवा उनके नाम पर अग्रवाल जाति का प्रवर्तन स्वीकारणीय नहीं।

इस सम्बन्ध में सर्वमान्य यह मत है कि अग्रवाल आग्रेयगण या अग्रोहा के मूल निवासी थे। अग्रोहा की खुदाई से जो मुद्रायें मिली हैं उन पर-

'अगोदके अगाच्चजनपदस' शब्द अंकित मिले हैं। इन तीनों शब्दों में ही अग्रवाल जाति और उसके नामकरण का समस्त रहस्य छिपा पड़ा है। आजकल हम जिसे अग्रोहा कहते हैं, उसका प्राचीन नाम अग्रोदक था (जो प्राकृत भाषा में अगोदक हो गया।) जिस प्रकार प्राचीन संस्कृत शब्द प्रथुदक से पिहोवा शब्द बन गया, जो आज भी कुरुक्षेत्र का प्रसिद्ध नगर है, उसी प्रकार अग्रोदक से अग्रोहा बन गया। यह अग्रोहा एक जनपद की राजधानी था, जिसका नाम अग्र या आग्रयेगण था। इस जनपद के मूल वैश्य निवासी, जब वहां से चारों ओर फैले तो वे अपना परिचय अग्रोहा वाले, अग्रवा वाले (जनपद निवासी) के रूप में देने लगे और उसी से उनका नाम अग्रवाल पड़ गया, जो भाषा शास्त्र के अनुरूप है। आज भी सामान्य बोली में अग्रोहा को अग्रवा के नाम से पुकारा जाता है।

अन्य वैश्य जातियों या समुदायों के नामों का विश्लेषण करने पर भी यह व्याख्या या मत अधिक समीचीन प्रतीत होता है। ओसवाल, वरणवाल, खंडेलवाल, पालीवाल आदि जातिसूचक शब्दों में प्रथम नाम किसी स्थान या जनपद विशेष का है, जिसमें मध्यकालीन "वाल" प्रत्यय जुड़कर इनका निर्माण हुआ है जैसे ओसिया में वाल प्रत्यय जुड़कर ओसवाल, खंडेला में वाल प्रत्यय जुड़कर खंडेलवाल, वरणदेश में 'वाल' प्रत्यय जुड़ने से वरणवाल, ठीक उसी प्रकार अग्र या अग्रोहा में वाल प्रत्यय जुड़ने से अग्रवाल शब्द बन गया है। यह दृष्टव्य है कि आज भी जिस क्षेत्र-विशेष में अग्रवालों का एक बहुत बड़ा अंश केन्द्रित है, वह अग्रोहा से कुछ सौ किलोमीटर की परिधि में ही है। कालान्तर में यही स्थान बोधक नाम जातिबोधक बन गया। अग्रोहा में अन्य जातियों अथवा समुदाय के जो लोग थे, वे अपनी-अपनी जातियों, समुदायों या गणों में मिल गए।

अग्रवाल शब्द की प्राचीनता

"अग्रवाल" शब्द का प्रचलन कैसे हुआ, इसे जान लेने के बाद इस शब्द की प्राचीनता के विषय में जानना उपयुक्त होगा। इस सम्बन्ध में डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त, जैन साहित्य के विद्वान-अगरचन्द नाहटा, श्री परमानंद शास्त्री आदि ने काफी अध्ययन किया है और अब तक प्राप्त प्रमाणों, शिलालेखों, प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेख आदि के

आधार पर निष्कर्ष निकाला है कि इस शब्द का प्रचलन किसी न किसी रूप में ईस्वी सन् 1100 के आसपास हो गया था। प्राकृत भाषा के जो ग्रन्थ मिलते हैं, उनसे पता चलता है कि इस शब्द का प्रचलन पूर्व में "अगरवाल" या "अयरवाल" के रूप में था। सन् 1132 ई. (सम्वत् 1189) में तोमर वंशीय राजा अनंगपाल तृतीय शासनकाल में कविवर श्रीधर द्वारा रचित "पासणाह चरिउ" में अयरवाल जाति का उल्लेख है। इसी प्रकार संवत् 1393 में रचित दातृ प्रशस्ति में अयरवाल और यशकीर्ति द्वारा रचित हरिवंश पुराण में अयरवाल शब्द का उल्लेख किया गया है। जैसे-

1. सिरि अयरवाल वंशहि पराणु, तो संद्य हे अच्छलु विनय पाणु। (पाण्डव पुराण)

2. तहि अयरवाल वसहि पहाणु, सिरि गडगनो गगेय भाण। (हरिवंश पुराण)

श्री अगरचन्द नाहटा ने सधारू जैन कवि का उल्लेख किया है जिसने सम्वत् 1411 में प्रद्युम्न चरित की रचना की थी। इस कृति में कवि ने अपना परिचय स्पष्ट रूप से अग्रवाल के रूप में दिया है-

मइया मीकड़ की यहु बखाण, तुम पसुन पायउ निखाण।
अगरवाल की मेरी जाति, पुर अगरोए मोहि उत्पत्ति।

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ने पता लगाया है कि फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल (सन् 1370 ई. सम्वत् 1427) में मौलाना दाउद ने अपने ग्रन्थ में अग्रवाल जाति की चर्चा की थी। इसी प्रकार जायसीकृत "पद्मावत" में भी अग्रवाल जाति का उल्लेख मिलता है। (सन् 1540 ई.)

अगरवाल चौहान चन्देले, खत्री और पंचवान बघेले।

माणिक्य चन्द्र ने 1576 सम्वत् में अपना परिचय देते हुए लिखा था-

अयरवाल सुप्रसिद्ध विभासिउ। सिंघलु गोत्तउ सुवण समासिउ॥

यह दृष्टव्य है कि प्राचीन ग्रन्थों में जहां अगरवाल, अयरवाल जैसे शब्दों का प्रयोग मिलता है, वहां कतिपय ग्रन्थों में अग्रोतकान्वय शब्द का उल्लेख भी हुआ है। सन् 1132 ईस्वी में रचित "पासाणाह चरिउ" (पार्श्वनाथ चरित्र) में कवि श्रीधर अग्रवाल ने सासू जेजा के पुत्र राघव को अग्रवाल वंश रूपी आकाश का चन्द्र बताते हुए उसे "अग्रोतकान्वय" की संज्ञा दी है। साबू जेजा का वंश अत्यधिक प्रसिद्ध था और उनके कुलोत्पन्न लोगों ने ही दिल्ली का सुप्रसिद्ध आदिनाथ मंदिर बनवाया था।

इसी प्रकार के उल्लेख जैन ग्रन्थों की प्रशस्तियों में उन ग्रन्थों को लिखवाने वालों के नाम के साथ मिलते हैं। प्रयाग के सुप्रसिद्ध प्राचीन नगर कोशाम्बी के निकट पभोसा हाड़ा (प्रभास पर्वत) की धर्मशाला में विक्रमीय सम्वत् 1881 की एक प्रशस्ति लगी हुई है उसमें निर्माता का परिचय "अग्रोतकान्वय गोयल" गोत्री कहकर दिया गया है। 'अग्रोतक' अथवा "अग्रोदक' अग्रोहा का ही प्राचीन नाम है।

इन सब प्रमाणों से प्रकट होता है कि अयरवाल, अग्रोतकान्वय, अग्रवाल जैसे शब्दों का प्रचलन 11वीं शताब्दी में हो गया था। अयरवाल शब्द अग्रवाल का ही अपभ्रंश है और अग्रोतकान्वय शब्द का अर्थ भी अग्रोतक (अग्रोहा) निवासी ही है। तीनों शब्द एक दूसरे के प्रचलित रूप ही कहे जा सकते हैं। श्री शिवशंकर गर्ग के अनुसार यह शब्द इससे पूर्व भी अवश्य प्रचलन में रहा होगा क्योंकि श्रीधर कवि ने जिस गर्व के साथ अपना परिचय "अयरवाल" तथा दिल्ली के दानवीर साहू जेजा का

''अग्रोतकान्वय'' कहकर परिचय दिया है, उससे यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि 11-12वीं शताब्दी में अयरवाल शब्द बहुत प्रचलित हो चुका था। फिर भी प्राचीन पुष्पिकाओं की पुस्तिकाओं को देखने और प्राचीन शिलालेखों का पता चलने के बाद ही विश्वसनीय रूप में कहा जा सकेगा कि अग्रवालों का अस्तित्व कितना पुराना है?

अग्रवालों के लिए विभिन्न उपनाम तथा उनका अभिप्राय

अग्रवालों के लिए विभिन्न नामों का प्रयोग होता है, जिनके संदर्भ भिन्न-भिन्न हैं। यहां अग्रवालों के लिए प्रचलित कुछ शब्दों तथा उनके आशय को प्रकट किया जा रहा है।

वैश्य

वर्ण व्यवस्था भारतीय समाज का अभिन्न अंग है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। उससे पूर्व बेबर के अनुसार सभी आर्य मिलकर रहते थे और उनके लिए विश संज्ञा प्रचलित थी।

विश नाम बड़ा ही महत्वपूर्ण नाम था क्योंकि सम्पूर्ण समाज इसके अन्तर्गत आ जाता था। जब आर्य भारतवर्ष में स्थायी रूप से बस गए और एक ही स्थान पर खेतीबाड़ी करते हुए जीवन व्यतीत करने लगे तो वे विश कहलाने लगे। विश का अर्थ है-बैठना। संस्कृत में यह अर्थ अभी तक चलता है।

विशत्याशु विशुभ्यश्च कृष्यादावरूचिशुचि
वेदाध्ययनपन्नः स वैश्य इति संज्ञित। (पद्मपुराण)

इस विश में कुछ लोग ऐसे थे जो शस्त्र क्रिया में दक्षता रखते थे, उन्हें क्षत्रिय तथा जो मन्त्रादि रचने की क्षमता रखते थे, उन्हें विश में ब्राह्मण संज्ञा से सम्बोधित किया गया।

कुछ समय उपरांत ऐसे लगता है-इस विश समुदाय से ब्राह्मण और क्षत्रिय अलग हो गए और जो बचे, वे विश कहलाते रहे। यही शब्द बाद में विश्य और वैश्य हो गया।

वैश्य शब्द का प्रयोग वैदिक साहित्य ऋग्वेद में सबसे पहले पुरुष सूक्त अर्थात् दशम् मंडल में आता है, जो अपेक्षाकृत आधुनिक है-

ब्राह्मणो मुखमासीद बाहू राजन्य कृतः
उरू तदस्य यद्वैश्य पद्भयो शुद्रो अजायत्।। 10/90/12

वेद ने उरूतद्यस्य तद्वैश्य कहकर वैश्य की पेट तथा जंघा से उपमा दी है अर्थात् जो शरीर रूपी समाज का पालन-पोषण करता है, वह वैश्य है। इसलिए वैश्य कृषि, गौरक्षा, व्यापार आदि करते हैं, जिनसे सम्पूर्ण समाज का पालन-पोषण होता है। यह वर्ण सब वर्णों से अधिक परिश्रमी है, इसी कारण इस पर लक्ष्मी की सदैव कृपा रहती है।

महर्षि गौतम ने अपने धर्म शास्त्र में वैश्य शब्द की परिभाषा करते हुए कहा है कि वैश्य व्यवसाय से जीविकोपार्जन करने वाले लोग थे, जो अपने संरक्षण हेतु समुदाय बना

लेते थे। वैश्यों का व्यवसाय करना और समुदाय में रहना एक आवश्यक और प्रचलित परम्परा थी।

इस प्रकार सारा व्यवसायी समाज ही वैश्य कहा जाता था। इनमें अग्रवाल, माहेश्वरी, खंडेलवाल, वरणवाल, पालीवाल, रोनियार आदि का विभाजन नहीं हुआ था। मुस्लिम काल के प्रारम्भ होने के बाद ही इस प्रकार का जाति भेद बढ़ा और अनेक नई जातियों का जन्म हुआ। इसका कारण यह है कि अपनी रक्षा तथा धर्म निर्वाह हेतु समुदायों का संगठन और अधिक घना होने लगा। रोटी-बेटी व्यवहार आदि की सीमा समुदाय तक रह गई और अनेक वाल निकल पड़े।

वणिक-बनिया

वैश्य अग्रवालों के लिए वणिक, बनिया आदि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। प्राचीन समय में आवश्यक वस्तु की प्राप्ति का साधन वस्तु-विनियम था। इस क्रिया को पण कहा जाता था और यह क्रिया (पण) वैश्यों के प्रसंग में प्राय: मिलती है। "पण करने वाले ही पणि कहलाए।" इस शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में भी मिलता है। संभवत: इसी शब्द का प्रयोग बाद में वणज, वाणिज्य आदि रूप में हो गया और वाणिज्य करने वाले लोग ही वणिक कहलाए। बनिया शब्द वणिक का विकृत रूप प्रतीत होता है।

इबटसन ने बनिया शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है-"संस्कृत के वाणिज या वानिज शब्द में इसका सम्बन्ध है। यह व्यवसायी वर्ग है। इस वर्ग का सामान्य ज्ञान बहुत ऊंचे दर्जे का होता है। इस समुदाय का उद्योग-व्यवसाय बहुत ही विशाल एवं विस्तृत है। डेवीनियर जब भारत में आया तो उसमें वैश्य समुदाय के बारे में लिखा कि-"वैश्य एक जाति है, जो अपने व्यवसाय में इतनी दक्ष एवं निपुण है कि यूरोप के यहूदी उसके सामने केवल नौसिखिए हैं।" संभवत: वैश्य समुदाय के व्यवहार और व्यावसायिक कौशल के अर्थ में वे पंक्तियां अब भी तर्कसंगत हैं।

कालांतर में जब इस शब्द का बिगड़ते-बिगड़ते हीन-अर्थ कायर व्यक्ति के रूप में होने लगा तो आनरेवल लाला सुखवीर सिंह रईस, मुजफ्फरनगर ने अपने प्रयास से यू.पी. कौंसिल द्वारा यह फैंसला करा दिया था कि जनगणना या दूसरे सरकारी कागजातों में "बनिया" शब्द का प्रयोग निषिद्ध रहेगा।

इस सम्बन्ध में एक अन्य रोचक प्रसंग है। जब लोकसभा में तत्कालीन सांसद स्व. कमलनयन बजाज को "बनिया" शब्द से सम्बोधित किया गया तो उन्होंने अपने आप पर बनिया होने का गर्व प्रकट करते हुए कहा था-"श्रीनाथ ने बनिया शब्द का प्रयोग किया है। मुझे बनिया होने पर गर्व है। मैं बनिये का अर्थ बताता हूं 'बनिया' वह है जिसकी सबके साथ बन सकती है, बनिया वह है जो सबको अपना बना सकता है, बनिया वह है जो सबका बन सकता है, बनिया वह है जो सब कुछ बना सकता है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी भी बनिया थे। बनिया वह है जो सभी काम अच्छी तरह बना सके। हमारे शास्त्रों में बनिया को महाजन कहा गया है अर्थात् जनों में जो महान है, वह महाजन है। आपका इंटेशन अच्छा नहीं है, आप इस शब्द को अपमान के साथ नहीं कह सकते।'

(लोकसभा वाद-विवाद- 15-3-1966)

(वैसे यह शब्द सभी व्यावसायिक वर्गों के लिए प्रयुक्त होता है।)

गुप्त या गुप्ता

पारस्कर संहिता के अनुसार 'गुप्त' उपाधि का प्रयोग वैश्यों के लिए होता है 'गुप्तेति वैश्यस्य' (17:4)। अंग्रेजी के प्रभाव के कारण यही गुप्त शब्द बिगड़ कर गुप्ता (Gupta) हो गया है।

वैश्यों के लिए प्रयुक्त गुप्त या गुप्ता उपाधि का प्रयोग अग्रवालों में भी व्यापक रूप से होता है। व्यापारी समाज होने के नाते व्यापारिक रहस्यों को गूढ़ बनाए रखने के कारण गुप्त उपाधि प्राप्त है। अनेक अग्रवाल अपने नाम के साथ गुप्त शब्द का प्रयोग करते हैं किन्तु गुप्त शब्द का प्रयोग सम्पूर्ण वैश्य समाज के लिए होने के कारण "गुप्त" शब्द आगे लगे होने से केवल अग्रवाल होने का बोध नहीं होता। गुप्त शब्द का उपयोग खंडेलवाल, वरनवाल, रोनियार, माहेश्वरी, रस्तोगी आदि सभी वैश्य समुदायों द्वारा किया जाता है।

महाजन

वैश्य अग्रवालों के लिए महाजन शब्द का प्रयोग भी गांवों में विशेष रूप से प्रचलित है। सामान्यतया इस शब्द का प्रयोग दुकानदारी करने वाले लोगों के लिए होता है। महाजन का अर्थ है–महान जन। समाज में वैश्य वर्ग का बड़ा सम्मान था। उन्हें आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था। सभी समुदाय के लोग उनका आदर करते थे। वे वैभव सम्पन्न होते थे, अत: उनके लिए 'महाजन' -जनों में महान, उपाधि का प्रचलन था। यह शब्द भी वैश्य वर्ग के सभी समुदायों में प्रचलित है। हिमाचल प्रदेश के वैश्य वर्ग में महाजन नामक एक जाति विशेष भी पाई जाती है। श्री मेहरचंद महाजन इसी वैश्य वर्ग से संबंधित थे।

शाह

शाह का शब्द का अर्थ है–बड़ा, महान, साहूकार, बादशाह। देश के कई भागों में वैश्य अग्रवालों के लिए यह सम्बोधन भी प्रयुक्त होता है और अनेक अग्रवाल बंधु अपने नाम के आगे "शाह" शब्द लगाते हैं। महाजन शब्द के अनुरूप यह शब्द भी महानतासूचक होने के कारण वैश्य समुदाय के साथ लगता है। प्राचीन समय में बड़े-बड़े राजा भी साहूकारों से पैसा ऋण रूप में लिया करते थे और उन्हें अपने से भी अधिक प्रतिष्ठापूर्ण स्थान दरबार में देते थे, इसलिए शाह को बादशाह से महत्वपूर्ण स्थान देने के सम्बन्ध में यह लोकोक्ति प्रचलित हुई – आगे शाह, पीछे बादशाह।

सेठ–श्रेष्ठि

अग्रवालों की एक संज्ञा सेठ–श्रेष्ठि भी है। राधाकुमुद मुकर्जी का मत है कि श्रेष्ठि समाज का बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। श्रेष्ठ आचरण के कारण उसे श्रेष्ठि कहा जाता था। कालांतर में यही श्रेष्ठि, सेठ बन गया, जो वर्तमान में व्यापारी वर्ग का द्योतक होकर सर्वत्र प्रचलित हो गया है। बौद्धकाल के ग्रन्थों में इस प्रकार के श्रेष्ठि चत्वरों का उल्लेख व्यापक रूप से मिलता है।

दक्षिण भारत में वैश्यों के लिए प्रचलित शब्द सेट्टि, चेट्टियार आदि भी इसी श्रेष्ठि शब्द के अपभ्रंश प्रतीत होते हैं।

मारवाड़ी

अग्रवाल वैश्यों के लिए एक संबोधन मारवाड़ी भी है। देश-विदेश के औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में मारवाड़ी अग्रवालों का नाम बड़े ही गौरव से लिया जाता है। आज राष्ट्र के अधिकांश औद्योगिक घराने इन्हीं मारवाड़ी अग्रवालों के हाथ में हैं और उनका क्षेत्र केवल भारत तक ही सीमित न रहकर अन्तरराष्ट्रीय हो गया है।

मारवाड़ी शब्द संस्कृत के मरूवाट का अपभ्रंश है। प्राचीन काल में यह मरूप्रदेश कहलाता था। प्रारम्भ में जैसलमेर और मेवाड़ का इलाका इसके अन्तर्गत आता था किन्तु शनैः शनैः इस शब्द का प्रयोग जोधपुर और शेखावटी के इलाके के लिए होने लगा। जो लोग मारवाड़ से जाकर बंगाल या देश के अन्य भागों में जाकर प्रवसित हो गए अथवा वहां उद्योग व्यवसाय का संचालन करने लगे, उनकी पहचान मारवाड़ी के रूप में होने लगी और उनके लिए मारवाड़ी शब्द प्रचलित हो गया।

प्रारम्भ में मारवाड़ी शब्द का प्रयोग केवल मारवाड़ क्षेत्र के लोगों के लिए होता था किन्तु शनैः शनैः इस शब्द का अर्थ व्यापक होता गया। बाद में राजस्थान, हरियाणा, मालवा तथा अनेक निकटवर्ती भूभागों के जो लोग अन्य प्रांतों में जाकर बस गए और जिनके रहन-सहन, बोलचाल, वेशभूषा, भाषा तथा संस्कृति में समानता थी, उन्हें मारवाड़ी से सम्बोधित किया जाने लगा और यह शब्द केवल वैश्य समुदाय तक सीमित न रहकर अन्य समुदायों के लिए भी प्रयुक्त होने लगा, जैसे मारवाड़ी ब्राह्मण, फिर भी मुख्य रूप से इसका प्रयोग वैश्य समुदाय के लोगों के लिए ही होता है।

मारवाड़ी में अग्रवालों के साथ-साथ ओसवाल, माहेश्वरी, खंडेलवाल आदि अन्य वैश्य उपवर्ग भी आते हैं।

इस शब्द का प्रचलन मुख्य रूप से सोलहवीं शताब्दी में हुआ। बादशाह अकबर ने बंगाल में राजा मानसिंह के नेतृत्व में जो फौज बंगाल में भेजी, इसमें मोदीखाने (रसद, लड़ाई का साजो समान) को देखने वाले जोधपुर के ही वैश्य थे। अपने व्यापारिक कौशल के कारण उन्होंने सेना के अलावा व्यवसाय के क्षेत्र में भी आधिपत्य जमा लिया और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए वहीं जम गए। मारवाड़ से संबंधित होने के कारण उनकी पहचान मारवाड़ी रूप में होने लगी और उनके लिए इस शब्द का प्रचलन हो गया।

आज मारवाड़ी शब्द का प्रयोग वैश्य समुदाय के ऐसे लोगों के रूप में किया जाता है, जो दूरदराज के अपरिचित क्षेत्रों में बस गए किन्तु जिन्होंने अपने साहस एवं विशेष व्यावसायिक कुशलता के फलस्वरूप उद्योग और व्यवसाय में आधिपत्य जमा लिया। यह शब्द व्यापक रूप से उन लाखों राजस्थानवासी वैश्यों का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपनी विशिष्ट क्षमता एवं प्रतिभा के बल पर उद्योग व्यवसाय में अग्रणी हैं। मेहनत, हिम्मत, आत्मविश्वास, उद्यम, जोखिम उठाने की क्षमता, मितव्ययता तथा साधनों का अधिकतम प्रयोग, इस समुदाय की सामान्य विशेषताएं मानी जाती हैं। राजस्थान के तोदी, मोदी, पोद्दार, सेक्सरिया, हिम्मतसिंहका, कनोई, बजाज, सिंहानिया, कानोडिया, झुंझनूवाला, जालान, जैपुरिया, डालमिया, गोयनका, परसरामपुरिया आदि घराने मारवाड़ी अग्रवालों से ही संबंधित हैं।

अग्रवाल जाति और नागवंश

अग्रवाल जाति का नागों से विशेष सम्बन्ध पाया जाता है। अनुश्रुति के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने कोल्हापुर या अहिनगर के नागराज कुमुद की पुत्री माधवी के साथ विवाह किया था। उनके पुत्रों का विवाह भी नागवंश की कुमारियों के साथ हुआ था। कहा जाता है कि नाग वंश के साथ सम्बन्ध जोड़ने से महाराजा अग्रसेन का इन्द्र के साथ युद्ध हुआ और इस युद्ध में इन्द्र को महाराजा अग्रसेन से सन्धि करनी पड़ी।

इसी कारण से अग्रवालों में नागों के प्रति आदर की भावना पाई जाती है। नाग पंचमी को सर्पों की पूजा की जाती है और उन्हें दूध पिलाया जाता है। अग्रवाल लोग चाहे वे वैष्णव, शैव या जैन कोई हों, सर्प को नहीं मारते। कहा जाता है कि मामा-पक्ष होने के कारण सर्प अग्रवालों को नहीं काटते।

अनेक स्थानों पर अग्रवाल परिवार अपने मकान के दरवाजों पर सर्प के चित्र बनाते और पत्र-पुष्प द्वारा उनकी पूजा करते हैं।

अग्रवाल वैश्य लोग नागों को अपना मामा-पक्ष मानते हैं। इसलिए विवाह के अवसर पर चुनरी चढ़ाई जाती है। सिर पर छत्र लेकर चला जाता है। हाथों के थापे पूजा स्थलों तथा घर के द्वार पर नागों के चित्र बनाये जाते हैं, जो नागपूजा के प्रतीक हैं।

अग्रवाल गोगा मेड़ी में गोगा पीर की पूजा करते हैं। गोगा का नागों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध माना जाता है। कुछ लोग उन्हें नागराज का अवतार भी समझते हैं। गोगा पीर की पूजा से सर्पदंश का भय नहीं रहता, ऐसी मान्यता है।

जो भी हो, अग्रवाल जाति का नागवंश से घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाता है। नाम साम्य के कारण अनेक बार नाग और सर्प एक ही समझ लिए जाते हैं किन्तु वास्तव में यह एक महान आर्येतर जाति थी, जिसका अपना संगठन, सभ्यता, संस्कृति और मान्यताएं थीं। अरण्य प्रदेश उनका वास स्थान था और सारे आर्यावर्त में उनका प्रसार था। मंजूश्री कल्पश्री के अनुसार वे वैश्य थे और वैश्यों के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार यह उल्लेख अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि राजा अग्रसेन भी वैश्यवंशी थे। इससे उनका वैश्य होना सिद्ध होता है।

श्री अग्रसेन प्रसंग में नागों के कुमुद और वासुकी दो नामों का उल्लेख आया है। महाभारत में भी इनका पर्याप्त उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि ये दोनों ही श्रेष्ठ कुलों के नागराज थे। इनकी मित्रता और विवाह सम्बन्ध देव और श्रेष्ठ मानवों से होते थे। अत्यंत समृद्ध, पौरुष सम्पन्न एवं विशिष्ट कलाओं में निष्णात जाति के रूप में उनकी ख्याति थी। वे देव और श्रेष्ठ पुरुषार्थी मानवों के उपासक थे। समुद्र मंथन के समय इस जाति के त्याग, सेवा व बलिदान के कारण ही देवता अमृत निकालने में समर्थ हो सके थे।

श्री परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार यह दक्षिण के नागलोक में रहने वाली शक्ति सम्पन्न मानव जाति थी और इसका आर्यों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। प्रारम्भ में वनों तथा तालाबों के पास रहने से सर्पपूजक रहे होंगे तथा अपने आभूषणों आदि पर सर्पचिन्ह अंकित करते होंगे। इसी टोटेम के कारण यह धारणा फैल गई होगी कि वे मनुष्य नहीं, सर्प होंगे। पर वास्तव में ये मानव जाति के ही थे। दक्षिण से निकल कर यह जाति देश के कोने-कोने में बस गई तथा स्थान-स्थान पर उन्होंने अपने केन्द्र तथा राज्य स्थापित किये। नागपुर, नागरकोईला, नागपटटन, नागपर्वत, नागौर, नागद्वीप (निकोबार),

नागसमुद्रम, नागनसुर, नागशंकर, नागदा आदि नाम उन्हीं की कीर्ति के जीवंत स्मारक हैं।

कल्हण ने राजतरंगिणी में ऐसे नागों का उल्लेख किया है जो लड़कियों के साथ रहते थे। कर्कोटक नाग इसी प्रकार का था। काश्मीर में आज भी अनन्तनाग, वेरीनाग जैसे अनेक स्थान हैं, जिनमें नागशब्द है। श्री विजय गुप्त ने 15वीं शताब्दी में नागों की महिमा का वर्णन करते हुए मनसा मंगल नाम के महाकाव्य की रचना की थी। बंगाल में सत्यनारायण कथा की तरह इस ग्रंथ का भी पाठ होता है।

विष्णु पुराण के अनुसार पद्मावती से मथुरा तक नागों का शासन था। विष्णु पुराण में जिन स्थानों का उल्लेख है, उसके आधार पर कनिंघम ने माना है कि मथुरा के समीप पद्मावती में उन्हें जो सिक्के प्राप्त हुए थे, वे नागवंश के थे। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में उन राजाओं की सूची दी गई थी, जिनको उसने पराजित किया था। इन राजाओं में गणपति नाग का भी नाम आता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में नाग जाति का शासन था। विद्वानों की मान्यता है कि भारशिव राजा नागवंशी ही थे। जब अग्रोहा कुषाण राजाओं के आधीन हो गया था तो भार शिवों ने ही कुषाणों को हरा कर भारतवर्ष से चले जाने पर विवश कर दिया था और परिणामस्वरूप अग्रोहा भी अन्य राज्यों के साथ कुषाणों की दासता से मुक्त हो गया था। इन्होंने ही मथुरा में एक बार पुनः वैश्य शासन की स्थापना की थी।

आर्यों के साथ उनके घनिष्ठ सम्बन्धों का पता इससे चलता है कि भगवान कृष्ण तथा राम के पुत्रों का विवाह नाग कन्याओं से हुआ था। राम के पुत्र कुश का विवाह नाग कन्या से होना बताया जाता है। मेघनाथ की पत्नी सुलोचना नाग कन्या थी। अर्जुन ने भी अलूपी से विवाह किया था, जो नाग कन्या थी। वासुकि की बहिन जरतकारू का विवाह इसी नाम के ऋषि के साथ हुआ था। "आसिक" मुनि जिनकी अग्रवालों में पूजा की जाती है, इन्हीं जगतकारू ऋषि के पुत्र थे। इन्होंने ही जनमजेय के नागयुद्ध में इन्द्र से तक्षक की रक्षा की थी। कुंती शूरसेन की पुत्री और सूरसेन नागकन्या का पुत्र था। रामचंद्र जी के भाई लक्ष्मण तथा भगवान कृष्ण के भाई बलराम जी शेषनाग के अवतार माने जाते हैं। विष्णु की शैया भी अनन्तनागों से बनी है। शिवजी ने भी विषपान करके उनको अपने गले का हार बनाया था। जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा सुपार्श्व के चिन्ह नाग हैं।

दिनकर जी के अनुसार नागवंश का इतिहास अत्यंत वैभवशाली रहा। इस वंश से सम्बन्ध जोड़ने में सदा लोग अपना गौरव समझते रहे। वाकाटक वंश के लोग इस वंश के साथ अपने सम्बन्धों की चर्चा करने में थकते नहीं थे। इसके अतिरिक्त पल्लव आदि भारत के अन्य अनेक वंशों के शिलालेखों में भी फणीन्द्र सुता एवं नाग कन्या के साथ विवाह करने की बात बड़े गौरव के साथ लिखी गई है।

आर्यों के साथ अपने घनिष्ट सम्बन्धों के कारण ही नागों ने कभी उन पर आक्रमण नहीं किया। तक्षक नाग इन्द्र का मित्र था और वीर अर्जुन इन्द्र का पुत्र था। अतः नागों का पांडवों के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध था परन्तु किसी कारण नागों ने महाभारत युद्ध के बाद राजा परीक्षित के राज्य पर आक्रमण कर उसे मार डाला। कहा जाता है कि जब परीक्षित की मृत्यु के बाद जनमजेय को यह पता चला कि तक्षक ने पर्याप्त धन देकर परीक्षित की रक्षा में आते हुए धन्वन्तरी वैद्य को मार्ग से ही वापिस लौटा दिया है, तो जनमजेय को बड़ा क्रोध आया। उसने सम्पूर्ण नाग जाति का नाश करने का संकल्प किया और एक यज्ञ

द्वारा नागों का भीषण रूप से संहार किया किन्तु इसके बाद नागों ने पुनः अपनी शक्ति को बढ़ाया और हस्तिनापुर पर विजय प्राप्त करते हुए अपने राज्य का प्रसार पंजाब, मध्य प्रदेश से सुदूर पूर्व बंगाल तक किया।

इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने नागों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर तथा अपने पुत्रों का विशानन और दशानन की नाग कन्याओं से विवाह सम्पन्न करा राज्य का गौरव बढ़ाया। उनका यह कार्य अत्यंत ही बुद्धिमतापूर्ण था। ऐसा करके उन्होंने दो वैश्य वंशों को संगठित कर शक्तिशाली राज्य की नींव रखी।

अग्रवालों के मामों का वंश होने से नागों को उनकी पूजा में स्थान मिलता है। नागवंश ही उनका मातृकुल माना जाता है। अतः शादी विवाह में थापे तथा बान की जो रस्म होती है तथा विवाह के समय कन्याएं जो सर्प के फण के आकार की चूड़ी, चांबरी, व चुंदरी धारण करती हैं, वह शुद्ध नागवंश की ही प्रतीक है। थापा तथा विवाह के समय सिर गूंथी की रस्म नागों के प्रतीक के रूप में मानी जाती है। त्यौहारों पर प्रत्येक पूजा में तथा नागपंचमी पर नागों के चिन्ह पूजनीय माने जाते हैं। इस प्रकार अग्रवाल तथा नागजाति में घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाता है।

खाण्डव वन नाग जाति का निवास स्थान था। अग्रोहा और यह स्थान दोनों ही कुरू जांगल प्रदेश में हैं और एक दूसरे की दूरी 100 मील के लगभग है। ऐसी अवस्था में यहां के निवासियों में परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध होने का पूर्ण आधार है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि महाराजा अग्रसेन युधिष्ठर के समकालीन थे, क्योंकि अग्रसेन के जीवनचरित में वर्णित नागवंश की जनश्रुति का महाभारत में नाग जाति के वर्णनों से पर्याप्त तारतम्य बैठता है, जो महाराजा अग्रसेन की ऐतिहासिकता का भी प्रमाण है।

अग्रवाल जाति के गोत्र एवं उनकी वैज्ञानिकता

गोत्र का सामान्य अर्थ है–एक कुल, एक वंश, एक परिवार, एक खानदान अथवा कुनबा, जो किसी एक मूल पुरुष से अपना सम्बन्ध मानता है। गोत्र का निर्माण एक वंश-समूह से होता है। दूसरे शब्दों में एक ही पूर्वज की सभी संतानें सम्मिलित की जाएं तो वे "गोत्र" का रूप धारण कर लेती हैं।

सामान्यतया लड़के या लड़कियों के विवाह स्वयं गोत्र को छोड़ कर अन्य गोत्र में किए जाते हैं। मातृकुल (मामा या नाना) के गोत्र में भी विवाह नहीं किया जाता किन्तु यह दृष्टव्य है कि वैवाहिक सम्बन्ध स्वगोत्र छोड़ने पर भी अपनी ही जाति या समाज में किया जाता है। उदाहरण के लिए सिंघल गोत्री अग्रवाल सिंघल गोत्र को छोड़कर अपने लड़के या लड़की का विवाह करेगा किन्तु वैवाहिक सम्बन्ध अग्रवाल समाज में ही होगा, ऐसी व्यवस्था पुरातन काल से चली आ रही है। वर्तमान युग में जबकि जाति, समाज, कुल परम्परा के बंधन ढीले पड़ने लगे हैं, सभी वैश्य वर्गों में एक दूसरे के साथ सम्बन्ध होने लगे हैं और उनको मान्यता भी मिलने लगी है।

अनादि काल से भारत में चली आ रही यह परम्परा रक्तशुद्धि पर आधारित और पूर्णतया विज्ञान सम्मत है। ला ऑफ म्यूटिनी इसका समर्थन करता है। इस नियम के अनुसार परस्पर रक्त सम्बन्ध में शादी-विवाह करने से वंश-वृद्धि को आघात पहुंचता है और समाज में नई प्रतिभा का विकास अवरूद्ध हो जाता है। गुण-वृद्धि के लिए अपेक्षित

है कि भिन्न रक्तांशों (जींस) के साथ मेल हो ताकि नये-नये गुणों का विस्तार हो। एक ही परिवार में शादी-विवाह होने से वे ही रक्तांश (जीन्स) पीढ़ी दर पीढ़ी घूमते रहते हैं और प्रतिभा विकास की संभावनाएं क्षीण हो जाती हैं। इसलिए भारतीय शास्त्रों में स्वगोत्र-विवाह का निषेध करते हुए कहा गया है - दुहिता-दूर हिता अर्थात् कन्या का विवाह दूर होना ही हितकर है। उसका विवाह समआयु, सम शिक्षित, समरंग, समखानदान या कुटुम्ब, समगोत्र से नहीं करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से स्त्री-पुरुष अमर्यादित और निर्लज्ज हो जाते हैं। इसलिए पाणिनी ने अष्टाध्यायी में मातृ पक्ष की पांच पीढ़ियों तथा पितृवंश की सात पीढ़ियों को त्याग विवाह करने की व्यवस्था दी है। याज्ञवल्क्य ने भी उसका समर्थन किया है।

अग्रवालों में गोत्र-पालन की शानदार परम्परा रही है और उसी कारण आज भी इसकी गणना विश्व की श्रेष्ठतम जातियों में होती है।

अग्रवालों में गोत्र प्रचलन का श्रेय महाराजा अग्रसेन को है। महाराजा अग्रसेन के समय वैश्यजाति संगठित नहीं थी। ब्राह्मणों, राजपूतों के बढ़ते प्रभाव के कारण उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाने लगा था और कर्तव्य सीमित कर दिये गये थे। बार-बार के आक्रमणों से भी समाज की स्थिति दुर्बल होती जा रही थी। ऐसे समय में अपने राज्य के वैश्यों को संगठित कर उनमें रक्त शुद्धि को बनाये रखने की दृष्टि से उन्होंने गोत्रों का प्रचलन किया।

महाराजा अग्रसेन के समय छोटे-छोटे जनपद या गणराज्य थे। शासन प्रबंध की कुशलता की दृष्टि से राज्य को 18 श्रेणियों में विभक्त कर दिया जाता था और प्रत्येक श्रेणी का एक राज प्रमुख या प्रतिनिधि होता था, जो राजकाज के संचालन में सहयोग देता था। सामान्यतया राज्य की ईकाई परिवार या कुल होती थी, जिसे श्रेणी नाम दे दिया जाता था।

आग्रेय गणराज्य भी इसी प्रकार 18 श्रेणियों या कुलों में विभक्त था। प्रत्येक श्रेणी या कुल का एक-एक प्रतिनिधि मिलकर राज्य संचालन में सहयोग देते थे। महाराजा अग्रसेन ने 18 श्रेणियों या कुलों को संगठित करने की दृष्टि से 18 यज्ञ किये। प्रत्येक यज्ञ में गण का एक-एक प्रतिनिधि यजमान और एक-एक ऋषि पुरोहित बना। उन्हीं ऋषियों के नाम पर 18 कुलों को 18 गोत्रों की संज्ञा दे दी गई। जैसे गर्ग मुनि के नाम पर गर्ग, भंदल ऋषि के नाम पर भंदल गोत्र और यह व्यवस्था बना दी कि भविष्य में वैवाहिक सम्बन्ध इन्हीं गोत्रों के माध्यम से होंगे। उन श्रेणियों में जो अन्य जातियों या समाज के लोग थे, उन्होंने अपनी अलग व्यवस्था बनाए रखी। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने 18 कुलों को संगठित कर उन्हें एक झंडे के नीचे एकत्र कर दिया। इससे वैश्य समाज में एक स्वतंत्र जाति का संगठन हुआ जो बाद में अग्रवाल नाम से प्रसिद्ध हुई।

महाराजा अग्रसेन का यह कार्य उसी प्रकार का था जैसे गुरू गोविन्दसिंह ने हिन्दू समाज के ही कुछ लोगों को संगठित कर एक नई उपजाति का प्रवर्तन किया, जो सिक्ख कहलाई। इसी प्रकार महाराजा अग्रसेन वैश्य समुदाय में एक नई अग्रवाल जाति के संगठनकर्ता बने। इसलिए महाराजा अग्रसेन की अग्रवाल समाज के आदि पुरुष के रूप में प्रतिष्ठा है।

प्रमुख गोत्र और प्रचलित शुद्ध रूप

अग्रवालों के इन गोत्रों के काल भेद से अनेक रूप देखने को मिलते हैं और उनके उच्चारण तथा लेखन में भी विभिन्नता पाई जाती है। विभिन्न लेखकों ने उनके अलग-अलग रूप दिये हैं, जिससे कभी-कभी सही गोत्र के सम्बन्ध में भ्रांति पाई जाती थी। इस

कठिनाई को देखते हुए अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने सर्वसम्मति से इन 18 गोत्रों के शुद्ध नाम और उनकी वर्तनी इस प्रकार से निर्धारित कर दी और अब इन्हीं रूपों का प्रचलन तेजी से बढ़ता जा रहा है-

गर्ग	ऐरण	बंसल	बिन्दल	मंगल	भंदल
गोयल	धारण	कंसल	मित्तल	जिंदल	नांगल
गोयन	मधुकुल	सिंघल	तायल	तिंगल	कुच्छल

अग्रवालों में गंगल बंधु भी पाये हैं, जिसे गोयन का परिवर्तित रूप ही माना गया है और उसी गोत्र के अन्तर्गत उसकी गणना होती है।

सम्मेलन ने अग्रवाल शब्द के अंग्रेजी में विभिन्न रूपों के प्रचलन को देखते हुए एकरूपता की दृष्टि से उसकी वर्तनी निर्धारित कर दी और उसके अग्रवाल (Agrawal) रूप को मान्यता प्रदान की।

इन गोत्रों में गर्ग गोत्री अग्रवालों की संख्या सर्वाधिक पाई जाती है। कहते हैं, महाराजा अग्रसेन का यही गोत्र था।

प्रमुख गोत्राधिपति एवं प्रवर आदि

अग्रवाल समाज के गोत्रों, प्रवरों और उनके प्रमुख गोत्राधिपतियों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत मिलते हैं। यहां स्वामी ब्रह्मानंद द्वारा प्रस्तुत तालिका के आधार पर अग्रवाल गोत्रों के प्रमुख ऋषियों, गोत्राधिपति, वेद-शाखा आदि का उल्लेख किया जा रहा है-

नाम गोत्राधिपति	ऋषि	गोत्र	वेद	शाखा	प्रवर	सूत्र
1. पुष्पदेव	गर्ग	गर्ग	यजुर्वेदी	माधुनी	पञ्च	कात्यायनी
2. गेंदूमल	गोभिल	गोयल	''	''	त्रिप्रवर	''
3. करणचंद	कश्यप	कुच्छल	सामवेदी	कौत्थमी	''	गोभिल
4. मणिपाल	कौशिक	कंसल	यजुर्वेदी	माधुनी	''	कात्यायनी
5. वृंददेव	वशिष्ठ	बिंदल	''	''	''	''
6. ढावणदेव	धौम्य	धारण	''	''	''	''
7. सिधुपति	शाण्डिल्य	सिंघल	सामवेदी	कौत्थमी	''	गौतम
8. जैत्रसंघ	जैमिनी	जिंदल	यजुर्वेदी	माधुनी	त्रिप्रवर	कात्यायनी
9. मंत्रपति	मैत्रेय	मित्तल	''	''	''	''
10. तम्बोलकर्ण	तांडव	तिंगल	''	''	''	''
11. तारचंद	तैतिरेय	तायल	कृष्णयजुर	आयुस्तभ	''	''
12. वीरभान	वत्स	बंसल	सामयजुर	कौत्थमी	''	गोभिल
13. वासुदेव	धन्यास	भंदल	यजुर्वेदी	माधुनी	''	कात्यायनी
14. नारसेन	नागेंद्र	नांगल	सामवेद	कौत्थमी	''	गोभिल
15. अमृतसेन	मांडव्य	मंगल	यजुर्वेदी	शाकल्य	''	अश्वालायन
16. इन्द्रमल	और्व	ऐरण	यजुर्वेदी	माधुनी	''	कात्यायनी
17. माधवसेन	मुदगल	मधुकुल	यजुर्वेदी	शाकल्य	''	अश्वालायन
18. गोधर	गौतम	गोयन	''	माधुनी	''	कात्यायनी

साढ़े सत्रह गोत्र एवं महाराजा अग्रसेन के अठारह पुत्रों के मध्य वैवाहिक सम्बन्धों सम्बन्धी धारणा-

अग्रवालों में सामान्यत: यह धारणा प्रचलित है कि उनके साढ़े सत्रह गोत्र हैं और अंतिम गोत्र आधा है। उसके मूल में यह कथा प्रचलित है कि महाराजा अग्रसेन ने अठारह यज्ञों का आयोजन किया। उनमें सत्रह यज्ञ तो पूर्ण हो गए किन्तु यज्ञ में हिंसा से विरक्ति के कारण अठारहवां यज्ञ अधूरा ही रह गया, इसलिए उसका गोत्र भी आधा ही माना गया। कुछ का मानना है कि सत्रह यज्ञों के पूर्ण होने से उन्हें पूर्ण गोत्र माना गया किन्तु 18वें यज्ञ के पूर्ण न होने से उसे गौण संज्ञा दी गई जो बाद में गवन रूप में प्रचलित हो गया और वही आधा गोत्र है, लेकिन इस प्रकार की धारणा के मूल में किसी प्रकार का ठोस अथवा वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। आधे गोत्र का कोई मतलब भी नहीं है। गोत्र पूरा ही होता है। अत: गोत्रों की पूर्ण संख्या 18 मानना ही हर दृष्टि से उचित है और उसी के अनुसार सम्मेलन ने 18 गोत्रों को मान्यता देकर इस विवाद का अंत करने की चेष्टा की है, जो सम्यक् है।

गोत्रों के सम्बन्ध में यह भी भ्रांति पाई जाती है कि महाराजा अग्रसेन के अठारह पुत्र थे। उन्होंने इन्हीं अठारह पुत्रों को यजमान बनाकर उनके ऋषियों के नाम पर 18 गोत्रों की व्यवस्था की। इस प्रकार एक ही पिता की संतान होने से सभी भाई बहिन हुए, किन्तु यह मान्यता सही नहीं है।

महाराजा अग्रसेन अत्यंत ही धर्मपरायण, वेद शास्त्रों में आस्था रखने वाले और धार्मिक मर्यादाओं के पालक थे। भारतीय संस्कृति में कभी भी भाई-बहिन के मध्य विवाह की स्वीकृति नहीं रही और मातृ-पितृ कुल के गोत्रों को बचाकर विवाह सम्बन्ध करने की परम्परा रही है। एक गोत्र में जन्मी सभी संतानों को भाई-बहिन समझा और उनका परस्पर विवाह निषिद्ध माना जाता है। अत: यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि उन्होंने भूलकर भी इसे मान्यता दी हो। भारत में चाचा-ताऊ आदि की संतानों के मध्य विवाह सम्बन्धों का प्रचलन केवल मुस्लिम वर्ग में देखने को मिलता है। महाराजा अग्रसेन के समय में इस प्रकार की कोई परम्परा भी नहीं थी, अत: उसकी कल्पना करना ही असंगत है।

हां यह हो सकता है कि महाराजा अग्रसेन प्रजापालक शासक थे। वे अपनी प्रजा को संतान के समान समझते थे और समस्त प्रजा उनके स्नेह एवं वात्सल्य भाव से प्रेरित हो उन्हें पितृवत् आदर प्रदान करती थी। इसलिए महाराजा अग्रसेन को अग्रवाल जाति के पिता तथा अग्रवालों को उनके पुत्र मानने की धारणा चल पड़ी हो। वास्तव में अग्रवाल जाति का अस्तित्व वैश्य समुदाय के रूप में महाराजा अग्रसेन से पूर्व भी था। महाराजा अग्रसेन ने तो अपने गणराज्य की 18 श्रेणियों (कुलों) को मात्र संगठित कर दिया ताकि रक्त की शुद्धता बनी रहे और एक सर्वांगपूर्ण सशक्त जाति का उद्भव हो सके। उसी आग्रेय गणराज्य के ये निवासी बाद में अग्रवाल कहलाए।

वास्तव में महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के संगठक थे न कि जनक। अत: अग्रवालों को एक ही पिता की संतान मानने अथवा भाई-बहिनों के मध्य परस्पर विवाह

की धारणा सही नहीं है। महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य के 18 कुलों के आधार पर गोत्रों का प्रवर्त्तन किया न कि पुत्रों के आधार पर और यही व्याख्या तर्क संगत है।

अग्रवालों के अल्ल-बंक और उपनाम

अग्रवालों में गोत्रों के अलावा अन्य सैंकड़ों अल्ल, बंक, उपनाम आदि भी प्रचलित हैं, जिनका विभिन्न अग्रवाल अपने नाम के साथ प्रयोग करते हैं। वर्णव्यवस्था के प्रारम्भ में वैश्य समुदाय के लिए "गुप्त" उपाधि का प्रयोग होता था किन्तु शनैः शनैः, ज्यों-ज्यों वर्णों जातियों में उपभेद बढ़ते गए, इन उपनामों की संख्या भी बढ़ती गई। आज हजारों की संख्या में ऐसे अल्ल, बंक और उपनाम हैं, जिनका अग्रवाल अपने नाम के साथ प्रयोग करते हैं। उनमें कई उपनाम तो बड़े सुंदर और आकर्षक हैं-

इन अल्ल-बंकों द्वारा वंश की जानकारी होती है। इनके नामकरण के पीछे अनेक कारण हैं, जिनमें प्रमुख हैं-

1. **स्थान-सूचक**
   अनेक उपनामों का प्रचलन उस वंश के मूल स्थान के नाम पर हुआ है, जैसे अग्रोहा (अग्रवा) के रहने वाले अग्रवाल, हिसार के रहने वाले हिसारिया, फतेहपुर के रहने वाले फतेहपुरिया, केड के रहने वाले केडिया।

2. **वंश के प्रमुख व्यक्ति के नाम पर**
   कई अल्ल-बंक और उपनामों का नामकरण वंश में प्रचलित किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के नाम पर हुआ है, जैसे हरभजनजी के नाम पर हरभजनका, हरलाल के नाम पर हरलालका, मानसिंह के नाम पर मानसिंहका, हिम्मतसिंह जी के नाम पर हिम्मतसिंहका।

3. **व्यवसाय के आधार पर**
   कई अल्ल-बंकों का प्रचन उनके व्यापार-व्यवसाय के आधार पर हुआ है, जैसे लोहे का व्यापार करने वाले लोहिया, कांसे का व्यवसाय करने वाले कसेरा, कपड़े का व्यपार करने वाले बजाज, मिठाई का कार्य करने वाले कन्दोई आदि।

4. **पद, नाम के आधार पर**
   राज्यों में विशेष पदों का कार्य करने वाले व्यक्तियों के नाम के साथ उनका पद नाम भी उपनाम के रूप में प्रचलित हो जाता है, जैसे पटवारी का काम करने वाले के नाम के साथ पटवारी, रूपये का लेन-देन करने वाले अधिकारी के नाम के साथ खजांची, वकालत अथवा कानून सम्बन्धी लिखत-पढ़त करने वाले व्यक्ति के नाम के साथ वकील या कानूनगो उपनाम का प्रयोग।

5. **पदवी**
   अनेक बार राज्य द्वारा प्रदत्त अथवा उपाधि-विशेष का ही अल्ल-बंक के रूप में प्रचलन हो जाता है। जैसे सेठ, चौधरी, भारतेन्दु, रत्नाकर।

6. **घटना अथवा परिस्थिति विशेष पर**

कभी-कभी वंश अथवा परिवार में घटित विशेष घटना, उस परिवार की सामान्य विशेषता ही, अल्ल-बंक का रूप धारण कर लेती है। जैसे किसी हवेली में टांटियों का छत्ता था, जो भी हवेली का पता पूछता, लोग टांटियों वाली हवेली बता देते। धीरे-धीरे उस परिवार का अल्ल ही टांटिया नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसी प्रकार किसी परिवार के व्यक्ति को विवाह में जलेबी चुराते देख लिया गया। धीरे-धीरे उस परिवार का बंक ही जलेबी चोर पड़ गया। इसी प्रकार परिवार में सफाई न रखने के कारण सुगला, चिड़िया पालने के कारण चिड़ीपाल। यद्यपि इनमें से कुछ अल्ल या बंक परिवार विशेष की प्रशंसा के स्थान पर उसकी कमी अथवा दोष विशेष को भी प्रकट करते हैं, फिर भी उनका प्रयोग धड़ल्ले के साथ किया जाता है जैसे- भूखमरिया।

7. **धर्म विशेष का पालन**

कई बार धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर भी अल्ल का प्रचलन हो जाता है जैसे जैन धर्म को मानने वाले अपने नाम के साथ जैन लगाते हैं और आर्य समाजी अपने नाम के साथ आर्य जोड़ते हैं।

8. **स्वभावगत विशेषता के आधार पर**

जैसे मजाकिया स्वभाव के कारण मसखरा, भक्ति भाव रखने के कारण भगत।

इस प्रकार विभिन्न कारणों से समाज में अनेकानेक अल्ल-बंक और उपनामों का प्रचलन है। इनमें कुछ केवल अग्रवालों द्वारा ही प्रयुक्त किये जाते हैं, तो कुछ का प्रयोग अन्य समुदायों में भी समान रूप से होता है जैसे बजाज, जैन, भिवानी वाला, बाघला, पंसारी, रईस, हलवाई, मोदी, जौहरी आदि का प्रचलन अन्य समाजों में भी है।

कुछ अल्ल और बंकों के परिवारों के गोत्र भी समान हैं, किन्तु कुछ अल्ल और बंकों में अनेक गोत्र मिलते हैं जैसे मोदी, बजाज आदि बंकों में गर्ग, गोयल, मंगल, बंसल, ऐरण आदि विभिन्न गोत्री पाये जाते हैं।

इन अल्ल बंकों, उपनामों की सूची लेखक ने 1980 में संकलित की थी, जिनका प्रकाशन अनेक पत्र-पत्रिकाओं में हुआ। इस सूची के अलावा भी सैंकड़ों अन्य उपनाम प्रचलित हैं, जिनका संकलन और उनके गोत्रों की जानकारी अपेक्षित है। आगे उन्हीं में से कुछ अल्ल-बंक तथा उपनाम गोत्र सहित दिये गये हैं। जिन अल्ल-बंक और उपनामों के गोत्रों की जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है, उनके नाम पृथक से दिये गये हैं। इन अल्ल-बंकों के आधार पर अग्रवाल समाज की विराटता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। शायद ही दुनिया में अन्य कोई ऐसा समाज हो, जिसमें अल्ल-बंक और उपनामों की इतनी लम्बी श्रृंखला विद्यमान हो।

अल्ल-बंक और उपनाम (गोत्र-सहित)

अड़किया-कंसल, गोयल
अजीतसरिया-गर्ग
आबूवाले-मंगल
आमेरिया-गर्ग
आर्य- मंगल, मित्तल, गोयल, गर्ग
आलवाले- मित्तल
आसामवाले- गर्ग
आरसी वाले- सिंघल
आवास्या- गोयल
इलायची वाले- गर्ग
इटावा वाले- ऐरण
इंद्रानेवाले- मंगल
इकडिया- गोयल
इजारदार- गर्ग
उमरेहा- गर्ग
उणियारा वाले- ऐरण
औडछे वाले- मित्तल
कजरिया- सिंघल
कन्दोई, कनोई-गोयल, सिंघल,मित्तल
कमलिया- गर्ग
करडवाले- तायल
करौली वाले- मंगल
कयाल-बंसल, गोयल, गर्ग, ऐरण
कयान- ऐरण
करवी वाले- बंसल
करूदिया- गोयल
कसेरा-ऐरण, मित्तल, गोयल, बंसल, मंगल, गर्ग
कटपीस वाले- बंसल
कहनानी- गोयल
काईया-ऐरण
काकड़ावाले-मंगल
कागला वाले- मित्तल
कागजी- गर्ग
कादमा वाले- गर्ग
कागली वाला- गोयल
काजड़िया- सिंघल
काण्ड़ा- गोयल
कानोडिया-मंगल, गोयल
कामड़- गर्ग
कानूनगो- गर्ग
कामाणी- मंगल
कामठिया- बंसल
कारीवाला- गोयल
कांवटिया- बिंदल
काला- मंगल
किश्तवाले- गर्ग
किठानियां- मंगल
किला- गर्ग
किसनाका- सिंघल
कुचामणिया- बंसल
केकड़ी वाले- मंगल
केजड़ी वाल- बंसल
केडिया- गर्ग
केथरी वाले- गर्ग
केसान- सिंघल
कोकड़ा- मित्तल
कोठी वाले-गर्ग
कोतवाल- सिंघल
कोटा वाले- गोयल
कोटरा वाले- मित्तल
कौड़ी वाले- गर्ग
कौंचवाले- गोयल
कोयले वाले- गर्ग, मित्तल
खालड़ा-बंसल
खिरोड़िया-गर्ग
खुरडीकुट- मंगल
खुर्जावाले- गर्ग
खेतान- गर्ग
खेरिया- गर्ग
खेमका- जिंदल, बंसल, बिंदल, मंगल
खोयावाले- मंगल
खोवाला- बंसल
गंगापुर वाले- गर्ग
गढैया- मित्तल
गढवाला- गोयल
गनेडी वाला-सिंघल
गजबी- मंगल
गरोठावाला- मित्तल
गाडिया- बंसल
गाडोदिया-गर्ग, बंसल, गोयल
गिदड़ा- बंसल
गुटगुटिया- गोयल
गुड़वाले- गोयल, गर्ग
गुमंट- सिंघल
गुढावाले- गर्ग
गुरारे वाले- गर्ग
गवेराईवाला- गर्ग
गोयनका, गोईन्का-गोयल
गोटे वाले- गर्ग
गोरखपुरी- सिंहल
गोल्यान- गर्ग
गोविन्दगढ़ वाले- मंगल
गोटे गांव वाले- गर्ग
खजांची- बंसल
खराकिया- गर्ग
खराड़ी- बंसल
खाटूवाल- गर्ग
घीवाले-मंगल, गोयल, मित्तल
घोड़े गांव वाले- गर्ग
चराई वाला- गर्ग
चकेरे- गोयल
चमड़िया- गर्ग
चांदगोठिया-गोयल
चालीसिया- मित्तल
चावल वाला- गोयल
चिड़ीपाल- गर्ग
चिड़ावावाले- बंसल
चिराणिया- ऐरण
चिरमोले- गोयल
चिरमिया- ऐरण
चूड़ीवाले- बंसल
चूरूवाले- गोयल
चेनानिया- मित्तल
चैतावत- बंसल
चौखानी- बंसल, गोयल, गर्ग
चौकसी- मित्तल
चौधरी-बंसल, गोयल, गर्ग
चेंकड़ीका- गोयल
चौमूवाला- गर्ग, बंसल
चौडेले- गर्ग
छारिया- सिंहल
छावसरिया- गर्ग
छिगनी वाले- गर्ग
छीतरका- गोयल
छींटावाला- मंगल
जग्गूका- सिंघल
जगनानी- मंगल
जटिया- गर्ग, बंसल
जयपुरिया- बिंदल, मित्तल
जसरापुरिया- गोयल
जड़तारयो- मित्तल
जाजोदिया-गर्ग, सिंघल, मंगल
जायल्या- मंगल
जालान- बंसल
चालानी- बंसल
जालौन वाले- गर्ग
जितुरवाला- गर्ग
जिंदगर- सिंघल
जोगानी- गर्ग
जौहरी- मित्तल, सिंघल
झंडेवाला- गोयल
झरोबुरीवाला- गोयल
झाझरिया- सिंघल, ऐरण
झालरीवाला- बंसल
झाझूका- गर्ग
झूरिया- जिंदल
झूमजी वाले- गोयल

झुंझनूवाला- बंसल
टकसाली- गोयल
टांटिया- बंसल
टालीवाला- बंसल
टिरिया- गोयल
टिकमाणी- तायल, मंगल
टिबड़ेवाल- गोयल, सिंघल
टुकड़ावाला- जिंदल
टेकड़ीवाल- गोयल
टेमाणी- मंगल
टोरका- मित्तल
टोरिया- गोयल
ठठेरी- सिंघल
डाणी- बंसल
डाबड़ीवाला- मित्तल
डालमिया- गर्ग
डाकिड़ा- बंसल
डांगवाले- गर्ग
डिग्गीवाले- बंसल
डीडवानिया- गर्ग, गोयल
डींगवाले- ऐरण
डेगला- बंसल
डेरा वाले- गर्ग
डोबटी वाले- गर्ग
ढंडरिया- ऐरण
ढांढणियां- सिंघल
ढूंढाडिया- गर्ग
ढेलिया- मित्तल
ढेरीवाले -गर्ग
तम्बाकू वाले- मित्तल
तवरे वाला- गोयल
तालूका- गर्ग
तापड़िया- जिंदल
तिजौरेवाले- गोयल
तुलस्यान- बंसल
तुरकास वाले- जिंदल
तेजावत- बंसल
तोतारामका- सिंहल
तोदी- गोयल
तोपखाना वाले- बंसल
तोशखाने वाला- गर्ग
तोषामी- गर्ग
थर्ड- मित्तल
थावरिया- गोयल
थोईवाले- बंसल
दतिया वाले- सिंहल
दतूली वाले- गर्ग
दंगलवाले- मित्तल
दलाल- गोयल, गर्ग
दसरापुरिया- गर्ग
दम्बी वाले- गोयल
दारूका- बंसल
दिनोदिया- बंसल
दिखणी- गोयल
दीवान- गर्ग
दूदवे वाला- सिंहल
देवड़ा- बंसल
देजलीवाला- गोयल
दोसोहाला- कंसल
दौलतपुर वाले- गर्ग
धरणीधरका- मित्तल
धम्मीवाले- बंसल
धमोड- बंसल
धानुका- बंसल
धानवाला- गोयल
धेलिया- मित्तल
धोलीवाल- मंगल
ध्रुव- मित्तल
धोहतीवाले- बिंदल
नाधानी- सिंहल
नाथका- गर्ग
नागलिया- गर्ग
नाउका- मंगल, बंसल
नागौरी- बंसल, जिंदल
नारनोलिया- गर्ग
नाइड़िया- ऐरण
नानूहाला- गोयल
नासिक वाले- ऐरण
निम्बोदिया- सिंघल
नीमावाले- गर्ग
नेमानी- बंसल
नेवटिया- सिंघल
नोपाणी- बंसल
नकारवाले- गर्ग
नरेडी- बंसल
नझोई- सिंहल
नवलगढिया- मित्तल, गर्ग
नरसिंहपुरिया- गर्ग
नागरका- गर्ग
नाजवाला- गर्ग
पच- मंगल
पपरूनिया- मंगल
पटवारी- गर्ग, गोयल, बंसल, सिंघल
पत्थरवाले- गर्ग, सिंघल, बंसल
भौतिका- गोयल
प्रहलादका- बंसल
पतंगवाले- गोयल
पट्टीवाले- गोयल
पतासावाले- गर्ग
परसरामपुरिया- मित्तल
परगनावाले- मंगल
परौतावाला- गर्ग
पंसारी- सिंघल, गर्ग, गोयल
पहाड़िया- मित्तल
पाटोदिया- बंसल
पातलिया- गोयल
पालड़ीवाला- मित्तल
पावटावाले- बंसल
प्राणसुखका- गर्ग
पिपरीवाला-बिंदल, जिंदल
पित्ती- जिंदल
पोद्दार- बंसल
फतेहचंद का- बंसल
फर्शीवाला- गोयल
फतेहपुरवाले- बिंदल
फतेहपुरिया-बंसल, बिंदल
फिरोजवाले- मंगल
फागीवाले- गर्ग
बंका- सिंघल
बंचवाला- गोयल
बकरा- सिंघल
बगड़का- मित्तल, सिंघल
बगड़िया-मित्तल, गर्ग, सिंहल
बगरू वाले- मित्तल
बगियावाले- बंसल
बजाज-ऐरण, बंसल, गोयल
बगड़ोदिया- सिंहल
बंगरूवाले, मित्तल
बतासे- सिंघल
बधवाल- गोयल
बड़ेगांववाला- ऐरण
बराजतवाला- ऐरण
बरासिका- गर्ग
बृजवाली- मित्तल
बागला- बिंदल
बागटवाले- गर्ग
बाजोरिया- सिंघल
बालुड़ा- गर्ग
बांदीकुईवाले- गोयल
बाडेसिया- बंसल
बारवाले- जिंदल
बागघर- गर्ग
बामणीवाला- गर्ग
बांसवाल- बंसल
बौपौधरिया- गर्ग
बीदासरिया- गर्ग
बुधिया- बंसल
बूबना- बंसल
बुधवारी- गोयल
बेरी- मंगल
बेरिया- गर्ग
बेरीवाल- गर्ग, ऐरण
बेरोलिया- सिंघल
बेरागडा-बंसल
बैराठी-गोयल, मंगल, ऐरण
भगत- गोयल, गर्ग

- भगेरिया- मित्तल, ऐरण
- भरतिया- बंसल
- भारतेन्दु- सिंघल
- भालोटिया- ऐरण
- भारूका- गोयल
- भावसिंहका-सिंघल
- भाड़ाहाला- ऐरण
- भागेर- बंसल
- भालोटिया- ऐरण
- भांडेरवाले- सिंघल
- भिवानीवाला- गोयल
- भीमराजका- तायल
- भीमसरिया- बिंदल
- भुसारवाले- गर्ग
- भूकरकेवाले- गर्ग
- भूत-गर्ग
- भूतला- सिंघल
- भूतका- मित्तल
- भुकरेडीवाला- गर्ग
- भूतिया- सिंघल
- भूतेरा- गर्ग
- भोडूका- गोयल
- भोजनगरवाला- गर्ग
- भाजारी- गर्ग
- मुंशीमलवाले, मित्तल
- मेहणसरिया- गर्ग
- मेहरा- मुदगल
- मोंठवाले- मित्तल
- मोडा- गर्ग, सिंघल
- मोहनका- गोयल
- मोदी- गर्ग, गोयल, मंगल, बंसल
- मोर- गर्ग, गोयल
- मोहनसरिया- गर्ग
- मऊवाले- सिंघल
- मंगोडीवाले- सिंघल
- मंढावाले- बंसल
- मंगलने वाले- मंगल
- मथुरिया- बंसल
- मंडावेवाला-सिंहल, बिंदल
- ममेरीवाले- बंसल
- पहमहीपाल- गर्ग
- मसखरा- बंसल
- माठडिया- बंसल
- माखरिया- मित्तल
- मांगलिक- मंगल
- महमिया- गर्ग
- मार- गर्ग
- मांजवाले- बंसल
- मिद्धा- गर्ग
- भिण्डा- गोयल
- मुकीम- गोयल
- मुरोदिया- मित्तल
- मुसद्दी- मित्तल
- मुसाहिब- बंसल
- मुरारका- गर्ग
- मुंगीवाले- गर्ग
- मुंशी- ऐरण
- रईस- गर्ग
- रंगवाला- गोयल
- राईका- गोयल
- राजगढ़िया-सिंघल, बंसल
- राजपुरिया- गर्ग
- राय- ऐरण
- रामुका- सिंघल, मंगल
- रानीवाला- गर्ग
- रासीवासिया- सिंघल, गर्ग
- रामनवमीवाला- गर्ग
- रायजादा- गोयल
- राणा- गोयल
- रामलालका- बंसल
- रूइया- बंसल
- रूवाटिया- गोयल
- रूंगटा- गर्ग
- रेखान- सिंघल
- रेलवाले- गर्ग
- रोहिला- गोयल
- लड़ीवाले- गर्ग
- लड़िया- बिंदल, गोयल
- लड्डा- सिंघल, गर्ग
- लंडूका- गोयल
- लाठ- सिंघल, बंसल
- लालपुरिया- सिंघल
- लावा- गोयल
- लीला, लिहिला-गोयल
- लुहारोवाले- गर्ग
- लुहारका- सिंघल
- लूणका- मंगल
- लोढा- बिंदल
- लोयलका- बंसल
- लोहिया- गर्ग
- लोंड- गोयल
- वराठी- गर्ग
- वाणवाले- गोयल
- वावी- मंगल
- वाड़ीजोड़ीवाले- गोयल
- वेद, वैद- गोयल, बंसल
- वैदिक- मित्तल
- संभुका- जिंदल
- शरन- गर्ग
- शाह- ऐरण, बंसल, सिंघल
- शाहपुरवाले- मित्तल
- शीशवालिया- गोयल
- शेखावाटिया- बंसल
- शोभासरिया- मंगल
- शोरावाले- गर्ग, मित्तल
- सरना- गर्ग
- संकर्द- गर्ग
- संघी- बंसल
- संगल- सिंघल
- संतरामजीका- गोयल
- सरावगी- गर्ग, बिंदल
- सलमेवाले- गोयल
- सवाईका- गोयल
- सर्राफ- बिंदल, जिंदल, सिंघल
- समरायवाले- गोयल
- सहरिया- ऐरण
- सांगनेरिया- गर्ग
- साहा- ऐरण
- साहू- गर्ग, मित्तल, बंसल
- साबडिया- बंसल
- सांवलका- बिंदल
- सांभरवाले- गोयल
- सिसोदिया- मित्तल
- सिगलिया- बंसल
- सिंगला- सिंघल
- सिंहानिया- सिंघल
- सिंदी- गर्ग
- सिपुरिया- मंगल
- सुनारीवाला- सिंघल
- सुरेका- गोयल, गर्ग
- सुलतानिया- बंसल
- सुगला- गर्ग
- सूतवाले- गर्ग
- सेक्सरिया- जिंदल
- सेठ- गोयल
- सेदपुरिया- ऐरण
- सौंथलिया- ऐरण
- सोनावाले- गोयल
- सोनका- ऐरण
- सोमनाथवाला- बंसल
- हरभजनका- ऐरण
- हरलालका- ऐरण, मंगल
- हलवाई- गोयल
- हवेलिया- गर्ग
- हाडा- बंसल
- हाथी दांतवाला- गर्ग
- हालवासिया- गर्ग
- हिम्मतरायका- बंसल
- हिमाणिया- गर्ग
- हिसारिया- मित्तल, सिंघल
- हिम्मतसिंहका- गर्ग
- हीराखानवाला- बंसल
- हुण्डीवाले- सिंघल

कतिपय अन्य प्रचलित अल्ल-बंक और उपनाम

अखैगढ़ वाले	ककरौली वाले	काकोलिया	खगरिया	गाडेवाला
अंगोछा वाले	कचहरी वाले	कांकरिया वाला	खटकडया	गाजीपुरिया
अचार वाले	कटारू वाले	कानसरिया	खंडार वाले	गांधी वाले
अजमेर वाले	कंदीकटेव	कानोगिया	खडेलिया	गायवाला
अर्जादिरिया	कटेवाला	कालेड़ा वाले	खदरिया	गिंदोड़ी
अड़किया	कटनीवाला	कागदाना वाले	खनानिया	गिलटवाले
अड़की वाले	कटारूका	कामदार	खनुआ वाले	गिलेण्डर वाले
अढ़ोली वाले	कंवाल	कामठी वाले	खराई वाले	गुडेवाले
अतार	कन्हईवाल	कांटीवाले	खारकोलिया	गुडी यानी वाला
अटेची वाले	कपड़े वाले	काबरिया	खारिया वाले	गुढेका
अलवर वाले	कबाड़ी	कारूंडिया	खामगांव वाले	गुढ़ीवाल
अमरावती वाले	कटारीवाला	कालमौद	खायरा	गुरारिया
अंगूठी वाले	कंकड़ेऊका	कालिए	खासगी वाले	गुलगुलिया
अमरसरिया	कटारूका	कारवाड़ी वाले	खिरनी वाले	गुललहा
आंगीवाल	कंठीमाला वाले	कालूंडिया	खीर वाले	गुलावटी
आड़ा	कम्बल वाले	कासना वाले	खींवसरिया	गुप्त
आंजनिया	कमरी वाले	कासूका	खींवसीका	गोकुला
आटे वाले	कमरया	कासूलिया	खुनखुनजीका	गोठका
आलमपुरिया	कयान	किताब वाले	खुडानिया	गोवका
आलमाल	करवीवाले	किरतुका	खुरकिया	गोपालका
आसंगवाले	करमानिया	किरवाड़ा वाले	खुरडीकर	गोयनर
आढ़तियाकपान	करीरीवाले	किरानेवाला	खेडावाले	गोयन्दका
आडेढ़िया	करवर छाला	किरानिया	खेडकावाले	गोरामवाले
इंदौर वाले	करनावट	किरवासी वाले	खेडलावाले	गोविंदका
इंद्राना वाले	करूडिया	किसनपुरिया	खेतावत	गोयलका
इसरला	कलवलिया	कुड़कलीवाला	खेदिया	गोवाडिया
ईकरी	कुसुम्बी वाले	कुण्डवाले	खेमाणी	गोहल्याण
ईंटा वाले	केलका	कुसुम्बी वाले	खैरातीका	गोरीसरिया
उदयपुरी	कलगी	केलका	खोरावाले	गोंदवाले
ऊंटवालिया	ऊकलवाडा वाले	केमोरी वाले	खोरिया	गड़िया
उडियारा वाले	कलानोरिया	कोटपाड़ा वाले	गण्डेरी वाले	गजबी
उलाजपुरिया	कसूमावाले	कोठावाले	गंधकवाला	गढ़वाल
औलख	कसेडिया	कोठरीवाले	गवैया	गणेशगढ़िया
औलवाड़ा वाले	कहीरा	कठीवास	गंगानगरिया	गगवावाले
औरय्या वाले	काइला वाले	कोदिया	गांगेसरिया	घड़ीवाले
ककरानिया	कायां	कोहली वाले	गढ़िया	घिरैया
ककरेचा	कांकरिया	कोसली वाले	गाडरमाला वाला	घिड़िया

घुवार्नेवाल
घूडका
घूमणसरिया
घेऊवाला
घोड़ावत
घोड़ीवाला
चक्कीवाले
चट्टाई वाले
चचेरीवाल
चंद्रबाजी वाले
चश्मेवाला
चरखारीवाले
चसहाला
चाकसूवाले
चाचाण
चांदसेन
चांदनका
चांपानेर वाले
चालीसा
चालीसिया
चिड़ावे वाले
चिड़ियावाले
चिड़ावेका
चिड़ीमार
चिराने वाले
चिंतावत
चीनानिया
चीपवाले
चौनी की बुर्जवाला
चुरूका
चूने वाले
चूरयां वाले
चूर्ण वाले
चेता
चेतानी
चैनवाले
चैम्बर वाले
चोकड़ीत
चोकीवाले
चौरूका
चौकड़ी वाले

चौकड़ीत
छपरिया
छमौरी
छाजुसरिया
छावछरिया
छापड़ा, छापड़िया
छानीवाला
छापोलिया
छामुनिया
छांटी वाले
जकोड़िया
जगरामका
जगतरामका
जगानी
जड़ावता वाले
जटिया
जनकपुरिया
जमालिया
जमनका
जमालवाले
जमुका
जयनगरिया
जलाली
जलेबी चोर
जबानपुरिया
जसरामपुरिया
जसरासरिया
जहाजगढिया
जगंवरी वाले
जलालपुरिया
जाखलिया
जांगलिये
जाटीवाला
जारोठी वाला
जांवरावाले
जावतमाल
जादूका
जालुका
जालानी
जासेडिया
जितानी
जिलोका
जिखवाडिया

जोवराजका
जीतगड़िया
जीतपुरिया
जुगरका
जुझारका
जुवानपुरिया
जुवार
जूनियां वाले
जेजानी
जै
जैन
जेतवाल
जोदराजका
जौधानी
जौहरी
जड़ावता वाले
झरीवाला
झंकोडिया
झरोखेवाला
झाड़ीवाला
झांझरी
झिरका
झूरिया
झूंथरा
झोरवाड़ा वाले
टकसालिया
टडक्या
टमकोरिया
टपूकड़ा
टारिया
टालवाले
टीबी वाले
टेकडीवाल
टेकवाले
टेलटिया
टोडीवाला
टोपीवाला
ठरड़
ठंडीरामका
ठाकुरद्वारा वाले
ढूमरेवाला
डेगराजका
डेबिया

डोकनिया
डोबी वाले
डोरवाले
डोरिया
डोलिया
डोंगरसोदासका
डगायची
डगेडिया
डरोलिया
डहरू वाले
डावड़ी वाला
ढिवाई वाले
ढींगवाले
ढुगे-बुंगे वाला
ढूंगरी वाला
ढाणीवाल
ढीलकीवाला
ढेढिवा
ढेलनहारा
ढेलासरिया
ढैया
तवरेवाला
तमकुडिया
तलवाड़िया
तलवंडी वाले
तला वाले
तलगैया
त्योदांवाला
ताड़पल्ली वाले
ताजपुरिया
तालीय
तारानगर वाले
तार वाले
तारगिट्टी वाले
तिगरानिया
तिवरी वाले
तिजारिया
तीर्थपुरीवाला
तीमड़े वाले
तुहीरामका
तूदेवाले
तेलुकुलिया वाले
तोतारामका

तोंदा वाले
तोला
तोशेरबाने वाले
थरड़
थरपाल
थांवला वाले
थुवाले वाला
दंगल वाले
दड़वा वाले
ददरेवाला
दलेला
दवाई वाले
दरीबा वाले
दलपतिया
दलाल
दयालपुरिया
दलिया
दस्सा
दहीड़ वाले
दही वाले
दांदलीवाला
दादिया वाले
दादुर
दादू
दांतलि
दादरी वाले
दारूका
दाल वाले
दिवाल वाले
दीवान
दीवानजी वाले
दुजोड वाले
दुशाले वाले
दुरालिया
दुहावन
दुदावत
दुदानी
दूध वाले
देतूली वाले
देवणलिया
देवरालिया
देवरियावाला
देवगांवका

देवीदानका	नागेवाला	प्रेमराजका	फौजदार	बालोंजी
देवूका	नागोलिया	पोतदार	बख्ततपुरा वाले	बालोतरिया
देलोद वाले	नागेड़ी	पतासिया	बगड़ीवाल	बासोतिया
देलानिया	नारसरिया	पजियार	बंगला वाले	बांस वाले
देश वाले	नारोजवाले	पंतगिया	बगवाड़ा वाले	बारवड़ा वाले
दोचानिया	नाथूरामका	पदाम्या	बघेरिया	बारदाना वाले
दोदराजिया	नालपुर वाले	परसरामका	बघेलावाले	बिचोली वाले
धनपतसिंहका	निगानिया	परसाड़ी वाले	बड़डिया	बिझलिया
धनजीपंजी वाले	निवाई वाले	परतापुर वाले	बड़वे वाले	बिरकाली वाले
धन्नावत	निजामाबाद वाले	परवाल	बढ़नेरा वाले	बिसाऊका
धनानिया	निम्बोदिया	पल्ला वाले	बड़ालिया	बींजराजका
धंवालिया	निमोरिया	पलारी	बड़ोपलिया	बीसूसरिया
धाड़ीवाल	नींबूचना वाले	पवानीका	बड़वालिया	बीदासरिया
धानौटी	नीरतू	परमणीवाल	बदुका	बीसाऊका
धामनोद वाले	नूंहा वाले	परवण वाले	बवादा वाले	बीसका
धामौरिआ	नूनवाले	परानुका	बरहरवा	बीसा
धींगरपुरवाले	नेवटा वाले	पलसाण, पलसाणी	बणी वाले	बोसाहूमड
धीमपुरिया	नोन वाले	पलसा वाले	बलोदा वाले	बुकरेलीवाला
धीरवासिया	नोपरा वाले	पलुसीकी	बराकड वाले	बुकनसरिया
धीरासरिया	नोरंगदेसरिया	पनजी वाले	बाढा वाले	बुकानिया
धीणा	नोसरिया	पहाड़ी वाले	बरखेड़ा वाले	बुड़ाकिया
धौलिया	नौहरिया	पांचोतास वाले	बहादुरपुर वाले	बुचासिया
धूत	नौताका	पाटन वाले	बहूवाला	बुंदोलिया
धूंधरीवाल	पाड़िया	पाटोदिया	बारबोलिया	बुधरामका
धौलिया	पाढा वाले	निणानवाले	बागड़ा	बुधवारी
धौलपुरवाले	पाढ़विया	पकाया	बाकेराय वाला	बुमरेडिया
धोलेटा	पानीपतिया	पकोड़ी वाले	बागढ वाले	बुरज वाले
नगीना	पापडा वाले	पंजे वाले	बाजला	बुरावाडा वाले
नत्थानी	पारूबा	पञ्जा	बावलिया	बूरेवाले
नंबरदार	पालविया	पचेडी वाले	बावरी	बेंगनिया
नरेणा वाले	पासरोटिया	पडानावाला	बावलीहाला	बेगराजका
नरेड़ी	पिंडारा	पत्थरका	बाराकुंजीवाला	बेरीवाल
नरवाली वाले	पिनान वाले	फतेहपुरका	बापूवाले	बेड़िया
नसीराबाद वाले	पिसाड़े वाले	फतेहसरिया	बायेवाल	बेसवाल
नवल	पिलखुआ वाले	फव्वारा वाले	बायती	बेगूवाल
नवलगढ़का	पीवलवा	फटे वाले	बारजेवाला	बेरासरिया
नलवे वाले	पुडियावाल	फिटकड़ी वाला	बाढ़कोठरी वाले	बोरड़ीवाला
नल वाले	पुवालेवाला	फेमड़ा वालें	बालिया	बोहरा
नांगल	पूर्णमलका	फोगला	बारड़	बोडा

बोदिया	भम्मनका	मांडोलिया	मुसद्दी	मंडावेका
बोरालिया	भरमिया	मादरिया	मुंडिया	मंडला वाले
बोरीहारा	भमारीवाला	मावावाले	मुस्कानी	मंडीलया
बोली वाले	भदसाने वाले	मादुवाड़ीवाले	मुंशी	मंजोठा वाले
भीमराजका	भाऊका	मारूजीवाला	मुंशीमलका	मंढोलीवाल
भीमसरिया	भाकरी वाले	मालचंदका	मुंशी	मदूपुरिया
भीमसहर वाला	भागचंदका	मानपुरिया	मुंशीमलका	मथुरा वाले
भीवराजका	भादरा वाले	मावड़िया	मुहालका	मदौरी वाले
भीवानिया	भाडूका	मातनहेलिया	मूंगेवाले	मनसारामका
भीवांपुरका	भालूसरिया	माधोपुरिया	मुंडोसीवाले	मलियाना वाले
भुवानिया	भावनगर वाले	मंजिका	मेगोलिया	मलसीसर वाले
भुवानेका	भावपुरकर	मानमलका	मेडवाले	मलोरहा वाले
भुवालका	भाया	मानसिंहका	मेडत्या	मरौदिया
भुकरेड़ी वाला	भादुड़ी वाला	मालधनी	मेवावाले	रतनगढ़िया
भूखमारिया	भानगढ वाले	मालपुरावाले	मेरठिया	रड़कवाले
भूडोतिया	ममोधनिया	मालगुजार	मेलखेडावाले	रतेरिया
भूड़ वाले	महरामण्डावाले	मारफतिया	मेरठीसाह	राईवाले
भूता	मसकरा	मारवाड़ी	मेहता	राजपुरिया
भूतल्या	महनसरिया	मित्रपुरावाले	मेमिया	राजवंशी
भूषणवाला	महमिया	मित्तुका	मैदावाले	राजारामका
भेरूदिया	महलका	मिचनाबादलवाले	मोटारायावाले	रायगढ़िया
भीड़केवाला	महलावाला	मिठड़ी वाले	मोडिया	राणियावाले
भोडूका	म्हारेवाले	मिहाड़िया	मोठका	रातड़िया
भोजनगर वाला	महासरवाले	मिससका	मोदाणी	राऊवाले
भोजिका	महेशका	मुकंदगढ़िया	मोतीवाले	रातूसरिया
भोजराजका	महाटिया	मुकुटवाले	मोतिन	रामरायका
भोपालका	महाडरिया	मुकीम	मोरड़ा	रामगढ़िया
[illegible]	महातिया	मुखिया	मोहरोंवाले	रायका
[illegible]	माखरीवाल	मुंडेवाला	मालसरिया	रायावाले
[illegible]	मांडडिया	मुबारकपुरवाले	मड़ेव	रायपुरवाले
[illegible] वाले	मांडीवाल	मूरतीजापुरवाले	मकारीवाला	रावलवासिया
[illegible]	मारकरिया	मुनका	मगलूडिया	रावल
[illegible]	मांगड़ीवाल	मुनीम	मंडरायल वाले	राशनवाले
[illegible] वाले	मारकरिया	मुरोदिया	मंगाली वाले	रिटोलिया
[illegible] वाले	मांगड़ीवाला	मुरथलिया	मंडावा वाले	रिणीवाले
[illegible] वाले	मांडौठिया	मुरसानवाले	मंगुलि वाले	रिणका
[illegible]	मांगलिक	मुंसरीवाले	मंडावा वाले	रिणीवाले

रिणका	लोटिया	सरसिलेवाला	सींतिया	सकतिया
रिवाड़ीवाला	लोहागरिया	सरायवाला	सीपरिया	सक्ताणी
रिगांसिया	लड्ढिया	सरिया	सीवंणवाले	संगा
रीगंसवाले	वटावर	सलारपुरिया	सीवानीवाले	संगाई
रीवांवाले	व्या	सलइयावाला	सीलाकनी वाले	संघोलिया
रूहटिया	वधानिया	सहारिया	सीसाहाला	सतनालीका
रूपदासका	वाणवाले	सांखू	सुखजीका	संगीतवाला
रूपचंदजीका	विजयका	सगरेवाला	सुगला	सतुका
रूदावाले	वाणवाले	सांगानेरिया	सुगंधी	सदावती
रेडियोवाले	विजयका	साड़ीवाल	सुपारीवाला	सनेरवाले
रेशमवाले	विछावतका	सांघी	सुरंगलीवाला	स्याल
रेजीमेंटवाले	वुचासिया	सांजी	सूतिया	हटका
रोटी वाले	वेय	साव	सुतेरशाही	हठीरामका
लक्कड़ी	वेरवाल	साठेवा	सुद्रानिया	हमीरवासिया
लखी	वेरनी वाले	सामोदवाले	सुंदरका	हरनामवाले
लखूड़ी	वैश्य	सामोदिया	सुलतानवाला	हरसोरावाले
लडिया	वैश्य अग्रवाल	सारत	सुलफावाले	हरभजनका
लड्ढिया	वोगी	सावडिया	सूतवाला	हरलालजीका
लच्छीरामका	शस्त्रधारा	साल्हावासिया	सुराशाही	हवेलिया
लच्छूका	शाह	सावरिया	सूरोठवाले	हवेलीवाले
ल्हीला	शाल्डित्य	सांवलका	सूजगढ़िया	हाथीदांतवाले
लक्ष्मणगढका	शिक्करिया	साह, साहा	सूईवाला	हारूनीवाल
लदनिया	शिवांडवाल	साहूवाला	सेकडा	हालना
लहानवाले	शेखावाटिया	साहेवाला	सेक्सरिया	हांसलसरिया
लालगढ़िया	शेरपुरवाले	सिकतिया	सेठ	हांसीवाले
लाडसरिया	शोभासरिया	सिकरिया	सेठानीका	हिम्मतरायका
लालाणी	शेरावाले	सिंघानिया	सेडूका	हिंगोलीवाला
लालावालों	सफ्फड	सिरहावाले	सेदपुरिया	हिडोरिया
लुहारीवाला	सफाड़िया	सितानी	सेनावाले	हीरानंदका
लुहारुका	संदरोवाले	सितावरायवाले	सेलवाले	हुड़त
लूडिया	सबलका	सिघनोदिया	सेवतावाले	हुडेकर
लूणकरणसरिया	समालिया	सिंघणची	सोमनाथावाला	हुण्डेवाले
लूणाका	सनवाड़वाला	सिरोही वाले	सोढ़ानी	हुण्डीवाले
लेबईवाल	समथर वाला	सिद्धमुखवाले	सोमादिया	हेलीवाल
लोया	समोदवाले	सिवेटिया	सौदागर	हैदराबादी
लोहिया	समस्तीपुरवाले	सींघई	स्यामसरिया	हौजरीवाले

अग्रवाल समाज और विभिन्न घटक

अग्रवाल समाज वैश्य समुदाय का एक प्रमुख घटक है। प्रारम्भ में अग्रोहा से निकास के कारण सब अपने को अग्रवाल, अग्रोतकान्वय आदि शब्दों से सम्बोधित करते थे। उनमें किसी प्रकार का सामाजिक विभेद या उपजातियां नहीं थी। सब महाराजा अग्रेसन के वंशज तथा 18 गोत्रों के रूप में अपना परिचय देते थे किंतु शनैः शनैः स्थान, आचार, धर्म, सामाजिक रीति-रिवाजों आदि के भेद से उनमें कई वर्ग उपवर्ग बनते गए। विशेष कर मुस्लिम शासनकाल और उसके बाद यह भेदोपभेद बढ़ता गया । यद्यपि ये सभी अपने आपको अग्रवाल कहते, अग्र समाज का घटक होने में गौरव का अनुभव करते हैं और उनमें परस्पर खान-पान का व्यवहार भी है किंतु विविध कारणों से उनमें बेटी का व्यवहार (वैवाहिक सम्बंध) प्रायः अपने ही वर्ग तक सीमित है।

प्राचीन समय में सभी जातियों के अपने-अपने संगठन और पंचायतें थीं, जो अपने समाज के रीति-रिवाजों, सामाजिक नियमों का निर्धारण करती थीं। उनका पूरे समाज पर कठोर नियंत्रण होता था और वे जातीय सभाओं के नियमों का उल्लंघन करने अथवा उनसे भिन्न चलने पर उनको जाति से बहिष्कृत कर देती थीं। इस प्रकार रुढ़िवादी (कट्टर विचारधारा) और सुधारवादी लोगों में निरन्तर संघर्ष की प्रक्रिया भी चलती थी। प्राचीन समय में बाल-विवाह, औसर-मौसर आदि का प्रचलन था। विधवा विवाह धार्मिक दृष्टि से अपवित्र कार्य माना जाता था। जो लोग इन नियमों को नहीं मानते, उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता और वे अपना एक नया वर्ग (संगठन) बना लेते। इससे भी नये नये वर्गों, उपवर्गों, संगठनों का निर्माण होता रहता । इसी प्रकार स्वजाति में ही विवाह का प्रचलन था। जो बन्धु अन्य जाति की महिला से विवाह सम्बंध कर लेते अथवा वैवाहिक नियमों का उल्लंघन करते, उनका भी एक अलग वर्ग-उपवर्ग बन जाता। इस प्रकार आचार एवं वैचारिक मतभेद से विभिन्न जातियों के साथ-साथ अग्रवालों में भी नये वर्गों-उपवर्गों का निर्माण हुआ।

उदाहरण के रूप में हम राजवंशी अग्रवालों को ले सकते हैं। राजा रतनचंद के बादशाह फरुखशियर के साथ विशेष सम्बन्ध थे। फरुखशियर इन्हें पर्याप्त महत्व देता था। स्वाभाविक है, साथ रहने से उनके खान-पान, वेश-भूषा आदि पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव पड़ता। जो लोग समाज में कट्टर विचारधारा के थे, उन्हें यह कार्य परम्परा अथवा धर्मविरुद्ध मालूम हुआ। अधिक मतभेद बढ़ने पर राजा रतनचंद ने एक अन्य उपवर्ग (संगठन) का निर्माण कर लिया और राजा से सम्बंधित होने के कारण यह शाखा अपने आपको राजवंशी कहने लगी। इस प्रकार अग्रवालों में एक नई शाखा राजवंशी का निर्माण हो गया। बाद में परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार भी राजवंशियों तक सीमित रहने लगा और उनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित हो गया।

इस प्रकार अग्रवालों में आधार भेद, स्थानभेद, सामाजिक मान्यताओं में अंतर आदि विभिन्न कारणों से नये-नये वर्ग-उपवर्गों का निर्माण होता गया और उन्होंने नये-नये नामों को धारण कर लिया किंतु वर्तमान समय में ये विभेद शनैः-शनैः समाप्त होते जा रहे हैं। समाज के लोगों का दृष्टिकोण व्यापक होने एवं दुनिया के एक हो जाने से जातीय एवं धर्म के बंधन ढीले पड़ने लगे हैं। मानव-मानव सब समान हैं-इस प्रकार की

विचारधारा पनपने लगी है। संगठन के महत्व ने विभिन्न जातियों को एक झंडे के नीचे खड़े होने के लिए बाध्य कर दिया है। उनमें रोटी के साथ बेटी के परस्पर सम्बंध भी होने लगे हैं। अब उनके झण्डे के नीचे अग्रवाल चाहे वे मारवाड़ी, देशवाली राजवंशी, दिलवारिये, अग्रहरि आदि कोई भी क्यों न हो- अपने आपको एक समझने लगे हैं। इस दृष्टिकोण की व्यापकता के कारण सम्पूर्ण वैश्य समाज को संगठित करने की दिशा में भी प्रयास हो रहे है।

अग्रवालों के प्रमुख भेद

बीसा, दस्सा, पञ्जा-अग्रवालों में भी अन्य जातियों के समान बीसा, दस्सा, पञ्जा आदि के भेद देखने को मिलते हैं। कुछ अपने को बीसा, कुछ दस्सा तथा कुछ अपने को पञ्जा अग्रवाल कहते हैं।

इन विभेदों के कारणों के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इनकी व्याख्या की है। किंतु इन शब्दों को देखने से स्पष्ट है कि ये शब्द परिमाण अथवा संख्या सूचक हैं और उत्तरोत्तर दूसरी संख्या पहली का आधापन प्रकट करती है। अतः लगता है, यह शब्द संख्या या परिमाण से सम्बन्धित है। जिस प्रकार आजकल हम किसी वस्तु की पूर्णता कर आधार 100 मानते हैं और जो वस्तु बिल्कुल सही होती है, उसे शत-प्रतिशत सही कहते हैं, उसी प्रकार प्राचीन समय में 20 (कौड़ी) की संख्या शतप्रतिशत सही या प्रामाणिकता की द्योतक थी। सामान्यतया लोग वस्तुओं के भाव भी बीस की संख्या में ही बताते। जैसे सत्तर कहना होता तो कहा जाता-तीन बीसी, ऊपर दस। पुराने बुजुर्ग लोग इसे भली-भाँति जानते हैं।

इसी प्रकार वैश्य अग्रवाल समाज में व्यक्ति से बीस गुणों (नियमों) के पालन की अपेक्षा की जाती थी। समाज के जो लोग इन बीसों नियमों का मोटे रूप में पालन करते, उन्हें बीसा कहा जाता। जो लोग किन्हीं कारणों से उन पूरे नियमों का पालन नहीं कर पाते, उन्हें दस्सा तथा दस्साओं द्वारा निर्धारित नियमों का पूरी तरह से पालन न करने वालों को पञ्जा कहा जाता । मोटे रूप में ये बीस नियम इस प्रकार थे-

1. कृषि 2. गौरक्षा एवं पशुओं के प्रति करूणा भाव 3. वाणिज्य-व्यवसाय द्वारा सबकी समृद्धि का प्रयत्न 4. दानशीलता एवं लक्ष्मी की उपासना 5. अहिंसा का पालन 6. निर्धन एवं असहायों की सेवा 7. धर्म में आस्था एवं वेदशास्त्रानुमोदित परंपराओं का पालन 8. खानपान में शुद्धता-शाकाहार 9. भारतीय वेशभूषा, आचार-विचार, 10. दुर्गुणों एवं दुर्व्यसनों का त्याग 11. आर्थिक दृष्टि से कमजोर बंधुओं की सहायता 12. ज्ञान के प्रति श्रद्धा 13. अतिथि सत्कार 14. सनातन हिन्दू धर्म व भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आदर्शों का पालन 15. रक्त शुद्धता-स्वगोत्र छोड़कर अपनी ही जाति में वैवाहिक सम्बन्ध 16. आय की अपेक्षा कम व्यय, अपनी सम्पत्ति को चार भागों में बांट पहला भाग गौपालन, दानादि में, दूसरा भाग व्यापार में, तीसरा भाग गृहस्थी के संचालन और चौथा भाग भावी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संचित करके रखना 17. सरल व सादगी पूर्ण जीवन तथा सत्यप्रियता 18. मित्त भाषण एवं विनम्रता 19. साहस, आत्मबल एवं दृढ़ संकल्प शक्ति तथा 20. सामाजिक संगठन के नियमों का पालन एवं उनमें आस्था।

जो लोग इन बीस गुणों अथवा समाज द्वारा निर्धारित ऐसे ही अन्य नियमों का पूर्णत: पालन करते, वे समाज में श्रेष्ठ स्थान के अधिकारी समझे जाते और उन्हें बीसा कहा जाता।

किन्तु जो लोग जातीय व्यवस्थाओं का पूर्ण रूप से पालन नहीं कर पाते या सुधारवादी होने के नाते समाज की रूढ़ियों या परंपराओं से विद्रोह करते, न्यून गुणों का पालन करने के कारण वे दस्सा कहलाने लगे। उनका अपना स्वतंत्र संगठन हो गया। इसी प्रकार दस्सों में प्रचलित जातीय नियमों एवं परम्पराओं का उल्लंघन करने वाले पञ्जे कहलाए। जैन ग्रंथों में इन विभेदों का पर्याप्त वर्णन मिलता है।

निष्कर्ष रूप में इस व्यवस्था के पीछे सामाजिक आचार-विचार की दृढ़ता ही मुख्य रूप से विद्यमान थी।

बीसा अग्रवाल सम्पूर्ण भारत में फैले हुए हैं और सामाजिक दृष्टि से उन्हें उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त है। आर्थिक दृष्टि से भी वे अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न हैं। वैवाहिक सम्बन्ध भी प्राय: वे अपने ही वर्ग में करते हैं। मारवाड़ी एवं नागवंशी अग्रवाल इनमें मुख्य हैं।

दस्सा अग्रवाल मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, दिल्ली आदि में हैं। सामान्य रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचारादि में वे अन्य अग्रवालों के समान ही हैं किन्तु किन्हीं कारणवश उनका पृथक अस्तित्व बन जाने से वैवाहिक संबध दस्सों के मध्य ही होते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ये बंधन ढीले पड़ने से उनके बीसों के साथ भी वैवाहिक सम्बन्ध होने लगे हैं।

पञ्जे मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, मुम्बई तथा महाराष्ट्र में पाये जाते हैं। कहीं कहीं ढैया भी पाए जाते हैं।

विभिन्न इतिहासकारों ने बीसा, दस्सा के इन भेदों के कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि मुगलों के आक्रमण के समय जाति के जो लोग अपने मूलस्थानों को छोड़ दूसरे स्थानों पर जा बसे, वहां उस जाति के मूल निवासियों के साथ उनका तालमेल न हो सका तथा कट्टर धार्मिक या असहिष्णु प्रवृत्ति के लोगों ने उन्हें अपने से भिन्न समझ दस्सा, पञ्जा आदि की संज्ञा दे दी हो।

जो भी हो, इन विभेदों से पता चलता है, प्राचीन समय में किस प्रकार जातियों ने अपने आपको विभिन्न कठोर नियमों से जकड़ लिया और आचार, धर्म, स्थान आदि की दूरियों ने एक दूसरे को विभक्त कर दिया था किन्तु वर्तमान समय में ये विभेद अतीत के विषय बनते जा रहे हैं और आने वाले युग में इनका अस्तित्व बने रहने की संभावना कम हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का वर्गीकरण-

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार अग्रवालों में प्रमुख रूप से चार शाखायें हैं-(1) मारवाड़ी (2) देशवाली (3) पूरबिये और (4) पछेंहिये अग्रवाल।

मारवाड़ी अग्रवाल-अग्रोहा विध्वंस के बाद जब अग्रवाल जाति के लोग अन्य स्थानों पर जाकर बसने लगे तो उनका एक बड़ा भाग राजस्थान की ओर चला गया और वे शेखावटी, मारवाड़ आदि में बसने के कारण मारवाड़ी अग्रवाल कहलाने लगे। एक

अध्ययन के अनुसार 326 ई. पू. से लेकर मुसलमानों के आक्रमण (1194-95) तक अग्रोहा छोड़ मारवाड़ में बसे ये लोग जब आजीविका की खोज में देश के विभिन्न भागों में जा बसे तो उन्होंने अपना परिचय मारवाड़ी के रूप में देना प्रारंभ किया और उनकी संज्ञा मारवाड़ी अग्रवाल पड़ गई। मारवाड़ी बीसे अग्रवाल कहलाते हैं और इनका भारतीय जाति समूह एवं वैश्यों में प्रमुख स्थान है। देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण इनकी गणना विश्व की सर्वश्रेष्ठ व्यापारी जातियों में होती है। अग्रोहा से पृथक बस जाने और एक अलग भू-भाग में रहने से उनके बोल-चाल, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि में कुछ विशिष्टताएं आ गई हैं, जिनके कारण अग्रवालों में इनकी स्वतंत्र पहचान है।

देशवाली अग्रवाल-जो अग्रवाल अग्रोहा को छोड़ युक्त प्रांत हिसार, हांसी, रोहतक, करनाल व भारत के अन्य बिहार आदि प्रांतों में जा बसे, उन्हें देशवाली कहा जाने लगा। इनका मुख्य अंतर बोली या भाषा का है। दूर बस जाने के कारण स्थान तथा कालभेद से इनके बोल-चाल, रहन-सहन, पहनावे आदि में मारवाड़ी अग्रवालों से भिन्नता आ गई है। इन अग्रवालों में महमिये, जांगले, हरियानिये, लोहिये आदि विभिन्न नाम प्रचलित हैं, जो महम, भटिण्डा, हरियाणा, लोहागढ़ आदि स्थानों में बस जाने के कारण है, परन्तु इस विभिन्नता के बावजूद मारवाड़ी अग्रवालों के साथ इनके रोटी-बेटी के सम्बन्ध होते हैं।

पूरबिये और पछंइये-देशवाली अग्रवालों में पूरबिये और पछंईये का भेद मिलता है। पूर्वी सयुंक्त प्रांत, पंजाब और बिहार में जो अग्रवाल सदियों से निवास करते हैं, वे पूरबिये अग्रवाल कहलाते हैं, किन्तु जो अग्रवाल विगत 150-200 वर्षों में बसे हैं, उन्हें पछंइये कहा जाता है। मोटे रूप में पूर्व में रहने वाले पूरबी तथा पश्चिम में रहने वाले पछंईये अग्रवाल कहलाते हैं।

धर्म-पंथ आदि के आधार पर-

धर्म, पंथ, विचारधारा आदि के भेद से भी अग्रवालों में विभिन्न भेद देखने को मिलते हैं। जैसे-

1. **वैष्णव**- सनातन धर्म को मानने वाले
2. **शैव**-शैव मतावलम्बी
3. **जैन**-जैन मत को मानने वाले
4. **आर्यसमाजी**-आर्य समाज की विचारधारा में आस्था रखने वाले
5. **सिक्ख**-राधास्वामी आदि।

इन सबमें खान-पान, रहन-सहन आदि में किसी प्रकार का विशेष भेद नहीं है। सभी धर्मानुयायी मांस-मदिरा के सेवन से दूर रहते हैं, जीवन में सात्विकता का पालन करते हैं, धर्म में श्रद्धा रखते हैं।

अग्रवाल एवं जैन-अग्रवालों में सनातन धर्मी वैष्णवों के बाद काफी बड़ी संख्या जैनी अग्रवालों की है। इनमें भी दिगम्बरी जैनों की संख्या अधिक है, वैसे श्वेताम्बर सम्प्रदाय के लोगों की संख्या भी कम नहीं है।

दिगम्बर जैनों में तीन पंथ हैं- (1) तेरह पंथ (शुद्धम्नात), (2) बीस पंथ (भट्टारक) और (3) तारणपंथ

ये मूर्ति पूजा को आवश्यक नहीं मानते। ये अपने मंदिरों में अपने तीर्थंकरों की यथाजातरूप ध्यानस्थ प्रतिमाओं की अर्चना करते हैं।

श्वेताम्बर में भी दो भेद हैं- स्थानकवासी और तेरापंथी। श्वेताम्बर परम्परा के सभी साधु वस्त्रधारी होते हैं किन्तु दिगम्बर सम्प्रदाय के शुल्लक्, ऐल्लक, भट्टारक आदि सवस्त्र किन्तु मुनि दिगम्बर रहते हैं। सामान्य अंतर साधुभेद, साधुचर्या, पूजा पद्धति व क्रियाकांड को लेकर है।

कहा जाता है कि महाराजा अग्रेसन की आठवीं पीढ़ी में दिवाकर नाम का राजा हुआ। उसके समय में जैन मुनि लौहाचार्य, अग्रोहा में आए। कतिपय अग्रोहावासियों एवं राजा ने उनसे प्रभावित होकर जैन धर्म में दीक्षा ले ली। लौहाचार्य ने नवीन काष्ठा संघ की स्थापना की। तब से लेकर अद्यतन इस संघ में अग्रवाल जैन भट्टारक ही अभिषिक्त होते रहे हैं।

जैन धर्मावलम्बी एवं सनातनी अग्रवालों में धर्म के अलावा अन्य कोई विभेद नहीं हैं। वैवाहिक सम्बन्ध भी परस्पर होते हैं। लड़की जिस परिवार में जाती है, वहां के धर्म को अपना लेती है। दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि में उनकी बहुलता है।

दिवाकर के जैन धर्म में दीक्षित होने सम्बन्धी एक कथा श्री अगरचन्द नाहटा ने इस प्रकार दी है-

दिगम्बराचार्य लोहाचार्य दक्षिण देश के भद्दलपुर में थे। विहार करते-करते अग्रोहा के निकटवर्ती स्थल हिसार पहुंचे। वहां उन्हें कोई असाध्य रोग हुआ, जिससे वे मूर्च्छित हो गए। वहां के श्रावकों ने उन्हें सन्यास मरण स्वीकार कराया। इसके बाद कर्म स्वतः लंघन होने के कारण विशेष पाक होने से अपने आप निरोगी हो गए। निरोगी होने पर जब उन्हें होश आया तो उन्होंने भ्रामरी वृत्ति (भिक्षावृत्ति) से आहार करना विचारा। पीछे "श्रीसिंघ" ने उनसे कहा कि महाराज! हम लोगों ने आपकी रूग्ण तथा मूर्च्छितावस्था में यावज्जीवन आपसे सन्यासमरण की प्रतिज्ञा कराई है और आहार का भी परित्याग करवाया है। अतः यह संघ आपको आहार नहीं दे सकता। यदि आप नवीन संघ स्थापित कर कुछ जैनी बनायें तो आप वहां आहार कर सकते हैं। तत्पचात् प्रायश्चितादि शास्त्रों के प्रमाण से उक्त वृतांत सत्य जानते हुए लोहाचार्य वहां विहार कर अग्रोहा नगर के बाहरी स्थान में पहुंचे। वहां एक बड़ा पुराना पायजा था। उसी के ऊपर बैठकर ध्यान निमग्न हो गए। अनभिज्ञ लोग साधु को वहां आया देख दूर से ही आदर के साथ प्रणाम करने लगे। मुनि महाराज के आने की धूम सारे नगर में फैल गई। हजारों स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो गए। कारण विशेष से एक वृद्धा श्राविका भी किसी दूसरे नगर से आई थी। वह महात्मा जी की चर्चा सुन वहां आई। वह बुढ़िया दिगम्बराचार्य के वृतांत को जानती थी, इसलिए ज्यों ही उसने महात्मा को देखा तो पहचान लिया कि ये हमारे दिगम्बर गुरु हैं। बस अब देर क्या थी? धीरे-धीरे वह पायजे पर चढ़ गई और मुनि महाराज के निकट जाकर बड़ी विनय के साथ नमोस्तु-नमोस्तु कहकर यथास्थान बैठ गई। मुनिराज ने भी "धर्मबुद्धि" कहकर धर्मोपदेश दिया। यह घटना देख सबको आश्चर्य हुआ कि अहोभाग्य इस बुढ़िया का कि ऐसे महात्मा इससे बोले। अब मुनि महाराज ने सबको श्रावक धर्म का उपदेश दिया। उपदेश के श्रवण से उनके चित्त व्रत को ग्रहण करने के लिए उत्सुक हो

गये। सबसे पहले अग्रवंशी राजा दिवाकर ने अपने कुटुम्बियों के साथ श्रावक धर्म को स्वीकार किया और उनके देखा-देखी काफी अग्रोहावासी सपरिवार श्रावक धर्म को स्वीकार कर जैनी हो गए।

जैन धर्म के अनुयायी ऋषभदेव से लेकर महावीर स्वामी तक हुए 24 तीर्थंकरों के सिद्धांतों में विश्वास रखते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य घोर तपस्या द्वारा शरीर को पवित्र बनाना है। दूसरे शब्दों में जिन देवों द्वारा प्रस्तुत धर्मव्यस्था ही जैन तथा उसके अनुयायी जैन कहलाते हैं।

"मिति में सब्व भूयेसु, वैर मन्झं न केणई"-अर्थात् संसार में सभी प्राणी मेरे मित्र हैं, मेरा किसी से वैरभाव नहीं, यही महावीर स्वामी एवं जैन तीर्थंकरों का संदेश है। प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा में इनकी विशेष आस्था है।

जैनी अग्रवाल प्राय: छानकर पानी पीते हैं, रात्रि में भोजन नहीं करते और देवदर्शन कर भोजन करते हैं-ये ही प्राय: इनके मुख्य व्रत हैं।

जैन अग्रवालों को सरावगी भी कहते हैं, जो श्रावक शब्द का अपभ्रंश है।

श्वेताम्बर समुदाय में मूर्तिपूजक, स्थानकवासी और तेरापंथी अग्रवाल भी पाये जाते हैं।

12वीं शताब्दी के जैन ग्रन्थों की प्रशस्तियों, प्रतिमा, लेखों आदि में जैन अग्रवालों के पर्याप्त विवरण मिलते हैं।

जैन अग्रवालों द्वारा निर्मित धार्मिक व सार्वजनिक संस्थाओं का संपूर्ण देश में जाल बिछा हुआ है। उन्होंने करोड़ों रूपयों की लागत से जैन मंदिरों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, जैन शोध केन्द्रों एवं अन्य लोकोपकारी संस्थानों का निर्माण कराया है। इनके मंदिर स्थापत्यकला की दृष्टि से बड़े ही आकर्षक एवं भव्य हैं।

सद्साहित्य के प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार में भी इस समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। साहू श्रेयांसप्रसाद जैन एवं शान्तिप्रसाद जैन ने ज्ञानपीठ के माध्यम से साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में जो उल्लेखनीय सेवाएं की है, वे सर्वविदित हैं। उनके द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला साहित्य का सर्वोच्च 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। आपने विभिन्न विश्वविद्यालयों में जैन पीठ की स्थापना करके जैन दर्शन के शोध एवं अनुसंधान की दिशा में भी उल्लेखनीय कार्य किया है।

इस समाज ने आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक सभी क्षेत्रों में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की है और अग्रवाल जैन प्राय: सभी क्षेत्रों में छाये हुए हैं।

अन्य अग्रवाल

राजवंशी अग्रवाल-राजवंशी अग्रवाल अपने को राजा की बिरादरी या राजशाही अग्रवाल भी कहते हैं। जानसठ (मुजफ्फरनगर) के राजा रतनचंद इस वर्ग के जन्मदाता कहे जाते हैं। इस वर्ग का जन्म समाज में व्याप्त रूढ़ियों के विरोध में हुआ।

कुछ लोगों का मत है कि राजा रतनचंद के सैयद बन्धुओं एवं फरूखसियर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध थे। वे उन्हें बहुत मानते थे। राजा रतनचंद की योग्यता से प्रसन्न होकर उन्होंनें उन्हें राज्य में कोषाध्यक्ष, दीवान दो हजारी जैसे पद और राजा का खिताब दिया।

राजा रतनचंद ने सिक्खों को मुसलमानी अत्याचारों से बचाने में काफी मदद की थी। इसी प्रकार हिन्दुओं पर लगने वाले जजिया का उन्होंने खुलकर विरोध किया और बंदा वैरागी को छुड़ाने का प्रयत्न किया था।

राजा रतनचंद ने अपनी बिरादरी में सुधार लाने के लिए अनेक कार्य किए, जैसे वैवाहिक अवसरों पर वैश्याओं, हिजड़ों को नचाने, दहेज-दिखावा आदि का विरोध, ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाना। कहते हैं कि राजा रतनचंद द्वारा बिरादरी में किए गए ये क्रांतिकारी सुधार कुछ रूढ़िवादियों को पसंद न आए। इसके अलावा मुगलों के साथ काफी मेल-जोल होने से राजा रतनचंद के आचार-विचार में परिवर्तन आ गया।

समाज के कुछ लोगों को यह रास न आया और उन्होंने रतनचंद को जाति से बहिष्कृत कर दिया। रतनचंद ने अपने समर्थक लोगों के साथ एक अलग बिरादरी बना ली, जो राजा से संबंधित होने के कारण राजवंशी कहलाई।

श्री परमेश्वरी लाल गुप्त इस मत से सहमत नहीं है। उनका विश्वास है कि राजवंशी वणिक से राजवंशी अग्रवालों की उत्पत्ति हुई।

राजवंशी अग्रवालों में एक किंवदंती यह भी है कि अग्रसेन के पुत्रों के विवाह एक नागकन्या और एक एक राजकन्या के साथ हुए थे। राजकन्याओं से उत्पन्न संतानें ही राजवंशी कहलाई! राजवंशी अग्रवाल कुशल प्रबंधक, व्यवस्थापक एवं प्रशासन में विशेष दक्षता के कारण राज्य सेवाओं में बहुलता से मिलते है। विभिन्न सरकारी पदों पर प्रशासक के रूप में इनकी विशेष भूमिका मिलती है।

इनकी अधिकाँश आबादी मुजफ्फरनगर तथा उसके आसपास के जानसठ, मेरठ, बिजनौर, बुलंदशहर, शामली, मुरादाबाद, अलीगढ़ आदि में पाई जाती है। अब इनका प्रसार सम्पूर्ण देश में होने से भारत के सभी भू-भागों कलकत्ता, गाजियाबाद, ज्वालापुर, जनकपुर, हरिद्वार, दिल्ली, कोटा, बीकानेर, जयपुर, करनाल आदि में ये पर्याप्त संख्या में हैं।

इनके गोत्र भी अग्रवालों के समान ही हैं। इनका अपना एक अखिल भारतीय संगठन और 'समाज ज्योति' नाम से पत्रिका भी है। राजवंशी अग्रवाल अपने को अग्रवाल समाज का अभिन्न अंग समझते हुए उनके जातीय एवं सामाजिक कार्यों में पूर्ण सहयोग देते हैं। पहले राजवंशियों के वैवाहिक सम्बंध अपनी ही बिरादरी में होते थे, किंतु अब जब संकीर्ण मान्यताएं समाप्त हो रही हैं, तो मारवाड़ी अग्रवालों के साथ इनके रोटी बेटी के सम्बन्ध भी होने लगे हैं।

अग्रहरि-अग्रहरि अग्रवालों का एक वर्ग है। इस वर्ग के लोग बिहार, वाराणसी, मध्यप्रदेश, भागलपुर, रायबरेली, लखनऊ, आरा, चम्पारन, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, सुल्तानपुर, इलाहाबाद, आजमगढ़, कानपुर, फतेहपुर, नेपाल आदि में मुख्य रूप से पाये जाते हैं।

इनमें अपनी व्युत्पत्ति के सम्बंध में विभिन्न मत हैं। कुछ का मत है कि अग्रोहा पर आक्रमण होने से ये अग्रोहा छोड़ कर यत्र-तत्र चले गए और इनका सम्बोधन अग्रोहा हरे, अग्रोहा हारे, अग्रहारे होता-होता अग्रहरि पड़ गया। ये अपना निकास अग्रोहा या आगरा से मानते हैं। कुछ अग्रहरि अपने को अग्रसेन के भाई शूरसेन की संतान मानते हैं। कुछ का मत है कि ये महाराजा अग्रसेन के पुत्र हरि की संतान होने से अग्रहरि कहलाये।

इनमें कश्यप गोत्र की प्रधानता पाई जाती है। इनके रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान अग्रवालों के समान हैं। ये शाकाहारी हैं एवं यज्ञोपवीत भी धारण करते हैं। इनमें से अनेक सिक्ख धर्म के अनुयायी हैं।

अग्रहरि वैश्यों की अपनी अखिल भारतीय शिरोमणि सभा है, जो लगभग 1908 से कार्यरत है। इनकी अग्रहरि वैश्य बंधु, अग्रहरि सेवक, अग्रहरि मित, अग्रहरिदूत, अग्रहरि समाज, अग्रहरि संदेश आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती हैं।

गिंदोडिया अग्रवाल-परिवार में शादी विवाह या मृत्युभोज के समय गिंदोड़ा बांटने की प्रथा के कारण इनका नाम गिंदोडिया अग्रवाल पड़ा। गिंदोड़ा चीनी का बना गोलाकार रोटी से कई गुणा बड़ा बलिश्त से छोटा खाद्य पदार्थ होता है। शुभकार्य के अवसर पर उन्हें बांटा जाता है। आज भी इनके परिवार में इस प्रथा का प्रचलन है।

गिंदोड़िया अपने को दिलवारिये नाम से भी पुकारते हैं। यह शब्द दिल्ली वाल का रुपांतर है। यह नाम पड़ने का कारण यह बताया जाता है कि जो मनुष्य दिल्ली के तख्त पर अपनी टांग रखकर राज्याधिकारी बने थे, वे दिल्ली के अग्रवालों में से ही थे। इसलिए दूर देशों में ये दिल्लीवारिये, दिल्ली वारिय, दिलवारे कहाये श्री ज्वालाप्रसाद अनिल के अनुसार विभिन्न स्थानों पर इन्हें हालके, गाटे, गुडाकू आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

कदीमी अग्रवाल-कदीमी का अर्थ है-पुराने स्थान पर रहने वाले। इनकी मान्यताा है कि ये ही शुद्ध अग्रवाल हैं। इनका कहना है कि इनके पूर्वज युद्ध में लड़ने गए और राज्य की व्यवस्था का भार दूसरों पर छोड़ गए। जब युद्ध से लौटे तो अन्य अग्रवाल वहां से जा चुके थे किंतु उनके पूर्वज वहीं बसे रहे। इसलिए ये कदीमी अग्रवाल कहलाए। यह वर्ग नौकरी तथा व्यवसाय में प्रवीण है इनमें शिक्षा का प्रसार अधिक है। ये अलीगढ़, खुर्जा, बुलंदशहर एवं उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से फैले हैं।

महमिये अग्रवाल-अग्रोहा उजड़ने के बाद जो लोग महम से उत्तर प्रदेश या अन्य स्थानों में जा बसे, वे महमिये अग्रवाल कहलाते हैं।

लोहिये अग्रवाल-लोहागढ़ (जिला रोहतक) के अग्रवाल लोहिये कहलाये।

जांगले अग्रवाल-भटिण्डा या समीपस्थ क्षेत्रों के अग्रवाल जांगलिये या जांगले कहे जाते हैं।

मथुरिया अग्रवाल-जो अग्रवाल मथुरा से अन्यत्र जा बसे, उन्हें मथुरिया अग्रवाल कहा जाता है।

मागधी अग्रवाल-मगध प्रदेश (बिहार) के डाल्टनगंज, पलामू, गया आदि जिलों में बसे अग्रवाल अपने को मागधी अग्रवाल कहते हैं। इनका अपना अखिल भारतीय संगठन भी हैं।

पंजाबी अग्रवाल-जींद, नाभा, पटियाला, जालंधर आदि पंजाब में बसे अग्रवाल पंजाबी अग्रवाल कहलाते हैं।

बागड़ी अग्रवाल-बागड़ प्रदेश में रहने वाले बागड़ी अग्रवाल कहलाये।

गुजराती अग्रवाल-जो अग्रोहा को छोड़ गुजरात की ओर गए, वे मालवा में आगर नामक स्थान को बसा कर रहने लगे। बाद में आगर को ही अपनी जन्मभूमि मानने लगे और गुजराती अग्रवाल के नाम से प्रसिद्ध हुए। मुम्बई और गुजरात में इनका बाहुल्य है। ये अपने को आगरवाला कहते हैं तथा वहीं के मूल निवासी मानते है।

व्यवसाय एवं उद्योग में दक्षता -

इस समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी व्यवसाय एवं उद्योग में दक्षता है। यह विशिष्टता उसे स्वभाव से ही रक्त में मिली है और उसके कारण देश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इस समाज के लोगों का विश्वास है कि उद्योग एवं व्यवसाय में लक्ष्मी का वास होता है और उद्योगी पुरूष को ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। अत: वे उद्योग एवं व्यवसाय द्वारा लक्ष्मी का अर्जन कर अपने लक्ष्मीपुत्र नाम की सार्थकता सिद्ध करते हैं। उनमें व्यापार के रूख को पहचानने तथा अवसर का लाभ उठाने की विशेष क्षमता है। इस समाज का छोटे से छोटा बच्चा भी व्यवसाय (धंधा) जमाने में कुशल एवं प्रबंधन में निपुण होता है। यह समाज कम मुनाफे में भी अधिक व्यापार कर लेता है। इसे पता होता है कि कहाँ "किरस" (बचत) निकाली जा सकती है और वे संसाधनों में बचत करके बिना मुनाफे के व्यापार में भी मुनाफा कमा लेते हैं। साधनों का अधिकतम उपयोग इस समाज की विशिष्टता है। कहा जाता है कि उनकी दुकान पर आया ग्राहक प्राय: खाली नहीं लौटता।

इसका कारण इनकी व्यापार में प्रामाणिकता और विश्वसनीयता तो है ही, किन्तु व्यवसाय कला में दक्षता भी है, मीठी बोली, मधुर व्यवहार, ग्राहक की नब्ज पहचानने की सही शक्ति इनकी विशेषता है।

हिसाब किताब में ये बड़े कुशल होते हैं। बड़े-बड़े गुणा-भाग, ब्याज का प्रतिकलन आदि ये अंगुलियों की सहायता से मिनटों में कर लेते है। पैसे-पैसे का हिसाब रखते हैं और इनकी दृष्टि बड़ी व्यापक होती है। ये आय के अनुपात में व्यय को कभी बढ़ने नहीं देते और सञ्चित राशि को बढ़ाने में विश्वास रखते हैं। इसलिए जहाँ सरकार द्वारा नियंत्रित एवं संचालित उद्योग समस्त सुविधाओं की प्राप्ति के उपरान्त भी लाखों-करोड़ों का घाटा देते हैं, वहां इस समाज द्वारा संचालित उद्योग-व्यवसाय भारी कर चुकाने के बाद भी लाभ की स्थिति में रह राष्ट्रीय हितों का संवर्द्धन करते हैं। वित्तीय कुशाग्रता असाधारण एवं अद्वितीय होने के कारण उन्हें प्राचीन काल से ही राज्य में महत्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया जाता रहा है और विशेषकर खजाने एवं रसद आपूर्ति के विभागों पर इनका नियंत्रण रहता आया है। कहावत प्रसिद्ध थी-"**और मंत्री सब कीजिए, एक कीजिए वाणिया।**" अर्थात् वित्तमंत्री का पद सदैव इस समाज के लोगों को ही सौंपा जाता था और लोगों का विश्वास था कि जब तक यह पद उनके पास रहेगा राज्यकोष भी भरा-पूरा रहेगा। इस समाज के युवा भी बड़े-बड़े उद्योगों एवं व्यवसाय के संचालन करने में सफल होते हैं।

साहस एवं जोखिम उठाने की प्रवृति

इस समाज की दूसरी विशेषता उनका अद्‌भुत पुरूषार्थ, साहस, हिम्मत, धैर्य व अध्यवसाय की भावना है। व्यापार में बड़े से बड़ा जोखिम उठाने की इनमें स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

उस जमाने में जबकि यातायात व संवादवाहन के साधन न थे, विमानों और जलयानों

की बात दूर, सफर के लिए रेलगाड़ियां तक न थीं, अधिकांश यात्रा पैदल या कहीं-कहीं ऊंटों या बैलगाड़ियों द्वारा की जाती थी, एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा में कई-कई महीने लग जाते थे, मार्ग असुरक्षित थे, रास्ते में आंधियों, बरसातों और लूओं का सामना करना पड़ता था, ये अग्रोहा या राजस्थान के वीरान क्षेत्रों से निकलकर देश में ही नहीं, विदेशों में भी अपने व्यापार-व्यवसाय की धाक जमाने में सफल हुए। इसके मूल में इनका उद्यम व साहस ही था।

अपने देश का मानचित्र देखते हैं तो आश्चर्य होता है कि कहां अग्रोहा और मारवाड़ का बियावान और कहां असम, मणिपुर, नागालैंड के दुर्गम्य क्षेत्र। उन क्षेत्रों की भाषा, बोलचाल, रहन-सहन, वातावरण से वे सर्वथा अपरिचित। जंगली और खूंखार नरभक्षी वन्य जातियां, जलवायु बिल्कुल विपरीत, कोसों तक पीने के लिए पानी नहीं, कहीं मरूस्थली इलाका, तो कहीं बर्फीला क्षेत्र। असम और ब्रह्मपुत्र के इलाके, दलदली भूमि मच्छर ही मच्छर, मलेरिया से शायद ही कोई व्यक्ति बचे। जंगली जानवरों का भय। माल को पीठ पर ढोने के अलावा अन्य कोई साधन नहीं सुविधा नहीं।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी इस समाज के साहसी, जांबाज हाथ में एक लोटा-डोरी लिए आगे बढ़ते ही गए। उन्होंने कभी पीछे मुड़कर देखना नहीं सीखा और जहाँ गए, वहां उद्योग व्यवसाय में अपने पाँव जमा लियें, जिस उद्योग व्यवसाय में हाथ डाला, सफलता उनकी चेरी बन गई। दुर्गम, वीरोन क्षेत्र, आबाद, सरसब्ज और व्यापार के केन्द्र बन गए। यह उनकी विपरीत परिस्थितियों से लोहा लेकर आगे बढने की जीजीविषा ही थी, जिसने यह संभव कर दिखाया।

सरलता, सादगी एवं मितव्ययता

इनकी तीसरी विशेषता सरलता, सादगी, एवं मितव्ययता है। इस समाज के लोग सच्चे अर्थों में लक्ष्मी की कद्र करते हैं। वे जानते हैं लक्ष्मी कितनी कठिनाई से प्राप्त होती है अत: उसी अनुपात से उसका व्यय करते हैं। बड़े-बड़े श्रेष्ठि भी धोती, अंगरखा जैसी सामान्य वेश-भूषा धारण करते हैं। एक सामान्य सी गद्दी, मसनद और तिजोरी के सहारे वे लाखों करोड़ों-का व्यवसाय कर लेते हैं। जीवन में किसी प्रकार का दिखावा और ऊपरी तड़क-भड़क नहीं रखते। एक-एक पैसे की बचत करते हैं।

किन्तु उनकी यह मितव्ययता, सरलता व सादगी कंजूसी नहीं। जहाँ पैसा-पैसा जोड़ेंगे, वहाँ सद्कार्यों के लिए हजारों-लाखों का दान सहज रूप में दे देंगे। वे धन का सही सदुपयोग कैसे किया जाय, जानते हैं।

प्राय: वे अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को सीमित रखते हैं तथा कम खर्च में ही अपना जीवन निर्वाह कर लेते हैं। इससे उनके पास पर्याप्त मात्रा में पूंजी हो जाती है। उसी पूंजी द्वारा व्यापार का विस्तार कर वे उसे कई गुणा बढ़ा लेते है और फिर उसका उपयोग धर्मशालाओं, मंदिरों, विद्यालयों एवं अन्य लोकोपयोगी कार्यों में कर जनता के धन को जनता तक पहुंचा देते हैं। इस प्रकार उनकी मितव्ययता राष्ट्र की आर्थिक प्रगति के साथ लोक और परलोक की निश्रेयस सिद्धि का साधन बनती है। वे जानते हैं कि धन की फिजूलखर्ची से भरे खजाने खाली हो जाते हैं, जबकि कण-कण बचत से रीते घड़े

भर जाते हैं। इसलिए पूंजी को अनावश्यक कार्यों में नष्ट करने की अपेक्षा उसे बढ़ाने तथा समाजोपयोगी कार्यों में लगाने की उनमें विशेष भावना मिलती है और यही विशेषता उनकी सफलता का मूलमंत्र है।

धार्मिक प्रवृत्ति

अग्रवाल समाज धर्म प्रधान समाज रहा है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं सनातन धर्म में इसकी दृढ़ आस्था रही है। इसीलिए उनके जीवन में सात्विकता, पवित्रता, सदाचार एवं नैतिकता की भावना के विशेष दर्शन होते हैं। इस समाज के लोग मांसाहार, मद्यपान, जीवहिंसा से दूर रहते हैं। धर्म के प्रचार प्रसार और सभी धार्मिक कार्यों में उनका योगदान रहता है। इसलिए प्रत्येक तीर्थ स्थान, धाम में उनके द्वारा निर्मित देवालय, धर्मशालाएं आदि मिल जाते हैं यहां तक कि दुर्गम पहाड़ी स्थानों में भी उनके द्वारा निर्मित विश्राम-स्थल मिल जाते हैं, जहां यात्रियों के लिए भोजन, ओढ़ने के वस्त्र, बर्तनादि की भी उपयुक्त सुविधा रहती है।

प्रत्येक अग्रवाल के घर में यज्ञ, धर्म, कर्म, पूजा, पाठ आदि का आयोजन होता रहता है। उनके सभी संस्कार धार्मिक विधि से सम्पन्न होते हैं। प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा, देवी-देवताओं की मूर्तियां आदि मिलती हैं। उनमें तुलसी, पीपल, अन्य वृक्षों, सूर्य, चन्द्रमादि ग्रहों की पूजा का भाव मिलता है। नागपंचमी के दिन नागों तथा दीपावली के दिन लक्ष्मी की पूजा करते हैं। यज्ञादि में दान-दक्षिणा देते हैं। ब्राह्मण-भोजन कराते हैं।

प्रत्येक व्यापारी द्वारा अपनी बहियों में शुभ-लाभ, श्री गणेशाय नमः, लक्ष्मीजी घणो देसी आदि धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही करूणा एवं प्राणिमात्र के प्रति दया भाव से चींटियों को दाना, पक्षियों को चुग्गा, भूखों को भोजन, आश्रयहीनों को आश्रय प्रदान करते हैं। अपने बच्चों के झुण्डले उतारने पैतृक स्थानों में जाते हैं। जप-तप-पूजा-व्रत-उपवासादि में उनकी विशेष श्रद्धा पाई जाती है।

इस समाज ने व्यापार को सदैव महालक्ष्मी की अर्चना के रूप में लिया है, अतः अपने ग्राहक को सदैव देवता के रुप में मान्यता देते है। पुराने जमाने में इसी कारण इस समाज के लोग चमड़े से बनी वस्तुओं, मद्य-विक्रय आदि का व्यापार नहीं करते थे। समाज में गरीब और अमीर का अंतर न बढ़ने पाये, इस अभिप्राय से उन्होंने एक ईंट-एक रुपैया के सिद्धांत का प्रचलन किया।

उनमें धार्मिक सहिष्णुता की भावना विशेष पाई जाती है। यहीं कारण है, कि अग्रवालों में सनातन धर्म के साथ-साथ जैन धर्म, सिक्ख धर्म, आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, रामस्नेही, ब्रह्मकुमारी, शैव, शाक्त सभी मतमतान्तरों के मानने वाले लोग मिल जाते हैं। वे धर्म को लेकर कभी झगड़ा नहीं करते और उनमें सर्वधर्म समभाव और सम्प्रदाय निरपेक्षता का साकार रूप देखने को मिलता है। वे सभी देवी-देवताओं को समान रूप से आदर की दृष्टि से देखते हैं और किसी भी धर्म, सम्प्रदाय के विरूद्ध उनमें विद्वेष की भावना नहीं पाई जाती। यदि यह कहा जाय कि भारतीय समाज में सच्चे अर्थों में सर्वधर्म समभाव रखने वाला यही एक मात्र समाज है, तो अनुचित न होगा।

लोकोपकार एवं दानशीलता की भावना

अग्रवाल समाज में लोकोपकार एवं दानशीलता की भावना मां की घूंटी के साथ ही मिलने लगती है। वे अपने धन का लोकोपकारी कार्यों में मुक्तहस्त से प्रयोग करते हैं। इसलिए उनके द्वारा निर्मित लोकोपकारी संस्थाओं, धर्मार्थ-औषधालयों, अस्पतालों, शोध-केन्द्रों, मातृ-सदनों, अनाथालयों, विधवाश्रमों आदि का बाहुल्य मिलता है।

उनकी आस्था रहती है कि **'दियो-लियो ही आड़ा आता है।'** अत: जिस धन को लोग संजोकर रखते हैं, उसे वे देखते-देखते दान में दे देते हैं। उनके इस दान और परोपकार का क्षेत्र विस्तृत है। अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ, नाना प्रकार की आपदाओं एवं राष्ट्र पर संकट की वेला में सहायता, नेत्र शिविरों का आयोजन, शरणार्थियों को आश्रय एवं कला का संरक्षण आदि उनकी प्रमुख प्रवृत्तियां हैं। वे अनुसंधान, शोध, चिकित्सा, शिक्षा, मानवकल्याण, खेल-कूद, ग्राम विकास, मंदिरों के जीर्णोद्धार आदि में भी सहयोग देते हैं। उनमें गांधी जी की सच्ची ट्रस्टीशिप भावना का दर्शन होता है।

प्रत्येक अग्रवाल दो पैसे पास में होने पर यही सोचता है कि मैं अपने जीवन में कोई न कोई चीज दान-धर्म के लिए बनाऊं । उन में स्वार्थ के साथ परमार्थ, व्यक्ति के साथ समाज एवं राष्ट्रसेवा का अद्‌भुत सामंजस्य मिलता है।

उनके दान एवं सेवाओं का क्षेत्र समय एवं काल की आवश्यकता के अनुरूप बदलता रहता है। एक समय था, जबकि इस समाज के दानी लोग-कुओं, तालाबों, बावड़ियों, मंदिरों प्याऊओं आदि के निर्माण में विशेष रूचि लेते थे किन्तु अब शिक्षा के प्रचार, अनुसंधान, कलाओं के विकास, चिकित्सा, निर्धन एवं जरूरतमंद लोगों की सहायता, ग्राम विकास आदि पर विशेष बल दिया जाता है। इस समाज के लोगों ने नए-नए चिकित्सा शोध संस्थानों, अनुसंधान केंद्रों तथा ग्रामीण विकास प्रकल्पों की स्थापना करके आदर्श प्रस्तुत किए है। इस सम्बन्ध में भोडूका ट्रस्ट द्वारा करोडों की लागत से ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों का उल्लेख पर्याप्त होगा। अग्रवाल समाज के दान से अनेक बड़े-बड़े ट्रस्ट बने हुए हैं, जो प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ो रूपयों का विनियोजन लोकहितकारी कार्यों में करते हैं। अधिकांश अग्रवाल अपनी आय का एक निश्चित अंश धर्मादाखाते में रखते और उसका उपयोग भी दान-धर्म के कार्यों में करते हैं।

अग्रवाल समाज के दान और लोकोपकार-भावना की विशेषता यह है कि वह बिना जाति, धर्म भेद के किया जाता है इस समाज द्वारा निर्मित संस्थाओं के द्वार सभी जातियों, वर्गों, धर्मों के लोगों के लिए खुले रहते हैं। इसीलिए इस समाज की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रपिता गांधी ने कहा था कि यह अग्र समाज जहाँ कमाना जानता है, वहाँ उदारता से दान देना भी जानता है।

भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार, गौ-सेवा, धार्मिक एवं नैतिक साहित्य की अभिवृद्धि आदि उनके दान के प्रमुख बिन्दु रहे हैं। उनकी सेवाओं का प्रसार मानव मात्र से लेकर पशु-पक्षियों, चर-अचर, सृष्टि के समस्त प्राणियों तक है। उसमें सामाजिक दायित्व की विशेष भावना है।

इसके मूल में दु:ख का भार बंटाने और सुख का अंश समाज के लाभार्थ वितरण करने की भावना ही है।

समरसता एवं सहिष्णुता

अग्रवाल स्वभाव से ही सहिष्णु होते हैं। स्नेह ओर भ्रातृत्व की भावना इस समाज के लोगों में विशेष पाई जाती है। सभी धर्मों, जातियों, वर्णों के प्रति आदर रखते है। इनमें जातीय कट्टरता का अभाव होता है। जाति-पांति, धर्म, सम्प्रदाय आदि के आधार पर पृथक राज्य अथवा विशेषाधिकारों की मांग करना इनके स्वभाव में नहीं है। ये अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्राय: नारेबाजी, आंदोलन, तोड़फोड़ आदि का सहारा नहीं लेते। सरकारी सेवाओं, चुनाव आदि में भी जातीय विद्वेष से परे रहते हैं। अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्यपालन पर बल एवं शान्तचित् से उद्योग व्यवसाय में लगे रहना इनकी विशेषता है।

वे जिस भी प्रांत या स्थान में जाते हैं, वहां के निवासियों से घुल-मिल जाते हैं। वहां की भाषा, रहन-सहन आदि को अपनाकर भी अपनी मातृभूमि, सभ्यता, संस्कृति से जुड़े रहते हैं। जिस स्थान पर रहते हैं, वहां के सार्वजनिक एवं लोकहितकारी कार्यों में भाग लेना तथा वहां के निवासियों से तादात्म्य स्थापित कर लेना इनकी विशेषता है। उनका दृष्टिकोण सदैव उदार, व्यापक और राष्ट्रीयता का पोषक होता है। इस देश में जबकि अधिकांश जातीय एवं सामाजिक संगठन अपने समाज के हितों की बात करते हैं, अग्रवाल समाज हमेशा राष्ट्रीय एवं सामाजिक हितों को प्रमुखता प्रदान करता है।

यही कारण है। कि इस समाज के प्रसार से राष्ट्रीय अखंडता की भावना को बल मिला और उसके सर्वव्यापी प्रसार से यह भावना मजबूत हुई।

साख का ध्यान

अग्रवाल समाज अपनी व्यापारिक प्रामाणिकता के लिए प्रसिद्ध है। ये लाखों-करोड़ों के धंधे हाथ के संकेत मात्र से ही कर लेते हैं, किन्तु मुकरने की नोबत नहीं आती। अग्रवालों की गद्दियों पर लाखों-करोड़ों का व्यापार बिना लिखत-पढ़त जुबान के आधार पर हो जाता था। भुगतान के सम्बन्ध में उनकी विशेष साख है। इसलिए माना जाता है कि मारवाड़ी अग्रवाल लिया ऋण चुकाते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जबकि कर्जदाता को पता न होने पर भी इस समाज के लोगों ने चलकर उसका ऋण चुकाया। भुगतान के सम्बन्ध में ईमानदारी का स्वैच्छिक पालन करने वाली यह भारत की प्रथम जाति है। इसलिए इस समाज की हुंडियों की साख देश-विदेश में समान रूप से है। उनकी व्यापारिक प्रतिष्ठा इतनी अधिक थी कि ये एक छोटी सी हाथ की लिखी पुर्जी-मात्र पर लाखों-करोड़ों की बीमा राशि का भुगतान कर देते थे। प्राचीन समय में वे बीमा कराने वाले को एक पंक्ति लिख कर देते थे-'ताती-सिली, चोरी-जारी का बीमा' और इसी पर भारी से भारी रकम का भुगतान हो जाता था। वे व्यापार में घाटा होने पर भी कभी नीबत में खराबी नहीं लाते और गहने, मकान, दुकान सब कुछ बेचकर भी अपनी व्यापारिक साख बनाए रखते है, क्योंकि उनका विश्वास है- 'गई साख बची राख।

भारत के पुराने इतिहास से हमें पता चलता है कि भारत की ईमानदारी की साख सम्पूर्ण विश्व में थी और भारत का विश्व के प्राय: सभी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध था। यह व्यापार वैश्य समाज के ही हाथ में था। इस समाज ने अपनी साख के बल पर

न केवल एशिया अपितु यूरोप और अफ्रीका के देशों के साथ भी अपने व्यापार के सम्बन्ध बढ़ाए हुए थे। यूरोपीय देशों के इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं कि भारत का ईसा के जन्म से 100 वर्ष पूर्व व्यापारिक दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान था। औद्योगिक दृष्टि से भारत इतना समृद्ध था कि यहां से विश्व के विभिन्न देशों को वस्तुओं का निर्यात होता था और विश्व के देश इतने पिछड़े हुए थे कि उनके पास बदले में देने के लिए कुछ न था, वे केवल सामान के बदले सोना-चांदी ही दे सकते थे। इसलिए भारत देश सोने की चिड़िया हो गया। यह सब इस समाज की प्रतिभा तथा श्रमशक्ति का प्रभाव था।

अग्रवाल समाज में बुद्धि, धन व दान तीनों का अद्‌भुत समन्वय हुआ है। वणिक बुद्धि होने से वह कभी किसी क्षेत्र में मात नहीं खाता और जिस क्षेत्र में भी प्रवेश करता है, अपनी प्रतिभा, कौशल, ईमानदारी और वफादारी से विशिष्ट स्थान बना लेता है। आज अग्रवाल इंजीनियर हैं, डाक्टर हैं, उद्योगपति हैं, व्यापारी हैं, वकील हैं, मजिस्ट्रेट हैं, न्यायाधीश हैं, विधायक, सांसद और मंत्री हैं, जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहां उनका प्रवेश न हो और सभी क्षेत्रों में समान रूप से उनकी अग्रणी भूमिका है। एक समय था, जबकि राजनीति में भी उनका वर्चस्व था किन्तु ज्यों-ज्यों राजनीति में स्वार्थ परता, भ्रष्टाचार, अनैतिकता का बोलबाला होता गया, यह समाज भी उससे अपने हाथ खेंचता गया, परिणामस्वरूप राजनीति के क्षेत्र में कुछ उपेक्षित दृष्टिगत होता है किन्तु इस दृष्टि से उसका अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है और लाला लाजपतराय, जमनालाल बजाज, राममनोहर लोहिया, शिवप्रसाद गुप्त जैसे असंख्य तपोपूत, बलिदानी, खरे नेताओं के कारण उसका भाल आज भी उन्नत है और हमेशा उन्नत ही रहेगा।

श्री रामेश्वरदास गुप्त ने इस महान जाति के विकास के बारे में ठीक ही कहा है- "लौटा डोरी, एक अंगोछा कंधे पर डालकर वह अपने गांव से निकल गया और चलते-चलते न जाने कहां जा पहुंचा, जहां भी पहुंचा, वह वहां का हो गया। यदि आसाम पहुंचा तो वहां धान कूटने से लेकर चाय के बगीचों में मजदूरी करने तक का धंधा उसने अपना लिया और मजदूरी करते-करते एक दिन चाय बागान का स्वामी बन गया। उसने धान की छानस खा-खाकर गुजारा किया और बढ़िया-बढ़िया चावल समाज को समर्पित कर दिया। अपने अथक परिश्रम के कारण एक दिन वह सेठ और साहूकार कहलाने लगा परन्तु उसने अपना कर्म नहीं छोड़ा वह निरन्तर कर्मयोग में लगा रहा। मोटा-खाना, मोटा पहनना तथा उच्च विचार रखते हुए निरन्तर सादा जीवन व्यतीत करना उसकी विशेषता रही है और आज भी है।

बत्ती के समान स्वयं जलकर दूसरों को खुशबू प्रदान करना कोई समाज सीखना चाहे तो इस समाज से सीख सकता है। यह समाज सच्चे अर्थों में समाज के धन का ट्रस्टी है। ज्योंही इस समाज का कोई व्यक्ति कुछ कमा लेता है, वह ट्रस्टी की भूमिका निभाना अपना कर्तव्य समझने लगता है। परहित की भावना इसमें कूट-कूट कर भरी है। इसलिए इस समाज में जो जितना बड़ा सेठ है, वह उतना ही बड़ा नगर सेवक भी है। अपने ऊपर नाम मात्र का व्यय कर सम्पत्ति का संरक्षण ओर सर्वजनहिताय उसका उपयोग-यह कार्य अग्रवाल समाज हजारों वर्षों से करता आया है और आज भी इस क्षेत्र में उसकी अग्रगामिता बरकरार है।

चतुर्थ खण्ड

अग्रवाल समाज की राष्ट्र सेवाएं

अग्रवाल समाज का राष्ट्र निर्माण में योगदान

राष्ट्रीय उत्थान में वैश्य अग्रवालों का योगदान इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है। कुछ जातियां अतीत का गायन कर जीवित रहती है, कुछ का वर्तमान गौरवपूर्ण होता है किन्तु अग्रवाल एक ऐसा समुदाय है, जिसने अपने कठोर परिश्रम, उच्च उद्दात आदर्शों, मानवीय सेवाभाव एवं कर्तव्यनिष्ठा द्वारा अतीत के साथ वर्तमान में भी सुनहले गौरवपूर्ण पृष्ठ अंकित किए हैं।

जो हर क्षेत्र में आगे रहे, सब का नेतृत्व करे, वह होता है-अग्रवाल! इस समाज ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, शोध, चिकित्सा सभी क्षेत्रों में अग्रणी रह कर अपने नाम की सार्थकता प्रकट की है और समाज, धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्र के मानबिन्दुओं के संरक्षण में सदैव सन्नद्ध एवं तत्पर रहकर इस अग्रगामिता को बनाये रखा है। राष्ट्र निर्माण में उसका योगदान इतना बहुमुखी, निर्विवाद एवं सर्वमान्य है कि इतिहास का कोई कोना उससे अछूता नहीं रहा है।

अग्रवाल-वैश्य समुदाय का प्रमुख घटक है। कृषि, गौरक्षा, वाणिज्य इस समाज के प्रधान कर्म रहे हैं। कृषि से अन्न, उद्योग से विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन, व्यापार द्वारा उचित मूल्य में उनका सामान्य जन तक वितरण एवं जन आवश्यकताओं की पूर्ति तथा गौ सेवा द्वारा सबके स्वास्थ्य का संवर्द्धन इस समाज के आदर्श रहे हैं।

इतिहास साक्षी है कि जब तक वैश्य अग्रवालों के हाथ में कृषि, गौरक्षा और वाणिज्य का कार्य रहा, भारत सोने की चिड़िया कहलाया। यहां की समृद्धि और वैभव ने दुनियाभर के देशों को ललचाया। यहां सदैव अन्न के भंडार भरे रहते और दूध दही की नदियां बहतीं। घर पर आने वाले पथिकों को यहां जल के स्थान पर दूध पीने को मिलता। वे अपने समय के सर्वाधिक दानी, सदाव्रती और धर्मनिष्ठ समझे जाते और उनके धन से न जाने समाज के कितने वर्गों का हित-संरक्षण होता। उन द्वारा स्थापित विद्यालय, महाविद्यालय, ज्ञान और संस्कृति के केन्द्र थे और विश्व भर के लोग यहां, ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन करना गौरव का विषय समझते।

इस समाज के प्रवर्त्तक अग्रोहा राज्य के संस्थापक महाराजा अग्रसेन हुए, जिन्होंने 'एक रुपया, एक ईंट' जैसी आदर्श पद्धति का प्रचलन कर समाजवाद का सही रूप और गरीबी हटाओ का नारा सार्थक कर दिखाया था। उनका राज्य सच्चे अर्थों में समाजवाद, सहकारिता, भूदान, सम्पत्तिदान, एकतंत्र में लोकतंत्र, निर्धनता उन्मूलन, अन्त्योदय, सर्वोदय,

स्वावलम्बन जैसी प्रवृत्तियों का साकार प्रतीक था। उन्होंने 18 गणों की सम्मति से राज्यभार चला एकतंत्र में लोकतंत्र की नींव रखी। उन्होंने यद्यपि न समाजवाद का नारा दिया और न ही गरीबी हटाओ का ढोल पीटा, फिर भी उन्होंने अपने राज्य में ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया, जिसके आगे मार्क्स, एंजिल्स और समस्त समाजवादियों की कल्पनाएं और विचारधाराएं बौनी दिखाई पड़ती हैं। आज हम जिन स्वतंत्रता, समानता, भाईचारे, परस्पर सहयोग, स्वावलम्बन, स्वदेशीपन की भावना, सर्वधर्मसमभाव, परिश्रम, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा आदि आदर्शों की बात करते हैं, वे सब प्रेरणाबिंदु महाराज अग्रसेन के राज्य में 5100 पूर्ष पूर्व विद्यमान थे। खेद है कि मानसिक दासता के कारण हम भारत के निवासी इस महान मनीषी की देन और विचारधारा का समुचित मूल्यांकन नहीं कर पाए, अन्यथा विश्व के विचारकों में महाराजा अग्रसेन का स्थान सर्वोपरि होता और सम्पूर्ण भारत इस महान मनीषी पर गौरव अनुभव करता।

इतिहास का वैदिक काल रहा हो, चाहे महाभारत काल, बौद्ध काल रहा हो या गुप्त काल, इतिहास के प्रारम्भ से लेकर सभी कालों में हम इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका पाते हैं। इतिहास का मध्यकाल तो इसके गौरवपूर्ण कार्यों की गाथा है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहां इसका प्रवेश न हो अथवा जो अग्र समाज के योगदान से गौरवान्वित न हुआ हो। अग्रवाल समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के प्रारम्भ में हम इसका विवेचन कर चुके हैं। अतः उसकी पुनरावृत्ति उचित न होगी। अतः यहां हम इस समाज की वर्तमान उपलब्धियों एवं देन की ही विशेष रूप से चर्चा करेंगे।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और अग्र-समाज

1857 की क्रान्ति अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। स्वतंत्रता के इस प्रथम संग्राम में अग्रवालों ने तन-मन-धन से आहूतियां दी। बहादुरशाह ने जब अंग्रेजी सेना के विरुद्ध विद्रोह किया तो सैनिक जुटाने के लिए सेठ रामजीदास अग्रवाल गुड़वालों ने धन और तलवार दोनों से सहायता की। बहादुरशाह के मांगने पर उन्होंने दो करोड़ रुपये दिये। इस धन के समाप्त होने पर दूसरी बार उन्होंने चार करोड़ और तीसरी बार कई करोड़ रुपये दिये। विद्रोह में सहायता के आरोप में आपको गिरफ्तार कर मुकद्दमा चलाया गया और फिर फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया तथा उनका अरबों रूपयों का खजाना लूट लिया गया। श्री राजाराम गुड़वालों ने भी तन-मन-धन से क्रांतिकारियों की सहायता की और उन्हें भी क्रांतिकारियों के साथ फांसी दे दी गई।

इसी स्वातंत्र्य समर में डासना (गाजियाबाद) के लाला मटोलचंद अग्रवाल ने बहादुरशाह को अपना सम्पूर्ण सोना और धन प्रस्तुत करते हुए कहा था कि- 'यह सम्पूर्ण दान देश की स्वाधीनता के लिए है। इसे ऋण न माना जाये।' इस धन द्वारा ही बादशाह ने अंग्रेजों से युद्ध कर रही भारतीय सेना को बकाया वेतन चुकाया था। उन्होंने बादशाह की सहायतार्थ सोने की गिन्नियों से भरे छकड़े पहुंचाये। उन्हें भी कठोर यातनाएं दी गई।

तांत्या टोपे को जब आर्थिक सहायता की जरूरत हुई, तब सीकर के सेठ रामप्रकाश अग्रवाल ने लाखों रुपये नकद तथा अपने आभूषण सहायतार्थ प्रदान कर दिये थे। श्री सेवाराम मोर ने सितारा और महाबालेश्वर के कैदियों को छुड़ाने की कोशिश की तो अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ 8 सितम्बर 1857 को फांसी पर लटका दिया।

इस प्रथम स्वातंत्र्य समर में मेरठ मंडल के ग्राम धौलाना के 14 देश भक्तों को विद्रोह के आरोप में पकड़ कर फांसी लटकाया गया। इनमें से एक लाला झनकूमल सिंघल भी थे। उस समय अंग्रेज अधिकारी ने उनसे कहा था- 'लाला तुम इन हत्यारों के जाल में कैसे फंस गए?' तब उन्होने तपाक से उत्तर दिया था- 'साहब! हमारे पूर्वज भामाशाह ने महाराणा प्रताप को जिस तरह मुगलों के विरुद्ध आजादी के लड़ाई में सहयोग दिया था, उसी तरह मेरा भी कर्त्तव्य है कि मैं अपने देश को आजाद कराने के लिए इस संघर्ष में साथ दूं, यह सुन कर गोरा अधिकारी क्रोध से पागल हो उठा था और उसने तमतमाते हुए कहा था- 'सबसे पहले इस बनिये के गले में फंदा डाला जाए और हजारों आतंकित ग्रामीणों की उपस्थिति में लाला झनकूमल हंसते-हंसते फांसी पर झूल गए। इस घटना को प्रकाश में लाने का श्रेय सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल पिलखुआ वालों को है।

इसी प्रकार हांसी निवासी लाला हुकमचंद अग्रवाल कानूनगो को बहादुरशाह जफर की मदद के आरोप में 19 जनवरी 1858 को उनके मकान के सामने ही फांसी दे दी गई। उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए उनका शव भंगियों द्वारा दफनाया गया। उनके भतीजे फकीरचंद को भी पकड़ कर फांसी के फंदे पर लटका दिया गया।

पसौंडा (गाजियाबाद) के लाला मल्लूमल गोयल के परिवार ने 1857 के स्वातन्त्र्य समर में अंग्रेजों से डटकर टक्कर ली थी। अंग्रजों ने उनकी हवेली को ढाकर मिट्टी में मिला दिया था। बाद में वे गाजियाबाद जा बसे। उनके वंश के ला० मनोहरलाल गोयल तथा हीरालाल गोयल ने भी स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

पंद्रह वर्षीय सेठ मोहनलाल पित्ती ने नाना साहब पेशवा के भतीजे रावसाहब को हैदराबाद के नर्वदागिरी मठ में महात्मा के रूप में ठहराया और हजारों रुपयों की सहायता की। अंग्रेजों को इसकी सूचना मिलने पर उन्होंने श्री पित्ती पर 75000/- रुपये जुर्माना किया। उनके मित्र सेठ पूर्णमल राव साहब के लिए भोजन भेजते थे। अंग्रेजों ने उन पर भी 10,000/- जुर्माना किया। हैदराबाद के राजस्थानी अग्रवालों ने इस अत्याचार का बदला लेने की योजना बनाई। सेठ जय गोपालदास की हवेली की छत से हैदराबाद रेजीडेंसी पर आक्रमण किया गया। इस अपराध के कारण जयगोपालदास के पूरे परिवार को कत्ल कर दिया गया था, पर इससे भी उनका मनोबल टूटा नहीं।

इसी प्रकार लाला अमीचन्द, सेठ नाढोमल गुड़वाले-आदि अनेकानेक अग्रवालों ने इस स्वातंज्य समर में तन-मन-धन की आहूति दी किन्तु यह स्वतंत्रता संग्राम रुका नहीं, इसकी चिनगारियां भड़कती रहीं।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। कांग्रेस ने अंग्रेजी सरकार से अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए याचना की किन्तु उनकी प्रार्थना को अनसुना कर दिया गया। उस समय 1906 में इस समाज के नरकेशरी लाला लाजपत राय ने गर्जना करते हुए कहा था कि-शिकायतें दूर करने और रियायतें प्राप्त करने के लिए बीस वर्षों से भी अधिक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप उन्हें रोटी के स्थान पर पत्थर ही प्राप्त हुए हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम यह सिद्ध कर दें कि हम भिखारी नहीं हैं। उन्होंने भीख नहीं, अधिकारों की मांग की। वे लाल बाल पाल की सुप्रसिद्ध त्रयी में से एक थे, जिन्होंने

स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 1928 में साईमन कमीशन के भारत में आगमन पर उन्होंने लाहौर में उसका विरोध किया और लाठियों के प्रहार से घायल हो गए। उन्होंने उस समय घोषणा की थी-'मेरे शरीर पर किया गया लाठी का एक-एक प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के ताबुत में अंतिम कील सिद्ध होगा।' इतिहास साक्षी है कि उनकी यह भविष्यवाणी अक्षरक्ष: सही सिद्ध हुई। अंग्रेजों के विरुद्ध यह विद्रोह तेज होता गया। बंगाल में इस क्रांति की विशेष लपटें फूटीं। अनेक अग्रवालों ने स्वयं इस क्रान्ति में भाग लिया और क्रांतिकारियों की सहायता की। कलकत्ता के सेठ बसंतलाल मुरारका ने शरदचंद्र को देशहित के लिए एक लाख ग्यारह हजार रुपये भेंट किये। कलकत्ता में उसी समय शस्त्र डकैती कांड हुआ, जो रोडा शस्त्र डकैती काण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें क्रांतिकारियों ने विदेशों से आए सरकारी कारतूसों और राईफलों को पारकर क्रांतिकारियों के पास पहुंचा दिया था। इस सशस्त्र डकैती काण्ड में हनुमानप्रसाद पोद्दार, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, ज्वालाप्रसाद कानोडिया, फूलचंद चौधरी तथा ओंकारमल सर्राफ को राजद्रोह के अपराध में बंदी बना लिया गया और उन्हें नजरबंद रखा गया।

दिल्ली में भी क्रांतिकारियों की हर प्रकार की मदद दी गई। 1914 में जब लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया तो उसमें मास्टर अमीचंद और लाला हनुमंत सहाय की महत्वपूर्ण भूमिका थी। मास्टर अमीचंद की फांसी की सजा हुई और लाल हनुमंत सहाय को काले पानी तथा आजीवन कारावास की सजा मिली। शहीद गुरुदासराम अग्रवाल, जीरा (पंजाब) को लाला लाजपतराय पर हुए निर्मम व कायरतापूर्ण हमले ने झकझोर दिया था। 31 अक्टूबर 1930 को जबकि पुलिस अधिकारी जेल का निरीक्षण कर रहे थे, आपने अपने साथियों श्री गुरुमुखसिंह, पूर्णसिंह, हंसराज, लालचंद आदि के साथ उन पर बम फेंका और उसके आरोप में इन क्रांतिकारियों को 3-3 वर्ष की जेल की सजा मिली। जेल में शारीरिक अत्याचार का विरोध करने और अमानवीय व्यवहार के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

जलियां वाला कांड-13 अप्रेल 1919 को अमृतसर में जलियांवाला बाग कांड हुआ। इस गोलीकांड में निरीह लोगों पर मशीनगन से गोलियां चलाई गई। इन गोलियों में अनेक अग्र/वैश्य वीर भी शहीद हुए, जिनमें शहीद दौलतराम, चेतराम आदि का नाम उल्लेखनीय है। असंख्य अग्रवाल युवकों ने इस अत्याचार का विरोध किया। कलकत्ता के बड़ा बाजार में मारवाड़ी अग्रवालों ने विशाल सभा की। लाला बाबूराम गर्ग ने पुलिस अधीक्षक पद से त्याग पत्र दे दिया।

अंतत: महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम चला। महात्मा गांधी वैश्य समुदाय की ही महान विभूति थे। जैसा कि उनकी पौत्री सुमित्रा कुलकर्णी ने कहा है कि वे मूलत: अग्रवंशी ही थे, जिनकी एक शाखा अग्रोहा पर सतत आक्रमणों से परेशान हो गुजरात में जाकर बस गई थी। उनके नेतृत्व में सभी दलों, धर्मों एव जातियों के लोगों ने एकजुट हो आजादी की लड़ाई लड़ी।

सेठ जमनालाल बजाज और गांधीजी का आंदोलन-महात्मा गांधी ने वर्धा (सेवाग्राम) को अपनी कर्मभूमि बनाया और वहीं से उन्होंने आजादी के आंदोलन की अधिकांश गतिविधियों का संचालन किया। इस कारण सेवाग्राम उस समय परतंत्र भारत

की दूसरी राजधानी बन गया था। यह सेवाग्राम अग्रवंशी जमनालाल बजाज की ही कर्मभूमि थी। सरदार वल्लभभाई पटेल चाहते थे कि गांधी जी साबरमती में रहकर आंदोलन का संचालन करें किन्तु उनकी नाराजगी को सह करके भी गांधीजी ने सेवाग्राम को अपनी कर्मभूमि बनाया क्योंकि वे जानते थे कि राष्ट्रीय आंदोलन के संचालन के लिए जिन साधनों की जरूरत होगी, उनकी पूर्ति सेठ जमनालाल बजाज जैसे श्रेष्ठियों द्वारा ही संभव है। श्री जमनालाल बजाज ने न केवल गांधीजी की समस्त योजनाओं के क्रियान्वयन में सहायता दी अपितु अपनी थैलियों के मुंह राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के लिए खोल दिए। उन्होंने लाखों रुपये तो स्वयं दिए ही, अपने प्रभाव से करोड़ों रुपये एकत्र किए। वे 1920 से लेकर अपनी मृत्युपर्यन्त 1942 तक कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे और इस अवधि में उन्होंने कांग्रेस को कभी धन का अभाव न होने दिया। अपनी सम्पूर्ण सम्पति राष्ट्र को अर्पित कर भामाशाह का आदर्श प्रस्तत किया।

अंग्रेजी सरकार भी इस तथ्य को भली भांति जानती थी कि आंदोलन के संचालन में मारवाड़ी अग्रवाल समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए 1930 में एक अंग्रेज अधिकारी ए.एच. गजनवी ने वायसराय के प्रतिनिधि कनिंघम को लिखा था कि यदि बंगाल में मारवाड़ी समाज को आंदोलन से अलग कर दिया जाए तो वहां 90% आंदोलन स्वयं समाप्त हो सकता हैं।

दिसम्बर 1920 के नागपुर अधिवेशन में तिलक स्वराज्य कोष की स्थापना का निश्चय हुआ और एक करोड़ रुपये एकत्र करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस स्वराज्य कोष में जमनालाल बजाज और आनन्दीलाल पोद्दार ने दो-दो लाख रुपये दिए। रामकृष्ण डालमिया, केशोराम पोद्दार और अन्य अनेक अग्र बंधुओं ने अपनी थैलियों के मुख खोल दिए। रामकृष्ण डालमिया ने इस कोष एवं अन्य आंदोलनों में 1945 से पूर्व अकेले ही करोड़ों रुपये दे दिए थे। अनेक कांग्रेसी नेताओं को उनसे पांच सौ से एक हजार रुपये प्रतिमाह की आर्थिक सहायता प्राप्त होती थी। सुभाषचंद्र बोस को निजी व्यय के लिए 500/- रुपये प्रतिमाह वे वर्षों तक देते रहे। बलदेवदास दूदवा वालों ने मालवीयजी को दो बार में तीन लाख रुपये दिए। राष्ट्रीय स्तर के नेताओं- डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, सरदार वल्लभभाई पटेल, अब्दुल गफ्फारखां, राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्द्धन आदि कोई नेता ऐसा नहीं है, जिसने किसी न किसी रूप में जमनालाल बजाज से आर्थिक सहयोग न लिया हो। मोटे रूप से केवल मारवाड़ी अग्रवालों ने राष्ट्रीय आंदोलन में दस करोड़ रुपये से अधिक की सहायता की थी।

क्रांतिकारी आंदोलन-महात्मा गांधी एवं अन्य कांग्रेसी नेता प्राय: अग्रवालों के ही यहां ठहरते थे। गांधीजी जब भी दिल्ली आते थे, वे प्राय: लक्ष्मीनारायण गाडोदिया के यहां ठहरते। इसी प्रकार बनारस में बाबू-शिवप्रसाद गुप्त और बंबई में बृजलाल रूंगटा, कलकत्ता में खेतान हाउस, वर्धा में बजाज भवन नेताओं की आश्रयस्थली थे। क्रांतिकारियों को छिपने के लिए स्थान और उन्हें अस्त्र-शस्त्र खरीदने के लिए धन की सहायता भी प्राय: मारवाड़ी अग्रवालों द्वारा की जाती थी। चन्द्रशेखर आजाद मानपुर के रामचंद्र मुसद्दी के यहां 1930 में नौ माह रहे। इसी प्रकार आगरा में वासुदेव गुप्त एवं दिल्ली में

लाला हनुमंतसहाय का भवन क्रांतिकारियों के लिए सुरक्षित स्थली बने हुए थे। लाला हनुमंतसहाय का भवन बमों का भंडारगृह समझा जाता था। 1905 से लेकर 1917 तक अग्रवाल नवयुवकों ने क्रांतिकारियों की हर तरह से मदद की। रंगून में नेताजी सुभाषचंद्र बोस जिस घर में रहते थे, वह बागला परिवार द्वारा भेंट किया हुआ था। कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में जब सुभाष बोस रूड़मल गोयनका के पास आर्थिक सहयोग के लिए गए तो उन्होंने खाली चैक-बुक ही उनके सामने रख दी थी। कलकत्ता का खेतान घराना भी नेताजी सुभाष बोस के काफी करीब था। सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी अरविंद घोष को भी मारवाड़ी अग्रवाल समाज से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई। रासबिहारी बोस और अन्य क्रांतिकारी भी मारवाड़ी अग्रवालों के घरों, दुकानों या गोदामों में रहे थे। श्रीनिवास बालकिशन पोद्दार का घर क्रांतिकारियों का कार्यालय बन गया था। सरदार भगतसिंह, सुखदेव तथा अन्य क्रांतिकारियों को भी इस समाज से आर्थिक सहयोग मिला।

स्वदेशी आंदोलन-जब जब कांग्रेस ने किसी आंदोलन को चलाया, इस समाज ने उसे पूरा सहयोग प्रदान किया। 1921 में असहयोग आंदोलन चलाए जाने पर जमनालाल बजाज ने रायबहादुर की उपाधि अंग्रेज सरकार को लौटा दी और अग्रवालों ने गाँव-गाँव, शहर-शहर में राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। शिवप्रसाद गुप्त ने काशी विद्यापीठ की स्थापना की, जिससे अध्ययन कर लालबहादुर शास्त्री एवं अन्य अनेक राष्ट्र भक्त नेता निकले।

सामान्यत: व्यापारी समाज के लिए राज्य (शासन) का विरोध करना कठिन होता है, किन्तु इस समुदाय के हजारों लोगों ने न केवल आंदोलन को आर्थिक सहायता प्रदान की अपितु स्वयं आंदोलन में खुल कर भाग भी लिया। जबरदस्त हानि सह कर विदेशी बहिष्कार आंदोलन को सफल बनाया। राष्ट्रहित के लिए अपने व्यावसायिक हितों की तिलाञ्जलि का यह महान आदर्श था। गांधी जी के आह्वान पर व्यापारियों ने करोड़ों रुपयों का कपड़ा जला डाला या बांट दिया। सीताराम सेक्सरिया, रामेश्वर अग्रवाल एवं अन्य कई अग्रविभूतियों ने खादी एवं स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार-प्रसार के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। अग्रवाल महिलाओं-पुरुषों ने धरने दिए, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और अपने आभूषण आंदोलनकारियों को दे दिए। बजाज परिवार में विदेशी वस्त्रों की होली कई दिन तक जलती रही।

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन-8 अगस्त 1942 को मुम्बई के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक मैदान से वैश्य समुदाय की एक महान विभूति और सम्पूर्ण भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में "भारत छोड़ो आंदोलन" का सूत्रपात हुआ। करो या मरो की भावना से अनुप्रेरित इस आन्दोलन में अग्रवाल समाज के यशस्वी वीरों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और असंख्य कुर्बानियां दीं।

मुम्बई के ऐतिहासिक मैदान में अगस्त क्रान्ति की घोषणा होते ही सम्पूर्ण देश में फैले अग्रवाल समाज ने क्रान्ति का बिगुल बजा दिया, अपने महान नेताओं के नेतृत्व में गिरफ्तारियां दीं, जेल गए, यातनाएं सही, जुलूस और सभाओं का नेतृत्व किया। क्रान्तिकारियों को आन्दोलन के लिए आर्थिक सहायता जुटाई, उन्हें अपने आवास स्थानों में आश्रय दिया, अखबार निकाले, पर्चे बांटे, गुप्त रूप से रेडियो का संचालन किया और आन्दोलन को सफल बनाने के जितने भी उपाय हो सकते थे, उन सबका अवलम्बन करते हुए इस आन्दोलन को सफल बनाने में अपनी पूरी भागीदारी निभाई।

जब इस आन्दोलन की चर्चा आती है तो हमें कृतज्ञतापूर्वक डॉ० राममनोहर लोहिया के महान कर्तृत्व को स्मरण करना होगा। अगस्त क्रान्ति की घोषणा होते ही जब समस्त प्रसिद्ध नेताओं को बन्दी बना जेल में डाल दिया गया तो आप ही एकमात्र ऐसे नेता थे, जिन्होंने अगस्त 1942 की रात से 20 मई 1944 तक भूमिगत रहते हुए इस आन्दोलन में सर्वाधिक योगदान दिया और अपनी अद्‌भुत प्रतिभा, कार्य क्षमता एवं संचालन शक्ति द्वारा 18 माह तक जनता का सफल नेतृत्व कर अगस्त आन्दोलन को भारतीय इतिहास में अमर बना दिया। आपने इस अवधि में विद्रोहियों को प्रेरणा देने के लिए अनेक पत्रक और लघु पुस्तिकाओं का सृजन किया। गुप्त रेडियो केन्द्र की स्थापना की और उसके माध्यम से भाषणों द्वारा क्रान्तिकारियों से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखा। नाम, वेषभूषा और बोलचाल सबमें परिवर्तन कर लोहिया जी निरन्तर अंग्रेजी सरकार को परेशानी में डालते रहे। तार तोड़ना, हथियार ढोने वाली रेल गाड़ियों को बारूद से उड़ाना, यातायात को अस्तव्यस्त करना, अंग्रेजों के व्यावसायिक केन्द्रों को ध्वस्त करना इस आन्दोलन के प्रमुख अंग थे। अन्ततः 20 मई 1944 को किसी तरह वह सरकार के नियन्त्रण में आ गए और उन्हें यातनाओं के लिये कुख्यात लाहोर जेल की बन्द कोठरी में बन्दी बना असहनीय यातनाएं दी गईं।

इस आन्दोलन में अग्र समाज के सभी सुविख्यात नेताओं सर्वश्री श्रीप्रकाश, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, बसन्त लाल मुरारका, सीताराम सेक्सरिया, जुगल किशोर, बृजकृष्ण चांदीवाला, रामनारायण चौधरी आदि ने अपनी गिरफ्तारियां दीं और लम्बी जेल की सजाएं काटी। पंजाब, हरियाणा, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, राजपूताना तथा मध्य प्रदेश आदि भारत का कोई भी ऐसा भू-भाग न था, जहां से हजारों की संख्या में इस समाज के लोगों ने इस आन्दोलन में भाग न लिया हो अथवा जेल यात्रा न की हो।

हरियाणा/पंजाब में अग्रवाल लोग हिसार, हांसी, भिवानी, जीन्द, नारनौल, रोहतक, दादरी, अम्बाला, सिरसा इत्यादि सभी क्षेत्रों में फैले हुए थे। इस आन्दोलन में उन्होंने कांग्रेस का तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग किया और कोई क्षेत्र ऐसा न बचा जहां क्रान्ति की ज्वाला न फूटी हो। हजारों लोग इस क्रान्ति में जेल गए और अनेक लोगों ने दो-दो बार गिरफ्तारियां दी। लाला हरदेवसहाय, बनारसी दास गुप्त, बलवन्तराय तायल, बाबू गुलाब सिंह जैन, राम भक्त, बाबू जुगल किशोर, बाबू मूलचन्द जैन, लाला रामजीदास जैन, मुरलीधर गोयल, विष्णु चन्द गोयल, मदनलाल अग्रवाल, लाला ज्योति प्रसाद लाला मुरलीधर अम्बाला, लाला श्यामलाल रोहतक, लाला मोडाराम भिवानी, लाला देवीसहाय, लाला दौलतराम, लाला अमीरचंद जैन, लाला सालिगराम, जगदीश चंद्र सफीदों, लाला साधुराम, लाला बाबूराम सगंरूर, राजकुमार जैन, जगदीश प्रसाद जैन, कन्हैयालाल बजाज, बंशीलाल अग्रवाल, महावीर प्रसाद जैन, हंसराज रहबर, जगन्नाथ बेरीवाल, मनोहरलाल गोयल, लाला बिरधीचंद शोरेवाले, रामसरणचंद मित्तल, नारनौल आदि ऐसे स्वतंत्रता सेनानी है, जिनके नाम का गौरव से स्मरण किया जा सकता है।

सन् 1942 की क्रान्ति में हरियाणा के ही नारनौल के कार्यकर्ताओं ने रिएक्शनरी आर्गेनाईजेशन का गठन किया था, जो गुप्त रूप से बारूद ला कर विस्फोटक बनाते और ट्रेन की पटरियों और सरकारी दफ्तरों को हानि पहुंचाते थे। इनमें अग्रवाल समाज के

अनेक युवक थे और प्रशासन इन क्रान्तिकारियों की गतिविधियों से विक्षुब्ध हो चुका था। उस समय प्रसिद्ध एडवोकेट लाला वृषभान ने क्रान्तिकारियों की वकालत कर उन्हें जेल से छुड़वाने में महत्वपूर्ण सहायता की थी।

बंगाल तो अग्रसमाज के क्रान्तिकारियों का गढ़ रहा। यहां के श्री बसन्त लाल मुरारका और सीताराम सेक्सरिया ज्यों ही मुम्बई अधिवेशन में भाग ले हावड़ा स्टेशन पहुंचे आपको तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया। यहां राधाकृष्ण नेवटिया, भागीरथ कानोडिया, रामनिरञ्जन सरावगी, तुलसीराम सरावगी, महावीर प्रसाद पोद्दार, नागरमल मोदी, रामकुमार भुवालका, रामेश्वरलाल नोपानी, राधाकृष्ण बजाज जैसी असंख्य विभूतियां थीं, जिन्होंने 1942 के आन्दोलन में बहुमुखी सहायता की। जेल की लम्बी सजाएं काटीं और बड़ी से बड़ी यातनाओं को सहते हुए आन्दोलन की ज्वाला को मन्द न पड़ने दिया। बंगाल में ही अग्रवीरों के सहयोग से ''करो या मरो'' बुलेटिन प्रकाशित होता था, जिसने सुभाष बाबू द्वारा गुप्त रेडियो पर दिए गए भाषणों और देश भर में चल रही गतिविधियों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजस्थान के अग्रवालों ने इस क्रान्ति के आन्दोलन में जिस प्रकार बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और दुर्दम्य ब्रिटिश राज का सामना किया, उसकी अपनी गौरव गाथा है। राजस्थान में सर्वश्री हरिप्रसाद अग्रवाल, सतीश चन्द्र अग्रवाल, बालकृष्ण गर्ग-अजमेर, मास्टर आदित्येन्द्र, मदनलाल अग्रवाल-छोटी सादड़ी, सत्यनारायण सर्राफ, खूबराम सर्राफ-भादरा, मोतीलाल जैन, रंगलाल मारवाड़ी, रामेश्वर लाल अग्रवाल, रामनारायण चौधरी, रघुवीर दयाल गोयल, देवी प्रसाद सर्राफ-मण्डावा, सांवरमल मोर, छोगमल पोद्दार, भवानी मण्डी, लड्डूलाल अग्रवाल, जयपुर, मुक्तलाल मोदी, नीमकाथाना, गोरीशंकर मित्तल, भरतपुर, भंवरलाल आर्य, सूरजमल अग्रवाल सादडी, लाडलीदास गोयल, सवाईमाधोपुर, मदनलाल खेतान, रामगढ शेखावाटी, मालचंद हिसारिया नोहर, तनसुखलाल मित्तल, पन्नालाल अग्रवाल, लालस स्वामी सत्याचंद, मास्टर फकीरचंद, काशीराम गुप्ता, मुकुटबिहारी गोयल, ओमप्रकाश आर्य, सत्यभक्त अग्रवाल, रामजीलाल गुप्ता, मदनमोहनलाल पोद्दार आदि ने जहां इस स्वतन्त्रता की ज्योति को प्रज्वलित रखा, वहां मध्य भारत, उत्तर प्रदेश आदि ने भी इस आन्दोलन में असंख्य आहूतियां दी। उत्तर प्रदेश में लाला जगन्नप्रसाद अग्रवाल ने गांव-गांव में भ्रमण कर जन चेतना को जागृत करने में अभूतपूर्व योगदान किया। आप ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में इतने जबरदस्त आतंकवादी क्रान्तिकारी थे कि आपको गोली मारने का आदेश था। आगरा के रोशनलाल गुप्त 'करूण' का नाम इतिहास प्रसिद्ध है। मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन क्षेत्र से लाला हरचरण गुप्त, बाबूलाल गुप्त, कुंजीलाल अग्रवाल, बसन्त लाल अग्रवाल, श्रवणलाल एडवोकेट, मोतीलाल गुप्त, रणधीर सिंह बंसल, नत्थमल सर्राफ, सीताराम चौखानी, रामजी दास गुप्त, माखन लाल अग्रवाल, आचार्य जुगल किशोर आदि ने इस आन्दोलन में जो सहयोग दिया, वह अप्रतिम और इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में अंकित किये जाने योग्य है। कानपुर के प्यारे लाल, श्रीमती तारा अग्रवाल, श्री कृष्ण गोयल, बनारसी दास आदि ने इस आन्दोलन को गतिमान बनाने में अपना सर्वस्व होम दिया। बाबूराम गुप्त को क्रान्तिकारी साहित्य के प्रकाशन के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। लाला हरचरण

गुप्त, वृन्दावन, सरकार की नजरों में इसलिए किरकिरी बन गए थे क्योंकि सुचेता कृपलानी, बाबा राघवदास, अरूणा आसफअली जैसे अनेक क्रांतिकारियों की वे आवास स्थली थे। प्रो. श्री कृष्ण को अपनी जमींदारी से हाथ धोना पड़ा। कुंजीलाल अग्रवाल को मालगाडी गिराने के आरोप में गिरफ्तार कर पूरे परिवार को असहनीय यातनाएं दी गईं किन्तु आपके कदम पीछे नहीं हटे।

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद, चंदौसी, नैनीताल, बरेली, धामपुर, अलीगढ, हरदोई, आगरा, झांसी, बुलंदशहर आदि विविध अंचलो से जो स्वाधीनता सेनानी सम्मिलित हुए, उनकी सूची लम्बी है और उसमें दयानन्द गुप्ता, लाला बाबूराम गर्ग, हरिशकंर गर्ग, डा० बालमुकुन्द गुप्ता, रामावतार अग्रवाल, परमेश्वरीलाल अग्रवाल मुरादाबाद, लक्ष्मणदास भगत, ओमप्रकाश अग्रवाल, देवेन्द्र गुप्त चंदौसी, बांकेलाल कसंल, बंशीधर कंसल, विद्याप्रकाश कसंल, भूप्रकाश कसंल नैनीताल, लाला बांकेलाल गर्ग, चन्द्रशेखर गोयल धामपुर, राममोहन लाल, शिवशरण अग्रवाल, कालीचरण अग्रवाल, चिरंजीलाल गुप्त, मुरलीमनोहर अग्रवाल, श्रीकृष्ण मित्तल, अमरनाथ अग्रवाल बरेली, सुरेन्द्र अग्रवाल, रमेशचंद्र आर्य अलीगढ, कालिका प्रसाद अग्रवाल झांसी, बाबू बनारसीदास, शंभुनाथ गर्ग, बद्रीप्रसाद भगत जी, जयप्रकाश, प्रकाशचंद गुप्ता, लाला लालता प्रसाद अग्रवाल, बेनीकृष्ण गर्ग बुलंदशहर, रामकिशोर गोयल गाजियाबाद, ओमप्रकाश आदि के नाम उल्लेखनीय है। आगरा के राधामोहन गोकुल जी, भगवतप्रसाद घी वाले, लाला रामभरोसे अग्रवाल, रघुनाथप्रसाद गर्ग, आदिराज सिंघल, किशनलाल गर्ग, बाबूलाल मित्तल, मक्खनलाल अग्रवाल, शिवनारायण अग्रवाल, गौरीशंकर गर्ग, प्रयागनारायण एडवोकेट, हरिहरनाथ गोयल, नेमिचंद मित्तल, हरिनारायण अग्रवाल, द्वारिकाप्रसाद गर्ग, डा० हरिश्चन्द्र अग्रवाल आदि ने अपने-अपने ढंग से आजादी के इस आंदोलन में कुर्बानियां दी और अग्रवाल वैश्य समाज का नाम ऊँचा किया । मुकुटलाल, सेवाराम गर्ग, लाला जयप्रकाश, कैलाशचंद्र महेश, लक्ष्मीनारायण, महाशय प्यारेलाल, बाबू मधूसुदनदयाल, कैलाशचंद मित्तल, सरजू प्रसाद, लक्ष्मीनारायण, भवानीप्रसाद मित्तल, लाला श्रीराम अग्रवाल हापुड़, हकीम मुसद्दी लाल, डा० कृष्णलाल गोयल शामली, प० शिवदयालु मित्तल, कैलाश प्रकाश, सुन्दरलाल जैन, रघुवीरशरण मित्र, रतनलाल गर्ग, मनोहरलाल भारती अग्रवाल, रघुनाथ सहाय मुख्तार, ओमप्रकाश गुप्ता, मगंलसेन गुप्ता, ज्योतिप्रसाद कसंल, रामशरण विद्यार्थी, श्री रघुकुल तिलक, शीतलप्रसाद, होतीलाल अग्रवाल, लाला प्रभुदयाल गर्ग, भगतप्रसाद कंसल, दयाप्रकाश मित्तल, मित्रसेन गर्ग मेरठ, देवीचंद्र विस्मिल मुजफ्फरपुर आदि के नामोल्लेख बिना यह विवरण अधूरा रहेगा।

मध्यप्रदेश के कोने-कोने से स्वाधीनता सेनानियों ने भाग लिया और आजादी के आन्दोलन को सफल बनाया। इनमें नरसिहंदास अग्रवाल, नाथूराम मोदी, नारायणदास अग्रवाल, रामदास अग्रवाल, कस्तूरचंद अग्रवाल, छेदीलाल अग्रवाल, मुकन्दीलाल अग्रवाल, गोविंदप्रसाद अग्रवाल, द्वारिका प्रसाद अग्रवाल, गोपालप्रसाद सर्राफ, वल्लभदास अग्रवाल, विश्वेश्वर प्रसाद अग्रवाल, श्यामलाल अग्रवाल, शकंरलाल अग्रवाल, डॉ० गुलाबराय गुप्त, मेवालाल अग्रवाल, गजाधरप्रसाद अग्रवाल, कस्तूरचंद अग्रवाल, पूर्णलाल अग्रवाल, लक्ष्मीप्रसाद अग्रवाल, नर्मदाप्रसाद अग्रवाल, चुन्नीलाल अग्रवाल, जबलपुर, नारायणदास सिघंल, रामकृष्ण सिघंल, राजमल अग्रवाल, बाबूलाल मित्तल, बलदाऊ सिंघल, लक्ष्मीनारायण सिंघल, कन्हैयालाल अग्रवाल, प्रेम नारायण गुप्ता, मिश्रीलाल अग्रवाल

भोपाल, अमरचन्द जैन, सुखदेव अग्रवाल, उत्तमचंद बसंल आदि के नामों का उल्लेख ही प्रर्याप्त होगा । यहाँ तक कि अग्र महिलायें भी इस आन्दोलन में पीछे नहीं रहीं और कुसुमवती सर्राफ, नन्हींबाई जैन, कमलादेवी गुप्ता, प्रभादेवी सर्राफ, आदि ने आंदोलन में भाग ले मध्य प्रांत की महिला समाज को गौरवान्वित किया ।

इंदौर के छोटे लाल गुप्त 1921 में ही आजादी के आंदोलन में कूद पड़े थे और विदेशी कपड़ों की होली जला अपनी प्रचण्ड राष्ट्रीय भावनाओं का परिचय दिया। उन्हें अग्रेंजों ने घोड़ों से खिंचवाया था और अंततः मरा समझ श्मशान में छोड गये थे। 1930-31 में उन्होनें पुनः गिरफ्तारी दे देश भक्ति की भावना का परिचय दिया ।

बिहार में मोतीलाल केजड़ीवाल, गौरीशंकर डालमिया, रामेश्वरलाल सर्राफ, रामजीवन हिम्मतसिंहका, देवीप्रसाद अग्रवाल, विष्णुमोदी, नागरमल मोदी, गौरीशंकर अग्रवाल, संतलाल जालान, सरयूप्रसाद अग्रवाल, हरिकृष्ण अग्रवाल रांची, राजेश्वर अग्रवाल, डालटन गंज, मंदनलाल अग्रवाल झरिया, सालिगराम गाड़ोदिया रांची, श्यामकृष्ण अग्रवाल, दुमका, हरिराम गुटगुटिया, मधुसूदन अग्रवाल आदि ऐसी अनेकानेक अग्रविभूतियां थीं, जिन्होंने 1942 के आन्दोलन में जबरदस्त साहस का परिचय दिया, जेल गये और पूरे प्रान्त में आजादी के इस आन्दोलन को फैलाया। अगस्त आन्दोलन के इस सन्दर्भ में दिल्ली के विश्वबन्धु गुप्ता, हनुमन्त सहाय, राधारमण अग्रवाल, बृजकृष्ण चांदीवाला, पार्वती देवी डीडवानिया आदि के योगदान को भी नहीं भूलाया जा सकता।

आजादी के इस प्रथम आन्दोलन में अनगिनत अग्रवालों ने अपने-अपने ढंग से जो कुर्बानियां दीं, उनका यदि संकलन किया जाय तो अग्रवाल समुदाय के आजादी के आंदोलन में योगदान का एक नया इतिहास तैयार हो सकता है। 1942 के आन्दोलन में शिथिलता आते देख जयपुर के श्रीनिवास बगड़का ने पुलिस को सूचना देकर स्वयं को गिरफ्तार करा लिया। आप मुम्बई प्रान्त की सबसे खराब जेल विशापुर में 15 माह तक रखे गए। मुम्बई के मदनलाल जालान को इस आंदोलन में गुप्त कार्यकर्त्ताओं की सहायता करने के आरोप में सजा हुई। सोहनलाल अग्रवाल, मुम्बई 1942 के तूफानी आंदोलन में क्रांतिकारी पम्फलेट निकालने वालों में अग्रणी थे और उस अपराध में आपने वर्ली और यरवदा जेल में 9 माह की सजा काटी। रायबहादुर गोविंदलाल के सुपुत्र मदनलाल पित्ती मुम्बई को इस आन्दोलन में इसलिए गिरफ्तारी का सामना करना पड़ा क्योंकि आंदोलन के सुप्रसिद्ध फरार श्री अच्युत पटवर्धन को अपने यहां ठहरने दिया और गैर कानूनी ढंग से रेडियो का संचालन किया था। मुम्बई यूथ लीग की स्थापना में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्रीनिवास बगड़का सरकार की दृष्टि में इतने खूंखार थे कि जेल से रिहाई के समय आप पर दिन में एक बार पुलिस चौकी में आकर हाजरी देने की पाबंदी सरकार ने लगा दी थी

सर्व श्रीमती पार्वती डीडवानिया, इन्दुमती गोयन्का, जानकी देवी बजाज, मुसद्दी, शान्तिदेवी, राधादेवी, शकुन्तला गोयल, चम्पादेवी भारूका, दयावती सर्राफ, सरस्वती देवी गाडोदिया, ज्ञान देवी, भगवान सेक्सरिया आदि ने भी आजादी के इस आन्दोलन में सक्रिय योगदान देते हुए अपूर्व साहस का परिचय दिया था।

स्वतंत्र भारत और अग्रवाल समाज

असंख्य बलिदानों एवं प्रयत्नों के फलस्वरूप देश स्वतंत्र हो गया। अग्रवाल समाज ने विभिन्न ब्रिटिश उद्योग धंधों को खरीद सत्ता-हस्तातंरण की इस प्रक्रिया को सरल बनाया और क्षत-विक्षत राष्ट्र के नवनिर्माण में जुट गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजनीति का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिसमें इस समाज की सेवाएं न हों। स्वाधीन भारत की राजनीति में इस समाज के लोगों ने जो भूमिका निभाई, उसके लिए श्री प्रकाश, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, श्री राधामोहन गोकुलजी, आचार्य जुगलकिशोर, सर सीताराम, डॉ० राममनोहर लोहिया, डॉ० रघुवीर, जमनालाल गोयन्का, देशबंधु गुप्ता, ईश्वरदास जालान, मास्टर आदित्येन्द्र, रघुकुल तिलक, डॉ० धर्मवीर आदि नामों का उल्लेख ही पर्याप्त है, वैसे स्वतंत्र भारत की राजनीति का पूरा इतिहास ऐसे नामों से भरा पड़ा है। सामान्यत: कहा जाता है कि व्यापारी होने के नाते यह समाज हमेशा सत्ताधारी शासकीय दल का समर्थन करता है, किन्तु ऐतिहासिक तथ्य प्रमाणित करते हैं कि इस समाज की विरोधी दल के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता डॉ० रामानंद अग्रवाल, जनता पार्टी के शांतिभूषण, मास्टर आदित्येन्द्र, सतीशचंद्र अग्रवाल, भाजपा के लक्खीराम, रामदास अग्रवाल, वेद प्रकाश गोयल, कृष्णकुमार गोयल, रामहित गुप्ता आदि ने विरोधी दल के नेता के रूप में जिस भूमिका का निर्वाह किया है, वह गौरवपूर्ण है।

विविधोन्मुखी योगदान-इस प्रकार इस समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कहीं हिमालय से शीतल है तो कहीं धधकती ज्वालामुखी से सरोबार। 1947 की शरणार्थी समस्या, 1962 का चीनी आक्रमण, 1965 का भारत-पाक युद्ध या 1971 का बंगला-पाक युद्ध आदि में इस समाज ने सर्वदा खुलकर राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग दिया है। गोआ मुक्ति आंदोलन का स्वतंत्र भारत के इतिहास में अत्यन्त महत्व है । इस आंदोलन में भी अग्रवाल समाज का विशेष योगदान रहा । डॉ० राममनोहर लोहिया पहले व्यक्ति थे, जिन्होनें सबसे प्रथम गोआ में पहुंच कर अपनी गिरफ्तारी दी थी । उसी के बाद 15 अगस्त 1955 को देश भर के राष्ट्र भक्तों ने गोआ की राजधानी पंजिम की ओर कूच किया, जिनमें वि. स. विनोद, रामनिवास गोयल, शशि गोयल, श्री कुलभूषण बंसल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन सब अग्रवीरों ने बडे शौर्य के साथ गोआ में प्रवेश कर तथा अनेकानेक यातनाओ को सह इस आंदोलन को सफल बनाया ।

यह समाज राष्ट्रीय एकता का वाहक रहा है। इसने कभी संकीर्ण जातीयता या प्रांतीयता की भावना का परिचय नहीं दिया। राजनैतिक पतन की दुरावस्था में भी उच्च नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की बागडोर को संभाले रखना इसकी विशेषता है। इस समाज ने स्वार्थपरता, परिवारवाद, जातिवाद आदि घृणित बुराइयों से मुक्त होकर सदैव उच्च राष्ट्रीय हितों की साधना की है।

राजनीतिक योगदान

इस समाज के विभिन्न व्यक्तियों ने केन्द्रीय सरकार के साथ-साथ विभिन्न उच्च पदों जैसे राज्यपाल, मुख्यमंत्री, राजदूत आदि पदों पर रहकर, देश की संसद, विधान सभाओं में जनता का प्रतिनिधित्व कर, विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं, दलों में उच्च पदों पर आसीन रहकर देश की अमूल्य सेवायें की हैं।

आज देश की राजनीति जब सर्वथा कलुषित हो गई है, राजनीति में स्वच्छ मूल्यों की कल्पना करना दूभर होता जा रहा है, आए दिन होने वाले नये नये काण्डों ने देश की जनता का राजनीति तथा राजनीतिज्ञों से विश्वास खो दिया है, ऐसे समय में भी इस समाज के नेताओं की छवि का स्वच्छ बने रहना उनकी चारित्रिक श्रेष्ठता का प्रमाण है। इस समाज के नेताओं में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता, जबकि पिता ने अपने पुत्र का नाती-नातियों को अपना उत्तराधिकारी बनाने की चेष्ठा की हो या परिवारवाद को संरक्षण दिया हो। इस समाज के महात्मागांधी, डॉ० लोहिया, जमनालाल बजाज, डॉ० धर्मवीर, आचार्य रघुवीर लम्बे समय तक राजनीति में रहे किन्तु उन्होंने राजनीति में भाग लेने के बदले भोग-विलास के साधन एकत्र नहीं किए अपितु राजनीति में आकर सब कुछ दिया ही दिया, पाया कुछ नहीं, पाई तो सिर्फ प्रतिष्ठा। उन्होंने परिवार, जाति, वर्ग-विशेष के हितों की अपेक्षा पूरे समाज के हितों को अधिमान और सदैव व्यापक दृष्टिकोण का परिचय दिया। इस समाज के श्री जमनालाल बजाज आजीवन कांग्रेस के कोषाध्यक्ष पद पर रहे किंतु पूरे कार्यकाल में उन पर किसी प्रकार की अंगुली तक न उठ सकी। डॉ० लोहिया चाहते तो नेहरू मंत्रिमंडल में ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त कर सकते थे, किंतु उन्होंने उधर झाँक कर देखा तक नहीं। जमनालाल बजाज ने अपनी वसीयत में बार-बार लिखा कि उनके पद या प्रतिष्ठा का कोई लाभ उनके परिवार को नहीं मिलना चाहिये, मृत्यु के उपरान्त उनकी सारी सम्पति गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों की पूर्ति हेतु दे दी जाय। वे स्वयं 500/- प्रतिमाह में अपना जीवनभार चलाते रहे, जिसमें उनका यात्रा व्यय भी सम्मिलित था। इस प्रकार के आदर्श अन्यत्र दुर्लभ हैं। इस समाज की यही विशेषता उसे भारतीय राजनीति में विशिष्ट स्थान की अधिकारिणी बनाती है।

राजनीति में अग्रसमाज की कतिपय विभूतियां और उनका योगदान

यहां हम राजनीति के क्षेत्र में अग्र/वैश्य समुदाय की ऐसी कतिपय विभूतियों का उल्लेख कर रहे हैं, जिससे राजनीतिक क्षेत्र में इस समाज की व्यापक भूमिका का अनुमान लगाया जा सकता है-

महात्मा गाँधी-स्वतन्त्रता आंदोलन के महान नेता, जिनके नेतृत्व में सम्पूर्ण देश ने आजादी की लड़ाई लड़ी और अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा भारत से ब्रिटिश साम्राज्य का उन्मूलन करने में सफलता प्राप्त की। वैसे तो भारत में अनेक नेता और महापुरुष हुए किंतु विश्ववंद्य तथा राष्ट्रपिता की संज्ञा केवल महात्मा गांधी को ही प्राप्त हुई।

सामान्यत: गाँधी जी को मोढ़ वैश्य (गुजराती वैश्य) माना जाता है किंतु गाँधी जी की पौत्री श्रीमती सुमित्रा कुलकर्णी ने मोढ़ को अग्रवालों को ही एक अल्ल या बंक स्वीकार करते हुए पूज्य बापू को अग्रवाल बताया है। उनका कथन है-'मथुरा आगरा के आसपास के अग्रवाल वैश्यों के शील और सौजन्यपूर्ण स्वभाव और सौराष्ट्र के मोढ़ वैश्यों के व्यवहार में बहुत साम्य है। जब महा सैन्यों ने गुजरात पर आक्रमण किया और बड़ी संख्या में जत्थे के जत्थे पश्चिमी तट स्थित सौराष्ट्र पर चढ़ आए, तब मथुरा, आगरा के वाणिज्य प्रधान बनिये भी वहाँ आकर बस गये। उत्तर गुजरात में मेहसाणा से 12 मील

दूर मोढ़ेरा ग्राम है। अनुमान है, इस मोढ़ेरा गाँव से ही वैश्यों का पृथक गोत्र (अल्ल) बना होगा।

इस प्रकार महात्मा गाँधी मूलत: अग्रवालों की एक शाखा से सम्बन्धित प्रमाणित होते हैं, जो कभी मोढ़ेरा गाँव में बसने के कारण मोढ़ वैश्य के नाम से ख्यात हो गई थी।

लाला लाजपतराय-लाल-बाल-पाल त्रयी के प्रमुख राष्ट्रीय नेता, जिन्होंने साईमन कमीशन के विरोध में लाठियां खा-खाकर अपने प्राणों को त्याग दिया, किंतु देश की आन-बान-शान को झुकने न दिया। लाहौर एवं अन्य स्थानों पर डी.ए.वी. संस्थाओं के संस्थापक रहे। अनेक बार जेल यात्रा एवं भारत से निर्वासन का दण्ड, तिलक विद्यालय की स्थापना की। महान लोकसेवक।

डॉ० राममनोहर लोहिया– भारत में समाजवादी आंदोलन के प्रवर्त्तक, जिन्होंने पूरा जीवन समाज के उपेक्षित, दलित एवं पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए लगा दिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन का गुप्त रूप से संचालन और पूरे जीवन में 40 बार जेल यात्रा। भारत में नेहरू परिवार के अधिनायकतंत्र के प्रबल विरोधी और गैर कांग्रेसी शासन की स्थापना के प्रमुख सूत्रधार। यह उनकी विचारधारा का ही परिणाम था कि, भारत में 1979 में जनता पार्टी की सरकार बन सकी। 1996 के चुनावों में भी इसकी पुनरावृत्ति हुई। अपनी प्रखर वाणी एवं तेजस्विता द्वारा संसद को गुंजा देने वाले विरोधी दल के सशक्त नेता, जिन्होंने कभी उच्च पद की ओर झाँक कर नहीं देखा तथा सिद्धांतों पर अटल रहे। उन्होंने भारत में समाजवादी, संयुक्त समाजवादी दल, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी आदि की स्थापना की। वे मैनकाईंड पत्रिका के सम्पादक भी रहे।

जमनालाल बजाज– गाँधी जी के पाँचवें दत्तक पुत्र और स्वतन्त्रता आंदोलन के महान सहयोगी, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण परिवार तथा सम्पत्ति को आजादी के आंदोलन में झोंक दिया। आजीवन कांग्रेस के कोषाध्यक्ष तथा उन्हीं के अनुरोध से गाँधी जी 'सेवाग्राम आकर ठहरे। इतिहास में ऐसे बहुत कम उदाहरण मिलते हैं, जहां पूरे के पूरे परिवार ने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया हो किन्तु जमनालाल बजाज ने अपने पूरे परिवार को ही राष्ट्रीय आंदोलन में झोंक दिया। उनके परिवार का कोई सदस्य ऐसा नही है, जिसने आजादी के आंदोलन में भाग न लिया हो अथवा एक या दो बार जेल न गया हो। उनकी पत्नी जानकी देवी बजाज, उनके पुत्र कमलनयन बजाज, रामकृष्ण बजाज, पुत्री मदालसा देवी, पुत्रवधु सावित्री देवी, दामाद श्रीमन्नारायण अग्रवाल एवं समस्त भाई-बांधवों ने इस आंदोलन में भाग लिया और जेल-यात्राएं कीं। राष्ट्र भक्तों का ऐसा परिवार अन्यत्र शायद ही ढूंढ़ने पर मिले। व्यापार में नैतिकता के महान पक्षधर रहे। सुप्रसिद्ध बजाज औद्योगिक घराना आपके परिवार से ही सम्बद्ध है।

सर सीताराम– सुविख्यात राजनेता एवं विधिवेता। 1923 में रायबहादुर और 1931 में सर (नाईटहुड) की उपाधि से सम्मानित। 1921 से 1949 तक निरंतर उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य एवं अनेक वर्षों तक परिषद के अध्यक्ष पद को सुशोभित। पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त भी रहे।

राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त– काशी में भारतमाता राष्ट्रीय मन्दिर के अनोखे निर्माता, स्वाधीनता आंदोलन के महान सेनानी, जिनका निवास 'उपवन' राष्ट्रीय नेताओं का

तीर्थस्थल बन गया था और जहाँ गाँधी जी के नेतृत्व में अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये। हिंदी तथा स्वदेशी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से 1917 में ज्ञानमण्डल की स्थापना और 1920 में 'आज' दैनिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ, हिन्दी पत्रकारिता में योगदान।

डॉ० रघुवीर– भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष, उच्चकोटि के विद्वान, भाषाविद् एवं कोषकार। विविध भाषाओं के अनेक शब्द-कोषों तथा वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण। अन्तरराष्ट्रीय भारतीय संस्कृति अकादमी के संस्थापक एवं अध्यक्ष। हिन्दी के प्रबल पक्षधर रहे।

देशबंधु गुप्ता– सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्रभक्त। 'तेज' पत्र के प्रधान सम्पादक, लोकप्रिय सांसद, अनेक बार जेलयात्रा, नवीन हरियाणा राज्य के निर्माताओं में से एक। दिल्ली में उनकी स्मृति में 'देशबन्धु गुप्ता मार्ग'।

श्रीप्रकाश– भारतरत्न डॉ० भगवानदास के सुपुत्र, सुप्रसिद्ध गाँधीवादी राजनेता, पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्च आयुक्त। मद्रास, असम, महाराष्ट्र के राज्यपाल एवं केन्द्र में वाणिज्य मंत्री तथा अनेक पदों का सुशोभित। केंद्रीय विधान सभा के सदस्य। अखिल भारतीय कांग्रेस के महासचिव, सुप्रसिद्ध लेखक, साहित्यकार एवं पत्रकार।

श्रीमन्नारायण अग्रवाल– सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता, गाँधीजी के सिद्धांतो के सच्चे अनुयायी, स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भाग, जेलयात्रा, 1952 में लोकसभा सदस्य, 1967 से 1973 तक गुजरात के राज्यपाल, नेपाल में भारत के राजदूत और योजना आयोग के सदस्य रहे। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा पद्धति के प्रबल पक्षधर एवं महान शिक्षाविद!

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका– सुविख्यात सालीसीटर एवं विधिवेता, कुशल सासंद, भारतीय संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य, बंगाल विधान सभा के तीन बार तथा 1952 से 1972 तक लगातार लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्य रहे। स्वाधीनता आंदोलन से लेकर गाँधी, नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गाँधी, मोरारजी देसाई, राजीव शासन तक के प्रत्यक्ष दृष्टा और एक मात्र साक्षी। कलकत्ता के जनजीवन को आठ दशक तक प्रभावित! 102 वर्षों तक जीवित रहे।

रघुकुल तिलक– राजस्थान के पूर्व राज्यपाल, महान शिक्षा शास्त्री, गाँधीवादी नेता, स्वातंत्र्य संग्राम के सेनानी, उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य, संसदीय सचिव, राजस्थान रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य, उत्तर प्रदेश में शिक्षामंत्री, काशी विद्यापीठ के उपकुलपति, लेखक एवं पत्रकार, आधुनिक ईंग्लैंड का इतिहास, भारतीय प्रजातंत्र तथा लोकतंत्र आदि अनेक ग्रन्थों के रचयिता!

डॉ० धर्मवीर– कुशल प्रशासक एवं सफलतम राज्यपाल। 1930 में आई.सी.एस., पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी बंगाल, मैसूर आदि राज्यों के राज्यपाल रहे। भारत सरकार एवं उत्तरप्रदेश में अनेक उच्च पदों पर कार्य किया। भारतीय पुलिस आयोग के अध्यक्ष भी रहे।

बसंतलाल मुरारका– कलकत्ता के सुप्रसिद्ध सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्त्ता, बंगाल विधानसभा के विधायक, अनेक बार जेलयात्रा, श्री सुभाषचंद्र बोस की आजाद

हिंद सेना के लिए धन संग्रह में महत्त्वपूर्ण योगदान।

देशराज चौधरी– दिल्ली के जाने माने स्वतंत्रता सेनानी, कांग्रेसी व आर्यसमाजी नेता।

ईश्वरदास जालान– पश्चिमी बंगाल विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष, विधिमंत्री एवं सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता। 15 वर्षों तक लगातार पश्चिमी बंगाल में मंत्री रहे।

सीताराम सेक्सरिया– सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता, महात्मा गाँधी के खादी प्रसार, हरिजनोद्धार, गौसेवा, हिन्दी प्रचार आदि कार्यों से महत्त्वपूर्ण योगदान, 1941-42 के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग और जेलयात्रा, हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए सेक्सरिया पुरस्कार का प्रवर्त्तन, महिला शिक्षा के प्रसार हेतु कलकत्ता में 'शिक्षायतन' की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान, सार्वजनिक सेवाओं के लिए भारत सरकार द्वारा 1962 में पद्मविभूषण की उपाधि से सम्मानित।

आचार्य जुगल किशोर-महाशिक्षा शास्त्री तथा गांधीवादी नेता, उत्तर प्रदेश के शिक्षामंत्री, लखनऊ, विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद को सुशोभित किया। स्वाधीनता आंदोलन में पति-पत्नी द्वारा संयुक्त रूप से अनेक बार जेलयात्रा, गुजरात विद्यापीठ के अध्यक्ष तथा सरदार भगतसिंह, सुखदेव, बोहरा आदि क्रांतिकारियों के राजनीतिक गुरू रहे।

बद्रीप्रसाद गोयन्का– कलकत्ता नगर निगम के पार्षद, बंगाल विधान परिषद् तथा कलकत्ता इम्प्रूमैन्ट ट्रस्ट के सदस्य, रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के निदेशक रहे, अंग्रेज सरकार द्वारा 'सर' की उपाधि से सम्मानित।

नारायण प्रसाद गुप्त– मध्यप्रदेश के सिहोर से विजयी विधायक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता, अनेक बार जेलयात्रा! सन 1947 में संघ पर प्रतिबंध लगने के बाद महीनों जेल में रहे, काश्मीर आंदोलन, गोवा मुक्ति आंदोलन में सत्याग्रही जत्थों का नेतृत्व और जेल यात्रा, आपातकाल में बंदी सत्याग्रहियों की सहायता, जनलेखा समिति के सदस्य।

मास्टर आदित्येन्द्र– सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, राज्यसभा के सदस्य एवं राजस्थान के वित्तमंत्री रहे।

लाला राधारमण अग्रवाल– दिल्ली के महान स्वाधीनता सेनानी।

रामचरण अग्रवाल– सांसद एवं स्वाधीनता सेनानी।

लाला ओंकारनाथ– स्वाधीनता संग्राम के योद्धा, अधिकांश आंदोलनों में जेलयात्रा।

एस.पी. अग्रवाल– दादरा, नागरहवेली, दमनदीव के लेफ्टिनेंट गवर्नर।

कामरेड बनारसीदास–1930-31 के सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं अन्य सत्याग्रहों में खुल कर भाग एवं जेलयात्रा। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में पुनः बंदी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख कार्यकर्त्ता एवं सदस्य। समाजवादी देशों के साथ मैत्री के प्रबल पक्षधर।

शामनाथ– दिल्ली के ओजस्वी नेता एवं केन्द्रीय सरकार में कई वर्षों तक मंत्री पद पर सुशोभित रहे।

शिवचरण गुप्त– दिल्ली के सुप्रसिद्ध राजनैतिक नेता, दिल्ली नगर निगम, विधान सभा, नगरपालिका के सदस्य, निगम की स्थायी समिति के पूर्व अध्यक्ष, महानगर परिषद में कांग्रेस दल के नेता, 1962 में सदर बाजार संसदीय क्षेत्र से लोक सभा का प्रतिनिधित्व।

श्यामाचरण गुप्ता– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं जनसंघ के प्रमुख कार्यकर्ता, 1962 में दिल्ली नगर निगम के एल्डरमेन, महानगर परिषद् के सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष, 1948 के सत्याग्रह में जेल, 1952 में दिल्ली विधान सभा के सदस्य।

राधामोहन गोकुलजी– उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता, स्वाधीनता सेनानी, क्रांतिदल के संस्थापक एवं सूत्रधार।

मोतीलाल केजड़ीवाल–'बिहार के गाँधी' संज्ञा से सुशोभित प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा।

श्री ब्रजकृष्ण चाँदीवाला– दिल्ली के प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्त्ता, गांधी जी के प्रमुख सहयोगी।

लाला श्यामलाल सत्याग्रही– सिरसा निवासी, स्वाधीनता सेनानी, अनेक बार जेलयात्रा, पंजाब विधान सभा के सदस्य, गौरक्षा, शराब बंदी तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के कट्टर समर्थक।

रामनारायण चौधरी– राजस्थान में रियासती राजाओं के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख सूत्रधार, अनेक बार जेलयात्रा, लेखक तथा पत्रकार।

रघुवरदयाल गोयल– राजाओं के निरकुंश शासन के प्रबल विरोधी। 1932 में बीकानेर षडयंत्र केस के प्रमुख अभियुक्तों की पैरवी द्वारा उत्कृष्ट देशभक्ति का परिचय। अनेक बार जेलयात्रा तथा बीकानेर से निर्वासन का दण्ड, राजस्थान में खाद्य, कृषि, पूर्ति, वनमंत्री आदि के रूप में सेवाएं।

बनारसीदास गुप्त– सुप्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी, जींद प्रजामंडल के प्रमुख कार्यकर्ता, हरियाणा विधानसभा के सदस्य, अध्यक्ष, विद्युत एवं सिंचाई भाग के मंत्री, उपमुख्यमंत्री, मुख्यमंत्री जैसे अनेक पदों को सुशोभित। हरियाणा के विकास में विशेष योगदान, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष, महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज एवं हस्पताल तथा अग्रोहा निर्माण के प्रमुख सहयोगी। 1996 में राज्यसभा के सांसद निर्वाचित।

बनारसीदास– बुलंदशहर से उत्तरप्रदेश विधान सभा में अनेक बार प्रतिनिधित्व एवं उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित। राज्यसभा के सदस्य एवं उत्तरप्रदेश विधान सभा के संसदीय सचिव रहे।

लाला हरदेव सहाय - सुप्रसिद्ध गौभक्त एवं स्वतंत्रता सेनानी। 1921 के आंदोलन में भाग लेने के कारण पंजाब की मियांवाली जेल में बंद। 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग और अनेक बार जेल यात्रा।

पीताम्बरदास- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्त्ता, स्वाधीनता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा, 1960 में जनसंघ के नागपुर अधिवेशन की अध्यक्षता, 1961 से 1972 तक जनसंघ के अध्यक्ष, 1956 से 1968 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद् और 1968 से 1974 तक राज्य सभा में सांसद।

श्रीमती सावित्री श्याम- सुप्रसिद्ध राजनीतिक कार्यकर्त्ता, दस वर्षों तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद् एवं दस वर्षों तक लोक सभा की सांसद।

प्रेम मनोहर- सुप्रसिद्ध जननेता एवं उद्योगपति, 1968 से 1974, 1977 से 1980 तक राज्य सभा में सांसद। 15 वर्षों तक जनसंघ के कोषाध्यक्ष।

अखिलेश दास- उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास के सुपुत्र, राज्य सभा के सांसद।

विजय गोयल- सांसद लोकसभा, एक अंक लाटरी पर प्रतिबंध लगाने में विशेष योगदान।

गोविंद सहाय- विधायक एवं मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार।

नरेन्द्र मोहन- दैनिक जागरण समूह के प्रधान सम्पादक, सांसद, राज्य सभा।

द्वारका प्रसाद मित्तल- अध्यक्ष, विधान सभा, उत्तर प्रदेश ।

ज्योति प्रसाद वकील- विधायक, उत्तर प्रदेश विधान सभा।

दयाल कृष्ण एडवोकेट- सुप्रसिद्ध समाज सेवी, अग्रोहा में बृजवासी अतिथि भवन निर्माण के सूत्रधार, पूर्व गृह राज्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार।

विश्वंभर सहाय प्रेमी- महान स्वाधीनता सेनानी, 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग और जेल यात्रा, राष्ट्रवादी एवं आर्य समाज की विचारधारा से ओतप्रोत सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व।

लाला मुरलीधर, अम्बाला- देश के उन 73 वरिष्ठ पुरुषों में, जिन्होंने मुंबई के तेजपाल गोकुलदास संस्कृत कालेज हाल में 1884 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जन्म दिया। प्रथम राजबंदी होने का भी श्रेय प्राप्त। पंजाब सरकार द्वारा केशरे हिंद उपाधि से सम्मानित।

महावीर प्रसाद जैन- 17 वर्ष की अवस्था में ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग, 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग, पांच वर्षों तक जेल एवं नजर बंद।

सुरेंद्र कुमार सिंघल- सांसद राज्यसभा।

मुरली देवड़ा- सांसद एवं भारतीय राजनीति के विशिष्ट व्यक्तित्व।

श्रीमती चंद्रकांता गोयल- मारवाड़ी समाज की महाराष्ट्र विधान सभा में एक मात्र विधायिका, मुंबई केन्द्रीय महिला समिति की अध्यक्षा, श्री वेदप्रकाश गोयल की सहधर्मिणी।

राजा ज्वालाप्रसाद- स्वतंत्रता सेनानी रहे। पटियाला केस में आपको गिरफ्तार कर आपकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली गई। आप 13 माह तक जेल में बंद रहे और आपको सरकारी नौकरी से निकाल दिया गया।

गौरीशंकर गर्ग बोहरे- काकोरी षडयंत्र केस के प्रमुख अभियुक्त, शीतला गली बम काण्ड तथा अगस्त क्रांति में कारावास भोगने वाले महान क्रांतिकारी। 1925 में काकोरी ट्रेन डकैती काण्ड में गिरफ्तारी। निरंतर क्रांतिकारी संगठनों से सम्बद्ध रहे और क्रांतिकारियों के आगरा आगमन पर उनके भोजन, आवास आदि की व्यवस्था।

विमलप्रसाद जैन- चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह तथा अन्य क्रांतिकारियों को सहयोग देने वालों में अग्रणी। सन् 1930 में जब क्रांतिकारियों ने हिमालय टायलेटस कारखाने की आड़ में गुप्त रूप से बम फेक्टरी स्थापित की तो श्री जैन की उसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। दिल्ली षडयंत्र कांड में अनेक माह जेल में बंदी रहे।

प्रो. रामसिंह-तेजस्वी स्वाधीनता सेनानी, जिन्हें 1919 में अध्ययन करते समय पुलिस ने खतरनाक राजद्रोही घोषित कर पंजाब से निष्कासित कर दिया था। वे महीनों तक स्वाधीनता सम्बंधी साहित्य तैयार कर दिल्ली भेजते रहे। हिन्दुत्व के प्रबल समर्थक एवं हिन्दू महासभा के अध्यक्ष।

मोतीलाल बगड़िया- नेता जी सुभाषचंद्र बोस के निकट के सहयोगी, जिन्हें अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया था। नेता जी सुभाष चंद्र बोस जिस समय अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज के माध्यम से संघर्षरत थे, अग्रवाल समाज के जिन व्यापारी बंधुओं ने उन्हें सहयोग प्रदान किया, उनमें आप अग्रणी थे। आपका निवास एक प्रकार से आजाद हिन्द फौज का कार्यालय बन गया था।

प्रो. कृष्णचंद्र मथुरा- स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम योद्धा। पूरे 17 बार जेल यात्रा। स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक बार आपके घर की कुर्की हुई और सामान नीलाम कर दिया गया। उत्तर प्रदेश विधान सभा में अनेक वर्षों तक विधायक भी रहे।

मास्टर विश्वंभरदयाल गुप्ता- विधायक, उत्तर प्रदेश विधान सभा।

मूलचंद जैन- स्वतंत्रता-सेनानी, पूर्व सांसद, हरियाणा राज्य के आधुनिक निर्माण मे महत्त्वपूर्ण भूमिका, हरियाणा योजना आयोग के उपाध्यक्ष, वित्त मंत्री एवं 1952 से 57 तक संयुक्त पंजाब के सांसद रहे।

राममूर्ति- 1930, 1932, 1941 में जेलयात्रा, उत्तरप्रदेश विधान सभा के सदस्य एवं उत्तरप्रदेश सरकार में 1951 से 1967 तक विभिन्न मंत्री पदों को सुशोभित। 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर बरेली संसदीय क्षेत्र से लोकसभा के लिए निर्वाचित।

कैलाश प्रकाश- सुविख्यात सांसद, स्वंतन्त्रता सेनानी, उत्तर प्रदेश में शिक्षा, वित्त, पंचायती राज, श्रम, स्वायत्त शासन, बद्रीनाथ केदारनाथ मंत्री रूप में अनेक पदों पर कार्य। 1977 में मेरठ संसदीय क्षेत्र से लोकसभा के लिए विजयी।

नारायण प्रसाद गुप्त- सांसद राज्य सभा, मध्य प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष।

चरतीलाल गोयल- दिल्ली राज्य विधान सभा के अध्यक्ष, 1967 से 75 तक दिल्ली नगर निगम के सदस्य एवं महापौर भी रहे। आपातकाल में जेलयात्रा, महानगर परिषद् में जनता पार्टी का प्रतिनिधित्व।

डॉ० हर्षवर्द्धन- दिल्ली राज्य विधान सभा के सदस्य एवं स्वास्थ्य मंत्री।

लक्खीराम अग्रवाल- मध्यप्रदेश भाजपा के अध्यक्ष, राज्यसभा सदस्य।

कृष्णकुमार गोयल- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं भाजपा के प्रमुख कार्यकर्ता, केंद्रीय सरकार में वाणिज्य राज्यमंत्री एवं राजस्थान में उद्योग मंत्री पद को सुशोभित। राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष, 1975 में आपातकाल में 19 माह की जेलयात्रा।

रामदास अग्रवाल- राजस्थान भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अध्यक्ष, उद्योगपति एवं सासंद राज्यसभा, अध्यक्ष-अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन।

राजेन्द्र कुमार गुप्ता- दिल्ली प्रदेश जनसंघ के अनेक वर्षों तक कोषाध्यक्ष, दिल्ली के पूर्व महापौर, दिल्ली सरकार में परिवहन मंत्री, अनेक बार जेलयात्रा तथा दिल्ली नगर निगम के एल्डरमेन!

ओमप्रकाश जिंदल- सप्रसिद्ध उद्योगपति होने के साथ-साथ हरियाणा की राजनीति के दृढ़ स्तंभ, हरियाणा विकास पार्टी के उपाध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा के सदस्य रहे। लोक सभा सांसद।

राजकुमार अग्रवाल- उत्तरप्रदेश विधानपरिषद के विधायक।

सेठ श्रीकिशनदास- हरियाणा के वित्त, आबकारी एवं कराधान मंत्री।

जयप्रकाश अग्रवाल– महामंत्री, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी, सांसद, लोकसभा।

श्रीकिशन मोदी– सांसद एवं उद्योगपति, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष।

कंवरलाल गुप्ता– भारतीय जनसंघ के लोकप्रिय नेता, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली विधानसभा के सदस्य, प्रमुख सांसद, आपातकाल के समय 19 माह जेलयात्रा, नागरिक परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष, काश्मीर आंदोलन, हिमालय बचाओ जैसे अनेक आन्दोलन।

वेदप्रकाश गोयल– सांसद राज्यसभा।

डॉ० जयगोपाल गर्ग– स्वाधीनता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा, उत्तर प्रदेश विधान सभा एवं विधान परिषद् के सदस्य एवं स्वतंत्रता सेनानी बोर्ड के अध्यक्ष।

जनार्दन गुप्त– जुझारू एवं निर्भीक नेता, 1953 से विभिन्न राजनैतिक आंदोलनों में 25 से अधिक बार जेलयात्रा, दिल्ली नगर निगम एवं महानगर परिषद के सदस्य। आपात स्थिति में 19 माह की जेल यात्रा।

शान्तिभूषण– पूर्व केन्द्रीय एवं विधि न्यायमंत्री, वरिष्ठत्तम विधिवेता, उत्तरप्रदेश के एडवोकेट जनरल, श्रीमती इंदिरा गांधी के विरुद्ध राजनारायण द्वारा प्रस्तुत चुनाव याचिका की पैरवीकर श्रीमती गाँधी के चुनाव को निरस्त करा भारत में गैर कांग्रेसी शासन की नींव रखने वाले सर्वाधिक लोकप्रिय विधिवेता। भाजपा की चार सरकारों को गिरा कर केन्द्रीय शासन की स्थापना के विरुद्ध दायर याचिका की पैरवी।

सतीशचंद्र अग्रवाल– भूतपूर्व विधायक एवं सांसद, 1956 में जयपुर नगरपालिका के सदस्य, 1957 से 1972 तक लगातार जयपुर से विधानसभा के लिए भारी बहुमत से विजयी, विविध आंदोलनों में अनेक बार जेलयात्रा, 1965 में राजस्थान प्रदेश जनसंघ के अध्यक्ष, 1977 के जनता शासन में केन्द्र में वित्त राज्य मंत्री, राजस्थान राज्य शिशु कल्याण परिषद के अध्यक्ष रूप में शिशुओं के कल्याण के लिए अनेक रचनात्मक कार्य। सुप्रसिद्ध अर्थवेता तथा आर्थिक मामलों के सलाहकार। 1997 में स्वर्गवास।

भारतभूषण अग्रवाल– लोकप्रिय सांसद, 1977 के आम चुनाव में भू.पू. केन्द्रीय मंत्री श्रीकृष्णचंद्र पंत को 85000 से अधिक मतों से पराजित कर नैनीताल क्षेत्र से लोकसभा से विजयी, आपातकाल में लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षार्थ जोरदार संघर्ष, 1957 के पंजाब हिन्दी आंदोलन में जेलयात्रा, सहकारिता एवं कृषि के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य।

श्यामसुंदर गुप्ता–1970-71 में कलकत्ता के महापौर, अनेक आंदोलनों में भाग और जेलयात्रा, 1977 के आमचुनाव में लोकसभा चुनाव में विजयी।

प्रो० राजकुमार जैन– छात्रजीवन से ही राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत, अनेक आंदोलनों में भाग तथा जेलयात्रा, महानगर परिषद दिल्ली के सदस्य।

वीरेश प्रताप चौधरी– दिल्ली प्रदेश युवा कांग्रेस एवं भारतीय युवक कांग्रेस पूर्वमंत्री, विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में भाग, दिल्ली महानगर परिषद के सदस्य।

वेदप्रकाश अग्रवाल– उड़ीसा सरकार में वित्त मंत्री।

जगदीश प्रसाद अग्रवाल– उत्तर प्रदेश सरकार में संसदीय कार्यमंत्री, कांग्रेस सेवादल के संयोजक तथा आपने नेहरूजी को भी परेड कराई थी। गिरफ्तारी के वारन्ट निकलने पर मकान के किवाड़ तक नीलाम। जेल में अनेक अमानवीय यातनाएं।

प्रो. गणेशीलाल- श्रेष्ठ वक्ता, भाजपा के लोकप्रिय नेता, हरियाणा के सहकारिता, श्रम, रोजगार, मद्यनिषेध एवं आबकारी मंत्री।

सतपाल जैन- सांसद लोक सभा, केन्द्र शासित प्रदेश चण्डीगढ़ से विजयी।

रामभजन अग्रवाल- हरियाणा विधान सभा के विधायक, सुप्रसिद्ध उद्योगपति।

बृजमोहन सिंघल- विधायक, हरियाणा विधान सभा।

ओमप्रकाश जैन- हरियाणा की राजनीति के लोकप्रिय स्तंभ, विधायक, हरियाणा विधान सभा।

धीरेन्द्र अग्रवाल-सांसद लोक सभा, बिहार।

नरेश अग्रवाल- भारतीय लोकतांत्रिक मोर्चा के अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री।

नेमिशरण जैन- संविधान सभा के सदस्य, सांसद, स्वतंत्रता सेनानी 1913, 1930, 1942 में जेल यात्रा, उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य एवं सांसद लोक सभा।

बटुकनाथ अग्रवाल- महान क्रांतिकारी, युवावस्था में ही अध्ययनकाल में चंद्रशेखर, सुखदेव, राजगुरु आदि क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आए तथा गुप्त अड्डों पर उनके संदेश पहुंचाने का कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् क्रांतिकारी शहीदों की स्मृति में शहीद उद्यान की स्थापना। क्रांतिकारियों के साहसपूर्ण जीवन को साहित्यिक माध्यम से जन जन तक पहुंचाने में उल्लेखनीय योगदान।

सुश्री लीलाराय- 1952 में मध्यप्रदेश विधान सभा की विधायिका।

जितेन्द्र कुमार (कालू भैया)- विधायक दिल्ली विधान सभा।

श्यामसुंदर वकील- स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग, 1946 से 1955 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री गोविंदवल्लभ पंत के निजी सचिव, विधान परिषद् उत्तर प्रदेश के सदस्य।

बृजभूषण शरण- राजनीतिज्ञ, सदस्य विधान सभा, उत्तर प्रदेश।

श्रीमती चारू शिला- सदस्य विधान सभा, उत्तर प्रदेश।

गोपालशंकर गोंदिया- विधायक, महाराष्ट्र विधान सभा।

फकीरचंद- विधायक, हरियाणा विधान सभा।

संजय गर्ग- सहारनपुर क्षेत्र से उत्तर प्रदेश विधान सभा के विधायक।

अम्बरीष, हरिद्वार- विधायक, उत्तर प्रदेश विधान सभा।

सतीश चंद्र बरेली- स्वाधीनता सेनानी, जेलयात्रा, भारत छोड़ो आंदोलन में भाग, 1952 में लोक सभा सांसद।

नागरमल मोदी- बिहार के स्वाधीनता सेनानी, अनेक बार जेल यात्रा, बिहार विधान सभा के सदस्य, डा. राजेन्द्र प्रसाद एवं अनुग्रह बाबू के निकट सहयोगी।

श्रीमती लेखवती जैन- स्वाधीनता सेनानी, 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग, 1933 से 1937 तक पंजाब विधान सभा की प्रथम महिला विधायिका, 1964 में पंजाब विधान सभा तथा बाद में हरियाणा विधान सभा की सदस्या एवं उपाध्यक्ष।

राधाकृष्ण अग्रवाल- उच्च कोटि के देशभक्त एवं समाज सेवी। 1928 में साईमन कमीशन का विरोध, 1940, 1942 के आंदोलन में भाग और जेलयात्रा, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री, 1946 में प्रांतीय विधान सभा के सदस्य, 1952 मे उत्तर प्रदेश

विधान सभा के विधायक, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के सदस्य एवं अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा आयोग के अध्यक्ष भी रहे।

सीताराम सिंघल-हरियाणा सार्वजनिक उपक्रम ब्यूरो के अध्यक्ष, विधायक हरियाणा विधान सभा।

आलोककुमार गुप्त- विधायक, दिल्ली विधानसभा।
मोहनलाल मोदी-विधायक, राजस्थान विधानसभा।
मीना अग्रवाल-विधायिका, राजस्थान विधानसभा।
रामचन्द्र अग्रवाल-विधायक मध्यप्रदेश विधानसभा।
राजेश खेतान-विधायक, पश्चिमी बंगाल विधानसभा।
शंकरप्रसाद टेकड़ीवाल-सदस्य, बिहार विधानसभा।
सुशीलकुमार मोदी-बिहार विधानसभा में विरोधी दल के नेता।
श्रीमती राजकुमारी हिम्मतसिंहका-सदस्य, बिहार विधानसभा।
रामप्रकाश गुप्त-सदस्य, विधानसभा, उत्तरप्रदेश।
धर्मपाल सिंह गुप्त-सांसद, लोकसभा।
वीरेनशाह-सांसद, राज्यसभा।
सतपाल मित्तल-सासंद, राज्यसभा।
निहालसिंह जैन-सांसद, लोकसभा।
विष्णु मोदी-सदस्य, राजस्थान विधानसभा।
भीखूराम जैन-सासंद, लोकसभा।
आर.आर. मोरारका- सांसद लोकसभा।
सुरेश सिंघल-विधायक, उत्तर प्रदेश विधानसभा।
अमित अग्रवाल-विधायक (मेरठ), उत्तर प्रदेश विधानसभा।
सत्यप्रकाश विकल-उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य।
बलवंतराय तायल-हरियाणा के सुप्रसिद्ध विधायक एवं राजनेता।
बाबूराम मित्तल-विधायक, उत्तरप्रदेश विधानसभा।
डॉ. रमेश अग्रवाल-मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य।
बृजमोहन अग्रवाल-भाजपा से निर्वाचित मध्यप्रदेश के विधायक।
श्यामसुंदर अग्रवाल-विधायक, भाजपा मध्यप्रदेश विधान सभा।
संतोष कुमार अग्रवाल-जनता दल से निर्वाचित मध्यप्रदेश के विधायक।
बद्रीनरायण अग्रवाल-विधायक भाजपा, मध्यप्रदेश विधानसभा।
हनुमानप्रसाद गर्ग-विधायक, मध्यप्रदेश, विधानसभा।
रामप्रकाश गर्ग-विधायक भाजपा, मध्यप्रदेश।
चंद्रकांत गुप्त-विधायक, मध्यप्रदेश विधानसभा।
मगनलाल गोयल-सदस्य, मध्यप्रदेश विधान सभा।
विद्याभूषण अग्रवाल-विधायक तथा मंत्री, मध्यप्रदेश विधानसभा।
मुनीशचंद्र गुप्ता- गृह सचिव, हरियाणा सरकार।
ओमप्रकाश गुप्त-सदस्य, पंजाब विधान सभा।
राधेश्याम गुप्त-उत्तरप्रदेश विधानसभा के सदस्य, विधायक।
मांगेलाल गुप्त-विधायक, हरियाणा विधानसभा।

राजेन्द्र प्रसाद मोदी- सांसद, राज्य सभा।

ओमप्रकाश गुप्ता- राजस्थान विधान सभा के सदस्य तथा मुख्य सचेतक, भाजपा के नेता, राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य।

प्रवीण ऐरण- उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य विभाग के राज्यमंत्री।

गुलाबचंद गुप्त- जबलपुर नगर निगम के महापौर, विधायक, मध्य प्रदेश विधान सभा।

श्रेयांसप्रसाद जैन- स्वाधीनता सेनानी, 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन में जेल यात्रा, सुप्रसिद्ध उद्योगपति, 1952 से 1958 तक राज्य सभा में सांसद।

अनुराग गोयल- उत्तर प्रदेश कल्याण सिंह मंत्रिमंडल में प्रमुख सचिव।

कालीचरण सर्राफ- विधायक, राजस्थान विधान सभा, अध्यक्ष जयपुर भाजपा।

ज्ञानचंद गुप्ता- भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष, चंडीगढ़ के महापौर।

चरणदास शोरे वाला- हरियाणा राज्य के वित्त मंत्री।

नवलकिशोर, बरेली- स्वाधीनता सेनानी, जेल यात्रा, विधायक उत्तर प्रदेश विधान सभा, 1957 से 1962 तक उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल के सदस्य, लोक सभा में सांसद भी रहे।

छगनलाल भारूका- महाराष्ट्र के स्वाधीनता सेनानी, जेल यात्रा, मध्य प्रदेश के रविशंकर शुक्ल मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री रहे।

छेदालाल गुप्ता- स्वाधीनता सेनानी, जेल यात्रा, उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य, 1958 में लोक सभा सांसद चुने गये।

डी. के. मित्तल- उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव।

ओमप्रकाश खेड़िया- दरभंगा के महापौर।

रामानन्द अग्रवाल- राजस्थान में कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्व नेता।

रामसरनचंद मित्तल– हरियाणा के पूर्व वित्तमंत्री, विधानसभा के अध्यक्ष।

माँगेराम गुप्ता–पूर्व वित्तमंत्री, हरियाणा, हरियाणा प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन एवं हरियाणा व्यापार मंडल के पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा सरकार में विविध उच्च पदों को सुशोभित, अनेक बार जेलयात्रा।

नंदकिशोर गर्ग– दिल्ली विधानसभा में संसदीय कार्य मंत्री, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एवं भाजपा के दिल्ली प्रदेश के महामंत्री रूप में दल के विस्तार में उल्लेखनीय योगदान। 1975 में जेलयात्रा, दिल्ली नगर निगम के भू.पू.पार्षद एवं भाजपा के मुख्य सचेतक, डेसू समिति के सदस्य, श्री अग्रसेन थिर्फट एण्ड क्रेडिट सोसायटी, जयदेव पार्क, दिल्ली की स्थापना में योगदान।

देवेन्द्रकुमार जैन– दिल्ली नगर निगम एवं दिल्ली महानगर परिषद् के सदस्य, 1965 तथा 1971 में नागरिक सुरक्षा संगठन के प्रमुख अधिकारी, आपातकाल में दिल्ली की जेल से छोड़े जाने वाले सबसे अंतिम मीसा बंदी।

सत्यनारायण बंसल– दिल्ली नगर निगम में स्थायी समिति के अध्यक्ष, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ दिल्ली प्रांत के संचालक, गौरक्षा आंदोलन में भाग और जेलयात्रा, आपातकाल में 19 माह मीसा में बंद, भारत प्रकाशन लि० के प्रबंध निदेशक।

रूपचंद गुप्ता-सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के सक्रिय सेनानी, 1948 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर लगे प्रतिबंध के समय ढ़ाई वर्ष की जेलयात्रा, भारतीय

जनसंघ के निष्ठावान कार्यकर्त्ता, विभिन्न सत्याग्रहों व आन्दोलनों में बार-बार जेलयात्रा, समग्र क्रांति आंदोलन के समर्थक, दिल्ली नगर निगम के सदस्य तथा विद्युत प्रदाय संस्थान के अध्यक्ष।

रामेश्वर टांटिया–1957 में लोकसभा सदस्य। अनेक वर्षों तक सांसद, पांच बार कांग्रेस संसदीय पार्टी के कोषाध्यक्ष रहे। स्वतंत्रता आंदोलन के समय श्री जयप्रकाश नारायण, डॉ० राममनोहर लोहिया जैसे क्रांतिकारियों को सहयोग। मृत्यु के बाद आपके ट्रस्ट द्वारा 80 लाख रुपयों का रामकृष्ण मिशन एवं अन्य सार्वजनिक संस्थाओं को दान।

वीरेन्द्र अग्रवाल– सुप्रसिद्ध सासंद, लेखक एवं आर्थिक विषयों के विशेषज्ञ!

श्रीमती जानकी देवी बजाज– सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता जमनालाल बजाज की धर्मपत्नी, स्वतंत्रता आंदोलन में जेलयात्रा, स्वदेशी आंदोलन में विदेशी वस्त्रों की होली, गाँधी जी एवं विनोवा भावे के सिद्धान्तों की अनुयायिनी, महान सामाजिक कार्यकर्तृ।

श्रीमती पार्वती देवी डीडवानिया– दिल्ली में सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व करने वाली प्रथम मारवाड़ी महिला, जिसने स्वाधीनता आंदोलन में अपने पति के साथ अनेक बार जेलयात्रा की।

श्रीमती तारा अग्रवाल– स्वाधीनता सेनानी तथा समाजसेवी, 1930 से 1942 के प्रत्येक आंदोलन में अपने पति प्यारेलाल अग्रवाल के साथ जेलयात्रा। समाज सुधारक, पर्दाप्रथा की कट्टर विरोधी तथा शुद्धि आंदोलन एवं विधवा-विवाह की समर्थक सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्तृ एवं राष्ट्र भक्त।

आर्थिक एवं औद्योगिक क्षेत्र

आज देश-विदेश में भारत का जो भी औद्योगिक एवं व्यावसायिक वर्चस्व दिखाई देता है, उसके मूल में वैश्य अग्रवालों की संघर्षपूर्ण गाथा रही है। वैसे तो ओसवाल, माहेश्वरी, खण्डेलवाल आदि विभिन्न वैश्य समुदाय भी राष्ट्र के इस आर्थिक विकास में समान रूप में भागीदार रहे किन्तु अग्रगामिता अग्रवालों की ही रही है। कर्नल टाड के अनुसार आजादी से पहले 520 मारवाड़ी फर्मों में 333 फर्में केवल अग्रवालों की ही थी, जिनका मूल निवास शेखावाटी था। बिहार, असम और उत्तर बंगाल के व्यापार में तो अग्रवालों का एक प्रकार से आधिपत्य ही हो गया था और आज तो वह भारत की सीमाओं को लांघ अन्तरराष्ट्रीय जगत में भी अपनी प्रतिभा एवं कौशल की छाप अंकित करने में संलग्न है। इस समाज को देश की आर्थिक प्रगति की रीढ़ कहा जाये तो अतिश्योक्तिपूर्ण न होगा।

अग्रोहा से निष्क्रमण और व्यवसाय पर आधिपत्य–इतिहास साक्षी है कि भारत के वैश्य अग्रवाल 16वीं शताब्दी से ही अग्रोहा, राजपूताना से निष्क्रमण कर देश के विभिन्न भागों में फैलने लगे थे और वे लगातार आगे बढ़ते ही गए। आज देश का कोई भूभाग ऐसा नहीं है, जहां इस समाज द्वारा स्थापित कोई उद्योग या व्यापार न हो। ब्रिटिश भारत में भी अनेक ऐसे घराने थे, जिनका व्याापर देश-देशान्तर में फैला था। उनकी गद्दियां दूर-दूर तक विद्यमान थीं। सेठ जयनारायण स्नेहीराम, सेठ ताराचंद घनश्याम दास, सोजीराम हरदयाल, महानंद गनेडी वाले, मिर्जामल पोद्दार, सूरजमल नागरमल

आदि असंख्य फर्में थी, जिनकी साख दूर दूर तक फैलीं थी। विभिन्न वस्तुओं के व्यापार में अग्रवालों ने इतनी प्रगति की थी कि वे अपने व्यवसाय के सम्राट गिने जाते थे।

इसीलिए सेठ हनुमानप्रसाद कनोई टी किंग, गोविदंराम सेक्सरिया और रामनारायण रूईया कॉटन किंग, मोतीलाल झुंझनू वाला सिल्वर किंग, बंशीधर जालान जूट किंग, सेठ बलदेवदास दूदवेवाला शेयर किंग के नाम से सम्बोधित किए जाते थे और व्यापारी उनका नाम लेकर लिखते थे–आज के भाव ये हैं–कल के ..... जाने!

भारत के सभी नगरों में अग्रवाल समाज के उद्यमी छा गए। कुछ मारवाड़ी अग्रवाल कलकता, आसाम, बंगाल होते हुए बर्मा तक पहुंच गए। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा की मण्डियां अग्रवाल व्यापारियों से पट गईं। कलकत्ता का सूतापट्टी बाजार हो या मुम्बई का कालबा देवी बाजार, सम्पूर्ण भारत के मुख्य बाजारों में अग्रवाल सेठों की पगड़ियां दिखाई देने लगीं। अफीम, चांदी, अनाज, कपड़ा, जूट, चाय–जिस व्यवसाय में हाथ लगाया, वही चरम सीमा पर पुहंच गया। यहां तक कि बैंकिंग, बीमा, सर्राफा जैसे अछूते व्यवसायों में भी इस समाज ने अग्रता प्राप्त कर ली। रामगढ़ के पोद्दारों, मध्य भारत के सेक्सरियों, चुरू के बागलाओं की गद्दियां दूर दूर तक प्रसिद्ध थीं।

औद्योगिक जगत में प्रवेश–समय के रूख और आवश्यकता को पहचानते हुए नये उद्योग स्थापित करना इस समाज की प्रवृत्ति रही। धीरे–धीरे वे व्यवसाय–व्यापार से उद्योग–जगत में प्रविष्ट हुए और उन्होंने चाय उत्पादन, जूट प्रेस, आयल मिल, कोयलाखनन, इंजीनियरिंग आदि विभिन्न उद्योगों में वर्चस्व प्राप्त कर लिया। अनेक मारवाड़ी अग्रवालों जैसे हरदतराय चमड़िया, स्नेहीमल डूंगरमल लोहिया, हनुमान बक्स कनोई, हरविलास अग्रवाल, गोविन्दलाल फ्ती, केशोराम पोद्दार, जुग्गीलाल कमलापत सिंहानिया, रामकृष्ण डालमिया, सेठ गूजरमल मोदी आदि ने बड़ी मिलों की स्थापना कर विभिन्न उद्योगों में विशिष्टता प्राप्त की।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इण्डिया में लिखा है कि राजपूताना के मारवाड़ी आंतरिक व्यापार और वित्त पर आधिपत्य रखते थे तथा भारत के सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों में पाए जाते थे। वे बड़े पूंजीपति होने के साथ–साथ छोटे ग्राम साहूकार भी थे। किसी भी जाने माने मारवाड़ी की हुंडी की भारत में ही नहीं, बल्कि विदशों तक में साख थी। इस समाज की साख का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 1918 में श्री केशोराम पोद्दार को जापान के योकोहामा के सोने चांदी के बैंक ने 80 लाख रुपये का ऋण दिया था।

भारतीय बैंकिंग व्यवसाय में इस समाज का अग्रणी स्थान रहा। प्रथम भारतीय मारवाड़ी बैंक की स्थापना बलदेवदास दूदवेवाला और ओंकार मल सर्राफ ने की। रामनारायण रूइया का बैंक आफ इण्डिया की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। मुम्बई में यूनियन बैंक की स्थापना में भी इस समाज के व्यापारियों का योगदान रहा। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामकृष्ण डालमिया ने यूनिवर्सल बैंक आफ इण्डिया और भारत बैंक का स्थापना की। मास्टर लक्ष्मीनारायण ने दिल्ली में सर्वप्रथम वैश्य बैंक की स्थापना की। लाला लाजपतराय पंजाब नेशनल बैंक के प्रवर्त्तकों में थे, बाद में यह बैंक भी डालमिया के नियन्त्रण में आ गया। हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक की स्थापना में श्री पद्मावत सिंघानिया तथा श्री मंगतुराम जैपुरिया का विशेष योगदान रहा।

कर्नल टाड ने 1832 में लिखा था कि भारत में 10 में से 9 बैंकर तथा व्यापारी मारवाड़ी (वैश्य) हैं। कलकत्ता में तो इस समाज के बैंकरों का इतना अधिक प्रभाव था कि व्यापारिक निर्देशिका में आधे के लगभग नाम इस समाज के बैंकरों के हैं।

यही नहीं, रियासती राजाओं के शासन में मालखाने और मोदी खाने का प्रबंध, इसी समाज के लोगों के हाथ में रहा था। राज्य के आर्थिक पदों पर इस समाज के लोगों की नियुक्तियां की जातीं थी और वे आवश्यकता पड़ने पर राजा और सामन्तों को ऋण भी दिया करते थे। प्राचीन बहीखातों से पता चलता है कि बीकानेर, चुरु के राजाओं ने सेठ मिर्जामल पोद्दार से अनेक बार ऋण लिया। उन्हें महाराजा रणजीतसिंह द्वारा कण्ठहार, सरोपा आदि से सम्मानित किया गया।

अंग्रेजी राज्य-यद्यपि पराधीनता-काल में अंग्रेजों और विभिन्न देशों के व्यवसायियों ने यहां से कला-कौशल, व्यवसाय एवं उद्योग धंधों को नष्ट करने की कोई कोशिश बाकी न रखी, फिर भी इस समाज ने अपने औद्योगिक एवं व्यावसायिक वर्चस्व को बनाए रखा, यह उनकी अद्वितीय प्रतिभा एवं कौशल का ही परिणाम था कि अंग्रेजों ने अपनी बड़ी बड़ी कम्पनियों में भी इस समाज के लोगों को ऊंचे पदों पर रखा। यद्यपि प्रारम्भ में बंगालियों का आधिपत्य था किन्तु स्वभाव से आरामपसन्द होने के कारण अग्रवालों ने शीघ्र ही उनका स्थान ले लिया। उन्होंने अंग्रेजी शासन काल में भी चीनी, कपड़े, जूट आदि के अनेक उद्योग स्थापित कर अपनी विशिष्ट प्रतिभा को प्रकट किया।

स्वतंत्र भारत-यह उनके उद्योग एवं व्यवसाय में प्रवेश का ही परिणाम था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उन्होंने अंग्रेजों की सभी बड़ी बड़ी कम्पनियां और मिलें खरीद ली। डालमिया उद्योग समूह ने बेनेट कोलमेन तथा गोवन ब्रदर्स से टाइम्स ऑफ इण्डिया समाचार पत्र खरीद लिया। बद्रीप्रसाद गोयनका ने ओक्टाबिमस स्टील, रामकृष्ण डालमिया ने न्यू सेंट्रल जूट मिल, जैपुरिया ने हार्समन की स्वदेशी कॉटन मिल आदि खरीद कर ब्रिटिश राज्य से सत्ता हस्तान्तरण को सरल बनाया, अन्यथा ब्रिटिश साम्राज्य का हस्तक्षेप किसी न किसी रूप में भारत में बना रहता। यह वैश्य अग्रवाल समाज की राष्ट्र को एक अमूल्य देन कही जा सकती है।

सैकड़ों वर्षों की दासता के पश्चात स्वतंत्र भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्य सहज नहीं था किंतु वैश्य अग्रवाल समाज ने इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। विदेशी कम्पनियां खरीदने के साथ-साथ उन्होंने नये नये उद्योगों की स्थापना की। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 1965 में जे.के. सिंहानिया की 46, सूरजमल नागरमल की 76, गोयनका की 52, बजाज की 21, पोद्दार की 18 कम्पनियां कार्यरत थीं और देश के प्रमुख 20 औद्योगिक घरानों में सर्वाधिक घराने अग्रवाल समाज के थे।

बजाज आटो का स्थान दुपहिया वाहनों के निर्माण में अग्रणी हैं और कुल आवश्यकता का 40% भाग यह पूर्ण करता है। अनेक ऐसी इकाईयां हैं, जो भारत में ही नहीं, अपितु विश्व में सर्वप्रथम है। अग्रवाल उद्योगपति आज सामान्य उद्योगों से निकल कर रेल-वेगन, कार, स्कूटर, सीमेंट, पेपर, कृत्रिम रेशे, रसायन, इस्पात, टायर, उर्वरक, कम्प्यूटर, विद्युत, मशीनरी निर्माण, दूरदर्शन प्रसारण आदि में अन्तरराष्ट्रीय पहचान बना चुके हैं। इस समाज द्वारा स्थापित अनेक उद्योगों को राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गुणवता के

पुरस्कार प्राप्त हुए हैं और भारत सरकार ने इस समाज के अनेकानेक उद्योगपतियों को पद्मविभूषण, पद्मभूषण, पद्मश्री आदि की उपाधियां प्रदान कर उनके बहुमुखी योगदान को रेखांकित किया है।

1981 से 1990 के दशक में इस समाज के अनेक नये उद्योगपतियों ने शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया था। 1980 के समाप्त दशक में जहाँ कुल बिक्री को दृष्टि से इस समाज के जे. के. सिंघानिया समूह (552 करोड़ रुपये), लाला श्री राम समूह (531 करोड़ रुपये), मोदी समूह (425 करोड़ रुपये), बजाज समूह (314 करोड़ रूपये) आदि ही थे, वहाँ 1989-90 को समाप्त दशक में अनेक नये उद्योगपतियों ने बिक्री की दृष्टि से उल्लेखनीय वृद्धिकर प्रथम बीस औद्योगिक घरानों में प्रतिष्ठित होने का श्रेय प्राप्त किया। 1980 के दशक में जहाँ बजाज समूह का 14 वां स्थान था, वहाँ इस समूह ने 1990 के दशक में अपनी बिक्री को 2047 करोड़ रुपये तक बढ़ा चौथा स्थान प्राप्त कर लिया। 1979-80 के दशक में जहाँ आर.पी.पी. एण्टरप्राइजिज (श्री रामप्रसाद गोयन्का समूह) का कहीं तक नाम न था, वहाँ 1990 के दशक में इस औद्योगिक समूह ने एकदम उभर कर 1937 करोड़ की बिक्री द्वारा पाँचवाँ स्थान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार मोदी समूह 1422 करोड़ रुपये की बिक्री करके, सिघानियां समूह ने 862 करोड़ की बिक्री द्वारा 18 वाँ स्थान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।

1991 में निजी क्षेत्र की प्रथम सौ कम्पनियों में अग्रवालों द्वारा संचालित बजाज ऑटो, मोदी, जिंदल स्ट्रिप्स, जे. के. इण्डस्ट्रीज, रेमण्ड वूलन, बजाज टेम्पो, जे. के. सिंघानिया, सिएट टायर आदि अग्रणी थीं। इसी प्रकार सम्पत्ति की दृष्टि से प्रथम सौ कम्पनियों में जे. के. सिंथेटिक्स, बजाज ऑटो, रेमण्ड वूलन, सिएट टायर, जिंदल स्ट्रिप्स, मोदीपान, मोदी रबड़, जे. के. इण्डस्ट्रीज आदि का नाम प्रमुख था।

स्मरणीय है कि अनेक औद्योगिक प्रतिष्ठान जहाँ प्रथम बीस में अपना स्थान बनाए रखने में असमर्थ रहे, वहाँ इस समाज के उद्योगपतियों ने न केवल अपना वर्चस्व बनाये रखा, अपितु बिक्री वृद्धि में प्रतिमान स्थापित कर उच्च स्थान के अधिकारी रहे। एक अध्ययन के अनुसार रामप्रसाद गोयन्का ने इस दृष्टि से अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने में जो सफलता प्राप्त की है, वह आश्चर्यजनक है। 1980 में उनकी व्यावसायिक यात्रा 79 करोड़ रूपये से प्रारम्भ हुई, वहाँ एक दशक बाद उनका साम्राज्य 2000 करोड़ रुपयों का हो गया। देश के सबसे बड़े पाँचवें इस समूह की जेब में सिएट टायर, सी.ई.एस.सी, हरिसंस मलयालम, के.ई.सी. इण्टरनेशनल, आई.सी.आई.एम. स्पेंसर एण्ड कं. आदि सुप्रसिद्ध कम्पनियां आ गई हैं और पिछले 10 सालों में उन्होंने ब्लूचिप्स में सबसे ऊंची जगह वाली कम्पनियों को हस्तगत और उन्हीं के बल पर 2000 करोड़ का साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की है, जो इस समाज की महान औद्योगिक प्रतिभा एवं क्षमता का परिचायक है।

इस समाज के उद्योगपति बड़े बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों के उच्च पदों पर सुशोभित हैं और उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में उच्च कोटि की प्रतिभा का परिचय दिया है।

रामप्रसाद पोद्दार सेंचुरी टेक्सटाइल्स एंड इण्डस्ट्रीज मुंबई के वर्षों तक वरिष्ठ अध्यक्ष रहे और सूती कपड़ा उद्योग में अनेक नई तकनीकों का समावेश किया। आप बिड़ला समूह के अनेक उच्च संस्थानों पिलानी इन्वेस्टमेंट एंड इण्डस्ट्रीज कार्पोरेशन

लि., उद्योग सर्विसेज लि., नवभारत रेफ्रिजरेशन एंड इण्डस्ट्रीज लि. में निदेशक रहे। आपकी गणना उच्चकोटि के प्रबंध निर्देशकों में होती थी।

श्री रामकृष्ण बजाज हिंदुस्थान लि. के चेअरमेन रहे।

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री विजयपत सिंघानिया रेमंड वूलन सिल्क मिल्स लि. जैसी देश की सबसे बड़ी ऊनी कपड़ा मिल के संचालन का गौरव प्राप्त है।

इसी समाज के श्री सुभाष गोयल हैं, जो मनोरंजन के क्षेत्र में बेताज बादशाह माने जाते हैं। उनके द्वारा स्थापित एस्सेल वर्ल्ड पार्क एशिया का अपने ढंग का सर्वोत्तम म्युजिक पार्क हैं। उनके द्वारा प्रसारित जी. टीवी., जी. सिनेमा, जी. इण्डिया टीवी. (एल. टीवी.), म्यूज़िक एशिया, सीटी केबल्स आदि प्रमुख चैनलों के कार्यक्रम आज सम्पूर्ण विश्व में बड़ी ही रूचि से देखे जाते हैं। आज यह निजी क्षेत्र का मीडिया व्यवसाय में सबसे बड़ा ग्रुप माना जाता है। आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर गोइन्का के सुपुत्र हैं और आपको अनेक वर्षों तक ट्रस्ट की अध्यक्षता करने का गौरव प्राप्त हुआ है। आपने करोड़ों की लागत से सेटेलाइट स्टेशन 'अग्रणी' की स्थापना की है, जिससे अनेक चैनलों के कार्यक्रम एक साथ देखे जा सकते हैं।

टेलीविजन के निर्माण में श्री सीताराम जीवरामका का नाम उल्लेखनीय है।

इसी प्रकार श्री गिरधारीलाल सेक्सरिया का नाम सिनेलेबोरेटरी के क्षेत्र में अग्रणी है। आपने मिलग्रे सिने लेबौरेटरी तथा रेमफोर्ड रिसर्च लेबोरेटरी की स्थापना की है। इन संस्थाओं की गणना भारत में फिल्म तैयार करने वाली अग्रणी संस्थाओं में होती है।

श्री शंकरलाल धानुका का चाय उद्योग में महत्त्वपूर्ण स्थान है। धनसेरी चाय उद्योग के रूप में आपका करोड़ों रूपयों का व्यवसाय है। आप प्रतिवर्ष 20 लाख किलोग्राम चाय एवं 100 टन काफी का उत्पादन करते है। आपने करोड़ों की लागत से रींगस में पोली स्पिन उद्योग लगाकर औद्योगिक क्षमता का परिचय दिया है।

श्री रामनाथ पोद्दार वस्त्रनिर्माण के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा रखते हैं और आपके पोद्दार ग्रुप की गणना देश के प्रमुख औद्योगिक समूहों में होती है।

श्री गुलजारी लाल केड़िया का वनस्पति उद्योग में विशेष स्थान है।

श्री हल्दीराम को भुजिया एवं नमकीन उद्योग में विशेष स्थान प्राप्त है।

मद्रास की अधिकांश रोलिंग मिलें अग्रवालों के हाथ में है।

श्री श्रीकृष्ण खेतान ने पंखों के निर्माण में विशेष ख्याति प्राप्त की है। सुप्रसिद्ध खेतान पंखों के आप निर्माता हैं। उषा पंखों का निर्माण श्रीराम समूह द्वारा किया जाता है, जो संसार के अनेक देशों में निर्यात किए जाते हैं।

श्री सीताराम जीवराजका सलौरा के नाम से बैटरी के सैल बनाने वाले प्रमुख उद्योगपति हैं।

श्री खेतीलाल शाह ने ऑटोमैटिक स्विच के निर्माण में विशेष दक्षता प्राप्त की है।

श्री ओमप्रकाश जिंदल भारत में लौह पुरुष माने जाते है। आप द्वारा स्थापित जिंदल ग्रुप की गणना भारत के ही नहीं, विश्व के सबसे बड़े स्टील उत्पादकों में होती है।

श्री आर. पी. मोदी का भी लौह उद्योग में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में श्री सत्य प्रकाश आर्य, श्री प्रभुदयाल डाबड़ी वाला, श्री घनश्याम दास गोयल आदि का नाम अग्रणी है। ट्रांसपोर्ट जगत की अधिकांश कम्पनियां

जैसे ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन ऑफ इंडिया, ए.बी.सी. इण्डिया लि., इकोनोमिक ट्रांसपोर्ट आर्गेनाइजेशन प्रा. लि., प्रेशियस केरिंग कार्पोरेशन, यातायात इण्डिया लि. आदि अग्रवाल उद्योगपतियों के हाथ में है। इसी प्रकार जूता-चप्पल व्यवसाय उद्योग में इस समाज द्वारा संचालित लिबर्टी एवं एक्शन शूज उद्योग शीर्ष पर है।

सहकारिता के क्षेत्र में जमनालाल गोयनका का नाम अग्रणी है। कृषि के क्षेत्र में महाराष्ट्र के श्री बद्रीनारायण चार वालों का नाम विशेष गौरव से लिया जा सकता है, जिन्होंने संकरित बीज प्रक्रिया द्वारा संशोधन संवर्द्धन से महीको बीजों के उत्पादन द्वारा जालना का नाम भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में रोशन कर दिया है। आप कृषिरत्न होने के साथ सुप्रसिद्ध उद्योगपति भी हैं। देवकीनंदन देवड़ा ने अनगिनत गृहनिर्माण समितियों, ग्राहक भण्डारों, पेढ़ियों की स्थापना कर सहकारिता के क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की है। श्री सतनारायण गर्ग को सहकारिता पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

यही वह वर्ग है, जो राष्ट्र को सर्वाधिक मात्रा में कर देता है। राष्ट्र के लाखों लोगों को रोजगार एवं आवश्यकता की वस्तुएं उपलब्ध कराने तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर की वस्तुओं का उत्पादन कर विदेशी मुद्रा के अर्जन एवं देश को स्वावलम्बी बनाने में विशिष्ट भूमिका निभाता है।

इस समाज के उद्यमियों ने अनेक ऐसी इकाईयां स्थापित की हैं, जिन्हें विश्व में अनेक नये उत्पादनों का श्रेय प्राप्त है। इनमें जे.के. कैमिकल्स, जे.के. रेयान, अल्यूमिनियम कार्पोरेशन आफ इण्डिया आदि का नाम गौरव से लिया जा सकता है। जे.के. कैमिकल्स ने 1961 में प्रथम बार हाइड्रोसल्फेट सोडा उत्पादन कर प्रतिमान स्थापित किया।

विश्व में नवीनतम तकनीकी पर आधारित कई औद्योगिक इकाइयों की स्थापना का श्रेय भी इसी समाज को है। भारत के आर्थिक विकास में तो उन्होंने नये कीर्तिमान स्थापित किए ही हैं, साथ ही अनेक एशियाई, यूरोपियन एवं उन्नत राष्ट्रों में अपने उत्पादनों की धाक जमाई है और प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों के उत्पादन विदेशों को निर्यात कर यह समाज राष्ट्र के विदेशी मुद्राकोष को भरता है।

इस समाज के अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें विश्व स्तर पर आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ एवं भारत के सर्वोच्च प्रतिष्ठानों पर नियुक्ति प्राप्त हुई है। श्री विमल जालान को रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया का गवर्नर नियुक्त किया गया है, जो आर्थिक क्षेत्र के सर्वोच्च पदों में है। इससे पूर्व आप विश्व बैंक में भारत के अधिशाषी निदेशक (एक्जीक्यूटिव डाइरेक्टर) रह चुके हैं। अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष में भारत के अधिशाषी निदेशक के रूप में प्रतिनिधित्व करने का श्रेय भी आपको प्राप्त हो चुका है। आप सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं वित्त मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार रहे हैं।

श्री के.सी. मित्तल सामान्य बीमा निगम (जनरल इंश्योरेंस कम्पनी) तथा श्री जी.पी. गुप्ता यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया के चेअरमेन हैं। आर.सी. गोयन्का जयपुर स्टॉक एक्सचेंज के अध्यक्ष एवं फेडरेशन ऑफ इण्डिया स्टॉक एक्सचेंज के सचिव रहे हैं। श्री वी.के. अग्रवाल रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और श्री यू.के. मित्तल स्टील अथोरिटी ऑफ इण्डिया के निदेशक (वाणिज्य) हैं। श्री ओमप्रकाश गोयन्का को भी जयपुर स्टॉक एक्सचेंज की अध्यक्षता का गौरव प्राप्त है। भारत सरकार के कम्पट्रोलर एवं आडिटर जनरल (सी.एण्ड ए.जी.) के महत्त्वपूर्ण पद पर रह चुके बाबू ज्ञानप्रकाश (सोनीपत) भी इसी समाज से हैं।

इस समाज के उद्योगपतियों ने अनेक उच्च पुरस्कार प्राप्त कर अपनी विशिष्ट प्रतिभा की छाप अंकित की है। सुप्रसिद्ध सार्वजनिक प्रतिष्ठान भिलाई हेवी इलेक्ट्रिकल्स के प्रबंध निदेशक एवं अध्यक्ष श्री पी.एस. गुप्ता को ख्याति प्राप्त कोहिनूर अवार्ड से सम्मानित होने का गौरव मिला है। इसी प्रकार भवन निर्माण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री एस. के. गर्ग ने 1991 का राजीव गाँधी श्रेष्ठता पुरस्कार प्राप्त कर अपनी प्रतिमा का परिचय दिया है। श्री लक्ष्मणप्रसाद अग्रवाल, आगरा को भारत सरकार ने विशिष्ट कोटि एवं महत्त्वपूर्ण आविष्कारों के लिए 1989 तथा 1991 में राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया है। श्री अग्रवाल के इन आविष्कारों से राष्ट्र को लगभग 500 करोड़ रूपये प्रतिवर्ष का लाभ हुआ है।

श्री संजीव अग्रवाल की फर्म स्टाइल क्राफ्ट इण्टरनेशनल मुरादाबाद को निर्यात क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए बिजनेस एक्सीलेंसी अवार्ड, जोधपुर के पंकज अग्रवाल को इण्डिया इण्टरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी द्वारा हेण्डीक्राफ्ट के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं प्रशंसनीय कार्यों के लिए विजयश्री राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा सुप्रसिद्ध उद्योगपति हरविलास गुप्ता को श्रेष्ठ उद्यमी के रूप में पुरस्कृत किया गया है।

श्रीमती सुशीला अग्रवाल को लघु उद्योग विकास संगठन ने 1995-96 की सर्वश्रेष्ठ महिला उद्यमी पुरस्कार से सम्मानित किया है। श्रीमती अग्रवाल ने विश्व के अनेक देशों में बीकानेरी भुजिया एवं पापड़ को पहुंचा कर अपनी विशेष दक्षता का परिचय दिया है। आपके प्रयासों से ही पेप्सी को बीकानेरी भुजिया को पेटेन्ट कराने के अधिकार से रोका जा सका। इसी प्रकार श्री विमल केडिया, श्री पदमचंद जैन, श्री जी. पी. पोद्दार, श्री सुधीर मित्तल, श्री संजीव अग्रवाल (स्टोन एज प्रा. लि.), अनिल मित्तल (उद्योगरत्न), श्री शीतल कुमार अग्रवाल (राजीव गांधी एकता पुरस्कार), श्री जगमोहन अग्रवाल (उद्योग रत्न) आदि अनेक उद्योगपतियों को पुरस्कृत होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

अग्रवाल वैश्य समाज के आर्थिक योगदान का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि देश की 500 अग्रणी कम्पनियों में 250 से अधिक वैश्य समुदाय की हैं और आज सभी प्रमुख औद्योगिक घराने जैसे बजाज, सिंघानिया, मोदी, पोद्दार, रूईया, जटिया, भरतिया, जिंदल, बिंदल, श्रीराम, खेतान, डालमिया, कनोई, धानुका, तोदी, सेक्सरिया, लोहिया, सुरेका, जैपुरिया, मुरारका, मानसिंहका, झूंझनूवाला, पीरामल, डी.सी.एम., कानोडिया, चोखानी, गोयन्का, बाजोरिया, भुवालका, जाजोदिया, सांघी, जालान, खेमका, चमड़िया, सोंथलिया, केजड़ीवाल, डाबड़ीवाला आदि इस समाज के हैं और वे सतत मुनाफा कमा राष्ट्र के आर्थिक विकास में योगदान दे रहे हैं।

इस समाज के आर्थिक क्षेत्र में योगदान का अनुमान केवल इन कतिपय हस्ताक्षरों से जाना जा सकता है, जो भारत के औद्योगिक जगत की नामी-गिरामी हस्तियां हैं। इनमें राहुल बजाज, राजीव बजाज, (बजाज ऑटो), हरिशंकर सिहांनिया (जे.के. समूह), संजीव गोयन्का (सी.ई.एस.सी.), हर्ष गोयन्का (के.ई.सी. इण्टरनेशनल), बी.एम. खेतान (मेकाल्ड रसेल), वी.पी. अग्रवाल (प्रकाश इण्डस्ट्रीज), प्रमोद मित्तल (इस्पात इण्डस्ट्रीज), सोम मित्तल (डिजिटल इक्विपमैंट) रतन जिंदल, एस.एस.जिंदल, सज्जन जिंदल (जिंदल समूह), ओमप्रकाश जिंदल (जिंदल स्ट्रिप्स, जिंदल आयरन एंड स्टील कम्पनी, सा पाइप्स लि., जिंदल फेरो अलायज लि., विजय नगर स्टील लि.), एच. वी.

गोयन्का (सीएट), दीपक कुमार सिंहानिया (एल.एम.एल.), एस.एस. डालमिया (डालमिया सीमेंट), आर.पी. मोदी (हिन्दुस्तान डेवलपमेंट), आर.आर. बजाज (ओटिस ओलिवेटर), रविप्रकाश खेमका (एन.ई.पी.सी.), शशि व रवि रूईया (एस्सार समूह), विजयपत सिंहानिया (रेमंड), रघुपति सिंहानिया (जे.के. इण्डस्ट्रीज), रमेश कुमार एस. गोयन्का (सौशिष डायमण्डस), सुनील वी. मित्तल (भारती टेलीकॉम), ब्रजभूषण सिंघल (भूषण स्टील), के.के. मोदी (गुडफ्रे फिलिप्स), एल.एन. झूंझनूवाला (राजस्थान स्पिनिंग), ए.पी. लोहिया (वुलवर्थ), एच.वी. गोयन्का (सर्ल), के.के. जाजोदिया (असम कम्पनी), आई. के. अग्रवाल (गुजरात सिद्धि सीमेंट), जयदयाल डालमिया (डालमिया सीमेंट), गौरव डालमिया (ओ.सी. एल), प्रेमचंद जैन (डी.सी. डब्ल्यू), रवि सांघी (सांघी इण्डस्ट्रीज), एम.आर. गुप्ता (लायड्स मेटल एण्ड इंजीनियर्स), बालमुकंद जिंदल (विकास डब्ल्यू.एस.पी. लि.), बी.डी. अग्रवाल (सूर्या रोशनी), संजीव गोयन्का (हरिसन मलयालम), आर.एस. अग्रवाल (ए.बी.एस. इण्डस्ट्रीज), एस. के. मोदी (मोदी होवर इंटरनेशनल) दिनेश डालमिया (स्कवेयर डी. साफ्टवेयर), पी.के. गोयन्का (किट प्लाई), ओ.पी. लोहिया (इण्डोरामा), गौरहरि सिंहांनिया, सुदेश कुमार भुवालका, विनोद कुमार पित्ती, चरतराम भरतराम, सिद्धार्थ, श्री राम, कान्ति कुमार पोद्दार, रामनाथ पोद्दार, जगदीश चोखानी, रामकृष्ण डालमियां, रमेश चन्द्र गर्ग (के.एस. समूह), प्रभुदयाल डाबड़ीवाल (टी.सी. समूह) आदि के नाम का उल्लेख ही पर्याप्त होगा। वैसे पूरे भारत का औद्योगिक एवं व्यावसायिक जगत ऐसे नामों से भरा पड़ा है।

इस समाज के अनेक उद्योगपतियों ने अखिल भारतीय उद्योग एवं वाणिज्य महामंडल के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया है। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री केदार नाथ मोदी ऐसे ही व्यक्ति हैं, जिन्हें यह सम्मान मिला है।

इस समाज की अनेक विभूतियां हैं, जिनकी गणना विश्व के सबसे सम्पन्न व्यक्तियों में होती है। श्री लक्ष्मी नारायण मित्तल ब्रिटेन में बसे भारतीय व्यवसायी हैं, जिनकी गिनती ब्रिटेन के सबसे बड़े पांच अमीरों में की जाती है। उन्होंने दुनिया में निजी क्षेत्र में इस्पात बनाने वाली सबसे बड़ी कम्पनी बना ली है और उनकी सम्पत्ति 150 करोड़ पोंड के बराबर आंकी जाती है। उनकी शानदार दावतें प्रसिद्ध हैं और वे उत्तरी लंदन में 65 लाख पोंड के आलीशान भवन में रहते हैं। उनकी अवस्था 46 वर्ष मात्र है।

इसी प्रकार अमेरिका में बसे श्री विनोद गुप्ता विश्व के उन 400 व्यक्तियों में है, जिनकी सम्पत्ति 4000 लाख डालर से अधिक है। आप अमेरिकन बिजनेस इन्फारमेशन इन्कार्पोरेशन के स्वत्वाधिकारी है।

श्रीमती राधा जालान अमेरिका की जानी-मानी महिला उद्योगपति हैं, जिन्होंने शोध प्रक्रिया को उद्योग में परिवर्तित कर यह सफलता अर्जित की है। आप मासासूसेट्स ईंधन सेल शोध कम्पनी 'इलेक्ट्रो फेन इंक' की अध्यक्षा और कलकत्ता के एक मारवाड़ी परिवार की सुपुत्री हैं। आपकी ईंधन सेल प्रौद्योगिकी में हाइड्रोजन और आक्सीजन की मदद से ईंधन उत्पादित किया जाता है, जो अंतरिक्ष उड़ानों के लिए प्रयुक्त होता है। आपके शोध के इस महत्त्व को देखते हुए अमेरिका के नेशनल एयरोनोटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) ने अढ़ाई लाख डालर का अनुदान दिया है तथा अमेरिकी ऊर्जा

विभाग ने आपको साढ़े सात लाख डालर का पुरस्कार प्रदान किया है, जो अग्रवाल समाज की उद्योग-क्षेत्र में प्रतिभा का सर्वोच्च प्रमाण है।

सामाजिक क्षेत्र में

सामाजिक सुधार की दृष्टि से यह समाज सदैव अग्रणी रहा है और उसने सदैव गतिशीलता का परिचय देते हुए युग के साथ कदम बढ़ाए हैं। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, वृद्ध एवं अनमेल विवाह, छूआछूत आदि कुरीतियों को दूर कर समाज में स्वस्थ परम्पराओं की स्थापना में इसकी भूमिका अग्रणी रही है। वैवाहिक कुरीतियों, आडम्बरों, दिखावे आदि के विरुद्ध इस समाज की विभूतियों ने सदैव संघर्ष किया है। इस समाज के ही श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने आज से 100 वर्ष पूर्व वैश्य सभा की स्थापना कर समाज सुधार की जिस प्रक्रिया को प्रारम्भ किया था, वह आज भी अविरत चालू है। इस समाज के देशव्यापी संगठनों ने विविध सम्मेलनों के आयोजन एवं सभाओं द्वारा उनके उन्मूलन की दिशा में सशक्त प्रयास किए हैं।

यह समाज हमेशा सामाजिक समता का पक्षधर रहा है। इसने कभी ऊँच नीच की भावना को प्रश्रय नहीं दिया है। इस समाज ने सामाजिक समता की उच्चकोटि की परम्पराएं स्थापित की। उदाहरण रुप में इनके परिवारों में जो भी महिलायें आतीं, चाहे वे किसी भी जाति की क्यों न हों, उन्हें समान रुप से चाची, ताई, दादी के आदर सूचक सम्बोधन से सम्बोधित किया जाता। यहाँ तक घर के नौकरों को भी परिवार का सदस्य समझा जाता तथा उनके बच्चों के विवाहादि में सम्मिलित होना प्रसन्नता का विषय माना जाता। इस समाज के लड़के की बारात यदि किसी स्थान में जाती तो गाँव की सभी लड़कियों को बेटी-बहन मान उन्हें पतलें एवं भेंट राशि भिजवाई जाती। गाँव के निर्धन परिवारों की कन्याओं का गुप्त रूप से विवाह इस समाज के लोग अपना धर्म मानते आये हैं। विशेष कर ब्राह्मण कन्या का विवाह और कन्यादान तो इस समाज के लोग बड़ा ही पुनीत कार्य समझते हैं। वे गाँव की सभी लड़कियाँ को अपनी बेटी समझ के भात; छूछक आदि में सम्मिलित होते हैं।

ये वे परम्पराएं हैं, जिनके आधार पर इस समाज ने सामाजिक समरसता का उच्चकोटि का उदाहरण प्रस्तुत किया।

यह इस समाज का पारस्परिक सद्भाव एवं समानता के स्तर पर व्यवहार ही था, जिसके कारण इस समाज के लोग पूरे गांव के मुखिया तथा चौधरी माने जाते थे।

बाल विधवाओं के विवाह तथा उनकी दशा में सुधार के लिए सरगंगाराम, लाला लाजपतराय आदि ने जो प्रयत्न किए, वे इस समाज के प्रगतिशील दृष्टिकोण के परिचायक हैं। इस समाज ने कभी संकीर्ण जातीयता की भावना को प्रश्रय नहीं दिया और उसका दृष्टिकोण अत्यंत विशाल रहा। सामाजिक समरसता, सहिष्णुता सदैव इस समाज के आदर्श रहे हैं।

विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से समाज सुधार-अग्रवाल वैश्य समाज को संगठन एवं एकता के सूत्र में आबद्ध करने तथा सामाजिक समस्याओं के प्रभावी ढंग से निवारण हेतु समाज में समय-समय पर विभिन्न प्रकार के संगठनों का निर्माण होता रहा है और उनके माध्यम से समाज को नई गति, नई दिशा देने का प्रयास होता रहा है। यहां हम ऐसे ही कतिपय अग्र/वैश्य संगठनों के कार्यों का उल्लेख करेंगे।

अखिल भारतीय वैश्य महासभा-सम्पूर्ण भारत के अग्रवाल एवं वैश्यों को संगठित करने का यह सर्वप्रथम प्रयास था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जबकि अंग्रेज सरकार द्वारा भारत के वैश्य समाज की शक्तियों को छिन्न-भिन्न किया जाने लगा तथा समाज में नई-नई कुरीतियों का जन्म होने लगा तो समाज सुधार की दृष्टि से 1892 में लाला दुर्गाप्रसाद, फरुखाबाद के नेतृत्व में 'वैश्य महासभा' का गठन किया गया। इस महासभा ने वैश्य अग्रवाल जाति के संगठन एवं सुधार की दिशा में अनेक कदम उठाये और 1892 से लेकर 1944 तक भारत के कोने-कोने में लगातार अधिवेशनों का आयोजन कर सामाजिक जागरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। पर्दा प्रथा, बालविवाह, वृद्ध विवाह, दहेज, दिखावा आदि के विरुद्ध इस महासभा ने आवाज उठाई और उसके अच्छे परिणाम सामने आए। किन्तु 1944 के 37वें मेरठ सम्मेलन के बाद इस संगठन के कार्यों में शिथिलता आने लगी। फिर भी महासभा को गतिशील बनाने के प्रयास समय-समय पर होते रहे। 1950 में मेरठ के बड़ौत नगर तथा 1956 में रायबहादुर सेठ गूजरमल मोदी की अध्यक्षता में आयोजित कानपुर के अधिवेशन में वैश्य महासभा को पुनर्जीवित करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया गया। वैश्यों के आर्थिक उन्नयन से सम्बन्धित अनेक प्रस्ताव सर्वप्रथम इसी सम्मेलन में पारित हुए और इसी सम्मेलन में अन्तर उपवर्गीय विवाहों को सहमति प्रदान की गई।

इस महासभा के प्रमुख उद्देश्य थे-वैश्य समाज में जागृति लाना, संगठन को मजबूत बना भ्रातृत्वभाव बढ़ाना, समाज की आर्थिक उन्नति तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना। इस दिशा में सभा ने समय-समय पर प्रयत्न किये। सन् 1896 में बाल-विवाह में सुधार के दृष्टिकोण से विवाह के पात्र लड़कों की आयु 16 वर्ष तथा लड़कियों के लिए 14 वर्ष निश्चित की। उर्दू के स्थान पर हिन्दी तथा संस्कृत के प्रयोग को प्रोत्साहित किया। संस्कृत हिन्दी के छात्रों को अध्ययनार्थ छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं तथा हिन्दी की पुस्तकों पर पारितोषिक प्रदान किए। स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए भी विशेष कदम उठाये गये। व्यावसायिक उन्नति के लिए औद्योगिक शिक्षा हेतु छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की गई और शिल्प प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया।

सन् 1901 की जनगणना में जब वैश्यों के लिए 'बनिया बक्काल' शब्द का प्रयोग किया गया तो सभा ने उसका घोर विरोध कर उसे 'वैश्य' स्वीकृत कराया।

सभा की प्रेरणा से मेरठ तथा आगरा में अनेक शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण एवं प्रवर्त्तन हुआ, जिनमें अधिकांश आज भी कार्यरत हैं।

वैश्य महासभा के कार्यों और संगठन को वर्तमान शताब्दी के 9वें दशक के प्रारम्भ में उस समय बल मिला, जब 26 अप्रैल 1981 को नई दिल्ली धर्मभवन में विभिन्न 37 उपवर्गों के 150 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के नाम से देशव्यापी संगठन के निर्माण की विधिवत घोषणा की गई। इस सम्मेलन ने सुषुप्त वैश्य समाज में नई चेतना के संचार का सशक्त प्रयास किया और उसीका परिणाम है कि आज वैश्य समाज अपने अधिकारों के प्रति पहले से कहीं अधिक जागरुक है और पूरे राष्ट्र में जन-जागरण की एक नई लहर व्याप्त है। सम्मेलन ने सामाजिक कुरीतियों के निवारण की दिशा में अनेक रचनात्मक एवं ठोस कदम उठाये है तथा परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाहों के आयोजन द्वारा समाज में नई क्रांति का सूत्रपात किया है।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा–यह अग्रवालों का सबसे पुराना संगठन है। अग्रवाल समाज में जाग्रति लाने और सामाजिक समस्याओं के निवारण हेतु इस महासभा की स्थापना श्री जमनालाल बजाज के प्रयत्नों से 1918 में हुई और इसका प्रथम अधिवेशन मुम्बई के सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास की अध्यक्षता में वर्धा में सम्पन्न हुआ।

सन् 1919 में इसका द्वितीय अधिवेशन मुम्बई में सम्पन्न हुआ, जिसमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी पधारे और उनकी अपील पर महासभा ने 50000/– रु. की राशि हिन्दी प्रचारार्थ उन्हें भेंट की।

इसी अधिवेशन में 9 लाख रुपयों की राशि से मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष की स्थापना की गई, जिसने समाज के बालक–बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने और उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया और आज भी यह कोष इस दिशा में महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर रहा है।

मुंबई के माटूंगा क्षेत्र में अग्रवाल नगर की स्थापना की गई, जिससे जातीय बंधुओं को आवास संबंधी सुविधा प्राप्त हुई।

महासभा का तृतीय अधिवेशन **श्री नवरंगराय खेतान** की अध्यक्षता में जयपुर में हुआ। महासभा द्वारा अग्रवाल पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया। 1921 के अधिवेशन की अध्यक्षता श्री प्रताप सेठ जी ने की और यह सम्मेलन इंदौर में हुआ। 1922 में भिवानी के सेठ मेलाराम वैश्य की अध्यक्षता में आयोजित सम्मेलन में अग्रवाल जाति के इतिहास को तैयार करने पर बल दिया गया और महासभा की प्रेरणा एवं आर्थिक सहयोग से, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा 'अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास' नामक शोधग्रंथ का प्रणयन हुआ।

सन् 1923 में कानपुर में मुम्बई के सेठ आनन्दीलाल पोद्दार की अध्यक्षता में अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में व्यापार तथा अर्थनीति पर विशेष चर्चा हुई। इस अधिवेशन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अग्रसेन जयंती की तिथि का निर्धारण था। इस प्रस्ताव में कहा गया कि– 'यह महासभा इच्छा प्रकट करती है कि जाति के समस्त भाई महाराजा अग्रसेन का स्मारक उत्सव प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को मनावें तथा बंदी रखें।' इस प्रस्ताव के बाद सम्पूर्ण भारत में आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को अग्रसेन जयंती समान रूप से मनाई जाने लगी। जातीय जागरण की दृष्टि से यह निर्णय अत्यंत महत्त्वपूर्ण था।

सन् 1924 में मुम्बई के सेठ शिव नारायण नेमानी की अध्यक्षता में फतेहपुर में अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में अग्रवाल बंधुओं में परस्पर रोटी–बेटी का सम्बन्ध स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

1926 में सेठ जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में आयोजित महासभा के अधिवेशन में महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव अग्रवाल महिलाओं को महासभा के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित होने का अधिकार देना था। नारी जागरण की दिशा में यह महत्त्वपूर्ण कदम था।

1927 में सेठ केशवदेव नेवटिया की अध्यक्षता में कलकत्ता में अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में विधवा विवाह को लेकर समाज सुधारकों एवं रूढ़िवादियों के मध्य तीव्र विवाद हुआ किन्तु सुधारवादी युवकों के प्रभाव से झरिया के श्रीनागरमल

लील्हा का विवाह एक विधवा के साथ करा दिया गया, जो समाज सुधार की दृष्टि से साहसिक कदम था।

सन् 1928 में श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार की अध्यक्षता में मुंबई में सभा का दसवां महाधिवेशन सम्पन्न हुआ किन्तु विधवा-विवाह से उत्पन्न विवाद को देखते हुए श्री पोद्दार ने सभापति पद ग्रहण नहीं किया। इस पर सभापति का पद सेठ रंगलाल जाजोदिया ने ग्रहण किया। कट्टर रूढ़िवादियों ने विधवा विवाह के सम्बन्ध में अपनी चलती न देख एक अलग संगठन 'अग्रवाल महापंचायत' बना लिया। इसका प्रथम अधिवेशन मारवाड़ी अग्रवाल महासभा, मुम्बई के कक्ष में धूमधाम से मनाया गया।

1929 का एकादश अधिवेशन सुप्रसिद्ध उद्योगपति रायबहादुर गोविंदलाल पित्ती की अध्यक्षता में अजमेर में हुआ। इस अधिवेशन में विधवा विवाह का खुल कर समर्थन किया गया।

सन् 1930 के द्वादश अधिवेशन में अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के नाम में से मारवाड़ी शब्द हटाकर उसे अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा कर दिया गया। इस प्रकार यह सभा का मंच सभी अग्रवालों के लिए समान रूप से खोल दिया गया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्री देवीप्रसाद खेतान ने की।

सन् 1931 का तेरहवां अधिवेशन लाला फकीरचंद जैन की अध्यक्षता में कलकत्ता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में गैर मारवाड़ी अग्रवाल भी प्रभूत मात्रा में सम्मिलित हुए।

1932 में चौदहवां अधिवेशन श्री पद्मराज जैन की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ।

पंद्रहवां अधिवेशन श्री बसन्तलाल मुरारका की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में समाज सुधार संबंधी कई निर्णय लिये गए।

सन् 1934 में इसका सोलहवां अधिवेशन 'दैनिक विश्वामित्र' के सम्पादक श्री मूलचंद अग्रवाल की अध्यक्षता में हुआ और इसमें अग्रवाल समाज से स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की अपील की गई।

सन् 1934 के बाद इस संगठन की गतिविधियां शिथिल पड़ गईं क्योंकि देश में आजादी का आंदोलन जोर पकड़ रहा था। साथ ही इस संगठन के जो नेता थे, वे ही स्वतंत्रता सेनानी भी थे, अत: वे संगठन की गतिविधियों की ओर विशेष ध्यान न दे सके।

लगभग 14 वर्ष बाद 1948 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस संगठन को सुप्रसिद्ध समाज सेवी मास्टर लक्ष्मीनारायण के प्रयत्नों से पुन: जागृत किया गया और इसका अधिवेशन आचार्य जुगलकिशोर की अध्यक्षता में दिल्ली में सम्पन्न हुआ। मंत्री पद लाला लाजपतराय के भतीजे श्री चम्पतराय एडवोकेट ने संभाला। इस अधिवेशन में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव अग्रोहा को पुन: बसाने का था। इसका 18वां अधिवेशन अग्रोहा में हुआ और अधिवेशन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध उद्योगपति कमलनयन बजाज ने की। इस अधिवेशन में अग्रोहा के पुनरुद्धार, वहां टेक्निकल इंजीनियरिंग कालेज खोलने तथा अग्रसेन जयंती धूमधाम से मनाने के निर्णय लिये गये।

महासभा का 19वां अधिवेशन कलकत्ते के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री ईश्वरदास जालान की अध्यक्षता में नागपुर में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में मुख्य रूप से स्त्रियों में प्रचलित पर्दा प्रथा को दूर करने पर बल दिया गया।

सन् 1968 में इसका अधिवेशन दिल्ली में सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री जे. आर. जिंदल की अध्यक्षता में हुआ। मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल इसके महामंत्री निर्वाचित हुए।

इसका 21वां अधिवेशन 1972 में दिल्ली में ही सम्पन्न हुआ और अधिवेशन की अंध्यक्षता पूर्ववत् श्री जे.आर. जिंदल ने की।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट-अग्रोहा विकास ट्रस्ट अग्रवाल समाज का सबसे प्रमुख संगठन है। इस ट्रस्ट की स्थापना अग्रोहा को अग्रवालों के पांचवें धाम के रूप में विकसित करने और उसके निर्माण कार्यों को गति देने के उद्देश्य से की गई। प्रारम्भ में श्री तिलकराज अग्रवाल अग्रोहा निर्माण के संयोजक बनाए गये और उन्हीं के नेतृत्व में अग्रोहा विकास ट्रस्ट के विधान का प्रारूप तैयार कर उसे 1976 के इंदौर अधिवेशन में स्वीकृति प्रदान की गई। 9 जुलाई 1976 को ट्रस्ट का विधिवत् पञ्जीयन हो उसे आयकर में छूट का प्रमाणपत्र प्राप्त हो गया और 29 सितम्बर 1976 को उसके तत्वावधान में अग्रोहा निर्माण की नींव रख दी गई।

वैसे तो अग्रोहा निर्माण के लिए प्रयास लम्बे समय से चालू थे किन्तु उसे क्रियान्वित करने का श्रेय अग्रोहा विकास ट्रस्ट को प्राप्त है। इस ट्रस्ट को प्रारम्भ में जहां श्री चाननमल बंसल, श्री देवीसहाय जिंदल, श्री श्रीकिशन मोदी, श्री बालकृष्ण गोयन्का, श्री रामेश्वरदास गुप्त, श्री बंसल जैसे प्रतिष्ठित महानुभावों का वरदहस्त मिला, वहां श्री नंदकिशोर गोयन्का, श्री सुभाष गोयल एवं श्री हरपतराय टांटिया का जुड़ना वरदान स्वरूप सिद्ध हुआ। इसकी निर्माण समितियों को भी श्री लालमन आर्य, श्री ओमप्रकाश जिंदल जैसे समर्पित कार्यकर्त्ताओं का संरक्षण मिला, जिससे अग्रोहा निर्माण का कार्य तेज से तेज होता गया और आज उन्हीं के प्रयत्नों का परिणाम है कि अग्रोहा न केवल अग्रवालों के पांचवें धाम के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है, अपितु विश्व के सर्वश्रेष्ठ दर्शनीय स्थल के रूप में दुनिया के मानचित्र में अपना स्थान बनाने को व्यग्र है।

इस तीर्थस्थल के विकसित हो जाने से सम्पूर्ण अग्रवाल समाज ही नहीं, वैश्य समाज अपने अधिकारों के प्रति जाग उठा है। उसमें संगठन एवं एकता की भावना प्रबल होती जा रही है। अग्रोहा विकास समितियों के माध्यम से ज्यों-ज्यों ट्रस्ट के कार्यों का विस्तार हो रहा है, त्यों-त्यों समाज का संगठन व्यापक रूप धारण करता जा रहा है। समाज में नया आत्मविश्वास, नवीन उत्साह जागा है। उसे प्रथम बार अनुभव हुआ है कि वह अकेला नहीं, समाज के तीन करोड़ व्यक्ति उसके साथ हैं।

महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के आयोजन ने तो इस जाग्रति में मंत्र ही फूंक दिया है। इस रथयात्रा के फलस्वरुप अग्र समाज में जो जागृति आई है उसे देखते हुए लगता है, सम्पूर्ण वैश्य समाज शीघ्र ही अग्रोहा के झंडे तले एकत्र हो अपनी विजय-पताका सम्पूर्ण विश्व में फहरा सकेगा और दुनिया में महाराजा अग्रसेन के समानता, भाई-चारे, परस्पर सहयोग, सहिष्णुता, प्रेम, अहिंसा, एक रूपैया, एक ईंट जैसे आदर्शों का गूंजेगा गान, जिससे होगा-भव्य मानवता का निर्माण, जहां कोई दु:खी न होगा, सब सुखी होंगे। शान्ति, प्रेम और अहिंसा का बोलबाला होगा। कोई अपने लिए नहीं जीएगा अपितु सब एक के लिए, एक सब के लिए जीएंगे।

अग्रोहा में शरद पूर्णिमा पर आयोजित होने वाला मेला सम्पूर्ण विश्व एवं देशदेशान्तर में फैले अग्रवालों के विचारों के आदान-प्रदान, समस्याओं पर मिलजुल विचार कर और

निर्णय लेने का माध्यम बन चुका है। , जहां से संदेश पा समाज के सभी घटक अपनी अपनी कुरीतियों को दूर करने और एक आदर्श समाज के निर्माण का संकल्प एवं प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। जाति-पांति, वर्ग-अपवर्ग आदि के संकीर्ण भेदभाव जहां अतीत के विषय होते जा रहे हैं।

यह ट्रस्ट के प्रयत्नों का ही परिणाम है कि हरियाणा सरकार ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में महाराजा अग्रसेन तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में बालमुकुन्द गुप्त शोधपीठ स्थापित करने की मांग सिद्धान्तत: स्वीकार करली है। हिसार में अग्रसेन भवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण जमीन प्रदान करने की घोषणा की है और वहाँ विशाल भवन का निर्माण हो चुका है। अग्र/वैश्यों के बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए हरियाणा से प्रथम बार किसी अग्रवाल को राज्य सभा में प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया।

देहली में नगरनिगम ने निकलसन पार्क में दस लाख रुपयों की लागत से महाराजा अग्रसेन की भव्य कांस्य प्रतिमा लगाई गई। यह मूर्ति भारत वर्ष में अब तक लगी महाराजा अग्रसेन की प्रतिमाओं में सबसे भव्य है। दिल्ली नगर निगम ने इस पार्क की भव्य व विशाल मूर्ति के अनुरूप साज सज्जा के लिए लाखों रूपयों की योजना बनाई है। दिल्ली सरकार ने इस पार्क का नाम बदल कर महाराजा अग्रसेन पार्क कर दिया है।

ट्रस्ट एवं सम्मेलन के प्रयत्नों से भारत का डाक-तार विभाग महाराजा अग्रसेन, डॉ० राममनोहर लोहिया, श्री शिवप्रसाद गुप्त, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, सर गंगाराम व श्री श्रीप्रकाश आदि पर डाक टिकट प्रकाशित कर चुका है। संसद के केन्द्रीय हाल में डॉ० राममनोहर लोहिया, श्री श्रीप्रकाश आदि के आदमकद चित्र लगाये जा चुके हैं। जो दूरदर्शन, महाराजा अग्रसेन पर कभी एक पंक्ति का उल्लेख नहीं करता था, उस पर महाराजा अग्रसेन के वृत्तचित्रों का प्रसारण होने लगा है।

भारत सरकार ने 350 करोड़ रूपयों की लागत से 145000 टन की क्षमता वाले जहाज का नामकरण महाराजा अग्रसेन पर कर तथा दिल्ली से भारत-पाक-सीमा फाजिल्का तक फैले राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 10 का नामकरण महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय मार्ग घोषित कर महाराजा अग्रसेन को राष्ट्रीय मान्यता प्रदान की है। इस दृष्टि से दिल्ली से कन्याकुमारी तक के फैले सुपर नेशनल हाई वे नं. 1 का महाराजा अग्रसेन के नाम पर नामकरण इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना है। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी अवध विश्वविद्यालय का नामकरण डॉ० राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय करके तथा राज्य की राजधानी लखनऊ में उनके नाम पर करोड़ों की लागत से हस्पताल बनाने तथा प्रतिवर्ष लाखों रुपयों के पुरस्कार देने की घोषणा कर इस समाज की भावनाओं का आदर किया है।

दिल्ली सरकार ने भी एक महाविद्यालय का नामकरण महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय करके अग्रवाल समाज तथा महाराजा अग्रसेन के बढ़ते प्रभाव को मान्यता दी है। दिल्ली के विधान सभा चुनावों में भारी मात्रा में अग्रवालों का विधायक रूप में चुने जाना तथा दिल्ली सरकार में प्रभावी प्रतिनिधित्व भी इस समाज के बढ़ते प्रभाव का द्योतक है।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट के प्रयत्नों के फलस्वरूप देश के कोने-कोने, नगर एवं गांवों में अग्र-वैश्य संगठनों की स्थापना होने लगी है। महिला एवं युवा संगठन बनने लगे हैं, जिससे समाज में अभूतपूर्व जागृति है। अग्रोहा विकास ट्रस्ट से सम्बद्ध संस्थाओं की संख्या जहां प्रारम्भ में नाममात्र 50-60 थी, वहां आज यह संख्या चार अंकों का आंकड़ा

छू चुकी है। तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, केरल, पंजाब, मध्यप्रदेश नागालैण्ड, महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा व असम के दूरस्थ इलाके जहां अग्रसेन, अग्रोहा को कोई जानता तक न था, महाराजा अग्रसेन का संदेश घर-घर पहुंच चुका है।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट के तत्वावधान में राष्ट्रीय महिला समिति का गठन भी किया गया है, जो महिलाओं में जागृति लाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रही है।

मुबंई की महिला समितियों द्वारा बनवासी बंधुओं की सहायतार्थ विशेष प्रोजेक्ट हाथ में लिया गया है और उन्हें लाखों रुपयों की सामग्री सहायतार्थ भिजवाई जा रही है। समय-समय पर अनेक प्रकार के सांस्कृतिक आयोजनों एवं प्रतियोगिताओं द्वारा भी ये समितियां सामाजिक सुधार एवं जागरण की दिशा में विशेष योगदान दे रही हैं।

ट्रस्ट की मुम्बई समिति द्वारा बनवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु 1200 एकल विद्यालयों को गोद लेकर 25 लाख रुपयों से अधिक राशि भिजवा इस दिशा में उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है। मुंबई में इसके लिए 1000 सेवा पात्रों की व्यवस्था की गई है, जिनमें बनवासी बंधुओं की सहायतार्थ प्रतिदिन एक रुपया या अधिक राशि संग्रहीत की जाती है। इस प्रकार के 5000 पात्र अग्रवाल घरों में रखने की योजना है। दिल्ली में भी इसी प्रकार की समितियां सभी उपनगरों, बस्तियों में स्थापित की जा रही हैं। दिल्ली समिति द्वारा नगर की विभिन्न बस्तियों में मुफ्त नेत्र चिकित्सा शिविरों का आयोजन हो रहा है जो कि अत्यन्त ही सराहनीय प्रयास है।

ट्रस्ट ने समय-समय पर वैवाहिक परिचय सम्मेलनों, सामूहिक विवाह समारोहों आदि के आयोजन एवं वैवाहिक विवादों को शान्तिपूर्ण ढंग से निपटाने का कार्य भी हाथ में लिया है। प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन भी किया जा रहा है तथा भ्रूण परीक्षण के नाम पर होने वाली बालिका-हत्या को रोकने तथा उसके विरुद्ध वातावरण तैयार करने के लिए भी विशेष योजनाएं बनाई गई हैं। निर्धन परिवारों की कन्याओं की विवाह में सहायतार्थ एक वैवाहिक कन्याकोष की भी स्थापना की गई है।

दिल्ली में महाराजा अग्रसेन न्यूज एजेंसी की स्थापना की गई है जो समाज से सम्बन्धित समाचारों को समाचार पत्रों, दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि में समाजार भेजने का कार्य करेगीं।

पूरे राष्ट्र में जाग्रति का स्वर है। सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध वातावरण बन रहा है। दहेज, दिखावा, फिजूलखर्ची की ओर समाज का ध्यान गया है। महिलाओं, युवकों में अद्‌भुत जाग्रति है। जो महिलायें कभी घर से बाहर नहीं निकला करती थीं, वे महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के स्वागत में हजारों की संख्या में हाथ में कलश लिए निकल पड़ी हैं। पूरे मुंबई एवं महाराष्ट्र में तो समाज संगठन की पूरी कमान अग्रवाल महिलाओं ने संभाली हुई है। मुंबई में ऐसा कोई नगर-उपनगर नहीं है, जहां महिला एवं युवा इकाई कार्यरत न हो। ट्रस्ट के पदाधिकारी समाज के संगठन को मजबूत बनाने के लिए देश भर में दौरे कर रहे हैं। सद्‌भावना यात्राएं आयोजित की जा रही हैं। इस संबंध में ट्रस्ट द्वारा आयोजित नेपाल, सिलीगुड़ी, सिक्किम आदि की यात्राएं विशेष उल्लेखनीय हैं।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने अग्रोहा तथा अग्रवाल समाज के इतिहास तथा युद्धभूमि में शौर्य और पराक्रम प्रदर्शित कर सम्मान अर्जित करने वाले अग्रवीरों की गाथायें प्रकाशित कर समाज के बंधुओं में एक नया आत्मविश्वास जगाया है। इससे उनमें नया गौरव पैदा

हुआ है। अग्रोहाधाम पत्रिका का भी इस दिशा में अति महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके प्रेरक सम्पादकीयों एवं उच्चकोटि की सामग्री ने देश के अग्र/वैश्य बंधुओं की भावनाओं को नया स्वर दिया है।

यह ट्रस्ट के प्रयत्नों का ही परिणाम है कि देश के कोने-कोने में महाराजा अग्रसेन और अग्रपुरुषों की प्रतिमाएं लग रही हैं। मार्गों, चौराहों, पार्कों, सार्वजनिक स्थानों के नाम अग्रकुल प्रवर्तक पर रखे जा रहे हैं। अग्रवालों द्वारा स्थापित सार्वजनिक संस्थाओं का विस्तार हो रहा है। पूरे देश में अग्रसेन भवनों, अग्रवाल धर्मशालाओं, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सा, शोध संस्थानों आदि के निर्माण की बाढ़ सी आई हुई है। नित-नूतन नये-नये भवनों का निर्माण हो रहा है।

आज देश का व्यापारी वर्ग जाग उठा है, वैश्य वर्ग के कर्मचारी एवं अधिकारी अपने अधिकारों के प्रति अधिक सचेत हैं, उत्पीड़न एवं शोषण के विरुद्ध रोष का स्वर है और यह समाज अब किसी भी प्रकार की उपेक्षा-उत्पीड़न सहने के लिए तत्पर नहीं है। वह विजय की रणभेरी बजा चुका है और राष्ट्र के धरातल पर गौरव के नये क्षितिज स्थापित करने को आतुर है।

श्री रामप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार

अग्रोहा विकास ट्रस्ट की सामाजिक सेवा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि श्री रामप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना है। यह पुरस्कार अग्रवाल समाज के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री रामप्रसाद पोद्दार की स्मृति को स्थायी बनाने, उनकी सेवाओं, अनुशासन, त्याग, सादगीपूर्ण जीवन, सरल स्वभाव आदि को समाज के समक्ष प्रस्तुत कर उनसे कार्यकर्त्ताओं का प्रोत्साहन प्रदान करने की दृष्टि से प्रारम्भ किया गया है ताकि आगे आने वाली पीढ़ियों को उत्तरदायित्व की भावना समझने एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को समाज हेतु कार्य करने की प्रेरणा मिले।

पुरस्कार सम्बन्धी प्रमुख प्रावधान इस प्रकार रखे गये है-

1. पुरस्कार के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक लाख रूपये नकद, शील्ड, शाल तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जायेंगे।
2. पुरस्कार प्राप्त करने वाला व्यक्ति भारत अथवा भारतीय मूल का नागरिक होना चाहिये।
3. महाराजा अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित समानता, लोकतंत्र, अंहिसा के प्रति-निष्ठा एवं समर्पण की भावना हो।
4. पावन भूमि अग्रोहा के निर्माण और विकास में सक्रिय योगदान तथा जिसके कार्यों से समाज को गौरव एवं कार्यकर्त्ताओं को प्रेरणा प्राप्त हुई हो।
5. समाज में साहित्यिक, संगठनात्मक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, यांत्रिक आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य।

श्री द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार

ट्रस्ट ने 1998 से श्री द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार के नाम से 51000-51000 रुपए के दो पुरस्कार प्रारम्भ किए हैं। ये पुरस्कार सिरसा (हरियाणा) के दानवीर श्री द्वारिका प्रसाद सर्राफ के सहयोग से प्रारम्भ किये गए हैं। इन पुरस्कारों हेतु आपने

महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के समारम्भ पर 601011/- रुपए की राशि देने की घोषणा की।

ये पुरस्कार महाराजा अग्रसेन के सिद्धान्तों में आस्था रखने वाले तथा उनके आदर्शों के प्रचार-प्रसार में रत, विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त उन व्यक्तियों/संस्थाओं को दिए जाएंगे, जिनका

(1) अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल के प्रचार-प्रसार, सामाजिक संगठन तथा समाज सुधार की दिशा अथवा पावन तीर्थ अग्रोहा के विकास तथा निर्माण में विशेष योगदान रहा है।

(2) अग्रोहा, अग्रसेन, वैश्य, अग्रवाल सम्बन्धी उपलब्धियों/इतिहास पर शोध अथवा तत्सम्बंधी श्रेष्ठ मौलिक साँहित्य का लेखन/प्रकाशन किया हो।

(3) धार्मिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, साहित्य, कला, चिकित्सा, शोध, समाज सेवा आदि के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि, जिससे समाज का नाम ऊंचा तथा उसके गौरव में अभिवृद्धि हुई हो।

इन पुरस्कारों के अन्तर्गत 51000-51000 रुपए की राशि के अलावा स्मृतिफलक शाल, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल आदि भेंट किए जाते हैं और उन्हें अग्रोहा मेले पर दिया जाता है।

वास्तव में अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना और उसकी उपलब्धियां अग्रवाल समाज के 5000 वर्ष के इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन-श्री रामेश्वरदास गुप्त के प्रयत्नों से दिल्ली में 5-6 अप्रेल 1975 को अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसी सम्मेलन में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के नाम से एक नये संगठन के निर्माण की घोषणा की गई। श्री रामेश्वरदास गुप्त की अध्यक्षता में ही सम्मेलन का विधान आदि बनाने के लिए एक तदर्थ समिति का गठन किया गया और समिति की सिफारिशों के आधार पर ही अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का गठन कर 6 सितम्बर 1975 को उसके विधान को स्वीकृति प्रदान कर दी गई तथा श्री रामेश्वरदास गुप्त इसके महामंत्री चुने गये।

सम्मेलन ने महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल से सम्बन्धित प्रामाणिक इतिहास तैयार करने और अग्रोहा को तीर्थस्थान के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया।

सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन 4-5 मई 1976 को इन्दौर में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्री बनारसीदास गुप्त ने की। अधिवेशन में अग्रोहा के निर्माणार्थ अग्रोहा विकास ट्रस्ट के विधान को स्वीकृति दी गई।

सम्मेलन के प्रयत्नों से 24 सितम्बर 1976 को महाराजा अग्रसेन पर डाक टिकट जारी किया गया। डाक टिकट का विमोचन भारत के राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद द्वारा किया गया। 29 सितम्बर 1976 को भूमिपूजन के साथ अग्रोहा में निर्माण कार्य का शुभारम्भ कर दिया गया और इस प्रकार अग्रोहा निर्माण के प्रारम्भ में सम्मेलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

सम्मेलन ने अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज एवं हस्पताल के निर्माण तथा अग्रोहा विकास प्राधिकरण के गठन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सम्मेलन के प्रयत्नों से देश भर में 'अग्र संगठनों' का निर्माण हुआ, जो सामाजिक कुरीतियों के

उन्मूलन एवं परिचय सम्मेलनों तथा सामूहिक विवाहों के आयोजन द्वारा समाज सुधार की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। सम्मेलन के प्रयत्नों से अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल पर इतिहास का प्रकाशन हुआ।

सम्मेलन ने समय-समय पर अपने अधिवेशन आगरा, दिल्ली, अलवर, हैदराबाद, वाराणसी, कलकत्ता, रोहतक, मुंबई, शिवपुरी, अहमदाबाद, इंदौर आदि में कर समाज से सम्बन्धित समस्याओं पर जनसाधारण का ध्यान आकर्षित किया और उनके समाधान के लिए प्रयत्न किए। सम्मेलन के सोलहवें राष्ट्रीय अधिवेशन को तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा एवं प्रधानमंत्री श्री इंद्रकुमार गुजराल ने सम्बोधित किया। दिल्ली के मुख्य मंत्री श्री साहिबसिंह वर्मा ने अपने उद्‌बोधन में अग्रवाल समाज को दिल्ली के 5 अस्पतालों में धर्मशाला निर्माण हेतु सहायता देने की घोषणा की।

सम्मेलन ने अपना ध्यान मुख्य रूप से त्रिसूत्री कार्यक्रम पर केन्द्रित किया है-

(1) देश के अग्रवाल समाज के साथ-साथ वैश्य समाज के समस्त घटकों को एक मंच पर संगठित करना।

(2) समाज में फैली कुरीतियों को जड़मूल से खत्म करना।

(3) अग्रवालों की जन्मभूमि अग्रोहा को तीर्थरूप में विकसित करना।

अग्रवाल-वैश्य समाज के उत्पीड़न, सरकारों द्वारा जाति-पांति आदि के आधार पर नियुक्तियों एवं अग्रवाल समाज की उपेक्षा, दान, दहेज, दिखावा फिजूल खर्ची आदि के विरोध में सम्मेलन ने समय समय पर प्रस्ताव पारित कर उनके विरुद्ध वातावरण बनाने का प्रयत्न किया है। सम्मेलन ने राजनीति में अग्रवाल/वैश्य समाज के समुचित प्रतिनिधित्व की भी मांग की। आर्थिक सम्पन्नता एवं अग्रवालों द्वारा वाणिज्य महासंघ के निर्माण हेतु प्रस्ताव भी पारित किए गये। सम्मेलन में श्री रामेश्वरदास गुप्त के साथ श्री बनारसीदास गुप्त एवं श्री प्रदीप मित्तल का अध्यक्ष एवं महांमंत्री के रूप में प्रमुख योगदान रहा है।

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन-अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन भारत के सभी वैश्य घटकों को एकता एवं संगठन के सूत्र में आबद्ध करने और उनकी गौरव-गरिमा को पुनर्प्रतिष्ठापित करने का सशक्त प्रयास है। इस सम्मेलन की स्थापना के लिए 27 अप्रेल 1981 को नई दिल्ली में श्री बनारसीदास गुप्त की अध्यक्षता में विभिन्न वैश्य घटकों के 150 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और वैश्य समाज के समक्ष उपस्थित समस्याओं एवं चुनौतियों पर गहराई से विचार करते हुए वैश्यों के अखिल भारतीय संगठन को बनाने का निर्णय लिया गया और उसका संविधान तैयार करने के लिए श्री बजरंगलाल जाजू के संयोजन में एक समिति का गठन किया गया। समिति द्वारा तैयार संविधान पर 2 नवम्बर 1982 को नई दिल्ली में विचार किया गया अखिल भारतीय वैश्य सम्मेलन का विधिवत गठन कर श्री बनारसीदास गुप्त को अध्यक्ष तथा श्री रामेश्वर दास गुप्त को महामंत्री चुना गया। 1997 में श्री रामदास अग्रवाल ने इसका अध्यक्ष पद संभाला।

इस सम्मेलन ने अपनी स्थापना के बाद भारत के 15 करोड़ वैश्यों को संगठित करने तथा उनके राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि के लिए अनेक प्रयास किए हैं। उड़ीसा, पंजाब, असम, पश्चिमी बंगाल आदि जहां-जहां इस समाज के लोगों का उत्पीड़न हुआ, इस सम्मेलन ने उनके विरुद्ध सशक्त आवाज उठाई।

वैश्यों को राजनीतिक दृष्टि से अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए सम्मेलन ने 15 अक्टूबर 1989 को दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला मैदान में वैश्य एकता रैली का आयोजन किया। इसी प्रकार की विशाल रैलियों का आयोजन पटना, लखनऊ तथा देश के अन्य भू-भागों में भी किया गया।

सम्मेलन ने स्थान-स्थान पर अपनी इकाईयां स्थापित कर तथा विभिन्न उपजातियों की शिरोमणि संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित कर संगठन को गति देने का प्रयास किया है। अब सम्मेलन की शाखाओं का विस्तार प्रायः सम्पूर्ण भारत में हो गया है। सम्मेलन ने अपने कार्यों के विस्तार के लिए दिल्ली, हैदराबाद, सागर आदि विविध स्थानों पर बैठकें आयोजित कर इस समाज की समस्याओं के समाधान के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए हैं।

इस दृष्टि से दिल्ली में एक विशाल वैश्य भवन के निर्माण, वैश्य समाज की पत्रिका के प्रकाशन, किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा प्रदर्शित करने वाले वैश्य बंधुओं को एक लाख रुपये का पुरुस्कार प्रतिवर्ष देने, संसद् एवं विधान सभाओं में वैश्य प्रतिनिधित्व को बढ़ाने आदि के निर्णय लिए गए हैं।

सम्मेलन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि 1992-93 में मेरठ में वैश्य एकता शताब्दी समारोह का आयोजन था। इस समारोह में भारत के राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा सहित पूरे देश के गणमान्य व्यक्तियों ने पर्याप्त संख्या में भाग ले अभूतपूर्व एकता का परिचय दिया, जिससे देश के वैश्य बंधुओं में व्यापक चेतना का समावेश हुआ है।

अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासंघ- अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासंघ की स्थापना 9-10 जुलाई 1977 को शाह आडिटोरियम, दिल्ली में आयोजित एक कार्यकर्त्ता अधिवेशन में हुई।

महासंघ का प्रथम महाधिवेशन 30-31 दिसम्बर 1978 को मुरादाबाद में हुआ। उसके बाद दिल्ली, मेरठ, रोहतक, बहादुरगढ़, दिल्ली आदि में इसके अधिवेशन सम्पन्न हो चुके हैं। इस संघ के द्वारा एक पाक्षिक पत्र 'यशलोक' का भी प्रकाशन किया जाता है। संघ वैवाहिक कुरीतियों को दूर करने, शादी विवाह में भंगड़ा नाच आदि बंद करने, विवाह शादियों में फिजूलखर्ची रोकने, समाज को संगठित करने आदि के लिए प्रयत्नशील है। संघ ने 10 दिसम्बर 1982 को राष्ट्रपति ज्ञानी जेलसिंह के सम्मान में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया। नवम्बर 1982 में इसके कार्यकर्त्ताओं ने बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को एकत्र किये गये वस्त्रों की 21 पेटियां भेंट की। महासंघ का पांचवां अधिवेशन 30-31 दिसम्बर 1995 को दिल्ली के लाल किला मैदान में हुआ जिसमें अग्रवाल समाज की राजनीतिक भूमिका पर विचार किया गया और दिल्ली में महाराजा अग्रसेन भवन के निर्माण का निर्णय लिया गया।

अखिल भारतीय अग्रवाल युवा संगठन-अखिल भारतीय अग्रवाल युवा सम्मेलन का जन्म अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के एक प्रस्ताव द्वारा 1975 में हुआ। इसका प्रथम सम्मेलन 4 फरवरी 1978 को मद्रास में हुआ। उसके बाद से यह संगठन लगातार सक्रिय है। अग्रवाल युवाओं की शक्ति का संगठित कर उनके माध्यम से सामाजिक क्रांति लाने एवं अग्रवाल समाज की गौरव गरिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए यह संगठन प्रयत्नशील है। सम्मेलन समय-समय पर विविध स्थानों पर अपने अधिवेशन

आयोजित कर अग्रवाल समाज के अधिकारों के प्रति जाग्रति लाने के लिए प्रयासरत रहता है। सम्मेलन 'युवा अग्रवाल' नाम के पाक्षिक पत्र का भी प्रकाशन करता है। इसका केंद्रीय कार्यालय दिल्ली में है। अग्रसेन दर्पण नामक पुस्तिका भी प्रकाशित की है। श्री अर्जुनकुमार एवं श्री ओमप्रकाश अग्रवाल इसके प्रमुख कार्यकर्त्ता रहे हैं।

इन सामाजिक संगठनों की स्थापना के अलावा-हरिजनोद्धार, अछूतोद्धार, अस्पृश्यता निवारण आदि मामलों में भी यह समाज सदैव अग्रणी रहा है। लाला लाजपतराय, जमनालाल बजाज, सीताराम सेक्सरिया, वसन्त लाल मुरारका जैसी अनेकानेक विभूतियों ने तन-मन-धन से इन समस्याओं के निवारण में सहयोग दिया है। जमनालाल बजाज ने गाँधीवादी आदर्शों के लिए अपना पूरा जीवन होम दिया। वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने गाँधी जी के आह्वान पर अपने वर्धा स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर के किवाड़ हरिजनों के लिए खोल दिए। यहाँ तक कि उन्होंने अपने भोजन-निर्माण के लिए हरिजन कर्मचारी की नियुक्ति कर रखी थी। गाँधीजी के हरिजन पत्र के संचालन में भी उन्होंने विशेष योगदान दिया।

गाँधीजी के रचनात्मक कार्यों में भी इस समाज का उल्लेखनीय योगदान रहा और आज भी चालू है। इस सम्बंध में जमनालाल बजाज फाउण्डेशन द्वारा प्रवर्तित पुरस्कारों का उल्लेख अपेक्षित होगा। इस फाउण्डेशन द्वारा इस हेतु अनेक पुरस्कारों का प्रवर्तन किया गया है। एक लाख रुपये का विशेष पुरस्कार प्रतिवर्ष ऐसे व्यक्ति या संस्था को प्रदान किया जाता है, जिसका रचनात्मक कार्यों में विशेष योगदान रहा हो। इसके अलावा 50-50 हजार रूपये को दो पुरस्कार ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र में विशेष सामाजिक सेवा करने वाले संगठन को प्रदान किए जाते हैं। महिलाओं एवं बच्चों के कल्याणार्थ कार्य करने वाले समाजसेवियों/संगठनों को भी एक लाख रूपये का जानकी देवी बजाज पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इनके अलावा विदेशों में गाँधीवादी मूल्यों का प्रसार करने वाले व्यक्तियों को भी जमनालाल बजाज अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार देने की व्यवस्था की गई है।

निष्कर्ष रुप में अग्रवाल समाज का सामाजिक सेवाओं का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति व धर्म

भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं जीवनमूल्यों का अग्रवाल समाज मूल आधार रहा है, यदि यह कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस समाज के लाला हरदेवसहाय प्रो. रामसिंह, विश्व हिन्दू परिषद् के विष्णुहरि डालमिया, अशोक सिंघल जैसे नेताओं ने हिन्दू धर्म के मानबिंदुओं की रक्षार्थ हमेशा अपने आपको समर्पित किया है और आज भी यह समाज धर्म की ध्वजा अपने सबल हाथों में संभाले है। भगवती भागीरथी गंगातट पर स्थित सभी तीर्थों के विकास में इस समाज का जोरदार योगदान रहा है और हरिद्वार, बनारस, इलाहाबाद, उज्जयिनी, नासिक, सभी तीर्थ स्थानों में अग्रवालों द्वारा निर्मित मन्दिर, धर्मशाला, अन्न क्षेत्र, सदावर्त इसके साक्षी हैं।

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, जयदयाल गोयन्का एवं घनश्यामदास जालान आदि इसी समाज की महान धार्मिक विभूति थे। आपने गीता प्रेस की स्थापना कर धार्मिक जगत की महान सेवा की। भारतीय सभ्यता, संस्कृति धर्म के प्रचार में इस संस्था का जो योगदान

है, वह सर्वविदित है। श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ने विश्व प्रसिद्ध धार्मिक पत्र कल्याण का सम्पादन कर तथा विपुल मात्रा में धार्मिक एवं आध्यात्मिक साहित्य का सृजन कर भारतीय धर्म के संदेश को घर-घर पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आप सर्वधर्म समभाव के महान उपासक थे। आपने गोरखपुर में गीता वाटिका की भी स्थापना की।

श्री जयदयाल गोयन्का गीता तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों के सबसे बड़े प्रचारक और गीता के महानभाष्यकार थे। आपकी गीतातत्व विवेचनी गीता की श्रेष्ठ व्याख्या है। आपने कलकत्ता के गोविंद भवन, चुरू के ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, स्वर्गाश्रम के गीताभवन, वृंदावन, नवद्वीप, चित्रकूट आदि में भजनाश्रमों की स्थापना द्वारा धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में महान कार्य किया। आप भक्तप्रवर, ज्ञानशिरोमणि तथा कर्मयोग की आदर्श मूर्ति थे।

वृंदावन में भजनाश्रम धार्मिक क्षेत्र में जो कार्य कर रहा है, वह सर्वविदित है। इस संस्था के संचालन में श्री जानकीदास पाटोदिया का विशेष योगदान रहा। हजारों निराश्रित माइयों को आजीविका प्रदान कर तथा रामनाम संकीर्तन के प्रचार में यह संस्था उल्लेखनीय कार्य कर रही है।

भगवान श्रीकृष्ण जन्मभूमि के उद्धार में हनुमानप्रसाद पोद्दार, जयदयाल डालमिया आदि का पर्याप्त योगदान रहा। श्री डालमिया साहित्य, संस्कृत, धर्म, समाज की सेवा में सदैव तत्पर रहे। श्री जयदयाल गोयन्का के प्रभाव से आपने चमड़े के जूते न पहनने का संकल्प लिया और पूर्णरूप से निर्वाह किया। आपने भगवान कृष्ण की प्राकट्य स्थली श्रीकृष्ण जन्मभूमि के उद्धार में अत्यधिक योगदान किया। वहां भागवत भवन की स्थापना की और उसे हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार केंद्र के रूप में प्रतिष्ठापित किया। श्री रामनाथ गोयन्का का भी इसमें पर्याप्त योगदान रहा।

श्री शिवप्रसाद गुप्त ने काशी में भारत माता मंदिर की स्थापना करके धार्मिक क्षेत्र में एक नया प्रतिमान स्थापित किया। इस मंदिर का उद्घाटन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने किया।

प्रो. रामसिंह वर्षों तक हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रहे और हिंदू धर्म की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे। हैदराबाद के हिंदुओं को धर्मस्वातंत्र्य का अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने जेल यातनाएं सहीं।

लाला लाजपतराय ने आर्यसमाज से प्रभावित होकर ईसाई मिशनरियों के धर्मपरिवर्तन सम्बंधी कुचक्र को देखते हुए अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। वे चाहते थे कि गरीब एवं हरिजनों के बच्चे ईसाई मिशनरियों के जाल में फंसने से बचे रहे। उन्होंने उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में पहुंच कर अस्पृश्यता निवारण के लिए भी बहुत कार्य किया।

श्री राममनोहर लोहिया ने चित्रकूट में रामायण मेले का आयोजन कर भारतीय धर्म, सभ्यता, संस्कृति के संरक्षण में सहयोग दिया।

काशी पीठाधीश्वर रामशरणाचार्य जी महाराज हिंदू धर्म के श्रेष्ठ विद्वान हैं। आपने रामजन्म भूमि मुक्तियज्ञ एवं अन्य धर्म कार्यों में उल्लेखनीय सहयोग दिया। आप बालोतरा की रामानंद सम्प्रदाय की गद्दी पर आसीन हैं। आपने काशी में सीताराम काशी पीठ का निर्माण कराया।

श्री दाऊदयाल गुप्त, मथुरा ने विश्व संकीर्तन परिवार नाम से देशभर में संकीर्तन शाखाओं की स्थापना की और आध्यात्मिकता एवं नैतिकता का प्रचार-प्रसार किया। आपने संकीर्तन युग पत्रिका के माध्यम से भी हरिनाम संकीर्तन का प्रचार किया। श्रीकृष्ण चरित मानस, श्री हनुमान चरित मानस, महारास, पांचाली, गीत रामायण, श्याम संदेशों, भक्ति योग आदि आपकी रचनाएं हिंदू धर्म के श्रेष्ठ ग्रंथ हैं।

श्री सुरेंद्र अग्रवाल अध्यात्म जगत की विभूति हरिबाबा के भक्त हैं। आपने दशकों तक धार्मिक पत्रिका 'श्री हरिकथा' का सम्पादन कर सनातन धर्म का संदेश घर-घर पहुंचाया है।

श्री केदारनाथ गुप्ता ने श्री राधामाधव संकीर्तन मण्डल तथा सनातन धर्म सभा के माध्यम से श्रीकृष्ण भक्ति के प्रचार में संक्रिय योगदान दिया है। आपका वेदान्त स्वामी प्रभुपाद के हरे कृष्ण आंदोलन को पूरे विश्व में फैलाने में अनुपम सहयोग रहा। जब स्वामी जी आंदोलन के प्रचारार्थ सर्वप्रथम ब्रिटेन गए तो आपने ही उन्हें सर्वप्रथम सहयोग दिया। ब्रिटेन, अमेरिका, जापान, कनाडा, जर्मनी, इटली आदि में शाकाहार के प्रचार में भी आपका योगदान रहा। आपने श्रीमद् भागवत का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कराया और अपना सम्पूर्ण जीवन श्रीकृष्ण नामामृत प्रचार अभियान में लगा दिया। लंदन एवं विदेशों में श्री राधाकृष्ण एवं राधागोविंद के विग्रह स्थापित करने में भी आपकी भूमिका रही। आपने वृदावन में भक्तिवेदान्त स्वामी आश्रम तथा श्री राधारास बिहारी मंदिर की स्थापना की।

गौ, गंगा, गायत्री इस समाज के हमेशा से पवित्र मानबिंदू रहे हैं। सनातन धर्म की रक्षा का यह समाज हमेशा से प्रहरी रहा है। जब भी देश को आवश्यकता पड़ी, धर्म पर संकट आया, इस समाज के लोग हिन्दू एवं सनातन धर्म की रक्षार्थ आगे रहे हैं। लाला हरदेवसहाय महान गौभक्त थे, जिन्होने गौरक्षा के लिए अनेक बार जेल-यात्रा की। आप गौहत्या निरोधक समिति के संस्थापक तथा गौरक्षा एवं शराब बंदी के कट्टर समर्थक थे। 1938 -40 के दुर्भिक्ष के समय निराश्रित गायों की रक्षा लिए चारे-जल का प्रबंध कर आपने महान गौभक्ति का परिचय दिया था। आपने प्रतिज्ञा की थी कि भारत की पुण्य भूमि से गोहत्या के कलंक को जब तक दूर न करा दूंगा, तब तक नंगे सिर रहूंगा, जमीन पर सोऊंगा तथा चैन से न बैठूंगा। गौहत्या बंदी आंदोलन में श्री करपात्री जी के नेतृत्व में इस समाज के असंख्य जनों ने अपनी गिरफ्तारियां दी। श्री राधाकृष्ण बजाज गौसेवा संघ के वर्षों तक महामंत्री रहे और गौसेवा का अनुपम आदर्श उपस्थित किया।

श्री जयदयाल डालमिया का भी स्वामी प्रभुपाद को विदेश भिजवाने में सहयोग रहा। श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ने स्वामी जी को श्रीमद्भागवत की हजारों प्रतियां नि:शुल्क प्रचारार्थ भिजवाईं।

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ने जब अनुभव किया कि भारत का आध्यात्मिक साहित्य संस्कृत भाषा में होने के कारण जनसामान्य के उपयोग में नहीं आता तो आपने गीता, महाभारत, श्रीमद् भागवत, बाल्मीकि रामायण, उपनिषद्, पुराण आदि सभी ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद करा तथा उन्हें प्रकाशित कर सनातन हिंदू धर्म की महान सेवा की। उन्होंने लगभग 575 पुस्तकें प्रकाशित करा देवी सम्पदा का देश-विदेश में प्रचार किया। इनमें कई पुस्तकों के संस्करण लाखों की संख्या में छपे।

आपने अहिंसा के व्यावहारिक प्रचार के लिए चर्मरहित जूतों, लाख रहित चूड़ियों एवं आयुर्वेदिक औषधियों के विक्रय की गोविंद भवन में व्यवस्था की।

श्री सीताराम खेमका लगभग 50 वर्षों तक काशी में रहे और सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार एवं गौरक्षा कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। आपने गौरक्षा के प्रश्न पर नेहरू जी के सामने फूलपुर निर्वाचन क्षेत्र से सांसद का चुनाव लड़ा।

श्रीमती पूनम देवी अग्रवाल विदर्भ की मीरां कही जाती है। श्रीरामकथा के प्रचार में आपकी गहन रूचि है।

डॉ. रघुवीर ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा के लिए अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक अकादमी की स्थापना की और भारतीय संस्कृति के स्रोतों का अन्वेषण करने के निमित मंगोलिया, हिंदचीन, मलेशिया आदि अनेक देशों की यात्राएं की। उनके द्वारा स्थापित सरस्वती विहार का संग्रहालय भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के ग्रंथों का आगार है।

श्री अशोक सिंघल विश्व हिंदू परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष एवं महामंत्री हैं। राम जन्म भूमि के मुक्ति यज्ञ में आपका जो योगदान रहा, उसकी तुलना मिलना कठिन है। आप काशी, मथुरा आदि के मंदिरों की मुक्ति के लिए भी निरन्तर संघर्षरत हैं।

इस समाज के लोगों की दान एवं धर्म भावना के कारण हरिद्वार से लेकर गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्री, केदार, कश्मीर, कन्याकुमारी तक तीर्थधाम विकसित और फल फूल रहे हैं। अगर यह समाज दान-धर्म की परम्परा से अपना जरा भी हाथ खींच ले तो आज भारत के तीर्थों को जो महत्त्व प्राप्त है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। वास्तव में भारतीय धर्म, सभ्यता, संस्कृति का जो रूप आज हमें देखने को मिल रहा है, उसके मूल में इसी समाज के धार्मिक संस्कार हैं। दान-धर्म की भावना इन्हें जैसे घूटी के रूप में मिली है। इस समाज के सहयोग से कही सदाव्रत, कहीं अन्नक्षेत्र, तो कहीं मार्ग पर चलती प्याऊ लोगों की क्षुधा और तृषा को शान्त करती हैं।

इस समाज के लोगों ने दुर्गम-बीहड़ स्थानों में धर्मशालाओं, विद्यालयों, मंदिरों, सार्वजनिक स्थलों का निर्माण करा सामान्यजनों को जो सुविधाएँ जुटाई है, और दिल खोल कर देश के विकास कार्यों में सहयोग दिया है, इतनी सुंदर व्यवस्था कोई सरकार भी अकेले अपने साधनों से नहीं कर सकती।

श्री सत्यनारायण गोयन्का विपश्यना ध्यान पद्धति के अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व है। आप विपश्यनाध्यान के आचार्य माने जाते हैं। आपने पूज्य सयाजी उपाखिन से विपश्यना साधना सीखी और 1964 में विपश्यना ध्यान का प्रथम शिविर मुम्बई में आयोजित किया। उसके बाद तो विपश्यना शिविरों की जैसे झड़ी सी लग गई। पिछले 25 वर्षों में 500 से अधिक दस दिवसीय शिविरों द्वारा 25 से अधिक सहायक आचार्यों को योग शिक्षा दी। देशभर में 1200 से अधिक शिविर गठित किए और भारत में 8 तथा अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, फ्रांस, इंग्लैंड, जापान, मुम्बई, लंका आदि देशों में 13 केन्द्र प्रस्थापित कर विपश्यना साधना को लोकप्रिय बनाया।

आपका प्रमुख साधना केन्द्र इगतपुरी नासिक जिला में है, जहां देश विदेश के हजारों लोग प्रशिक्षण प्राप्त करने आते हैं।

इस समाज को भक्त ललित किशोरी एवं ललित माधुरी जैसे सुप्रसिद्ध भक्त देने का भी श्रेय प्राप्त है। आप दोनों ही भाई भगवान श्री कृष्ण के महान भक्त थे। आपने वृंदावन

में लाखों रूपयों की लागत से शाह बिहारी जी के मंदिर का निर्माण कराया। आप श्रीकृष्ण एवं भक्तिमार्ग के अनन्य उपासक थे। श्रीकृष्ण लीला के आपके पद आज भी ब्रज की गलियों में बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति से गाये जाते हैं।

भक्त रामशरणदास पिलखुआ ने सनातन धर्म की रक्षार्थ सैंकड़ों लेख लिखे। आप स्वामी करपात्री जी द्वारा प्रवर्तित धर्मसंघ के तत्वावधान में सनातन धर्म के मानबिंदुओं की रक्षार्थ सदैव संघर्ष करते रहे और लोक-परलोक पुनर्जन्म को शोध का विषय बना सैंकड़ों की संख्या में लेख लिखे। श्री रामेश्वरदास गुप्त ने दिल्ली में धर्मभवन की स्थापना करके तथा चारों शंकराचार्यों को एक स्थान पर एकत्र कर धार्मिक जगत में महान कार्य किया। राय बहादुर सेठ सूर्यमल शिवप्रसाद ने विभिन्न धार्मिक स्थलों पर सैंकड़ों धर्मशाला बनवाईं। देश का शायद ही ऐसा कोई धार्मिक स्थल होगा, जहां आप द्वारा निर्मित धर्मशालाएं न हो। आपने स्वर्गाश्रम में गंगा नदी पर विशाल लक्ष्मण झूले का निर्माण करा अपनी धर्म प्रियता का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

भंयकर ऋतु में जब सूर्य की प्रखर किरणें धरती को तप्त कर देती हैं, ऐसी स्थिति में इस समाज के उदार लोगों द्वारा निर्मित धर्मशालायें जहां थके पथिकों को आश्रय देती हैं, वहां ठण्डे पानी की प्याऊएं उनकी तृषा को शांत करती है। शेखावाटी आदि इलाकों में जहाँ 200-200 हाथ तक पानी नहीं निकलता, वहां हजारों की संख्या में प्याऊओं का निर्माण करा इस समाज ने उदारता का परिचय दिया है।

देवभाषा संस्कृत के प्रचार के लिए इस समाज के लोगों ने गांव-गांव में संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना कर तथा वहां वेद-उपनिषादि के पाठन की व्यवस्था कर महान कार्य किया है। दानवीर सेठ लच्छीराम तोलाराम चूड़ीवाला ने ऋषिकुल विद्यापीठ तथा अन्य अनेक स्थानों पर संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना कर संस्कृत शिक्षा के प्रसार हेतु अप्रतिम कार्य किया। इसी प्रकार श्री हरनंदराम रूइया, श्री हरिराम गोयन्का, श्री नागरमल बाजोरिया, श्री भगवानदास बागला, सेठ गोरखराम रामप्रताप चमड़िया आदि ने रतनगढ, लक्ष्मणगढ़, चुरू, रामगढ़, फतेहपुर शेखावाटी, चिड़ावा आदि में संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना कर भारतीय संस्कृति की रक्षा में अप्रतिम योगदान दिया। काशी के हिन्दू विशविद्यालय की स्थापना में भी इस समाज का प्रचुर मात्रा में सहयोग रहा।

अग्रवाल एवं जैन धर्म

जैन धर्म के उत्थान में भी अग्रवाल समाज आगे रहा है। जैन अग्रवालों ने अनेक सुंदर मंदिरों का निर्माण कराया। भरतवंशी राजा अनगंपाल तृतीय के राज्य में साहू नट्टल ने दिल्ली में आदिनाथ का विशाल और सुंदर मंदिर बनवाया। साहू टोडरमल ने मथुरा में 514 स्तूपों का जीर्णोद्धार करा कर उनकी प्रतिष्ठा कराई तथा आगरा में जैन मंदिर का निर्माण कराया। वे बड़े ही धर्मात्मा, उदार और सज्जन प्रकृति के थे। जैन अग्रवालों ने ग्वालियर किले की सुंदर मूर्तियों का भी निर्माण कराया। इसी तरह राजा हरसुखराय व सेठ सुगनचंद ने अनेक मंदिरों का निर्माण कराया।

आचार्य जुगलकिशोर मुख्तार युगवीर जैनधर्म के महाविद्वान थे। अपने जैन गजट, जैन हितैषी पत्रों के माध्यम से जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान दिया। उन्होंने पुरातन जैन सामग्रियों को सप्रमाण प्रकाश में लाने के लिए समन्तभद्राश्रम नामक साहित्य

केन्द्र तथा दिल्ली में वीर सेवा केन्द्र की भी स्थापना की, जो जैन साहित्य, इतिहास, पुरातत्व विषयक शोध-खोज के लिए प्रतिष्ठित संस्थान है। इस संस्थान द्वारा प्रकाशित 'अनेकान्त' पत्र भी जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट भूमिका निभा रहा है।

श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में जैन चेयर्स की स्थापना की, जिनमें जैन दर्शन पर गहरा अध्ययन किया जाता है। आप द्वारा संचालित विविध न्यास भी जैन साहित्य तथा धर्म के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय योगदान कर रहे हैं। सेठ सुखानन्द सरावगी ने अनेक तीर्थ स्थानों में जैन मन्दिरों का निर्माण कराया और मूर्तियां स्थापित की। भुलेश्वर में चन्द्रप्रभु मन्दिर आपकी देन है।

अग्रवाल और आर्यसमाज-

देश में समाज-सुधार के माध्यम से सर्वतोमुखी क्रांति लाने में आर्यसमाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वामी दयानंद ने 115 वर्ष पूर्व आर्यसमाज की स्थापना मुम्बई में की और उसकी जबरदस्त छाप बड़ी तेजी से सम्पूर्ण भारत में व्याप्त हो गई। आर्यसमाज के माध्यम से देश में आई इस जन-जागरण की लहर से अग्रवाल भी अछूते नहीं रहे और उन्होंने अग्रिम पंक्ति में स्थित हो आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यक्रम को सफल बनाने में असीम योगदान दिया।

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय अग्रवाल समाज की वे महान विभूति थे, जिनका आर्यसमाज को उसके स्थापना काल से ही पल्लवित-पुष्पित करने में अथाह योगदान रहा। लाला लाजपतराय ने आर्यसमाज की विचारधारा के अनुरूप भारतीय राष्ट्रवाद की धारणा को लोकप्रिय बनाया और भारतवर्ष भारतीयों के लिए है, का संदेश देते हुए मातृभूमि के लिए अपने प्राणों के बलिदान का आह्वान किया। उनका यह स्वर इतना बुलंद था कि 1909 में एक बयान में एडवर्ड ग्रे ने कहा था कि लाला लाजपतराय आर्यसमाजी और राजद्रोही है, अतः सभी आर्यसमाजी राजद्रोही माने जाने चाहियें। 1907 में जब लाला लाजपतराय को माण्डले जेल में भेजा गया तो उन पर आरोप लगाया गया कि वे पचास हजार आर्यसमाजियों की सेना तैयार कर देश में सशस्त्र क्रान्ति लाना चाहते है।

लाला जी ने आर्यमाज के प्रमुख चारों बिदुओं-स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराज्य और स्वदेशी के प्रचार-प्रसार के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। उनके धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों की पहली शर्त राजनीतिक स्वायतता थी। वे स्वशासन की माँग करने वालों में अग्रणी थे। आपने स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' के सिद्धान्त पर सर्वाधिक बल दिया। आपने बिखरे हुए भारतीयों को संगठित हो कर निजी स्वार्थों को वृहत्तर कल्याण के लिए समर्पित करने की प्रेरणा दी। उनमें कट्टर राष्ट्रीयता की भावना थी। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर होते हुए भी उन्होंने हिन्दुओं के हितों के बलिदान अथवा मुस्लिम तुष्टिकरण नीति का प्रबल विरोध किया। हिसार का आर्य समाज आप की ही देन है।

आर्य समाज के सभी आन्दोलनों-शिक्षा-प्रचार-प्रसार, स्त्री शिक्षा, अस्पृश्यता उन्मूलन, बाल विवाह निषेध, विधवा-विवाह का समर्थन, राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्राण-प्रतिष्ठा, अनाथ-सहायता आदि में उनका अथाह योगदान रहा। वे एक प्रकार से आर्यसमाज के प्रारम्भिक उन्नायकों में से एक थे।

अग्रवाल समाज ने आर्यसमाज द्वारा प्रवर्तित विविध आंदोलनो के आर्थिक भार को वहन करने में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ही, उसके प्रत्येक आंदोलन में सक्रिय भाग भी लिया। आर्यसमाज के अनेक पदों पर अग्रवाल सुशोभित रहे।

लगभग 50 वर्ष पूर्व मुम्बई प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि समाज के अध्यक्ष पद पर श्री गोविंदराम पित्ती आसीन हुए और उन्होंने आर्य समाज की उल्लेखनीय सेवाएं की। लाला जयचंद्र अग्रवाल ने आर्यसमाज, मुम्बई में 10 से अधिक वर्षों तक कोषाध्यक्ष पद संभाला। वे केले वाले सेठ के नाम से प्रसिद्ध थे। श्री गनपतराय आर्य (गर्ग) कई वर्षों तक आर्य समाज के प्रधान रहे।

मुम्बई के उपनगरीय क्षेत्र भांडुप में 1946 में आर्य समाज की स्थापना करने वाले स्व० लाला शामलाल अग्रवाल थे। आप ही ने जिला गुरदासपुर के बटाला नगर में औरी चौक में आर्यसमाज की स्थापना की। सियालकोट (पाकिस्तान) में आर्यसमाज की स्थापना और उसके संचालन में राय साहब कर्मचंद गोयल तथा लाला हेमराज का उल्लेखनीय योगदान रहा। अमृतसर में कार्यरत आर्यसमाज की 9-10 शाखाओं में अनेक अग्रबंधु उच्च पदों पर प्रतिष्ठित रहे। आर्य महिला समाज की अध्यक्षा श्रीमती कौशल्या देवी का नाम इस दिशा में विशेष रूप से लिया जा सकता है।

जालन्धर, करतारपुर आदि नगरों में आर्यसमाज के स्तम्भ सेठ शिवचंदराय अग्रवाल रहे है। पंजाब प्रांतीय अग्रवाल सभा के प्रधान पद को भी आपने सुशोभित किया है। आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर आपकी ही देन है। लुधियाना के चौड़ा बाजार आर्य समाज में श्री ओमप्रकाश अग्रवाल और श्री गंगानगर में डॉ० तुहीराम गुप्त एवं उनके पूज्य पिता स्व० शिवदयालू वानप्रस्थी का योगदान रहा।

सर गंगाराम आर्यसमाज के स्तम्भ थे, जिन्होंने लगभग 30 लाख रूपयों से गंगाराम ट्रस्ट की स्थापना की। उन्होंने विधवा-विवाह की दृष्टि से जो कार्य किया, वह अभूतपूर्व एवं अनुपमेय है। उन्होंने सन् 1900 में हजारों बाल विधवाओं के विवाह कराये, जगह-जगह विधवाश्रमों की स्थापना की और विधवा-विवाह के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी में विधवा बांधव, विधवा सहायक एवं विडो काज का प्रकाशन किया। उन्होंने 6334 विधवाओं के पुनर्विवाह कराए। उस समय उन द्वारा स्थापित विधवा-विवाह सहायक संघ इस क्षेत्र में सबसे अग्रणी था, जिसकी देशभर में 496 शाखाएं थीं।

गुरूकुलों, डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं, अनाथालयों, वनिता-सदनों, वेदाश्रमों, यज्ञशालाओं की स्थापना में भी अग्रबंधु बढ़ चढ़कर आगे आए। भिवानी, जालंधर, अम्बाला, कानपुर, बनारस, लाहौर आदि के अनाथालयों की स्थापना और उनके संचालन में अग्रबंधुओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

लाला ज्योतिप्रसाद अग्रवाल ने कुरूक्षेत्र में गुरूकुल की स्थापना के लिए १०४९ बीघा जमीन तथा दस हजार रूपये दान में दिए, जिससे वहाँ भवन-निर्माण में सहायता मिली। 13 अप्रैल 1912 को स्वामी श्रद्धानंद जी ने स्वयं इसका उद्घाटन किया था। फिरोजपुर का अनाथालय जब अनाथों से भर गया और उसमें स्थानाभाव प्रतीत होने लगा तो लाला लाजपतराय ने अपनी माता और बहिन की स्मृति में अनेक कमरों का निर्माण करा दिया था।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र के प्रचार के लिए भी अनेक अग्रवाल बंधुओं ने योगदान दिया, जो आर्य समाज विचारधारा से ओतप्रोत थे। लाला लाजपतराय पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने कांग्रेस की समस्त कार्यवाही अंग्रेजी में होने पर भी अपना भाषण हिन्दुस्तानी में दिया और हिन्दी भाषा को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने की जोरदार वकालत की।

अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान, हिन्दी के सुप्रसिद्ध कोषकार डॉ० रघुवीर आर्यसमाजी ही थे। अनेक अग्रवालों ने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आर्यसमाज के विचारों के प्रचार प्रसार में योगदान दिया।

श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी आर्यसमाज के दृढ़ स्तंभ थे। आपने 'तपोभूमि' का सम्पादन किया। आपने मेरठ और स्वामी दयानन्द जैसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक भी लिखी।

डॉ. सत्यकेतु विद्यांलकार, पंडित क्षितीश वेदांलकार, सुभाष वेदांलकार ने आर्य समाज की जो सेवाएं की, वे सर्वविदित हैं। श्री वेदांलकार वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक थे, जिन्होंने आर्य समाज के साहित्य को सुसमृद्ध किया। श्री विश्वम्भरसहाय 'विनोद' भी आर्यसमाज के जुझारू पत्रकार रहे।

श्री सत्यप्रिय जो बाद में स्वामी सत्यानंद, भरतपुर के नाम से प्रसिद्ध हुए, आपने आर्य समाज से प्रभावित होकर भुसावर महिला विद्यापीठ की स्थापना की। आप कट्टर आर्य समाजी थे। आपने हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह में जेल यात्रा की तथा पंजाब में कैरों मंत्रिमंडल द्वारा हिन्दी भाषा को कुचले जाने पर उसके विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाया।

मास्टर फकीरचंद, भुसावर भी कट्टर आर्यसमाजी थे। आप आर्यसमाज के प्रभाव से अनेक हरिजन आंदोलनों में सक्रिय रहे और विविध स्थानों पर हरिजन पाठशालाओं का संचालन किया।

पं. शिवदयालु मित्तल, मेरठ आर्यसमाज के महान साहित्य सेवी एवं स्वतंत्रा सेनानी थे। आपने आर्य धर्म का विस्तार करने वाली अनेक समाजोपयोगी रचनाएं कीं। आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुरूप गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति-को मूर्त रूप देने के लिए दयानंद महाविद्यालय, गुरुकुल डौरली की स्थापना की, गुरुकुल को 250 बीघा जमीन दान में दी। हिंदुओं के धर्म स्वातंत्र्य की रक्षा के लिए आपने हैदराबाद में जेल यात्रा की।

श्रीमती लज्जारानी गोयल, मुंबई आर्यसमाजी विचारा धारा से प्रभावित रही हैं। आपने दयानंद बालिका विद्यालय की स्थापना की। दयानंद गुप्ता, मुरादाबाद ने 1950 में बलदेव आर्य कन्या इण्टर कालेज तथा 1960 में दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना कर आर्यसमाज शिक्षा-प्रचार में योगदान दिया।

लाला शिवदयाल सिंह जानसठ ने आर्यसमाज के अनेक मंदिरों का निर्माण कराया। श्री देशराज चौधरी भी आर्यसमाज के प्रति समर्पित रहे।

श्री लालमन आर्य हिसार ने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए अथक प्रयास किया।

इस प्रकार अग्रवाल समाज के अनेक विद्वानों, संतों, साधुओं, वानप्रस्थियों, प्रचारकों का आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में योगदान रहा।

शिक्षा प्रचार-प्रसार एवं अन्य लोकोपकारी कार्य

प्रत्येक समुदाय या जाति की अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं। अग्रवाल जाति अपनी दानशीलता एवं उदार प्रवृति के लिए विख्यात है। जिस प्रकार गंगा में निरन्तर जल-प्रवाह के लिए आवश्यक है कि उसे स्त्रोत से जल की आपूर्ति निरन्तर होती रहे, अनेक नदी-नाले मिल कर उसके जल को कई गुणा बढ़ाते रहें तथा उसके जल का समुचित उपयोग हो। इनमें से किसी भी एक अंग के विकृत होने पर गंगा-जल का प्रवाह अवरूद्ध हो सकता है, उसी प्रकार समाज में लोकोपकारी कार्यो के निर्माण हेतु धन की अविरत आपूर्ति, साधनों का समुचित उपयोग नितांत आवश्यक है।

अग्रवाल समाज की सफलता का श्रेय-इसी मलूमंत्र में छिपा है। प्रत्येक अग्रवाल कठोर परिश्रम से द्रव्यार्जन करता है, एक एक पाई जोड़ कर धन बचाता है और व्यापार में उसका पुन: निवेश कर इस राशि को कई गुणा बढ़ाता है और फिर उसका सदुपयोग कर लोक-परलोक में यशार्जन करता है। यही कारण है कि शताब्दियों से अग्रवाल समाज में धनोपार्जन और लोकोपकारी कार्यो में उसके विनियोजन का यह क्रम बना हुआ है और आज भी अग्रवाल समाज इसमें अपनी अग्रगमिता बनाये है। निठल्ले, आलसी, अकर्मण्य, व्यभिचारी, दुराचारी, अपव्ययी लोगों के पास या तो पैसा आता ही नहीं, आता है तो दुर्व्यसनों में चला जाता है।

शिक्षा के प्रचार प्रसार में भी यह समाज अग्रणी रहा है। प्राचीन समय में जबकि शिक्षा प्राप्ति का कोई साधन न था, इस समाज के उदार लोगों ने गांव-गांव नगर-नगर में शिक्षण संस्थाओं, पाठशालाओं, संस्कृत एवं ज्ञानविज्ञान के विद्यालयों की स्थापना कर शिक्षा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

अंग्रेजी शासनकाल में जबकि सरकार ने अपनी कुटिल चाल के अन्तर्गत पहले से चली आ रही पाठशालाओं को बंद करना प्रारम्भ किया तो इस समाज के लोग ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करने आगे आए और उन्होंने स्वयं के धन से देश में स्थान-स्थान पर विद्यालयों की स्थापना की और सरकार को बाध्य होकर उन विद्यालयों को मान्यता देनी पड़ी। इस प्रकार वैश्य/अग्रवाल समाज ने अपने उद्दात प्रयत्नों से देश को अशिक्षित रखने का एक भयंकर कुचक्र असफल कर दिया। आज जबकि सरकार सब देशवासियों के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था करने में असमर्थ है, यह समाज छोटे से छोटे ग्राम से लेकर बड़े बड़े नगरों में विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना कर शिक्षण जगत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

समाज के कमजोर किन्तु प्रतिभावान छात्रों को नि:शुल्क पुस्तकें एवं पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराना, शोध एवं वैज्ञानिक खोज के लिए शोधवृत्तियां एवं छात्र वृत्तियां प्रदान करना, राष्ट्र की प्रतिभा को समक्ष लाना एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति में योगदान इस समाज के प्रिय विषय रहे हैं।

इस समाज द्वारा ही अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा की स्थापना के साथ 9 लाख रुपयों की राशि से अग्रवाल मारवाड़ी जातीयकोष की स्थापना की गई, जो पिछले, आठ दशकों से शिक्षा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल सम्मेलन एवं विभिन्न मारवाड़ी संस्थाओं द्वारा शिक्षा सहायता कोष की स्थापना की गई है, जो करोड़ों रुपए प्रतिवर्ष मेधावी छात्रों को शिक्षा-सहायता देने में व्यय कर रहे हैं।

महात्मा गांधी ने जब अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के स्थान पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर बल दिया तो बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने काशी विद्यापीठ की स्थापना की और राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान किया।

श्री जमनालाल गोयन्का एवं शेगांव निवासी श्री पूर्णमल मोरारका ने महाराष्ट्र में शिक्षा प्रचार की दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य किया। आपने संत गजानन महाराज शिक्षण संस्थान का निर्माण कराया, जो शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण देन है।

रोहतक के वैश्य शिक्षण संस्थाओं का हरियाणा-पंजाब में शिक्षा क्षेत्र में योगदान रहा है, वह सर्वविदित है। इस संस्थान की नीवं स्वयं महात्मा गांधी ने 1921 में रखी थी।

श्रीमती महादेवी आनन्दीलाल पोद्दार विद्या भवन, श्रीमती गोदावरी बाई रामदेव पोद्दार वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, रामनिरंजन आनन्दीलाल पोद्दार वोकेशनल कालेज आफ कामर्स; रामनिरंजन झूंझनू कालेज, डालमिया कालेज, गोरेगांव, श्री जमनालाल गोयन्का डेण्टल कालेज, किसनलाल गोयन्का कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, श्रीमती राधादेवी गोयन्का महिला महाविद्यालय, रामविलास आनन्दीलाल पोद्दार मेडिकल कालेज, राजा रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार आयुर्वेदिक इन्स्टीट्यूट आदि हजारों शिक्षण संस्थायें हैं, जो इस समाज द्वारा स्थापित हैं और ज्ञान तथा शिक्षा के प्रचार में योगदान दे रही हैं। अग्रोहा का महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज इस दिशा में उल्लेखनीय है।

सेठ गोविंददास सेक्सरिया ने अनगिनत शिक्षण संस्थानों, महाविद्यालयों, समाजसेवी संस्थाओं की स्थापना पूरे महाराष्ट्र में कर जो शिक्षा-प्रेम का परिचय दिया, उससे अग्रवाल समाज के इस क्षेत्र में योगदान की एक झलक प्राप्त की जा सकती है।

श्री जमनालाल गोयन्का के प्रयत्नों से संत तुकाराम हास्पिटल एवं मेडिकल रिसर्च सेंटर की स्थापना हुई, जो चिकित्सा शोध की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

श्री प्रभुदयाल भोरुका ने रक्त बैंक अनुसंधान संस्थान की स्थापना कर चिकित्सा शिक्षा जगत का उपकार किया है।

इस समाज के प्रतिभावान छात्रों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों की परीक्षा में उच्च स्थान प्राप्त कर देश-विदेशों में शिक्षा-जगत को गौरवान्वित किया है। श्री मदनमोहन मित्तल के पौत्र वरुण मित्तल अमेरिका के उन प्रतिभाशाली छात्रों में से एक है, जिन्होंने अमेरिका में तीन वर्षों तक निरंतर प्रत्येक विषय की परीक्षा में 90% अंक प्राप्त कर राष्ट्रपति क्लिंटन पुरस्कार पाने का कीर्तिमान स्थापित किया है।

इस समाज ने शिक्षा क्षेत्र में अनेक विभूतियों को उत्पन्न किया है, जिन्होंने उच्च पदों पर रह कर असीम क्षमता का परिचय दिया है। प्रो. सतीशचंद्र ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष एवं विभिन्न पदों पर रहते हुए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किया है, उस का उल्लेख ही पर्याप्त रहेगा।

श्री सुरेंद्र गोयल ने दिल्ली में मोरल एजुकेशन फाउंडेशन की स्थापना कर नैतिक शिक्षा की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आपको इस क्षेत्र में मोरल एजुकेशन अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

महिला साक्षरता के क्षेत्र में श्रीमती कृष्णा अग्रवाल का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने यूरोपियन एवं पाश्चात्य देशों में ग्रामीण विकास के कारणों का पता लगा महिलाओं के उत्थान एवं उन्हें साक्षर करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने ग्राम राऊ (इंदौर) में ग्रामीण ज्योति केन्द्र की स्थापना कर 225 गांवों में लगभग 40000 महिलाओं को साक्षर किया। इस संस्था की गणना प्रमुख समाज सेवी संस्था के रूप में होती है और इसकी सहायता से हजारों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में सहायता मिली है, जो ग्रामीण महिला साक्षरता क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

श्रीमती अग्रवाल की इन उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें नीदरलैंड सरकार की ओर से सम्मानित किया गया। आपको 1979 में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा नेहरू साक्षरता पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

महिला शिक्षा के प्रसार में श्री बसंतलाल मुरारका एवं श्री सीताराम सेक्सरिया का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

श्री भागीरथ कानोडिया में महिला शिक्षा के लिए जयपुर में कानोडिया महिला महाविद्यालय की स्थापना की, जो आज भी महिला शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सेठ मूंगेलाल ने भारतीय विद्या भवन की स्थापना में ८ लाख रूपये की राशि प्रदान कर शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

झूंझनू के सेठ मोतीलाल झुंझनूवाला ने झुंझनू में सेठ मोतीलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की। इस प्रकार के विद्यालय हजारों की संख्या में पूर्ण देश में फैले हैं।

तकनीकी एंव आधुनिक प्रौद्योगिकी के शिक्षण एवं प्रशिक्षण हेतु भी इस समाज द्वारा बड़े बड़े प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई है जो रसायन, भौतिकी, चिकित्सा, यांत्रिक आदि विविध क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करते हैं।

इसी प्रकार निर्धन एवं साधनहीन जनता के लिए इस समाज ने बड़े-बड़े हास्पिटलों, दातव्य चिकित्सालयों, प्रसूति गृहों आदि की स्थापना की है, जो रोगातुर व्यक्तियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान कर मानवता की महान सेवा कर रहे हैं। दिल्ली का महाराजा अग्रसेन हास्पिटल इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

चिकित्सा एवं रुग्ण मानव सेवा के क्षेत्र में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच ने एम्बुलैंस एवं शववाहिनी सेवाओं के द्वारा विशेष प्रतिमान स्थापित किया है। सुदूर ग्रामीण अंचल के जनमानस को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रारम्भ किया गया यह प्रकल्प आज असम, मेघालय, बिहार, पश्चिमी बंगाल आदि में विशाल रूप धारण कर चुका है।

बैशाखियों के सहारे घिसटने को मजबूर विकलांग लोगों के जीवन में नई आशा का संचार करने तथा उन्हें अपाहिजता के शाप से मुक्त कराने के उद्देश्य से इस मंच ने कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण सेवा का प्रारम्भ कर उत्कृष्ट सेवा भावना का परिचय दिया है। इस प्रकल्प के अन्तर्गत आयोजित शिविरों में अब तक हजारों अपंग लोगों को चलने-फिरने योग्य बनाया जा चुका है।

गोरखपुर में भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार की स्मृति में संस्थापित संस्थान केंसर रोग की

चिकित्सा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि है। मुंबई का आनन्दीलाल पोद्दार आयुर्वेदिक अस्पताल आयुर्वेदीय चिकित्सा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहाँ पंचकर्म द्वारा आयुर्वेदीय चिकित्सा की भी विशेष व्यवस्था है। बाल सेवा के क्षेत्र में श्री नित्यानंद चिड़ीपाल को दो लाख रुपये के सार्वजनिक बालसेवा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जो अग्रवाल समाज के लिए गौरव का विषय है। आप चक्रधर बालसदन, रायगढ़ के संस्थापक हैं।

श्री श्यामसुंदर पोद्दार नागपुर ने दो करोड़ रुपए से अधिक राशि व्यय कर राधाकृष्ण हस्पताल का निर्माण कराया है, जो चिकित्सा क्षेत्र में विशिष्ट योगदान है।

श्री गौरीशंकर मित्तल एवं श्रीमती सुशीला जालान ने चिकित्सा सहायता कोष की स्थापना कर कैंसर एवं हृदय रोग पीड़ितों की सेवा में उल्लेखनीय योगदान किया है।

इसी प्रकार बंगलौर की जिंदल अल्युमिनियम लि. ने एक करोड़ तीन लाख रुपयों की अति आधुनिक सिटी स्केन मशीन इंदौर के केंसर फाउण्डेशन को प्रदान कर मानवीय सेवा का उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है।

अग्रोहा में भी कैंसर अनुसंधान एवं चिकित्सा केंद्र खोले जाने की योजना है। इस हेतु महाराष्ट्र के एक अग्रबंधु ने तीन करोड़ रुपए जुटाने की घोषणा की है।

निकुंज परसरामपुरिया कोबाल्ट के माध्यम से इंदौर के कैंसर फाउण्डेशन, मऊ द्वारा नि:शुल्क रेडियोथेरेपी चिकित्सा उपलब्ध कराई जा रही है।

इस प्रकार के सेवा कार्य सम्पूर्ण देश में बिखरे पड़े हैं, जिससे अग्रवाल समाज की सेवा भावना का परिचय मिलता है।

अग्रवाल समाज द्वारा संस्थापित ट्रस्ट एवं उनके लोकोपकारी कार्य

अग्रवाल समाज ने लाखों-करोड़ों की लागत से सम्पूर्ण भारत में बड़े-बड़े ट्रस्टों की स्थापना की है। ये ट्रस्ट मानवीय सेवा, चिकित्सा, शिक्षा, लोक कल्याण आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सेवा कार्य कर रहे हैं इनसे इस समाज की सच्ची ट्रस्टीशिप भावना का परिचय मिलता है। यद्यपि इस प्रकार के ट्रस्टों की संख्या हजारों में है, यहां केवल सांकेतिक रूप में कतिपय ट्रस्टों की ही उल्लेख किया जा रहा है, जिनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस समाज द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में किए जाने वाले लोकोपकारी कार्यों का क्षेत्र कितना विस्तृत है-

जमना लाल बजाज फाउण्डेशन

जमना लाल बजाज फाउण्डेशन की स्थापना सुप्रसिद्ध गांधी वादी नेता एवं अग्रगौरव श्री जमनालाल बजाज की पुण्य स्मृति में 1977 में की गई। इस संस्था का उद्देश्य उन आदर्शों की प्राप्ति का प्रयत्न है, जिनके प्रति जमनालाल जी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया था तथा ऐसी रचनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देना है, जिनमें वे स्वयं महात्मा गांधी की प्रेरणा से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। फाउण्डेशन का उद्घाटन भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. मोरारजी देसाई ने अपने कर कमलों द्वारा किया और स्वयं

आचार्य कृपलानी ने उपस्थित होकर इसे अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। ट्रस्ट बजाज समूह द्वारा प्रवर्तित है।

ट्रस्ट द्वारा रचनात्मक कार्य तथा ग्रामीण विकास क्षेत्रों में भारत वासियों के असाधारण योगदान के लिए हर साल 7 लाख रूपये के पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। इनमें से दो पुरस्कार जमनालाल बजाज के नाम से तथा एक पुरस्कार स्व. श्रीमती जानकी देवी बजाज की स्मृति में प्रदान किया जाता है। 1988 में फाउण्डेशन ने जमनालाल बजाज जन्म शताब्दी महोत्सव की स्मृति में एक अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की, जो विदेशों में गांधीवादी मूल्यों का प्रसार करने वाले अभारतीय नागरिक को प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत विदेशी मुद्रा में एक लाख रुपये की राशि, पदक, प्रशस्तिपत्र आदि प्रदान किए जाते हैं।

इन पुरस्कारों के अलावा जो युवा स्नातक ग्रामीण क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करना चाहते हैं, उनको फाउण्डेशन द्वारा प्रतिवर्ष 10-10 हजार की पांच छात्र वृत्तियां तीन वर्ष के लिए प्रदान की जाती हैं।

फाउण्डेशन ने वर्धा जिले के सेवाग्राम-पवनार अंजीक्षेत्र में स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से ग्रामीण विकास का कार्य प्रारम्भ किया है, जिसमें कूप निर्माण, बालवाड़ी, ग्रामीण उद्योगों हेतु वैकल्पिक तकनीक के शोध को प्रोत्साहन, निर्धूम चूल्हे, सुलभ शौचालय, सामाजिक बनीकरण, रेशम उत्पादन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा जनजागरण आदि प्रकल्पों का समावेश है।

उदयपुर के आस-पास के गांवों में भी कम लागत की स्वच्छता व्यवस्था एवं पीने के पानी का प्रबंधजैसे प्रकल्प फाउण्डेशन द्वारा चलाये जा रहे हैं।

भोडूका चेरिटेबल ट्रस्ट-

भोडूका चेरिटेबल ट्रस्ट भारत के महान ट्रस्टों में से एक है। इसकी स्थापना ट्रांसपोर्ट व्यवसाय की अग्रणी संस्था ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन आफ इण्डिया तथा भोडूका उद्योग समूह के प्रवर्त्तक श्री प्रभुदयाल अग्रवाल ने ग्राम विकास एवं जनकल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत होकर 1963 में की। ट्रस्ट का प्रधान कार्यालय मुम्बई में स्थित है।

ट्रस्ट का प्रमुख उद्देश्य भारत के ग्रामों में बसे असंख्य निर्धन परिवारों का उन्नयन, उनको सब प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराकर राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ना है। इस हेतु ट्रस्ट ने ग्रामों में स्वयं स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के साथ इस कार्य में रत स्वयं सेवी संस्थाओं की सहायता की है। प्रतिभावान विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना, विधवाओं, आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं विकलांगों की सहायता आदि अन्य कार्यक्रम हैं। ट्रस्ट की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र चुरू जिले का भोरूका ग्राम (नागलवाड़ी) है। ट्रस्ट द्वारा यहां शिक्षा प्रसार के लिए बी.आर.जे.डी. पब्लिक स्कूल की स्थापना की है, जहां सीनियर सेकण्डरी तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। शिक्षा के साथ-साथ यहां ट्रस्ट द्वारा मूलभूत साधनों सड़क, यातायात, विद्युतीकरण, महिला शिक्षा, पेयजल की सुविधाओं के विस्तार, वृक्षारोपण, शौचालय निर्माण, पर्यावरण विकास आदि पर भी पर्याप्त मात्रा में राशि खर्च की जा रही है। ग्राम विकास की दृष्टि से इस ट्रस्ट की गणना राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थानों में होती है।

ट्रस्ट लगभग 100 ग्रामों में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों का भी संचालन कर रहा है, जहां ग्रामीण बालक-बालिकाओं को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। ट्रस्ट ने स्थान-स्थान पर विद्यालय भवनों का निर्माण भी कराया है।

ट्रस्ट ने स्वच्छ जल की आपूर्ति हेतु 100 से अधिक स्थानों पर ट्यूबवैलों, कुंओं आदि का निर्माण कराया है। महिला स्वास्थ्य ईंधन एवं समय की बचत के लिए गांवों में निर्धूम चूल्हों की व्यवस्था की है। गोबर गैस प्लाण्ट भी लगाए हैं।

ग्रामीण आवास की समस्या के लिए प्रभु कुटीरों का निर्माण करा वहां उद्योगधंधों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की है। भोरूका एवं अन्य ग्रामों में सैंकड़ों की संख्या में चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना कर तथा वहाँ चिकित्सा शिविर लगा ट्रस्ट ने ग्रामीण चिकित्सा के क्षेत्र में अद्‌भुत योगदान दिया है।

ट्रस्ट ने ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं के प्रशिक्षण एवं प्रबंधन की दृष्टि से पांच करोड़ रूपयों की लागत से जयपुर में इण्डियन इन्स्टीच्यूट आफ हेल्थ मैनेजमेंट एवं रिसर्च की स्थापना की है। यह भारत का ही नहीं अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र का अपने ढंग का सबसे बड़ा संस्थान है।

हैंदराबाद, पटना, इंदौर, मुम्बई, अरूणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, जमशेदपुर, कोयम्बटूर, गोहाटी आदि में भी डिस्पेंसरियों का संचालन किया जा रहा है। ग्रामों में विद्युत आपूर्ति डाक, तार, टेलीफोन सुविधाओं के विस्तार की ओर भी ट्रस्ट ने ध्यान दिया है।

ट्रस्ट ने पशुओं के लिए चारे, गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के लिए नि:शुल्क पौष्टिक आहार वृद्ध, अपाहिज, लूले-लंगड़ों आदि के लिए नियमित पेंशन आदि की व्यवस्था करके मानवीय सेवा के क्षेत्र में आदर्श प्रस्तुत किया है। वास्तव में यह ट्रस्ट अग्रवाल समाज की दानप्रियता एवं मानव-सेवावृत्ति का उत्कृष्ट निदर्शन है।

डालमिया जैन ट्रस्ट

शेखावाटी क्षेत्र को उन्हीं विभूतियों एवं सुनागरिकों ने गौरवान्वित किया है, जो यहां जन्म लेकर प्रवासी राजस्थानी हो गए अथवा जिन्होंने बाहर से आकर इसे अपनी कर्मस्थली बनाया।

श्री जयदयाल डालमिया एवं उनका परिवार ऐसे ही स्वनाम धन्य परिवारों में है, जिन्होंने अपने दातव्य न्यासों द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक, पारमार्थिक एवं चिकित्सा क्षेत्र में जो कार्य किए है, उनसे न केवल शेखावाटी का अपितु सम्पूर्ण अग्रवाल समाज का नाम गौरवान्वित हुआ है।

इस परिवार द्वारा डालमिया जैन ट्रस्ट, डालमिया चेरिटेबल ट्रस्ट, डालमिया एजुकेशन ट्रस्ट, विष्णु चेरिटेबल ट्रस्ट और अनेक ट्रस्टों का संचालन किया जा रहा है, जिनकी गतिविधियों का प्रसार बहुमुखी है।

डालमिया जैन ट्रस्ट द्वारा श्री दुर्गा देवी डालमिया दातव्य औषधालय, सूरजगढ़ (झूंझनू) का 40 वर्षों से संचालन किया जा रहा है, जिसका लाभ प्रतिवर्ष हजारों रोगियों को मिलता है। डालमिया जी की चिड़ावा स्थित रामनामी हवेली में अतिथियों के विश्राम की उपयुक्त व्यवस्था की गई है।

डालमिया चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा डालमिया एजुकेशन ट्रस्ट डालमिया शिक्षा समिति, डालमिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आदि का संचालन किया जा रहा है। ट्रस्ट द्वारा

चिड़ावा में बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की गई है, जो महिला शिक्षा के सम्बंध में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। चिड़ावामें ही शिक्षा समिति द्वारा डालमिया नेहरू पार्क का निर्माण कराया गया है, जिसमें श्री नेहरू की भव्य प्रतिमा दर्शनार्थियों का अनायास ही मन मोह लेती है। डालमिया परिवार द्वारा स्थापित इन ट्रस्टों द्वारा समय समय पर नेत्र चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर क्षेत्र की जनता को राहत पहुंचाई जाती है। इसके अलावा इन ट्रस्टों द्वारा आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं असहायों की सहायता की जाती है। चिड़ावा नगर में अतिवृष्टि से मकानों के ढहजाने पर इस परिवार के ट्रस्टों ने लाखों रुपयों की लागत से 40 कमरों का निर्माण करा एक आदर्श प्रस्तुत किया था।

डालमिया परिवार ने शेखावाटी में इन निर्माण कार्यों के अलावा वाराणसी में मुक्ति और अतिथि भवन, राजगंगपुर (उड़ीसा) में राधाकुञ्ज एवं स्वावलम्बी योजना, ऋषिकेश में विश्रामगृह तथा स्वर्गाश्रम में यात्री विश्रामगृह, श्री नगर (गढ़वाल, उत्तर प्रदेश) तथा रामेश्वरम् में डालमिया धर्मशाला, वृंदावन में अन्नक्षेत्र व प्याऊ, हरिद्वार में हर की पौड़ी ब्रह्मकुण्ड पर मदनमोहन मालवीय की संगमरमर की भव्य प्रतिमा और उस पर आकर्षक छतरी आदि का निर्माण करा असीम दानवीरता एवं लोकोपकारी भावना का परिचय दिया है।

रायबहादुर विसेसरलाल हालवासिया ट्रस्ट

भिवानी के सुप्रसिद्ध सेठ श्री विसेसरलाल हालवासिया के 60 लाख रूपयों के उदार दान से इस ट्रस्ट की स्थापना 1925 में हुई। यह ट्रस्ट देश के सबसे बड़े ट्रस्टों में एक है और इसका स्वरूप अखिल भारतीय है। इस ट्रस्ट द्वारा अब तक लाखों-करोड़ो रूपयों की राशि परोपकारी कार्यों में व्यय कर विशेष प्रतिमान स्थापित किया गया है और ट्रस्ट के कार्यों से शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा, धर्म सभी क्षेत्र गौरवान्वित हुए हैं।

ट्रस्ट ने अपार राशि व्यय कर चितरंजन कैंसर हास्पिटल, रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान, कलकत्ता के एस.राय. टी.बी. हास्पिटल जानकीदेवी डिस्पेंसरी हावड़ा, हालवासिया धर्मार्थ औषधालय भिवानी, हालवासिया एक्सरे क्लिनिक भिवानी, कुष्ठ हस्पताल फतेहपुर (देवघर), सत्याश्रम, दया (हिसार), टी.बी. सेन्टोरियम, वृंदावन, सेवक सभा धर्मार्थ हस्पताल, हिसार आदि में विशाल भवनों का निर्माण करा तथा चिकित्सा कार्यों में सहायता प्रदान कर रोग पीड़ित मानवता की सेवा में जहाँ उल्लेखनीय कार्य किया है, वहां रायबहादुर बिसेसरलाल मोतीलाल हालवासिया हाईस्कूल, गोलग्राम (मिरनापुर), हालवासिया प्राथमिक विद्यालय, भिवानी, शिक्षायतन कालेज, कलकत्ता, कन्या विद्यालय, फतेहाबाद, वैश्य हाई स्कूल, भिवानी, हालवासिया कन्या विद्यालय, हनुमानधानी, उत्तमी बाई आर्य कन्या विद्यालय, भिवानी, रा.बा.वि.ला. हालवासिया स्कूल खड़खड़ी, कलकत्ता, हालवासिया बाल मंदिर-भिवानी, हालवासिया छात्र निवास, कलकत्ता, हालवासिया छात्रावास भवन, वैश्य कालेज भिवानी आदि संस्थायें उसके शिक्षा प्रेम की द्योतक हैं।

श्री आनन्दीलाल पोद्दार चैरिटी सोसायटी, मुम्बई

महान समाज सेवी एवं उद्योगपति श्री रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार के उदारदान से संचालित यह ट्रस्ट भारत के प्रमुख ट्रस्टों में विशिष्ट स्थान रखता है।

इस ट्रस्ट द्वारा करोड़ों रुपयों की लागत से मुंबई में रामविलास आनन्दीलाल पोद्दार मेडिकल कालेज, महादेवी आनन्दीलाल पोद्दार आयुर्वेदिक अस्पताल, राजा रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार आयुर्वेदिक इन्स्टीच्यूट, श्रीमती पानाबाई रामनाथ क्लिनिक आदि का निर्माण कराया है, इनके इलावा राजस्थान में रामनाथ आनन्दीलाल पोद्दार प्रबंध संस्थान, जयपुर, श्रीमती भगवानी बाई गोरीदत्त सेक्सरिया डोल्ज म्युजियम, जयपुर, श्रीमती गोदावरी बाई रामदेव पोद्दार वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, मुंबई, रामविलास आनन्दी लाल श्रमिक मनोरंजन केन्द्र मुम्बई, सेठ ज्ञानीराम बंशीधर पोद्दार कालेज, नवलगढ़, पोद्दार मातु श्री हायर सेकण्डरी स्कूल, नवलगढ़ पोद्दार प्राथमिक शाला, नवलगढ़, राम निरंजन आनन्दीलाल पोद्दार कालेज ऑफ कामर्स एंड इक्नामिक्स, मुम्बई सेठ आनन्दी लाल हाई स्कूल, मुम्बई, सेठ आनन्दीलाल इन्स्टीच्यूट आफ डेम्ब एण्ड ब्लाइंड जयपुर, आनन्दीलाल पोद्दार हाई स्कूल, भिवानी मण्डी, श्री गणेश गर्ल्स मिडल स्कूल, भिवानी, श्रीमती महादेवी आनन्दीलाल पोद्दार विद्याभवन, मुंबई, श्रीमती पानाबाई रामनाथ बहिंरग रोगी हस्पताल मुंबई आदि अनेक संस्थायें इस ट्रस्ट की देख रेख में चल रही हैं।

असहयोग आंदोलन के समय इस ट्रस्ट ने दो लाख रुपये तिलक स्वराज्य फण्ड में दान देकर अपनी प्रखर-राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया था।

श्री एन.सी. जिदंल ट्रस्ट

यह ट्रस्ट सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री ओमप्रकाश जिंदल एवं उनके परिवार के उदार दान से संचालित है।

इस ट्रस्ट द्वारा शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में अनेक महत्त्पूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। ट्रस्ट द्वारा ग्राम नलवा (हिसार) में आई.टी.आई., लड़के लड़कियों के हाई स्कूल, हिसार में एन.सी. जिंदल हस्पताल, विद्यादेवी जिंदल पब्लिक स्कूल व विद्यादेवी जिंदल आवासीय विद्यालय आदि अनेक संस्थाओं का संचालन किया जा रहा है। विद्यादेवी स्कूल 70 एकड़ भूमि में 4 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है और बालिकाओं की शिक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ट्रस्ट द्वारा प्रतिभावान छात्रों को लाखों रुपयों की छात्रवृत्तियां एवं समाज सेवी संस्थाओं को प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

भुवालका जनकल्याण ट्रस्ट, कलकत्ता

इस ट्रस्ट की स्थापना श्री रामकुमार भुवालका एवं उनके परिवार द्वारा प्रदत्त दान से 1964 में की गई। अपने स्थापना काल से ट्रस्ट बीसियों लाख रुपया मानव सेवा एवं लोकोपकारी कार्यों में खर्च कर चुका है। ट्रस्ट समाज के जरूरतमंद व्यक्तियों तथा शैक्षणिक, शारीरिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं मानव सेवा की विविध प्रवृत्तियों में रत संस्थाओं की सहायता में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है। ट्रस्ट की गतिविधियों का क्षेत्र कलकत्ता ले लेकर हरिद्वार, ऋषिकेश सहारनपुर, वाराणसी, आसाम, सिंहभूम, राजस्थान आदि तक फैला है। ट्रस्ट द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को लाखों की सहायता प्रदान की गई है। ट्रस्ट द्वारा हरिद्वार में होम्योपैथिक दातव्य औषधालय, ऋषिकेश में भुवालका पब्लिक नर्सरी स्कूल, रतनगढ़ में श्रीमती भगवानदेवी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डायमंड हार्बर में दातव्य औषधालय आदि संस्थाओं का संचालन किया जा रहा है। ट्रस्ट ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में विश्रामशाला भवन, कॉलेज स्क्वायर कलकत्ता में

तरणताल, श्री केदारनाथ बद्रीनाथ मार्ग में भुवालका विश्रामगृह एवं अनेकानेक संस्थानों में भवनों का निर्माण कराया है। ट्रस्ट द्वारा एक सुंदर म्यूजियम का निर्माण भी कराया गया है ट्रस्ट की सामाजिक एवं शैक्षणिक सेवाएं वस्तुतः सराहनीय हैं।

श्री रामेश्वर टांटिया ट्रस्ट

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामेश्वर टांटिया एवं उनके परिवार के उद्दात दान द्वारा स्थापित इस ट्रस्ट ने करोड़ों रुपये लोकसेवी कार्यों में व्यय कर महान उदारता का परिचय दिया है। ट्रस्ट द्वारा साईंस कालेज, शिवसागर (आसाम), टांटिया हायर सेकण्डरी स्कूल, कलकत्ता, टांटिया कन्या विद्यालय-सरदारशहर, टांटिया एलोपैथिक फ्री डिस्पेंसरी, वाराणसी, सार्वजनिक पुस्तकालय, धुवड़ी, हायर सेकण्डरी स्कूल, लकुआ (आसाम) आदि अनेकानेक संस्थाओं, सरदारशहर में घंटाघर आदि का निर्माण कराया गया है। ट्रस्ट का शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय योगदान है। ट्रस्ट द्वारा रामकृष्ण मिशन को 60 लाख रूपये की उदार सहायता भी हास्पिटल में वार्डो के निर्माणार्थ प्रदान की गई है।

श्री रामेश्वरदास गुप्त धर्मार्थ ट्रस्ट, दिल्ली

अग्रोहा विकास ट्रस्ट के संस्थापक महामंत्री श्री रामेश्वरदास गुप्त द्वारा संस्थापित यह ट्रस्ट विविध प्रकार की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन करता है। ट्रस्ट द्वारा साउथ एक्सटेंशन, दिल्ली एवं बृजघाट मुक्तेश्वर में विशाल धर्मभवनों का निर्माण कराया गया है, जहाँ विविध प्रकार की गतिविधियां निरंतर होती हैं। ट्रस्ट द्वारा कस्तूरी देवी पारिवारिक ट्रस्ट, श्रीमती कस्तूरी देवी गुप्ता धर्मार्थ न्यास, देवकी रानी गुप्ता योग साधना केन्द्र, कस्तूरी देवी होम्यो चिकित्सालय आदि विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से निरन्तर जनोपयोगी कार्य किए जा रहे हैं। धार्मिक सम्मेलनो का आयोजन, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की कक्षाओं को लगाना, आध्यात्मिक जगत की महान विभूतियों के सत्संग, प्रवचनादि का आयोजन, अनाम समाज सेवियों का सम्मान, धार्मिक पुस्तकों एवं सद्साहित्य का प्रकाशन ट्रस्ट की प्रमुख गतिविधियां हैं।

सेठ पूर्णमल सिंघानिया ट्रस्ट, मुम्बई

फतेहपुर निवासी सेठ पूर्णमल सिंघानिया के द्वारा प्रदत्त 60 लाख की सम्पत्ति से इस ट्रस्ट का निर्माण हुआ। इस ट्रस्ट ने अपनी प्रारम्भिक राशि में से 8 लाख रुपये मुम्बई विश्वविद्यालय को, 25 हजार रुपये अस्पताल में धर्मशाला बनाने और शेष राशि से मुम्बई में एक विशाल हस्पताल बनाने का प्रावधान किया, जिससे बोम्बे हास्पिटल का निर्माण हुआ। इस हस्पताल को अन्य उद्योगपतियों ने भी आर्थिक सहायता प्रदान कर इसे अमर बना दिया है। इस ट्रस्ट द्वारा माथेरान में स्कूल की स्थापना की गई। भारतीय खलासियों को विलायत में पर्याप्त सुश्रुषा प्रदान किये जाने के लिए लंदन के ब्रिटिश हस्पताल को एक लाख रुपये प्रदान किए।

रायबहादुर सेठ भगवानदास बागला ट्रस्ट, कलकत्ता

सेठ भगवानदास बागला के परिवार द्वारा प्रदत्त उदारदान से संचालित यह ट्रस्ट कलकत्ता में जनता की महान सेवा कर रहा है। इस ट्रस्ट द्वारा रंगून, मुकामाघाट, रामेश्वरम् आदि में विशाल धर्मशालाओं तथा चुरू, रंगून, मांडले आदि में अत्यंत सुंदर व कलात्मक मंदिरों का निर्माण कराया गया है।

शाह फूंदनलाल कुंदनलाल ट्रस्ट, लखनऊ

शाह फूंदनलाला कुंदनलाल लखनऊ के सुप्रसिद्ध रईस थे, जिन्होंने भगवद्भक्ति से प्रेरित होकर वृंदावन में स्थायी रूप से वास कर लिया था। आपने अपनी विशाल आमदनी वाली जमींदारी का ट्रस्ट बना कर लाखों रूपयों की लागत से वृंदावन में एक अत्यन्त सुंदर, भव्य, कलात्मक मंदिर का निर्माण कराया, जो शाह बिहारी जी के मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध हैं और सम्पूर्ण देश के लोग इस मंदिर की कलात्मकता एवं झाड़ फानूसों को देखने आते हैं।

सेठ मोतीलाल राधाकृष्ण बागला ट्रस्ट

यह ट्रस्ट कलकत्ता के उदारमना सेठ रूकमानंद जी के उदार दान का परिचायक है। ट्रस्ट ने काशी में सुप्रसिद्ध सत्यनारायण मन्दिर का निर्माण कराया। मंदिर के साथ ही अन्न क्षेत्र व वेद पाठशाला की स्थापना की। काशी में ही बांस के फाटक पर श्री सत्यनारायण धर्मशाला व बागला धर्मशालाओं का निर्माण कराया, जहां धर्मार्थ औषधालय का भी संचालन होता है। मोलमीन में ट्रस्ट द्वारा सुंदर धर्मशाला, विद्यालय, औषधालय, रमणीय पार्क का निर्माण कराया गया है। चुरू में इन्द्रमणि पार्क भी इस ट्रस्ट का स्मारक है।

रायबहादुर सेठ शिवप्रसाद तुलस्यान ट्रस्ट

कलकत्ता के सेठ रायबहादुर शिव प्रसाद तुलस्यान ने इस ट्रस्ट का निर्माण लाखों रूपयों की राशि द्वारा किया। ट्रस्ट ने लाखों रूपयों की लागत से कलकत्ता, गया, चिड़ावा आदि में लगभग 100 धर्मशालाओं, धार्मिक एवं संस्थाओं का निर्माण कराया। शेखावाटी में लगभग 100 पाठशालाएं खुलवाई, संस्कृत पाठशालाएं बनाईं। स्वर्गाश्रम का प्रसिद्ध लक्ष्मणझूला बनाने का श्रेय भी इस ट्रस्ट को प्राप्त है।

राजा शिवबक्सराय बागला ट्रस्ट

यह ट्रस्ट महान दानवीर राजा शिववक्सराय जी बागला के उदार दान से बनाया गया। इस ट्रस्ट में मोलमीन, काशी, कलकत्ता आदि में विशाल राम मन्दिर बनवाये। कलकत्ता का श्री सत्यनारायण मंदिर इस ट्रस्ट की कीर्ति का अमर स्मारक है, जहां हजारों श्रद्धालु भक्त प्रतिदिन भगवान के दर्शन कर मनोकामना की सिद्धि करते हैं। मंदिर में दातव्य औषधालय भी है।

ट्रस्ट ने बनारस में भी विशाल धर्मशालाओं, संस्कृत महाविद्यालय व सदावर्त का निर्माण किया है। हावड़ा, जगन्नाथपुरी एवं रामेश्वरम् आदि सभी तीर्थ स्थलों में ट्रस्ट द्वारा निर्मित धर्मशालायें हैं। कलकत्ता के पिंजरापोल में भी ट्रस्ट का विशेष सहयोग रहा है। ट्रस्ट द्वारा चुरू में गौशाला का संचालन किया जा रहा है। इस प्रकार ट्रस्ट ने लोकोपकारी कार्यों में प्रचुर राशि व्यय कर महान उदारता का परिचय दिया है।

लाला हरप्रसाद ट्रस्ट, आगरा

आगरा के लाला हरप्रसाद ने अपनी जमींदारी के 22 गांव व 15 लाख रुपये नकद देकर इस ट्रस्ट की स्थापना की और अनेक धार्मिक संस्थाओं का निर्माण किया। अनेक

जैन मंदिरों के अतिरिक्त पटना का अग्रवाल छात्रावास, आगरा का हर प्रसाद जैन हाई स्कूल इस ट्रस्ट की अमर कीर्ति के संवाहक हैं।

सेठ साधुराम तोलाराम गोईन्का ट्रस्ट

इस ट्रस्ट की स्थापना सेठ साधुराम तोलाराम गोईन्का के उदार दान से हुई। ट्रस्ट द्वारा गदखल में विशाल आयुर्वेदिक सेनीटोरियम की स्थापना की गई, जहां क्षयरोगियों की नि:शुल्क चिकित्सा होती है। यहां रोगियों के लिए रामवार्ड, कृष्णवार्ड, स्त्रियों के लिए सीतावार्ड आदि बनाये गए हैं। ट्रस्ट द्वारा खुर्जा, रतलाम, भुसावल, हावड़ा, चित्रकूट आदि में विशाल धर्मशालाओं का भी निर्माण कराया गया है, जहां सैंकड़ों छात्र संस्कृत का अध्ययन करते हैं।

इनके अलावा भी हजारों की संख्या में बड़े-बड़े ट्रस्ट है, जिनके द्वारा प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ों रुपये लोकोपकारी कार्यों में व्यय किए जाते हैं। दयावती मोदी ट्रस्ट, साहू जैन ट्रस्ट, जे.के. सिंघानिया ट्रस्ट, पोद्दार चेरिटेबल ट्रस्ट, भरतिया चेरिटेबल ट्रस्ट, भगवती प्रसाद खेतान चेरिटेबल ट्रस्ट, श्रीमती रमादेवी चेरिटी ट्रस्ट, चूड़ीवाला लोकसेवा ट्रस्ट, सेक्सरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री बालचंद लीला चेरिटेबल ट्रस्ट, ज्ञानपीठ पुरस्कार ट्रस्ट, रामनिरजंन ट्रस्ट, श्री बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रुईया चैरेटेबल ट्रस्ट श्रीराम फाउंडेशन, सेठ सूरजमल जालान ट्रस्ट, मंगतराम जैपुरिया ट्रस्ट, सेठ लक्ष्मी नारायण सूरजमल कानोडिया ट्रस्ट, स्वरूपचंन्द्र पृथ्वीराम रूंगटा ट्रस्ट, सेठ भगवानदास रामचन्द्र लोयल्का ट्रस्ट, सेठ देवीदत्त सूरजमल खेतान पड़रौना ट्रस्ट, सुखानंद गुरमुखराय चैरिटी ट्रस्ट महादेव मालीराम ट्रस्ट, जगन्नाथ गोगराज खेमका ट्रस्ट, अग्रोहा विकास ट्रस्ट आदि का नाम प्रतीक रूप में लिया जा सकता है।

साहित्य, लेखन एवं प्रकाशन के क्षेत्र में

हिन्दी, साहित्य एवं प्रकाशन के क्षेत्र में इस समाज की सेवाएं और योगदान और भी अमूल्य है। स्वाधीनता आंदोलन के प्रथम मन्त्रदाता और आधुनिक हिन्दी काव्य को नवोन्मेष देने वाले युगकवि भारतेन्दु इसी समाज की अमूल्य निधि थे, जिन्होंने गद्य, पद्य, नाटक आदि साहित्य की सभी विधाओं को न केवल क्रान्तिकारी दिशा ही दी अपितु हिन्दी में उच्चकोटि के सम्पादकों, लेखकों कवियों की एक लम्बी श्रृंखला बनाने का भी जिन्हें श्रेय प्राप्त है। उन्हीं के प्रयासों का परिणाम था कि हिन्दी समग्रता, सार्वदेशिकता और आधुनिकता को प्राप्त कर सकी।

इस समाज को बालमुकन्द गुप्त, जगन्नाथप्रसाद रत्नाकर, वासुदेवशरण अग्रवाल, रायकृष्णदास, भारत भूषण अग्रवाल, केदारनाथ अग्रवाल, जगदीश गुप्त, शेरजंग गर्ग, हनुमान प्रसाद पोद्दार, काका हाथरसी, शिवचंद भरतिया, जैसे असंख्य कवियों, साहित्यकारों, लेखकों की ऐसी समृद्ध परम्परा प्राप्त है, जिस पर कोई भी साहित्य गर्व का अनुभव कर सकता है।

इस समाज के कवियों, साहित्यकारों, मनीषियों ने हिन्दी एवं साहित्य की बहुविधि सेवा की। इनमें से कतिपय का संकेत रूप में उल्लेख ही पर्याप्त होगा।

बाबू ब्रजरत्नदास महान साहित्यप्रेमी एवं इतिहासकार थे, जो 22 वर्षों तक नागरी प्रचारिणी सभा के विभिन्न पदों पर रहे और आपने हरिश्चंद्र जीवनी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नंददास ग्रंथावली आदि अनेकानेक ग्रंथों की रचना कर हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय सेवा की।

इसी प्रकार बाबू रायकृष्णदास ने गद्य काव्य विधा को ऊंचाई की चरम सीमा पर पहुंचाया। आप भारत कलाभवन के संस्थापक, राष्ट्रीय संग्रहालय के निर्देशक और अद्‌भुत कला पारखी थे। भारत सरकार ने आपकी कला एवं साहित्य सम्बंधी सेवाओं को देखते हुए आपको पद्मविभूषण की उपाधि से सम्मानित किया।

श्री विष्णु प्रभाकर हिन्दी के ऐसे उपन्यासकार और नाटककार हैं, जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है। आपका आवारा मसीहा हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।

श्री गुलाबराय का नाम हिन्दी साहित्य के आलोचकों में अग्रणी है। आपने समीक्षा साहित्य को नया रूप दिया।

डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार उच्चकोटि के इतिहास लेखक एवं विद्वान रहे, जो वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी में इतिहास विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे और विश्वविद्यालय के कुलपति पद को सुशोभित किया।

काका हाथरसी (प्रभूलाल गर्ग) हास्य रस के सुप्रसिद्ध कवि हैं। जिन्होंने पचासों हास्य पुस्तकों का सृजन कर हास्य सम्राट की उपाधि प्राप्त की। आप तुक कोश के निर्माता थे। आपने हास्य साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए काका हाथरसी पुरस्कार की स्थापना की। आपको भारत सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया।

इसी प्रकार नयी कविता के कवियों में भारतभूषण अग्रवाल, केदारनाथ अग्रवाल, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री भारतभूषण नई कविता के प्रवर्तकों में से एक होने के साथ-साथ साहित्य अकादमी के सचिव भी रहे। उनकी पत्नी डॉ० बिंदु अग्रवाल भी सुप्रसिद्ध कहानी लेखिका हैं। नवोदित लेखकों में शेरजंग गर्ग का नाम भी उल्लेखनीय है। डॉ० गर्ग ने दो दर्जन से अधिक पुस्तकों का लेखन कर हिन्दी काव्य की श्रीवृद्धि में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

श्री हंसराज रहवर मार्क्सवादी लेखकों में अग्रणी हैं। आपकी बेनकाब ग्रंथमाला पूरे हिन्दी जगत में ख्याति प्राप्त है। श्री भवानी मित्तल की गणना अग्रणी कला समीक्षकों में होती है।

स्व० मदनगोपाल सिंघल, श्री दामोदर अग्रवाल, श्री देवेन्द्रकुमार, श्री जयप्रकाश भारती, श्री शिवकुमार गोयल, आदि बालसाहित्य के सिद्धहस्त लेखक हैं। इनकी अनेक रचनाएं भारत सरकार एवं साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत हुई हैं।

डॉ० लोकेशचन्द्र सुप्रसिद्ध भाषाविद् एवं श्रेष्ठ साहित्यसेवी हैं।

डॉ० कमल किशोर गोयन्का प्रेमचन्द साहित्य के विशेषज्ञ रूप में ख्याति प्राप्त हैं। आपकी 30 से अधिक पुस्तकों तथा 400 से अधिक लेखों का प्रकाशन हो चुका है।

चुरू के श्री गोविन्द अग्रवाल साहित्य एवं शोध के क्षेत्र में समर्पित व्यक्तित्व हैं। आपने चुरू के लोक संस्कृति संस्थान एवं नगरश्री के माध्यम से तत्कालीन आर्थिक,

सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति तथा इतिहास पर प्रकाश डालने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेजों, हुण्डियों, चिट्ठियों, कलात्मक चित्रों, ताड़पत्रीय पाण्डुलिपियों, हस्तलिखित ग्रंथों, शिलालेखों, बही बसनों, पट्टे-परवानों आदि का अद्‌भुत संग्रह तथा अनेक मौलिक ग्रंथों का सृजन कर मां भारती की अनुपम सेवा की है। आपका राजस्थानी कहावत कोश, बातां ही चाले, पोतेदार संग्रह के अप्रकाशित कागजात आदि प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

श्री रामावतार पोद्दार अरुण हिन्दी काव्य के क्षेत्र के ऐसे व्यक्तित्व है, जिन्होंने तीस से अधिक महाकाव्यों एवं खण्डकाव्यों का सृजन कर गोस्वामी तुलसीदास की परम्परा को पुनर्जीवित किया है। आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा साहित्य वाचस्पति एवं विक्रमशिला विद्यापीठ द्वारा विद्यावाचस्पति से सम्मानित किया गया है।

बैरिस्टर चम्पतराय अग्रवाल जैन साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक थे, जिन्होंने 140 से अधिक ग्रन्थों की रचना कर अपनी अद्‌भुत प्रतिमा का परिचय दिया। आप वेदान्त तथा योगशास्त्र के भी श्रेष्ठ ज्ञाता थे।

श्री विट्ठलदास मोदी हिन्दी में प्राकृतिक चिकित्सा साहित्य तथा श्री हरीश अग्रवाल एवं यतीश अग्रवाल वैज्ञानिक साहित्य के सबसे बड़े लेखक हैं। श्री हरीश अग्रवाल पिछले चालीस वर्षों से नवभारत टाईम्स के विज्ञान स्तंभ का नियमित लेखन कर पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित कर चुके हैं। 1962 में अमेरिका के शिएटल नगर में आयोजित विश्व विज्ञान कांग्रेस में विज्ञान साहित्य का प्रतिनिधित्व करने वाले आप भारत के प्रथम विज्ञान लेखक थे। आपने हिन्दी के अलावा अंग्रेजी में भी पर्याप्त लेखन किया है। आप केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के डॉ० आत्माराम पुरस्कार से सम्मानित एवं भारतीय विज्ञान लेखक संघ द्वारा अभिनन्दित हो चुके हैं।

डॉ० एम.एस. अग्रवाल ने भी दो दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रणयन कर चिकित्सा साहित्य में विशेष नाम अर्जित किया है। आपकी सुप्रसिद्ध कृति 'आंख' भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है।

श्री राधामोहन गोकुल जी महान साहित्य साधक एवं चिंतक थे, जिन्होंने तीन दर्जन से अधिक पुस्तकें लिख वैचारिक क्रांति का संदेश घर-घर पहुंचाया। आपका क्रांतिकारियों से निकट का सम्पर्क था और आपने स्वाधीनता संग्राम की भावना को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लिखने के आरोप में आप पर अनेक बार मुकद्दमे चले किंतु आप बिल्कुल न झुके।

दाऊदयाल गुप्त, मथुरा, उच्चकोटि के साहित्य मनीषी एवं लेखक हैं, जिन्होंने हिन्दी एवं ब्रजभाषा में 150 से अधिक काव्यों, महाकाव्यों, उपन्यासों आदि के रूप में लगभग पांच हजार पृष्ठों का साहित्यसृजन कर मां सरस्वती की आराधना की है। आपको विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं द्वारा विद्यावाचस्पति, साहित्य मार्तण्ड, साहित्यश्री, साहित्य वारिधि आदि द्वारा सम्मानित किया गया।

डॉ. मोतीचंद्र की काशी का इतिहास, सार्थवाह, कला पुरातत्व आदि शोधपूर्ण रचनाएं प्रसिद्ध हैं।

बाबू मुकंदलाल गुप्त ने गुजराती भाषा के महान साहित्यकार श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के ऐतिहासिक उपन्यासों को हिन्दी में उपलब्ध कर अनुवादित साहित्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

डॉ. पद्मा अग्रवाल ने मनोविज्ञान साहित्य के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अर्जित की है।

डॉ. गंगाराम गर्ग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। आपने विश्व हिन्दी साहित्य कोष, आक्सफोर्ड हिन्दी साहित्य परिचय ग्रंथ, हिन्दू जगत विश्व कोश-दस भाग, भारतीय साहित्य विश्व कोश आदि का सृजन कर साहित्य क्षेत्र में उच्च कोटि की प्रतिभा का परिचय दिया।

लाला चतुरसेन गुप्ता ने आर्यसमाज के साप्ताहिक पत्र 'सार्वदेशिक' के सम्पादन के साथ-साथ एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखी। आप प्राचीन साहित्य के प्रकाशक भी थे।

डॉ० रामप्रकाश अग्रवाल ने वैदिक साहित्य के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की है।

श्री विष्णु पंकज राजस्थान के ऐसे ख्याति प्राप्त विद्वान हैं, जिन्होंने विभिन्न नाटक, उपन्यास, जीवनी, काव्य ग्रंथों की रचना कर ख्याति प्राप्त की है। आपके हिंदी इंटरव्यू, उदभव एवं विकास, हरिभाऊ उपाध्याय-व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

श्रीमती वीणा अग्रवाल ने आर्थिक विषयों पर लेखन में दक्षता प्राप्त है। आपको आर्थिक क्षेत्र में विशिष्ट लेखन के लिए एक लाख रुपए का के.एच. बथेजा पुरस्कार प्राप्त हुआ है, जो महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

श्री घमण्डीलाल अग्रवाल बाल साहित्य के प्रसिद्ध लेखक हैं। बाल साहित्य सम्बंधी उनकी 17 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपको इस क्षेत्र में चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट पुरस्कार, डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक पुरस्कार, राजस्थान पत्रिका पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ. विनीता सिंघल को विज्ञान क्षेत्र में लेखन के लिए महासागर विकास विभाग ने सम्मानित किया है।

श्री बदलूराम गुप्ता (सोनीपत) ने हिन्दी एवं अंग्रेजी में लगभग डेढ़ दर्जन पुस्तकों की रचना कर साहित्य जगत में अपना नाम अंकित करवाया।

श्री के.के. सिंघल कृषि क्षेत्र में लेखन के लिए प्रसिद्ध है।आपको कृषि क्षेत्र में मौलिक लेखन के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

श्री तनसुखराम गुप्ता जाने-माने लेखक एवं हिन्दुत्व के प्रचारक हैं। आपने सूर्यभारती प्रकाशन के माध्यम से मानस मंथन, वैदेही विवाह, हिंदू धर्म परिचय, पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे अनेक ग्रंथों की रचना की है।

श्री राधाकृष्ण नेवटिया ने योग सम्बंधी प्रचुर साहित्य का सृजन किया।

इस समाज के कवियों, लेखकों, साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य एवं हिन्दी के प्रचार प्रसार में योगदान बहुविध है। बाबू मुकुन्द दास गुप्त प्रभाकर हिन्दी में टाइम टेबुल प्रकाशित कर राष्ट्रभाषा के प्रति अनन्य आस्था व्यक्त करने वाले अपने ढंग के एक मात्र व्यक्तित्व थे। आपने लाला भगवानदीन की बिहारी सतसई, रामचंद्र शुक्ल के भ्रमरगीत सार, रहीम रत्नावली आदि ग्रंथों का सस्ते मूल्य में प्रकाशन कर मातृभाषा की अनन्य

सेवा की। इस समाज के कवियों ने स्वतंत्रता की अलख जगाने और राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतेंदु हरिश्चंद्र राष्ट्रीयता के अमर नायक थे, जिन्होंने भारत दुर्दशा व अन्य अनेक नाटक लिख अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध वातावरण का निर्माण किया।

श्री बालमुकुंद गुप्त ने 'शिवशम्भू के चिट्ठे' लिखा, जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिलाकर रख दिया था।

डॉ० रघुवीर शरण मित्र महान कवि होने के साथ-साथ राष्ट्रीयता के अमर उद्घोषक भी हैं। आपके दामाद श्री अशोक अग्रवाल भी युवा पीढ़ी के विशिष्ट लेखक हैं।

हिन्दी के अलावा अन्य भाषाओं के साहित्य को समृद्ध करने में भी इस समाज के लेखकों एवं साहित्यकारों का विपुल योग रहा है। श्री ज्योतिप्रसाद अग्रवाल एवं चन्द्रकुमार अग्रवाल असमिया भाषा के ऐसे साहित्य सेवी थे, जिनकी कोटि का अन्य लेखक मिलना कठिन है।

श्री चन्द्रकुमार अग्रवाल असमिया साहित्य के युगनायक कवि माने जाते हैं। आपने असमिया की 'ज्योत्सना पत्रिका' तथा 'सादीनिया असमिया' के सम्पादन द्वारा असमिया की महान सेवा की है।

श्री शिवचन्द्र भरतिया राजस्थानी भाषा के अप्रतिम कवि, साहित्यकार, निबंध लेखक एवं पत्रकार थे। आप राजस्थानी के साथ मराठी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, बंगला, गुजराती, मारवाड़ी आदि अनेक भाषाओं के जानकार थे। आपने पचास से अधिक ग्रन्थों, नाटकों, उपन्यासों आदि का सृजन कर राजस्थान में आधुनिक साहित्य की अधिकांश प्रवृत्तियों का प्रवर्तन किया। आपकी गणना राजस्थानी भाषा के 'भारतेन्दु' के रूप में होती है।

बाबू जगन्नाथप्रसाद रत्नाकर का ब्रजभाषा के कवियों में श्रेष्ठ स्थान है। उन्होंने ब्रजभाषा में जिन उद्धवशतक और गंगावरतरण की रचना की, वे ब्रज साहित्य की अमूल्य निधि हैं। ब्रज भाषा साहित्य-भंडार को भरने मे प्रभुदयाल मित्तल का योगदान भी कम नहीं है। आप वर्षों तक ब्रज साहित्य मण्डल के मंत्री रहे और 50 से अधिक ग्रंथो का प्रणयन किया, जिनमें से अनेक ग्रंथ उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश आदि सरकारों द्वारा पुरस्कृत हुए। आप ने ब्रजभारती, देशबंधु जैसी अनेक पत्रिकाओं का सम्पादन किया और साहित्य, समीक्षा, इतिहास, संस्कृति आदि पर 250 से अधिक प्रामणिक निबंधों का प्रकाशन कर ब्रजभाषा के साहित्य को नई गति दी। ब्रजभाषा को आकाशवाणी पर प्रतिष्ठित कराने में भी आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

श्री वृंदावनदास भी ब्रजभाषा के अनन्य उपासक हैं। उन्होंने ब्रज भारती का सम्पादन करके तथा भारत का इतिहास एवं अन्य ग्रंथों की रचना कर मां भारती के भण्डार को भरा।

श्री वासुदेवशरण अग्रवाल हिन्दी साहित्य के ऐसे विद्वान, मनीषी, पुरातत्वविद, कला के साधक, शोधकर्ता और अनिसंधित्सु विद्वान हैं, जिनकी कोटि का उदभट् विद्वान हिन्दी में मिलना कठिन है। आप जनपदीय आंदोलनों के प्रवर्तक और ब्रजसाहित्य मण्डल के प्रथम अध्यक्ष थे। आप सभी भारतीय भाषाओं के सूर्य, संस्कृत वाङ्मय,

वैदिक धर्म, दर्शन, व्याकरण, निरुक्त शास्त्र, इतिहास, भूगोल आदि के ज्ञाता थे। आपने साढ़े तीन हजार के लगभग लेखों, दस से अधिक शोधपूर्ण ग्रंथों का लेखन एवं प्रकाशन कर अपनी विद्वता की महान छाप हिन्दी साहित्य पर अंकित की। पाणिनीकालीन भारत वर्ष, हर्ष चरित-एक सांस्कृतिक अध्ययन, कादम्बरी, मेघदूत, भारत सावित्री, वेदविद्या, पृथ्वी पुत्र आदि आपकी कालजयी रचनाएं हैं, जिनकी समानता मिलना कठिन है। आप हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थापत्य विभाग के अध्यक्ष रहे सन् 1952 में भारत सरकार ने आपको पद्मविभूषण से अलंकृत करना चाहा, किन्तु आपने उसे विनम्रता से अस्वीकार कर दिया।

अग्र एवं वैश्य साहित्य लेखन में भी इस समाज के लेखकों एवं कवियों ने अपनी लेखनी चलाई है। इनमें श्री बालचंद मोदी, श्री परमेश्वरी लाल गुप्त, डॉ० स्वराज्यमणि अग्रवाल, श्री त्रिलोक गोयल, श्री विष्णुचंद्र गुप्त, श्री गुलाबराय, श्री शिवशंकर गर्ग, बदलूराम गुप्ता, श्री हरीकिशन अग्रवाल, श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,चिरंजीलाल अग्रवाल, श्री गिर्राज प्रसाद मित्तल, श्री रामेश्वरदास गुप्त, श्री हरपतराय टांटिया, डॉ० चम्पालाल गुप्त, डॉ० मनोहरलाल गोयल, श्री निहालचंद, श्री ज्वालाप्रसाद अनिल, श्री निरंजनलाल गौतम आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रकाशन के क्षेत्र में भी इस समाज का योगदान बहुश्रुत है। हिन्दी साहित्य के 60% प्रकाशक अग्रवाल समाज के हैं। इस क्षेत्र में गीताप्रेस, गोरखपुर, श्री खेमराज श्री कृष्णदास, वेंकटेश्वर प्रेस, भारतीय ज्ञानपीठ, देहाती पुस्तक भंडार, अशोक प्रकाशन, राजहंस प्रकाशन, प्रभात प्रकाशन, एस. चांद एंड कं. आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भारतीय ज्ञानपीठ ने ज्ञानपीठ ने ज्ञान-विज्ञान के विलुप्त ग्रंथों का प्रकाशन कर प्रकाशन के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्रदर्शित की है। इस दिशा में श्री रामावतार गुप्ता का नाम विशेष उल्लेखनीय है, जिन्होंने एक आम लेखक की पुस्तक रेपिडेक्स इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स की 14 भारतीय भाषाओं में एक करोड़ से अधिक प्रतियां बेच प्रकाशन क्षेत्र में विशेष प्रतिमान स्थापित किया है। उसके 200 के लगभग संस्करण हिन्दी में तथा बीसीयों संस्करण अन्य भाषाओं में निकल चुके हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इस समाज का योगदान और भी अमूल्य है। अग्रोहा से निकल कर अग्रवाल जहां-जहां भी गए, वे खड़ी बोली हिन्दी को अपने साथ ले गए। उनके भारत व्यापी प्रसार के कारण हिन्दी के प्रचार-प्रसार को भी प्रश्रय मिला और यही कारण है कि सुदूर आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, नागालैण्ड, कन्याकुमारी तक हिन्दी भाषा का प्रसार दिखाई देता है। इस प्रसार में अग्र/वैश्य समाज के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता, जिन्होंने अपने उद्यम-व्यवसाय के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी को व्यापक रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जमनालाल बजाज और अन्य नेताओं का हिन्दी प्रचार प्रसार में विशेष योगदान रहा। आपने गांधीजी के दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार आंदोलन तथा वहां दक्षिणी भारत हिन्दी

प्रचार समितियों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने हिन्दी के प्रचार तथा सस्ते साहित्य के प्रकाशन के लिए हिन्दी पुस्तक भंडार, मुम्बई तथा सस्ता साहित्य मण्डल जैसी संस्थाओं की स्थापना की। गांधी जी जब दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचारार्थ गए तो आपने हिन्दी प्रचार के लिए राशि भेंट की तथा स्वयं दक्षिण भारत का दौरा किया।

काशी विद्यापीठ के संस्थापक शिव प्रसाद गुप्त एवं सीताराम सेक्सरिया ने हिन्दी के प्रचार के लिए अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। काशी विद्यापीठ की स्थापना का उद्देश्य स्वाधीनता सेनानियों को हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देना और राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार था। हिन्दी ग्रंथों के प्रकाशन तथा साहित्य प्रचार में भी इस संस्था का विशेष योगदान रहा। उच्चकोटि की धार्मिक पुस्तकों का सस्ते मूल्य में प्रकाशन कर गीताप्रेस ने भी हिन्दी भाषा की विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक पुस्तकों को भारत के घर-घर पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शांतिनिकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना में सीताराम सेक्सरिया का योगदान रहा। इसी प्रकार हिन्दी पढ़ाने के लिए धन की व्यवस्था भी वे करते रहे। डॉ० राममनोहर लोहिया ने अंग्रेजी हटाओ, हिन्दी लाओ के पक्ष में जोरदार आन्दोलन किया।

डॉ० वेदप्रताप वेदिक ने भारतीय भाषा सम्मेलन के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं अंग्रेजी को हटाने की दिशा में जो कार्य किया है, उसके कारण आपकी गणना पूरे भारत में हिन्दी प्रेमी के रूप में होती है।

श्री हरिबाबू कंसल, श्री जगन्नाथ गोयल ने केंद्रीय हिन्दी सचिवालय के माध्यम राजकीय कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की दिशा में प्रचार कर उल्लेखनीय ख्याति प्राप्त की है।

हिंदी में जब पारिभाषिक शब्दों की कमी बता कर उसे शिक्षा, विज्ञान आदि के क्षेत्र में पीछे धकेला जा रहा था, उस समय डॉ० रघुवीर ने चार लाख से अधिक हिंदी पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कर मां भारती को अनुपम सेवा की।

श्री रत्नकुमार प्रेमी वर्षों तक राजर्षि पुरुषोत्तमदास हिन्दी भवन के मंत्री रहे और समय-समय पर विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन कर हिन्दी के पक्ष में प्रबल वातावरण तैयार किया। आप प्रेमी प्रेस के संचालक थे। आपने यह प्रतिज्ञा की थी कि आप विवाहादि के निमंत्रण पत्र केवल हिन्दी में ही छापेंगे और आपने आजीवन अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया।

लाला हरदेवसहाय ने भी हिन्दी प्रचार का संकल्प लिया और अपने गांव तथा आस-पास के क्षेत्रों में हिन्दी विद्यालयों की स्थापना कर हिन्दी की श्रीवृद्धि में योगदान दिया।

बाबू ब्रजरत्नदास ने नागरी प्रचारिणी सभा के माध्यम से हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए जो कार्य किया, वह नींव के स्तंभ के समान है।

बाबू ठाकुरदास, काशी ने हिन्दी में धार्मिक साहित्य का प्रकाशन कर उसे घर-घर पहुंचाया।

इस प्रकार हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इस समाज की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान

पत्रकारिता के क्षेत्र में इस समाज ने सदैव उच्च मूल्यों की रक्षा की है और अपने रचनाधर्मी दृष्टिकोण द्वारा राष्ट्रीय हितों का संवर्द्धन किया है। इस समुदाय के पत्रकारों ने विषम परिस्थितियों में भी स्वस्थ पत्रकारिता को बनाए रखा है। सर्व श्री मूलचन्द अग्रवाल, रामनाथ गोयन्का, बालेश्वर अग्रवाल, शिवकुमार गोयल, रमेशचंद्र भैया जी, डोरीलाल अग्रवाल, दुर्गाप्रसाद चौधरी, वेदप्रताप वैदिक आदि असंख्य पत्रकारों ने इस मशाल को प्रज्वलित रखा है और आज भी इण्डियन एक्सप्रेस, जनसत्ता, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, दैनिक भास्कर, विश्वामित्र, टाइम्स ऑफ इण्डिया, आज, सन्मार्ग जैसे पत्रों से लेकर कल्याण, धन्वन्तरी, सुधानिधि, इलस्ट्रेटिड वीकली, फिल्मफेयर जैसी पत्रिकाओं के प्रकाशन द्वारा यह समुदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ने कल्याण के माध्यम से भारत की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करने का जो प्रयास किया, वह भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में अपनी सानी नहीं रखता। श्री अक्षयकुमार जैन ने नवभारत टाइम्स को गरिमा की ऊंचाई पर पहुंचाया। श्री रमेश कुमार अग्रवाल ने भास्कर पत्र समूह तथा श्री डोरीलाल अग्रवाल ने अमर उजाला के माध्यम से पत्रकारिता जगत की जो सेवाएं की हैं, वे सर्वविदित हैं।

इस समाज ने राष्ट्रीय आंदोलन में न केवल तन-मन-धन से सहायता की अपितु समाचारपत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को सर्वव्यापी बना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनका यह योगदान बहुविध था। उन्होंने उस समय राष्ट्रीय विचारधारा के जितने भी पत्र थे, उनका खुले रूप से पोषण कर संवर्द्धन किया। जब लोकमान्य तिलक को मराठी पत्र 'केसरी' के हिन्दी संस्करण के प्रकाशन की आवश्यकता हुई तो जमनालाल बजाज ने उनकी आर्थिक सहायता की। उन्होंने गांधी जी के 'नवजीवन' का प्रकाशन-भार भी उठाया। वे गांधीजी के 'हरिजन', 'प्रताप' तथा 'कर्मवीर' आदि पत्रों की भी आर्थिक सहायता करते रहे। राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत साहित्य के प्रकाशन के लिए सस्ता साहित्य मंडल आदि कई संस्थाओं की स्थापना हुई, जिनमें श्री जमनालाल बजाज का विशेष सहयोग रहा। कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री भागीरथ कानोडिया ने गांधीजी की पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रवासी प्रेस की स्थापना में योगदान दिया। कलकत्ता का हिन्दी पत्र 'भारतमित्र' इसी समाज के आर्थिक सहयोग से चलता था। श्री रामेश्वर नोपानी ने डू और डाई (करो या मरो) पत्र के प्रकाशन का सम्पूर्ण आर्थिक भार संभाला। कलकत्ता समाचार, सुधारक, स्वतंत्र, बड़ा बाजार गजट जैसे न जाने कितने अखबार इस समाज के आर्थिक सहयोग से चलते थे।

श्री मूलचंद अग्रवाल ने कलकत्ता के सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र 'विश्वामित्र' की स्थापना की और वर्षों तक उसके सम्पादक रहे। आपके पुत्र श्री कृष्णचंद्र अग्रवाल भी अग्रणी पत्रकार हैं।

श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी स्वतंत्रता सेनानी के साथ-साथ महान पत्रकार भी रहे। आपने जयपुर, अजमेर, कोटा आदि स्थानों से 'नवज्योति' पत्र का प्रकाशन किया।

श्री देशबंधु गुप्ता ने सुप्रसिद्ध पत्र 'तेज' का वर्षों तक सम्पादन किया। आप उसके संस्थापक भी थे।

श्री रामनाथ गोयन्का सुप्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक पत्र 'इण्डियन एक्सप्रेस' के सम्पादक एवं संस्थापक रहे। आप अत्यंत ही निर्भीक एवं सजग पत्रकार थे, जिन्होंने आपतकालीन स्थिति का विरोध किया एवं देश में व्याप्त कुशासन के विरुद्ध वातावरण बना पत्रकारिता जगत में विशेष भूमिका निभाई। आपके पुत्र श्री बी. डी. गोयन्का को निर्भीक पत्रकारिता के कारण उत्पीड़न का शिकार हो अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। आपने एक लाख रुपये के बी. डी. गोयन्का पत्रकारिता पुरस्कार की स्थापना भी की।

श्री हरिकृष्ण अग्रवाल सुप्रसिद्ध पत्र 'राष्ट्रदूत' के संस्थापक सम्पादक एवं कुशल अग्रणी पत्रकार रहे। श्री छोटेलाल कानोडिया ने न केवल कलकत्ता से दैनिक 'सन्मार्ग' के प्रकाशन में श्री करपात्री जी की सहायता की अपितु उसके संचालन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री बालेश्वर अग्रवाल सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं, जिन्होंने हिन्दी की प्रथम संवाद समिति 'हिन्दुस्तान समाचार' की स्थापना की और उसके प्रधान सम्पादक रहे। आप युगवार्ता के भी संस्थापक हैं।

डॉ० वेद प्रताप वैदिक अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार एवं भाषा के सम्पादक हैं।

श्री विवेक गोयनका युनाइटेड न्यूज ऑफ इण्डिया तथा श्रीमती शोभना भरतिया प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया है।

श्री शिवकुमार गोयल हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार हैं, जिनकी दो दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप हिन्दुस्तान वार्षिकी के भी अनेक वर्षों तक सम्पादक रहे। आप आकाशवाणी के लिए संसद-समीक्षा भी लिखते रहे हैं। आपको 'अग्रोहाधाम' पत्रिका के सम्पादन का श्रेय भी प्राप्त है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति जैसे उच्च पद को सुशोभित करने वाले श्री सुभाष विद्यालंकार भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'योजना' पत्र के सफल सम्पादक रहे। श्री सत्यवीर अग्रवाल सुप्रसिद्ध समाजवादी लेखक होने के साथ-साथ 'कल हमारा है' पत्रिका के सम्पादक भी हैं।

श्री गोविंदप्रसाद केजरीवाल तथा श्री बृजनारायण अग्रवाल ने सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'हिन्दुस्तान' का वर्षों तक सम्पादन कर पत्रकारिता जगत में विशेष नाम कमाया है। आप दोनों की गणना वरिष्ठ पत्रकारों में होती है।

श्री सत्येन्द्र गुप्त बनारस से प्रकाशित सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र 'आज' के सम्पादक हैं। आपने हिन्दी पत्रकारिता के उन्नयन में विशेष योगदान दिया है। आप सुप्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री शिवप्रसाद गुप्त के सुपुत्र हैं।

'दैनिक प्रभात' के सम्पादक श्री वि.स.विनोद एवं उनके सुपुत्र श्री सुबोधकुमार विनोद, धार्मिक पत्र 'रसवृंदावन' के सम्पादक श्री रामनिवास ढंढरिया, चुरू से प्रकाशित शोध पत्रिका 'मरुश्री' के सम्पादक श्री गोविंद अग्रवाल हैं।

श्री क्षितीशकुमार वेदालंकार आर्य जगत के सुप्रसिद्ध पत्रकार रहे हैं। आपने वर्षों तक 'आर्य जगत' का सम्पादन किया। आपने अनेक वर्षों तक दैनिक हिन्दुस्तान का भी सम्पादन किया।

श्री रामस्वरूप गर्ग तेरापंथ के पत्रकार हैं, जिन्हें 1997 का श्री मनोहरीदेवी डागा पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

इसी प्रकार प्रो. देवेन्द्र स्वरूप अग्रवाल इतिहासकार होने के साथ-साथ कुशल पत्रकार भी हैं। आपने अनेक वर्षों तक 'पाञ्चजन्य' का सम्पादन किया है।

श्री रत्नप्रकाश शील एवं श्री जयप्रकाश भारती ने सुप्रसिद्ध बाल पत्रिका 'नंदन' मासिक का सम्पादन कर बाल-पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष नाम अर्जित किया है। श्री लक्ष्मीचंद गुप्त का बाल-पत्रिका 'पराग' के मुख्य उपसंपादक के रूप में योगदान रहा।

श्री दिनेशचंद्र गर्ग ने गाजियाबाद से 'गऊ गंगा' दैनिक पत्र का सम्पादन किया। श्री महावीरप्रसाद शशि ने 'दैनिक हिन्दू', श्री प्रवीण शरण ने दैनिक 'विश्वमानव', डॉ० सुरेन्द्र मित्तल ने 'राष्ट्र धर्म' तथा रामावतार गुप्ता ने कलकत्ता से प्रकाशित 'सन्मार्ग' का सम्पादन कर पत्रकारिता जगत में इस समाज का गौरव बढ़ाया है।

श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी ने 'तपोभूमि' एवं 'पंचायती राज' का वर्षों तक सम्पादन किया। उनके पुत्र धर्मवीर प्रेमी तथा रतनकुमार भी ख्याति प्राप्त पत्रकार हैं।

श्री रामनारायण चौधरी राजस्थान में राजनीतिक चेतना के वाहक तो रहे ही, साथ-साथ नया राजस्थान, मेन, तरुण राजस्थान, राजस्थान केसरी आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया और 50000 से अधिक पृष्ठों के अंग्रेजी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कर विशेष प्रतिमान स्थापित किया।

श्री गोपाल नेवटिया मुम्बई से प्रकाशित 'नवनीत' पत्रिका के सम्पादक रहे।

श्री हेमन्त अग्रवाल स्नेही दैनिक नवभारत टाइम्स दिल्ली तथा श्री प्रकाशचंद बंसल शान्तिदूत पत्र का वर्षों से सम्पादन कर रहे हैं।

श्री नरनारायण गोयल ने पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष प्रतिमान स्थापित किया है। श्रीमदन विरक्त भारत ग्राम समाचार के सम्पादक होने के साथ महाराज अग्रसेन समाचार एजेंसी के प्रबंध निदेशक भी हैं।

श्री अनिल बंसल दैनिक जनसत्ता के विशेष प्रतिनिधि एवं राजनीतिक समीक्षक हैं। श्री मुरारीलाल बिंदल अनेक वर्षों तक 'उत्तराखण्ड टाइम्स' से सम्पादक रहे।

श्री हरिकथा के सम्पादक श्री सुरेन्द्र अग्रवाल, युवा अग्रवाल के सम्पादक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, 'संगीत' के सम्पादक श्री बालकृष्ण गर्ग, 'अग्रोहाधाम' पत्रिका के मानद सम्पादक डॉ० चम्पालाल गुप्त, कल्याण के सम्पादक श्री राधेश्याम खेमका ने भी पत्रकारिता जगत में नाम कमाया है। श्रीमती उर्मिला रूंगटा सुप्रसिद्ध लेखिका, साहित्य सेवी होने के साथ-साथ कुशल पत्रकार भी हैं। आप देश के अनेक सुप्रसिद्ध पत्रों की नियमित स्तंभ लेखिका हैं और आपके 300 से अधिक आपके लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर भी आपकी वार्ताओं का प्रसारण होता रहता है।

श्री मातादीन भगेरिया हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती, बंगाली, राजस्थानी आदि भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान थे। पत्रकारिता व साहित्य के क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण देन रही। उन्होंने दर्जनों दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार पत्रों का सम्पादन किया। 1948 में दिल्ली से प्रकाशित सुप्रसिद्ध दैनिक नवभारत के वे प्रधान सम्पादक रहे और 1951 तक

उसके दिल्ली-कलकत्ता-मुम्बई संस्करणों का सम्पादन किया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुखपत्र 'सोशलिस्ट भारत' के भी सम्पादक रहे। उन्होंने साहित्य की विविध विधाओं पर लगभग 50 पुस्तकें लिखीं जिनमें गांधी मानस, तरुण तपस्वी, क्रांतिशान्ति गीत आदि प्रसिद्ध हैं। उनके गांधी मानस महाकाव्य का रुसी भाषा में तथा राज्यश्री कृति का चीनी भाषा में अनुवाद हो चुका है।

श्री मदनगोपाल सिंघल ने साप्ताहिक आदेश तथा वैश्य हितकारी का वर्षों तक सम्पादन किया। 1950 में आपको अभिनंदन ग्रंथ भी भेंट किया गया।

प्रवर्तित विभिन्न साहित्यिक पुरस्कार

इस समाज का हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के साहित्य पत्रकारिता क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान विविध साहित्यिक पुरस्कारों का प्रवर्त्तन है। इन पुरस्कारों ने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इनमें से कतिपय पुरस्कार हैं-

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमा जैन द्वारा प्रवर्तित साहित्य जगत का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है।

इस पुरस्कार के अन्तर्गत प्रतिवर्ष दो लाख रुपये की राशि के अतिरिक्त वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा और प्रशस्ति पत्र, शाल श्रीफल आदि प्रदान किये जाते हैं।

यह पुरस्कार संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित पंद्रह भाषाओं में किसी भी भाषा की सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक कृति को प्रदान किया जाता है।

पुरस्कार का चयन भारत के जाने माने विद्वानों की एक परिषद द्वारा किया जाता है। इस परिषद में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० सम्पूर्णानंद श्री पी.वी. नरसिंह राव, डॉ० कर्णसिंह, डॉ० गोपाल रेड्डी, डॉ० विद्यानिवास मिश्र जैसे ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व सुशोभित हो चुके हैं।

मूर्ति देवी पुरस्कार

यह पुरस्कार भी भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रवर्तित है और प्रतिवर्ष भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के आदर्शों के प्रचार-प्रसार के लिए दिया जाता है।

इस पुरस्कार के अन्तर्गत प्रतिवर्ष प्रशस्ति पत्र, एक प्रतिमा एवं 51000/- की राशि नकद प्रदान की जाती है।

साधना सम्मान पुरस्कार

यह पुरस्कार सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी श्री मोहनलाल केडिया की स्मृति में उनके परिवार द्वारा प्रारम्भ किया गया है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी पुस्तक के स्थान पर किसी हिन्दी प्रेमी के समग्र योगदान का मूल्यांकन करते हुए प्रदान किया जाता है। पुरस्कार की राशि एक लाख ग्यारह हजार रूपये है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत डॉ० धर्मवीर भारती एवं अन्य अनेक साहित्यकारों को सम्मानित किया जा चुका है।

भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार

तार सप्तक के यशस्वी कवि तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता भारत भूषण अग्रवाल की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी बिंदू अग्रवाल द्वारा प्रवर्तित यह पुरस्कार प्रति वर्ष 35 वर्ष से कम अवस्था के हिन्दी कवि की कविता पर प्रदान किया जाता है।

मंगलाप्रसाद एवं सेक्सरिया पुरस्कार

ये हिन्दी जगत के सबसे पुराने पुरस्कार है, जो प्रतिवर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रदान किए जाते हैं। इन पुरस्कारों की स्थापना अग्रबंधुओं के आर्थिक सहयोग से हुई। सेक्सरिया पुरस्कार भारत का प्रथम पुरस्कार था, जो किसी महिला को उसके हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान के लिए प्रदान किया गया। श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान इस पुरस्कार को पाने वाली प्रथम महिला लेखक थीं।

दयावती मोदी विश्व संस्कृति सम्मान

अग्रवाल समाज के सुप्रसिद्ध मोदी औद्योगिक घराने द्वारा प्रवर्तित यह पुरस्कार प्रतिवर्ष कला व लेखन में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाता है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत 2 लाख 51 हजार की राशि, शाल, प्रशस्तिपत्र आदि प्रदान किए जाते हैं।

दयावती मोदी पुरस्कार की स्थापना दयावती मोदी की स्मृति में कला व लेखन के लिए प्रोत्साहन हेतु की गई है। 1995 का पुरस्कार डॉ० सत्यव्रत को उनके संस्कृत में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया है।

डॉ० के.एन. मोदी पुरस्कार

यह पुरस्कार मोदी घराने द्वारा प्रवर्तित है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि शिक्षा, प्रबन्ध और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रति वर्ष प्रदान की जाती है।

भगवान दास गोयन्का पुरस्कार

इण्डियन एक्सप्रेस समाचार पत्र की स्वर्ण जयन्ती पर सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री रामनाथ गोयन्का के सुपुत्र स्व. भगवानदास गोयन्का की स्मृति में इस पुरस्कार का प्रवर्त्तन किया गया। इसमें एक लाख रुपये नकद, ट्राफी एवं प्रतीक चिन्ह भारतीय पत्रकारिता क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए प्रतिवर्ष प्रदान किए जाते हैं।

मोदी पत्रकारिता पुरस्कार

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष श्री श्री किशन मोदी द्वारा संस्थापित श्री किशन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा ये पुरस्कार प्रतिवर्ष राजस्थान से सम्बन्धित राज्य स्तर पर प्रकाशित लेखन कार्य और पत्रकारिता रिपोर्टिंग पर प्रदान किए जाते हैं। इन पुरस्कारों की संख्या सात है और ये सात विभिन्न क्षेत्रों-सर्वांगीण विकास, अपराध क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, महिला पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता आदि पर प्रदान किए जाते हैं।

काका हाथरसी हास्यरत्न पुरस्कार

यह पुरस्कार सुप्रसिद्ध हास्य कवि एवं व्यंग सम्राट श्री प्रभूलाल गर्ग (काका हाथरसी)

द्वारा प्रवर्तित है और हास्य एवं व्यंग के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा प्रदर्शित करने वाले हास्य कवि या व्यंगकार को प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। पुरस्कार की राशि 15000/- है। इसके साथ ही हास्यरत्न की उपाधि भी प्रदान की जाती है।

दुर्गा प्रसाद चौधरी पुरस्कार

ये पुरस्कार नव ज्योति के पूर्व मुख्य सम्पादक, स्वतंत्रता सेनानी एवं अग्रगौरव स्व. कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी की स्मृति में कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी फाउण्डेशन द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रारम्भ किए गये हैं। इन पुरस्कारों के अन्तर्गत पत्रकारिता में उत्कृष्ट योगदान के लिए अखिल भारतीय पुरस्कार प्रतिवर्ष प्रदान किए जाते हैं।

श्रीरामकृष्ण डालमिया श्रीवेणु अलंकरण

श्रीरामकृष्ण डालमिया श्रीवाणीन्यास द्वारा प्रवर्तित दो लाख रुपए का पुरस्कार, जो काव्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है।

दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान

यह पुरस्कार भी मोदी घराने द्वारा श्रीमती दयावती मोदी की स्मृति में प्रारम्भ किया गया है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत 251000/- की राशि, स्मृति चिह्न, शाल, श्रीफल आदि हिन्दी काव्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु प्रदान किए जाते हैं।

दुर्गादेवी सर्राफ सम्मान पुरस्कार

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा शिक्षा एवं साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु प्रदत्त। प्रतिवर्ष 21000/- की राशि इस पुरस्कारान्तर्गत प्रदान की जाती है।

श्री रामप्रसाद पोद्दार स्मृति पुरस्कार

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 21000/- का पुरस्कार, जो कला, अभिनय एवं साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि हेतु प्रदान किया जाता है।

काका हाथरसी संगीत सम्मान

काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 15000/- की राशि का पुरस्कार, जो संगीत के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि के लिए दिया जाता है।

हनुमानप्रसाद भक्ति पीठ पुरस्कार

कल्याण के सम्पादक धर्म प्रेमी श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार की स्मृति में स्थापित पुरस्कार, जो प्रति वर्ष धर्म रक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि हेतु प्रदान किया जाता है।

टाइम्स अवार्ड

एक नागरिक के रूप में समाज के प्रति जिम्मेदारी और कर्त्तव्य बोध का उल्लेखनीय परिचय देने वाले नागरिकों के सम्मानार्थ प्रदत्त पुरस्कार। टाइम्स ऑफ इण्डिया द्वारा प्रवर्तित। 51000/- की राशि प्रदत्त।

भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार

भारतीय भाषा परिषद द्वारा भी विभिन्न भाषाओं, असमिया, उड़िया, गुजराती, तमिल, बंगला, राजस्थानी, संस्कृत, हिन्दी आदि के श्रेष्ठ साहित्यकारों को प्रतिवर्ष पुरस्कृत किया जाता है। इनमें अधिकांश पुरस्कार विशिष्ट अग्रवाल परिवारों के उदार सहयोग से संचालित है और उनका नामकरण भी उसी आधार पर किया गया है। इन पुरस्कारों के अंतर्गत 11000/- की राशि, प्रशस्ति पत्र आदि प्रदान किये जाते हैं।

माता कुसुम कुमारी अग्रवाल पुरस्कार

माता कुसुम कुमारी अग्रवाल हिन्दीतर भाषी साधक सम्मान पुरस्कार प्रतिवर्ष हिन्दीत्तर प्रदेशों के आठ हिन्दी साधकों को प्रदान किए जाते हैं। इन पुरस्कारों के अन्तर्गत नकद राशि के अलावा प्रतीक चिह्न, शाल आदि भेंट किए जाते हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन मुंबई साहित्य पुरस्कार

ये पुरस्कार मारवाड़ी सम्मेलन, मुंबई द्वारा हिन्दी, मराठी एवं राजस्थानी भाषाओं के साहित्य और साहित्यकारों को सम्मानित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। 1990 से इन पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है।

केन्द्रीय राज्य सरकारों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा अग्रविभूतियों की स्मृति में दिए जाने वाले वाले कतिपय पुरस्कार

भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार

ये पुरस्कार सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा जनसंचार पर हिन्दी में मौलिक एवं सृजनात्मक लेखन हेतु दिए जाते हैं। इन पुरस्कारों में पत्रकारिता प्रचार, विज्ञापन, प्रसारण फिल्म, मुद्रण, दूरदर्शन, प्रकाशन जैसे विषयों के लिए अलग से पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है।

पुरस्कार योजना के अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमश: 35 हजार, 25 हजार तथा 20 हजार रूपये प्रदान किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त वर्त्तमान सामयिक विषयों अथवा महिलाओं की समस्याओं से सम्बन्धित विषयों पर उच्चकोटि की पुस्तकों के लिए 10-10 हजार रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए जाते हैं। बाल साहित्य के श्रेष्ठ लेखकों को भी प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमश: 15 हजार, 7 हजार तथा 3 हजार रुपये दिए जाते हैं।

डॉ० राममनोहर लोहिया पुरस्कार

हिन्दी के विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए यह पुरस्कार उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।

इनके अलावा भी अग्रवाल समाज द्वारा अनेक पुरस्कारों का प्रवर्त्तन किया गया है, जिनमें हजारी लाल डालमिया पुरस्कार, सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया पुरस्कार, मुरारका पुरस्कार, रत्नाकर पुरस्कार, डॉ हीरालाल स्वर्णपदक आदि प्रमुख हैं।

विज्ञान चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में

विज्ञान एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में इस समाज ने जो विभूतियाँ पैदा की हैं, उन पर कोई भी राष्ट्र गर्व का अनुभव कर सकता है।

इस समाज के डॉ० कंवरसेन आधुनिक भारत के भागीरथ कहे जा सकते हैं। आप राजस्थान की विख्यात इंदिरागांधी नहर परियोजना के परिकल्पक एवं सूत्रधार थे। भारत के अनेक बड़े-बड़े बांधों-भाखड़ा-नांगल बांध, दामोदरघाटी योजना, कोसी योजना, नर्मदा, हीराकुण्ड आदि की परिकल्पना एवं निर्माण में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आपने लगातार 9 वर्ष तक संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपनी असाधारण प्रतिभा से इंजीनियर के रूप में विशेष छाप अंकित की।

1956 में आपको पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। आप केंद्रीय जल एवं विद्युत आयोग के अध्यक्ष भी रहे। आप भारत की नदीघाटी परियोजनाओं के जनक नाम से सम्बोधित किए जाते हैं। राजस्थान के मरुस्थली इलाके को शस्यश्यामला बना देने वाली इंदिरागांधी नहर के द्वारा देश में हरित क्रांति लाने वाले आप जैसे महान वैज्ञानिक की स्मृति स्वरूप नहर की एक वितरिका का नामकरण भी आप पर किया गया है, जो महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

डॉ० आत्माराम अग्रवाल भारत के अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक थे, जो 1952 से 1966 तक सेंट्रल ग्लास एण्ड सिरेमिक रिसर्च इन्स्टीच्यूट के निदेशक तथा महानिदेशक जैसे सर्वोच्च पदों पर रहे। आपको देश के सर्वोच्च वैज्ञानिक संस्थानों-वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् तथा राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी समितियों की अध्यक्षता करने का गौरव प्राप्त हुआ। आप परमाणु ऊर्जा उपयोग समिति के सदस्य भी रहे। आप की गणना आप्टिकल ग्लास के आविष्कारकों एवं कांच प्रौद्योगिकी के अग्रणी विशेषज्ञों में होती है। आपको शान्तिस्वरूप भटनागर, अणुव्रत पुरस्कार जैसे अनेक उच्च कोटि के पुरस्कार प्राप्त हुए। भारत सरकार ने भी 1959 में आपको पद्मश्री से सम्मानित कर आपके शोधकार्यों को मान्यता प्रदान की।

डॉ० रामनारायण अग्रवाल की आपकी गणना भारत के उच्चकोटि के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों में होती है। लम्बी दूरी तक मार कर सकने वाले अग्नि प्रक्षेपणास्त्रों का सफल निर्माण तथा परीक्षण कर, भारत को विज्ञान की दृष्टि से सशक्त राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठापित करने वाले आप भारत के अग्रणी वैज्ञानिक हैं। आपने इस महान सफलता को अर्जित कर यह दिखा दिया कि भारत अब बिना विदेशी तकनीक के बड़े से बड़ा अन्तर महाद्वीपीय प्रक्षेपणास्त्र बनाने में सक्षम है।

डॉ० हर्षवर्द्धन ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने दक्षिण गंगोत्री अभियान में भारतीय वैज्ञानिक शोध दल का नेतृत्व कर अनुपम साहस का परिचय दिया। डॉ० हरिनारायण बनारस राष्ट्रीय भू-भौतिक अनुसंधान एवं सर्वे आफ इण्डिया के महानिदेशक पद पर रहे।

श्री अजय खेतान ऐसे युवा वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने 3 सै.मी. व्यास के आकार में 5000 साल के कलेण्डर का निर्माण कर अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा का परिचय दिया है।

अमेरिका एवं अन्य देशों में भी अग्रवालों ने विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा प्रदर्शित कर भारत के नाम को ऊंचा किया है और उसकी चर्चा विश्व स्तर पर हुई है। पूर्वी ग्रीनविच निवासी 20 वर्षीय अनुराग बंसल ऐसे ही प्रतिभाशाली युवक है, जिनकी चर्चा अमेरिका के राष्ट्रपति जार्जबुश ने स्वयं अपने 141वें राष्ट्रपति स्कालर्स समारोह में की। उन्होंने एक ऐसी दवा की खोज करने में सफलता मिली है, जो एड्स विषाणुओं को कुछ सीमा तक रोक सकती है। अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा इस उपलक्ष में उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर श्री अनन्त अग्रवाल ने वर्तमान कम्प्यूटर चिप की अपेक्षा दुगुनी गति से गणना करने वाले नये माइक्रोचिप का आविष्कार कर विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। इस चिप की विशेषता यह है कि कम से कम निर्देशों में कम्प्यूटर अधिक गति से और सटीक काम करता है।

काशी विश्वविद्यालय के प्रो. रामजी अग्रवाल ने जलरोधी ईंटों के आविष्कार में सफलता प्राप्त की है।

सर गंगाराम भारत के प्रथम सुपरिटेडेंट इन्जीनियर थे, जिन्हें 'सर' की उपाधि प्राप्त हुई। आप लिफ्ट सिंचाई योजना के प्रवर्तक एवं पंजाब में हरित क्रांति के जनक थे। आपने लाहोर, सियालकोट, एवं पंजाब के सभी नगरों में बड़े-बड़े आधुनिक भवनों, लाहोर के अजायबघर, गिरजाघर, मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स आदि का निर्माण कर विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया। 1877 में दिल्ली में होने वाले दरबार की रंगशाला तथा उत्तर-पश्चिम रेलवे की अमृतसर-पठानकोट रेल योजना का निर्माण करने का श्रेय आपको प्राप्त है।

दिल्ली का सर गंगाराम अस्पताल आज भी आपकी कीर्ति का चिरस्मारक है। राजा ज्वालाप्रसाद प्रथम भारतीय चीफ इंजीनियर थे, जो उत्तर प्रदेश में नियुक्त हुए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा उसके वृहत् भवन की योजना आपने बनाई, जो शिल्पकला का उत्तम उदाहरण है। आपने काशी के पुरातन घाटों का जीर्णोद्धार किया। आपने बड़ोदा लाइब्रेरी, विश्वनाथ मंदिर, विद्यालय का परकोटा तथा उसका भव्य द्वार, पटियाला के मोती बाग के राज्य भवन का निर्माण भी कराया। आप 1932 में काशी विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। आपको अंग्रेज सरकार ने राजा की उपाधि से सम्मानित किया।

डॉ. जयकृष्ण भी भारत के सुप्रसिद्ध इंजीनियर थे, जिन्होंने 1935 में रुड़की से ही गौरवपूर्ण ढंग से सिविल इंजीनियरिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की और थामसन प्राइज, केटले गोल्ड मेडल, रेली मेमोरियल गोल्ड मेडल व अन्य पुरस्कार प्राप्त कर अपनी प्रतिभा को प्रकट किया। उन्होंने 1954 में लंदन के विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. और केलिफोर्निया इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी से भूकम्प यांत्रिकी में विशेष परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1940 में रुड़की विश्वविद्यालय में भूकम्प यांत्रिकी अनुसंधानशाला की स्थापना की, जो विज्ञान के क्षेत्र में आपकी विशेष उपलब्धि है। आपकी विद्वता को देखते हुए यूनेस्को में भी आपकी नियुक्ति हुई और आपने अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। आप 1977 में अन्तरराष्ट्रीय भूकम्प एसोसिएशन तथा 1974 में इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स के अध्यक्ष रहे।

आप विश्व के श्रेष्ठ भूकम्प विशेषज्ञों में माने जाते हैं। आपने विज्ञान पर अन्तरराष्ट्रीय स्तर की अनेक मानक पुस्तकों का लेखन किया। आपकी उल्लेखनीय सेवाओं के फलस्वरूप आपको 1971 में भटनागर अवार्ड, नेचुरल डिजाइन अवार्ड, मुदगिल एवार्ड आदि अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। आपको 1971 से 1977 तक रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति रहने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भारत सरकार ने आपकी सेवाओं को देखते हुए आपको पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया।

श्री अंकुर गुप्ता ऐसे बाल वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने प्लास्टिक के कचरे से खाद बनाने पर शोध की है और कचरे को बर्मी कम्पोस्टिंग विधि के माध्यम से खाद में परिवर्तित कर अपनी विशिष्ट क्षमता का परिचय दिया है।

डॉ. जयपाल मित्तल, भाभा एटोमिक रिसर्चसेंटर में ग्रुप डाइरेक्टर हैं।

आई.बी.एम. कार्पोरेशन, न्यूयार्क, दिल्ली में ढ़ाई करोड़ की लागत से भारत में प्रोद्यौगिकी ढांचे में बुनियादी सुधार के लिए एक अनुसंधान केंद्र की स्थापना कर रहा है, जिसका प्रथम निदेशक वाटसन रिसर्च इन्स्टीट्यूट, न्यूयार्क के वरिष्ठ अनुसंधान विशेषज्ञ डॉ. आलोक अग्रवाल को बनाया गया है।

श्री यादव मोहन राजस्थान केनाल योजना के अध्यक्ष हैं।

चिकित्सा विज्ञान में आर्थोपेडिक्स सर्जरी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए भारत सरकार ने डॉ० एम.के. गोयल को पद्मश्री उपाधि से सम्मानित किया है। आपको उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए डा. बी.सी. देव स्मारक विज्ञान पुरस्कार प्राप्त करने का श्रेय भी प्राप्त है।

डॉ. पवन सिंघल भारतीय मूल के केनेडा स्थित ऐसे वैज्ञानिक है, जिन्हें कार्डियोवस्कुलर विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोधकार्य के लिए स्टारालासा स्थित स्लोवाक अकादमी द्वारा सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप मनीतोवा विश्वविद्यालय में फिजियोलोजी विभाग के प्रोफेसर हैं और आपने एक ऐसी दवाई का दुष्प्रभाव रोकने में सफलता प्राप्त की, जो कैंसर में बहुतायत से प्रयुक्त होती है।

डॉ० आर. के. अग्रवाल ऐसे चिकित्सा विज्ञानी है, जिन्होंने तम्बाकू रहित समाज की संरचना तथा कैंसर के प्रति जागरूकता पैदा करने एवं सामाजिक चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए भारतीय राष्ट्रपति द्वारा डॉ. बी.सी. राय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आप सुप्रसिद्ध शल्य चिकित्सक एवं नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के अध्यक्ष हैं। आपने विकलांगों के उत्थान तथा रक्तदान के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य किया है और चैनराज सांवतराज लोढ़ा पोलियो अस्पताल के निर्माण में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

डॉ. सी.एम. गुप्ता, चंडीगढ़ को जीव विज्ञान में असाधारण योगदान के लिए पचास हजार रुपए का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार भौतिक विज्ञान अनुसंधान प्रयोगशाला अहमदाबाद के निदेशक श्री गिरीश एस. अग्रवाल ने एक लाख रुपए का पांचवां जी.डी. बिड़ला पुरस्कार तथा डॉ. पी.एस. गोयल ने विज्ञान तकनीक में विशेष अनुसंधान के लिए 50000/- रुपए का ओमप्रकाश भसीन पुरस्कार प्राप्त कर समाज को गौरवान्वित किया है।

डॉ. लक्ष्मीचंद गुप्ता ने सीमा सुरक्षा में कार्यरत रहते हुए भी 63 पुस्तकों का लेखन किया और उन्हें 1988 का सुप्रसिद्ध डॉ. बी.सी. राय वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

आयुर्विज्ञान (चिकित्सा) के क्षेत्र में विशेष खोज के लिए डॉ. सुधीर गुप्ता का नाम उल्लेखनीय है। आप भारतीय मूल के वैज्ञानिक हैं, जिन्हें आयुर्विज्ञान में योगदान के लिए अमेरिका में सम्मानित किया गया। अमेरिकी राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थाओं की सलाहकार समिति के सदस्य, केलीफोर्निया विश्वविद्यालय में डार्विन स्थित आयुर्विज्ञान विभाग के मूलभूत एवं चिकित्सकीय रोगरोधन विभाग में प्रधान तथा आयुर्विज्ञान सूक्ष्मजीव शास्त्र व आनुवंशिकी विज्ञान के प्राचार्य रूप में आपने ख्याति अर्जित की है। कौशिकीय रोगरोधन पर आपके अनुसंधान पर 250 से अधिक लेख विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशनों में प्रकाशित हो चुके हैं तथा आपको जर्नल ऑफ इन्यूनोलाजी के प्रधान सम्पादक रहने का गौरव प्राप्त है।

डॉ. यतीश अग्रवाल अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चिकित्सक हैं। आपने हृदयरोग, मधुमेह के साथ जीने की राह, मन के रोग, नेत्र रोग, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विज्ञान की जटिलतम ग्रंथियों को सुलझाने वाली पुस्तकें लिख चिकित्सा विज्ञान में योग दिया है। आपकी रक्त की कहानी पुस्तक तेरह भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी है। आप भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं और विज्ञान एवं तकनीकी मंत्रालय ने आपको मेघनाथ पुरस्कार से सम्मानित किया है।

डॉ. अनिल गुप्ता को चिकित्सा क्षेत्र में उनकी विशिष्ट उपलब्धियों को देखते हुए पी.जी.आई. चण्डीगढ़ के स्नातकोत्तर चिकित्सा विज्ञान के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है, जो गौरव का विषय है। इसी प्रकार डॉ. आर. के. गुप्ता को उनकी आयुर्वेद सम्बंधी उपलब्धियों को देखते हुए दिल्ली सरकार ने आयुर्वेद सलाहकार के रूप में नियुक्त किया है। आप आयुर्वेद के विश्व प्रसिद्ध ज्ञाता हैं। आप अखिल भारतीय आयुर्वेद कांग्रेस तथा ब्रिटेन की रायल हेल्थ सोसायटी के सदस्य हैं।

डॉ. आनन्द बंसल, गुजरात के ऐसे चिकित्सा-विशेषज्ञ हैं, जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय गार्नेटी विलियम फाउंडेशन द्वारा शोध-छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया है। इसी प्रकार भारतीय मूल के डॉ. संजय गुप्ता को, जो न्यूरो सर्जन हैं, अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन द्वारा 1997-98 के लिए व्हाइट हाउस फैलोशिप प्रदान की गई है। यह फैलोशिप जनसेवा के क्षेत्र में असाधारण और विशिष्ट उपलब्धियों एवं नेतृत्व के लिए प्रदान की जाती हैं और अमेरिका की सबसे प्रतिष्ठित फैलोशिप्स में एक है।

श्री राधाकृष्ण नेवटिया एवं डॉ. सुरेन्द्र गोयल को योग विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है।

डॉ. अनिल अग्रवाल शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त हैं। आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए हिन्द गौरव अंलकरण से सम्मानित किया गया है। आपने शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐसी सस्ती व सरल तकनीक विकसित की है, जिसमें रोगी को आप्रेशन के मध्य एक टांका लगाया जाता है।

भारत में 1943 से चल रहे आंखों के आप्रेशन अभियान में डॉ. एम.सी. मोदी ने एक दिन में मोतियाबिंद के 833 आप्रेशन कर विश्व में प्रतिमान स्थापित किया है।

चंडीगढ़ के नवीन कुमार अग्रवाल ने पंजाब इंजीनियरिंग कालेज से अपने अध्ययन के मध्य पी.जी.आई. तथा साकेत हस्पताल में अनुसंधान कर एक ऐसे कृत्रिम पैर का निर्माण किया है, जिसे 'ऐंकल मूवमेंट' के कारण सरलता से हिलाया डुलाया जा सकता है। आपने विश्व के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में एक 'एशियन इंस्टिट्यूट आफ टेक्नोलोजी' थाइलेंड में एम.बी.ए. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर विश्व में भारत का नाम रोशन किया है। आपको इस उपलब्धि के लिए 'द जेम्स एलेनिन-3' पुरस्कार के अतिरिक्त फ्रांस एवं चेक सरकारों द्वारा छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई है।

चिकित्सा के क्षेत्र में डॉ. बी.के. गोयल (हृदय रोग विशेषज्ञ), डॉ. एच.आर. झूंझनू वाला, डॉ. एस.के. गनेड़ीवाला, डा. बीनू नंदकिशोर टीबड़ेवाल आदि के नाम भी विशेष उल्लेखनीय है।

अग्रवाल समाज द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के लिए अनेक राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है। विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनुसंधान की दिशा में इन पुरस्कारों का अत्यधिक महत्त्व है। इन पुरस्कारों में सेठ जमनालाल बजाज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पुरस्कार, सेठ गूजरमल मोदी पुरस्कार, आर्किटेक्ट ऑफ दी ईयर पुरस्कार, श्री चिरञ्जीलाल अग्रवाल अवार्ड आदि मुख्य हैं।

सेठ जमनालाल बजाज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पुरस्कार उस वैज्ञानिक या संस्था को प्रदान किया जाता है, जो ग्रामीण क्षेत्र, विशेष कर समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तकनीक के क्षेत्र में अग्रणी शोध कार्य कर रहे हैं। इसमें ग्रामीण क्षेत्र में स्वच्छ जल की आपूर्ति, स्वदेशी तकनीक से चूल्हे एवं गृहों का निर्माण, सौर ऊर्जा का उपयोग, कृषि में आधुनिक एवं रूढ़िगत साधनों का समन्वय आदि सम्मिलित हैं।

इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक लाख रूपये की राशि प्रतिवर्ष प्रदान की जाती है।

सेठ गूजरमल मोदी पुरस्कार उच्च तकनीकी क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु प्रतिवर्ष दिया जाने वाला पुरस्कार है। यह पुरस्कार मोदी घराने द्वारा प्रवर्तित है और इसकी राशि एक लाख रुपये है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

आर्टिटेक्ट ऑफ द ईयर एवं सिंघानिया स्थापत्य कला पुरस्कारों का प्रवर्त्तन सुप्रसिद्ध अग्रवाल जे.के. सिंघानिया परिवार की महत्त्वपूर्ण औद्योगिकी इकाई जे.के. सीमेंट द्वारा स्थापत्य कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के प्रोत्साहन हेतु किया गया है। इन पुरस्कारों के अन्तर्गत छः पुरस्कार प्रतिवर्ष प्रदान किए जाते हैं।

इनमें एक-एक लाख रुपये दो पुरस्कार 'आर्टिटेक्ट ऑफ दी ईयर अवार्ड एवं द ग्रेट मास्टर्स पुरस्कार कला की दृष्टि से श्रेष्ठत्तम निर्मित भवन, पुल के उस वास्तुकार को दिये जाते हैं, जिसने उसका डिजायन बनाया हो अथवा जिसकी देख-रेख में भवन का निर्माण हुआ हो। ये पुरस्कार प्रति वर्ष दिये जाते हैं।

इसके अलावा 25-25 हजार रुपये के चार पुरस्कार कम लागत में गृह निर्माण वास्तुकला, पुल, ओवरब्रिज एवं यातायात टर्मिनल के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रतिवर्ष प्रदान किये जाते हैं।

डॉ० एस.पी. गुप्ता महान वैज्ञानिक डॉ० विक्रम साराभाई सहयोगी एवं 1985 में 'तिरुवंतपुरम के निदेशक रहे। प्रक्षेपणास्त्रों के निमार्ण में आपकी मुख्य भूमिका रही।

भारतीय मूल के अमेरिका निवासी श्री रामस्वरूप गोयल ने भारतीय विज्ञान में उत्कृष्ट योगदान तथा भारत में किए गए अभूतपूर्व अनुसंधानों के लिए दो पुरस्कारों की स्थापना की है, जिनमें 20 ग्राम सोने का एक-एक स्वर्ण पदक तथा एक लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति पत्र आदि प्रदान किए जाते हैं।

इस समाज के उदार लोगों ने समय समय पर विज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अनुसंधानों के लिए वैज्ञानिकों की आर्थिक सहयोग प्रदान कर भारत का नाम विश्व में ऊँचा किया है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री जगदीशचंद्र बसु को जब अपने महत्त्वपूर्ण शोधकार्य हेतु उपकरण खरीदने की आवश्यकता हुई, तब श्री जमनालाल बजाज ने ऐसे समय में उन्हें 20000/- रु. उपकरण खरीदने के लिए प्रदान किए जबकि उनकी बात सुनने तक कोई तैयार नहीं था और शायद आर्थिक सहयोग के अभाव में वे अपना महत्त्वपूर्ण प्रयोग करने में असमर्थ रहते। श्री बजाज ने इस काम के लिए काफी राशि स्वयं दी और उससे कहीं अधिक धन माँग कर एकत्र कराया। उन्होंने श्री जगदीशचंद्र बसु को दार्जिलिंग में विज्ञान संस्थान स्थापित करने के लिए 35000/- रु. की राशि भी अपने पिता श्री बच्छराज की स्मृति स्वरूप प्रदान की।

इस प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में इस समाज की उपलब्धियां एवं योगदान महान रहा है।

क्रीड़ा एवं खेल जगत

क्रीड़ा एवं खेल जगत में भी इस समाज की उपलब्धियां कम नहीं हैं। श्री सुभाष अग्रवाल स्नूकर एवं बिलियर्ड के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ी रहे हैं, जिन्होंने बिलियर्ड में दो बार राष्ट्रीय चेम्पियन का खिताब जीत कर एवं स्नूकर में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभा प्रदर्शित कर भारत को गौरवान्वित किया।

आशा अग्रवाल ने एशिया एवं ओलम्पिक खेलों में मैराथन दौड़ में भारत का प्रतिनिधित्व कर देश का गौरव बढ़ाया। आप की गणना भारत की सुप्रसिद्ध धाविकाओं में होती है। आपने हांगकांग विश्व मैराथन दौड़ में विजयश्री प्राप्त कर देश की गौरव गरिमा को बढ़ाया।

सन्ध्या अग्रवाल अन्तरराष्ट्रीय जगत में महिला क्रिकेट टीम में भारत का गौरव बढ़ाने वाली एकमात्र खिलाड़ी महिला हैं। क्रिकेट में इंग्लैंड के विरुद्ध सर्वाधिक 190 रन बना विश्व प्रतिमान स्थापित कर अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित होने का आपको गौरव प्राप्त है।

किरण अग्रवाल ने शतरंज में राष्ट्रीय चेम्पियनशिप प्राप्त कर इस खेल में प्रथम अग्रवाल महिला होने का गौरव प्राप्त किया। आपके पिता श्री एम. डी अग्रवाल भी शतरंज के अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ी हैं। आप ओलम्पिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं।

श्री सुरेश गोयल का भारत के सुप्रसिद्ध बेडमिंटन खिलाड़ियों में अग्रणी नाम है। आप 15 वर्ष की छोटी सी अवस्था में ही राष्ट्रीय जूनियर चेम्पियन रहे तथा 1960 में राष्ट्रीय चेम्पियनशिप के विजेता रहे। 1967 से 1970 तक राष्ट्रीय चेम्पियन और दो बार

विश्व चैम्पियनशिप का गौरव प्राप्त किया। 1970 में विश्व चेम्पियन ग्री अरनालु कोप्स को हरा कर बेडमिंटन जगत में भारत का नाम ऊंचा किया।

1967 में आपको खेल जगत में इन विशिष्ट उपलब्धियों के लिए देश के सर्वोच्च क्रीड़ा सम्मान 'अर्जुन पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया। 1969 में आपको रेलवे मंत्री पुरस्कार भी मिला। श्री पी. के गर्ग को भारोतोलन प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

श्री पुष्पेन्द्र गर्ग नौकायन में विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न भारत के गौरव को बढ़ाने वाले श्रेष्ठ खिलाड़ी हैं, जिन्हें 1990 में सर्वोत्तम उपलब्धि के लिए अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री अशोक गर्ग को कौन नहीं जानता? आप कुश्ती के अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ी हैं, जिन्हें खेल जगत के सर्वोच्च सम्मान अर्जुन पुरस्कार से पुरस्कृत होने का श्रेय मिला है। आप भारतीय कुश्ती टीम के कप्तान रहे हैं और 24 से अधिक अन्तरराष्ट्रीय कुश्ती स्पर्धाओं में भारत का सफल प्रतिनिधित्व कर 6 स्वर्ण पदक, 4 रजत एवं 2 कांस्य पदक अर्जित कर चुके हैं। 1983 में अमेरिका में आयोजित विश्व छात्र कुश्ती चेम्पियनशिप में कांस्य पदक तथा 1993 में राष्ट्र मण्डलीय कुश्ती प्रतियोगिता में आपको स्वर्ण पदक से सम्मानित होने का गौरव मिला। आप अन्तरराष्ट्रीय स्तर के कुश्ती प्रशिक्षक और देश-विदेश में कुश्ती के क्षेत्र में भारत का नाम ऊंचा करने वाले श्रेष्ठ खिलाड़ी हैं।

श्री कमल तुलस्यान ने स्नूकर, पूजा भरतिया ने महिला राष्ट्रीय स्नूकर, मध्य प्रदेश की नीलम मित्तल ने राष्ट्रीय महिला बिलियर्ड तथा मंजुषा मित्तल ने राष्ट्रीय जिमनास्टिक में उल्लेखनीय प्रतिभा का परिचय दिया है।

इस प्रकार अग्र समाज के खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में श्रेष्ठ प्रतिभा प्रदर्शित तथा राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कर खेल जगत में भी अपना विशेष स्थान बनाया है।

श्री बृजेश अग्रवाल का जुनियर शतरंज के क्षेत्र में विशेष नाम है। आपको एशियन जूनियर शतरंज प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त है। इस प्रतियोगिता में 29 देशों के खिलाड़ी सम्मिलित हुए। इसी प्रकार प्रदीप गोविल, सुशील बंसल का ब्रिज तथा राजेन्द्र गोयल एवं नलिन गोयल का क्रिकेट में विशेष नाम है। शतरंज चेम्पियन में श्री आर. के. गुप्ता और स्केटिंग में नन्ही बालिका ऐश्वर्या अग्रवाल ने विशेष उपलब्धि प्राप्त की है।

श्री जगमोहन डालमिया पहले भारतीय हैं, जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट कौंसिल का अध्यक्ष बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप इस पद पर नियुक्त होने वाले प्रथम एशियाई हैं। आप भारतीय क्रिकेट बोर्ड के मानद सचिव भी रहे हैं। आपने प्रथम बार विश्व कप को इग्लैंड से बाहर आयोजित करने में सफलता प्राप्त की और भारत में दो विश्वकप सफलतापूर्वक आयोजित कर भारत में क्रिकेट के क्षेत्र में नये मानदण्ड स्थापित किए।

अब तक क्रिकेट को केवल खेल माना जाता रहा है किन्तु आपने उसे धन उपार्जित करने वाले उद्योग के रूप में परिवर्तित कर साहस का परिचय दिया है। विश्व क्रिकेट में जो व्यावसायिकता आज पहुंची है, उसका बहुत कुछ श्रेय आपको है। आपको बी.बी.सी. द्वारा विश्व का सर्वश्रेष्ठ खेल प्रशासक घोषित किया गया है।

श्री पुरुषोत्तम रुंगटा भारतीय क्रिकेट की राजनीति के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। आपको भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड एवं राजस्थान क्रिकेट सघ का अध्यक्ष रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

डॉ. लक्ष्मीचंद्र गुप्त को खेल सेवाओं के लिए स्पोर्टस साईंस रिसर्च फाउंडेशन अवार्ड 1993 से सम्मानित किया गया है, जो महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

इस समाज के प्रतिष्ठानों द्वारा समय-समय पर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन कर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में अखिल भारतीय गुजरमल मोदी स्वर्णकप प्रतियोगिता, सर शादीलाल राजेन्द्र प्रसाद स्मारक हॉकी टूर्नामेंट, श्री मनोहरलाल गर्ग मेमोरियल क्रिकेट प्रतियोगिता, डी सी एम कप, महाराजा अग्रसेन कप, श्रीराम हाकी, रमा जैन ब्रिज, बी.डी. गोयन्का ट्राफी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

डॉ० रामबाबू गुप्ता ने टेस्ट अम्पायर के रूप में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। श्री गुप्ता ने1986 में छ:टेस्ट मेचों की एम्पायरिंग की, जो एक प्रतिमान है।

न्याय एवं विधि के क्षेत्र में

न्याय एवं विधि के क्षेत्र में भी अग्रवाल समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सर शादीलाल भारत के किसी भी न्यायालय में नियुक्त होने वाले प्रथम मुख्य न्यायाधीश थे। आप 1920 में पंजाब उच्च न्यायालय में तथा बाद में लाहौर में मुख्य न्यायाधीश बने। 1934 में आप इंग्लैंड की प्रिवि कौंसिल के सदस्य भी चुने गए, जो किसी भारतीय को मिलने वाला विशेष सम्मान था।

इनके अलावा न्यायमूर्ति नंदलाल ऊँटवालिया, न्यायमूर्ति श्री कृष्णचंद्र अग्रवाल, श्री हरिलाल अग्रवाल, श्री सूरजमल डीडवानिया, श्री पी. सी. सिंघल, श्री द्वारिका प्रसाद गुप्ता, श्री प्रेम कुमार गुप्ता, श्री आर एन अग्रवाल, श्री गोकुलचंद मित्तल, श्री जीतेन्द्रवीर गुप्ता, श्री प्रकाशनारायण सिंघल, श्री हरीशचंद्र अग्रवाल, श्री विश्वंभरदयाल, श्री सतीश चंद्र मित्तल, श्री नंद कुमार अग्रवाल, श्री बी एल हिसारिया, श्री बी. पी. सर्राफ, श्री डी. आर. धानुका आदि न्यायक्षेत्र की ऐसी विभूतियां हैं, जिन्होंने विभिन्न उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायलय में उच्च पदों को विभूषित कर न्यायिक क्षेत्र में विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की है। न्यायमूर्ति श्री कृष्णचंद्र अग्रवाल ने राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा इलाहाबाद हाईकोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश के रुप में न्यायिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। श्री द्वारिकाप्रसाद गुप्ता की राजस्थान उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश के साथ लोकायुक्त पद पर भी विशेष भूमिका रही। आप को राजस्थान के कार्यवाहक राज्यपाल पद पर कार्य करने का गौरव भी मिला। श्री नंदलाल ऊंटवालिया पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के साथ भारत के सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश रहे। श्री राजेन्द्रनाथ अग्रवाल दिल्ली सरकार के प्रथम लोकायुक्त हैं। आप दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भी रहे है।

श्री सूरजमल गुप्ता मध्यप्रदेश के महाधिवक्ता रहे हैं। श्री राजाराम अग्रवाल ने

उत्तरप्रदेश के एडवोकेट जनरल का पद सुशोभित किया। श्री शान्तिभूषण केंद्रीय सरकार में विधि एवं न्यायमंत्री तथा उत्तरप्रदेश में एडवोकेट जनरल रहे। आप की गणना देश के वरिष्ठतम विधिवेताओं में होती है। श्री सुदर्शनकुमार अग्रवाल इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश रहे।

श्री प्रकाशनारायण सिंघल ने राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति तथा श्री सूरजनारायण डीडवानिया ने न्यायाधिपति के रूप में न्यायिक क्षेत्र की गरिमा बढ़ाई है।

देश में भ्रष्टाचार के सबसे बड़े 'हवाला काण्ड', जिसने अधिकांश राजनीतिज्ञों के भ्रष्टाचार को उजागर कर उन्हें अदालत के कटघरे में खड़ा कर दिया, उसको समक्ष लाने का श्रेय भी इस समाज के श्री विनीतनारायण को है, जिन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में सतत संघर्ष कर इस काण्ड को जनता के समक्ष लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस समाज के अनेक व्यक्तियों ने विभिन्न विधानसभाओं, परिषदों के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष रहकर विधि निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस प्रकार के व्यक्तियों में श्री ईश्वरदास जालान (बंगाल विधानसभा), श्री चंद्रभाल (उ.प्र.), श्री शिव प्रसाद गुप्त (उ.प्र.), श्री बनारसी दास (उ.प्र.), श्री जगदीश शरण अग्रवाल (उ.प्र.) श्रीसतेन्द्र नारायण अग्रवाल (बिहार), श्रीमती लेखवती जैन (हरियाणा), आचार्य जुगल किशोर (उ.प्र.), श्रीमती तारा अग्रवाल (उ.प्र.), डॉ० सर सीताराम (उ.प्र. विधान परिषद् के प्रथम अध्यक्ष), आदि नाम उल्लेखनीय है।

कला, पुरातत्व, संगीत, नृत्य के क्षेत्र में

कला-के क्षेत्र में दीवान बहादुर राधाकृष्ण जालान एवं उनके अद्‌भुत जालान कला संग्रहालय का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। श्री राधाकृष्ण जालान ने लाखों रूपयों की लागत से पटना में इस संग्रहालय का निर्माण कराया। इस संग्रहालय में सातवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक के चीनी मिट्टी के बर्तन, प्याले, सुराहियां तथा तिब्बती, हिन्दी, मैथिली, संस्कृत के हजारों हस्तलिखित ग्रंथों का विशाल संग्रह है। सुनहले खूबसूरत अक्षरों में लिखी कुरान एवं गुलिस्तां की प्रति भी उपलब्ध है। कुरान पर औरंगजेब और उसकी बेटी जेबुन्निसा के हस्ताक्षर हैं। यहाँ कई सौ वर्ष पुराने राजस्थानी संगीतज्ञों के वाद्य यंत्रों के भंडार के साथ मुगलकालीन कुछ ऐसे बर्तन भी हैं, जिनमें विष मिला देने पर बर्तन का रंग बदल जाता है और वह फौरन टूट जाता है।

विशेष पत्थर 'संग-ए-सब' से बनी अनगढ़ मूर्तियां, हाथीदाँत की बनी टीपू सुल्तान की पालकी तथा नेपोलियन तृतीय का शानदार पंलग इस संग्रहालय के विशेष आकर्षण हैं। अष्टधातु निर्मित तिब्बती घंटा, जिसके बजने से अनोखी ध्वनि निकलती है, भी यहाँ सुरक्षित है।

सुप्रसिद्ध कलासाधक श्री रायकृष्णदास ने हिन्दू विश्वविद्यालय में भारत कला भवन की स्थापना की। यह कला भवन देश के बड़े राष्ट्रीय संग्रहालयों में से एक है और संगीत, साहित्य, कला, चित्रकला, स्थापत्यकला आदि का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करता है।

आपके सुपुत्र श्री आनंद कृष्ण भी श्रेष्ठ कला साधक हैं और कला सम्बन्धी अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

सर्व श्री वासुदेवशरण अग्रवाल, प्रभुदयाल मित्तल, रतनप्रकाश अग्रवाल आदि का भी कला के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान रहा।

दिल्ली के राष्ट्रपति भवन के कक्ष में जब राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना की गई तो उसका कार्यभार डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल को सौंपा गया और आप 1946 से 1951 तक उसके अध्यक्ष रहे।

श्री प्रभुदयाल मित्तल वर्षों तक मथुरा संग्रहालय के अध्यक्ष रहे और आपने कला एवं पुरातत्व की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

डॉ. मोतीचन्द्र काशी के प्रतिष्ठित विद्वान थे। आप अनेक वर्षों तक प्रिंस ऑफ वेल्स म्युजियम, मुंबई के क्यूरेटर रहे। कला-पुरातत्व पर आपकी पुस्तक प्रामाणिक मानी जाती है।

डॉ. रघुवीर ने इण्डोनेशिया, बर्मा, लंका आदि विभिन्न देशों में घूम कर भारतीय महत्त्व की कृतियों का संकलन किया। उनका दिल्ली में स्थित सरस्वती संग्रहालय देश के सबसे बड़े संग्रहालयों में गिना जाता है।

चित्रकला के क्षेत्र में रश्मि अग्रवाल ने उल्लेखनीय कार्य किया है। उनके चित्रों की प्रदर्शनी देश की विभिन्न आर्ट गेलरियों तथा 'आर्ट प्लाज़ा' मुंबई में लग चुकी है और आपको चित्रकला के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त है।

श्री राधाकृष्ण नेवटिया ने 'चित्रमयी गीता प्रवेशिका' द्वारा भारतीय अध्यात्म एवं कला जगत में विशिष्ट स्थान बनाया है। आपने सेठ आनन्दीलाल पोद्दार जन्मशती के अवसर पर वृत्तचित्र 'राष्ट्रीयता की साधना' का निर्माण कराया, जो भारतीय सिनेमा जगत में अपने ढंग का अनूठा प्रयोग है।

श्री विष्णु प्रभाकर 1955 से 1957 तक आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र में नाटक विभाग के निर्देशक रहे। नाट्य विद्या के विकास में आपका विशेष योगदान रहा।

श्रीमती रजनीबेन अग्रवाल कला क्षेत्र में विभिन्न आयाम स्थापित करने वाली संस्था 'कलाकुञ्ज' के सचिव रूप में कला, साहित्य, संस्कृति, धर्म आदि के संवर्धन में विशेष योगदान दिया, वह सर्वविदित है।

यशोधरा अग्रवाल कला भवन, काशी के अलंकरण विभाग की प्रभारी रहीं। स्वर्णाभूषणों के क्षेत्र में आपका विशेष नाम है। आपकी कला सम्बंधी विशेष योग्यता को देखते हुए विक्टोरिया अलवर्ट म्युजियम एवं फ्रेंच म्युजियम द्वारा आपको छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया।

संगीत के क्षेत्र में भारतीय मूल के बालक विजय गुप्ता ने अपनी कला से अमेरिका के जाने-माने संगीत निदेशकों को भी विस्मय-विमुग्ध कर दिया है। सुप्रसिद्ध ब्रिटिश वायलिन वादक यहूदी मीनूहिन तक आपकी कला से प्रभावित हुए हैं।

संगीत के क्षेत्र में ही दीर्घकालीन एवं विशिष्ट सेवाओं के लिए हाथरस से प्रकाशित संगीत मासिक पत्र के सम्पादक डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग को मुंबई की प्रतिष्ठित संस्था 'म्यूजिक फोरम' द्वारा वर्ष 1996 के 'मिडिया अवार्ड' से सम्मानित किया गया है, जो विशिष्ट उपलब्धि है।

फिल्म के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए श्री भगवानदास गर्ग को वी. शान्ताराम अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उत्कृष्ट वृत्तचित्र एवं लघु फिल्मों के निर्माण के लिए दिया जाता है। इस पुरस्कार को पाने वाले आप प्रथम सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं। संगीत एवं गायन के क्षेत्र में उमा गर्ग का नाम उल्लेखनीय है। आप सुप्रसिद्ध हास्यकवि काका हाथरसी के परिवार से जुड़ी हैं। आपके पति श्री मुकेश गर्ग विख्यात संगीत शास्त्री, समीक्षक एवं अच्छे कम्पोजर हैंऔर देश की सबसे प्रतिष्ठित पत्रिका 'संगीत' हाथरस के सम्पादक हैं।

उमा गर्ग गजल साम्राज्ञी है। गीत, भजन, गजल से लेकर ठूमरी, दादरा और ख्याल गायन तक उनका विस्तृत क्षेत्र फैला हुआ है। 1984 में जमुना किनारे में गाए गीत के लिए उन्हें उत्तरप्रदेश पत्रकार संघ का पार्श्वगायिका पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अलावा उन्हें दिल्ली का प्रतिष्ठित शोभना एवार्ड भी मिल चुका है। उनके स्वर में अनेक ग्रामाफोन रिकार्ड एवं कई कैसटें तैयार हो चुकी हैं।

श्रीमती सुजाता बजाज ने भारतीय चित्रकला को नये आयाम देकर विशिष्ट उपलब्धि अर्जित की है। आपकी अनेक चित्र-प्रदर्शनियां देश-विदेश में लग चुकी हैं और आपने अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कर भारत का नाम विश्व के कला जगत में ऊँचा किया है। आप स्वतंत्रता सेनानी श्री राधाकृष्ण बजाज की सुपुत्री हैं।

श्रीमती सुधा खेतान, चेतना जालान, कुसुम गुप्ता, श्री श्यामनन्दन जालान, डॉ० एन. के अग्रवाल, डॉ० एम.एस. अग्रवाल, श्री जगदीश गुप्त आदि ने भी कला, संगीत, नृत्य के क्षेत्रमें अपनी विशिष्ट प्रतिभा प्रकट की है।

मुद्रा

पुरातत्व एवं मुद्रा की दृष्टि से डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, सर मोतीलाल सागर, श्री रतनचंद अग्रवाल, डॉ० स्वराजप्रसाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त भारत के ही नहीं, विश्व के प्रमुख मुद्रा एवं पुरातत्व विशेषज्ञ हैं। प्राचीन सिक्कों के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए रायल न्यूमिस्मेटिक सोसायटी से सम्मानित होने वाले आप प्रथम भारतीय विद्वान हैं। आप प्रिंस आफ वेल्स म्युजियम मुंबई तथा पटना संग्रहालय के क्यूरेटर, न्यूमिस्मेटिक सोसायटी, न्यूयार्क राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली, भारतीय न्यूमिस्मेटिक सोसायटी एवं विभिन्न न्यूमिस्मेटिक संस्थानों से सम्बन्धित उच्चकोटि के विद्वान हैं।

डाक टिकटों संग्रह में श्री डी. एन. जटिया ने अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की है।

जादूकला

जादू कला के क्षेत्र में इस समाज के जादूगर सम्राट शंकर का नाम अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र तक में विख्यात है। आपने अपने जादूई करतबों से विश्वभर के लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है। आँखों पर पट्टी बाँध कर भारी भीड़ में मोटर साईकिल चलाना, लड़की को हवा में उड़ाना, रंगीन इन्द्रजाल, हवा में नोटों की वर्षा, हिप्नोटिज्म द्वारा घड़ियों का समय बदल देना-जैसे जादूई करतब आपके लिए सामान्य बातें है। रोपट्रिक जादू के क्षेत्र में भी

सफलता प्राप्त कर विश्व के श्रेष्ठ जादूगरों की पंक्ति में खड़े होने के लिए भी आप प्रयासरत है।

आपने न केवल हिन्दुस्तान में, अपितु थाईलैंड, सिंगापुर, मलेशिया, नेपाल, ब्रिटेन आदि देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर जादू के क्षेत्र में भारत का नाम ऊँचा किया है। आपने 1981 में आयोजित भारतीय जादूगर प्रतियोगिता में भाग लेकर भारत के सर्वश्रेष्ठ जादूगर होने का सम्मान प्राप्त किया। 1983 में जादूई क्षेत्र में श्रेष्ठ करतब प्रदर्शित करने पर आपको राजस्थान सरकार द्वारा प्रशस्ति एवं ताम्रपत्र से सम्मानित किया गया। 1985 में आप अ.भा. जादूगर सम्मेलन से 'जादूरत्न' की उपाधि से सम्मानित हुए। हरियाणा एवं अन्य राज्य सरकारों द्वारा भी आपको अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है।

इस प्रकार जादू कला के क्षेत्र में भी इस समाज ने उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। विशेष बात यह है कि इन कार्यक्रमों का बहुत बड़ा हिस्सा समाज-सहायता के लिए दिया गया है।

सैन्य वीरता तथा साहस एवं बलिदान के क्षेत्र में

अग्रवाल वैश्य समाज व्यवसाय, वाणिज्य, उद्योग के क्षेत्र में ही नहीं, वीरता एवं त्याग के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है, इसका संक्षिप्त अध्ययन हम विभिन्न वैश्य युगों के अन्तर्गत कर चुके हैं, अत: यहां हम ऐसे अग्र/वैश्य वीरों का उल्लेख कर रहे हैं, जिन्होंने स्वाधीनता पूर्व ब्रिटिश शासनकाल अथवा स्वंतत्र भारत में सेना, पुलिस अथवा अन्य क्षेत्रों में अपूर्व शौर्य तथा पराक्रम का प्रदर्शन कर उच्च अलंकरण प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की तथा समाज के नाम को गौरवान्वित किया।

मेजर जनरल द्वारका प्रसाद गोयल प्रथम भारतीय अधिकारी थे, जो ब्रिटिश सेना में मेजर जनरल बने। इसी प्रकार लेफ्टिनेंट कर्नल कान्ताप्रसाद, कैप्टन शंकरलाल गुप्ता, कैप्टन केदारनाथ गोयल, कैप्टन बलदेव गुप्ता, कल्याणसिंह गुप्त, सूबेदार के.एल.जैन आदि ने प्रथम तथा द्वितीय महायुद्ध में शौर्य को प्रदर्शित कर अनेक वीरता अलंकरण प्राप्त किए। इनमें कैप्टन पी.सी. गुप्ता, लेफ्टिनेंट वेदप्रकाश राजवंशी, कैप्टन कृष्णचंद्र गुप्ता आदि को मिलटरी क्रास मिला। फ्लाईंग आफिस प्रेमसागर गुप्ता को डिंस्टेक्विश्ड प्लाइंग क्रास, कैप्टन कल्याणसिंह गुप्ता को आर्डर ऑफ ब्रिटिश इण्डिया एवं मेम्बर ऑफ ब्रिटिश राज्य, लेफ्टि. कर्नल कांताप्रसाद को केशरेहिन्द गोल्डमेडल, स्कवाड्रन लीडर सुरेन्द्रनाथ गोयल को मेम्बर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर, सूबेदार त्रिलोकचंद जैन, कुंदनलाल जैन, हरिकृष्ण गुप्ता आदि को आर्डर ऑफ ब्रिटिश इण्डिया पदक प्राप्त हुए। शाही भारतीय तोपखाना रेजिमेंट, आर्मडकोर, इन्फैन्ट्री, रायल इण्डिया इंजीनियर्स, आर्मी सर्विसकौर, भारतीय सेना एवं शाही भारतीय वायुसेना में वीरता प्रकट करने वाले अग्र/वैश्य वीरों की संख्या भी अत्यधिक है। इनमें लेफ्टिनेंट सोमदेव गुप्ता, मेजर जनरल छज्जूराम, ब्रिगेडियर राजेन्द्रपाल मित्तल, लेफ्टिनेंट जनरल हरप्रसाद, मेजर जनरल निरंजनप्रसाद, मे. जनरल एच.एन. सिंघल, एयर वाइस मार्शल सुरेन्द्रनाथ गोयल, एम.बी.ई., लेफ्टिनेंट कर्नल ललितमोहन बागला, प्लाईट लेफ्टिनेंट ओ.पी. सांघी, फ्लाईंग आफिसर प्रेम सागर गुप्ता, कमाण्डर टी.एन.सिंघल, लेफ्टिनेंट नरेन्द्रकुमार जैन, सूबेदार हरप्रसाद

गोयल, कैप्टन शाम बिहारी अग्रवाल, किशोरलाल मित्तल, सूबेदार जयजयराम अग्रवाल, कैप्टन नरेन्द्र कुमार मित्तल, मेजर चंद्रमोहन अग्रवाल, कैप्टन जीतेन्द्रनाथ गोयल, कैप्टन ओ.पी. बंसल, गोपालदास अग्रवाल, कैप्टन गुरुमुखदास अग्रवाल, ज्योतिभूषण गुप्ता, श्रीराम अग्रवाल, दलजीत सिहं गोयल, लाल चंद अग्रवाल, हंसराज सिंघल, कैप्टन बसील फ्रेंक अग्रवाल, कैप्टन वेदप्रकाश सिंघल, लेफ्टिनेंट कर्नल एस.डी. अग्रवाल, लैफ्टिनैंट कर्नल एस.पी. सिंघल, मेजर ज्ञानेश्वर प्रसाद मित्तल, एयर मार्शल दुष्यन्तसिंह एयर कोमोडोर अशोक कुमार, श्री के. एल गोयल, लेफ्टिनेंट कर्नल एम.सी. गुप्ता, कैप्टन वी.पी.एस. अग्रवाल, जे.एम. मित्तल, वी.पी. गोयल, जोहरीमल मित्तल आदि के नाम उल्लेखनीय है। इनमें से अनेक ने बड़ी संख्या में ब्रिटिश भारत में सशस्त्र सेनाओं एवं अन्य सुरक्षाबलों में वीरता एवं विशिष्ट पुरस्कारों को प्राप्त कर महान प्रतिभा का परिचय दिया और यह सिद्ध कर दिखाया कि शौर्य एवं पराक्रम पर किसी जाति विशेष का अधिकार नहीं, समाज का कोई भी वर्ग अपनी प्रतिभा के बल पर उसमें विशिष्टता अंकित कर सकता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी शौर्य एवं पराक्रम की यह परम्परा अक्षुक्ष्ण रही है। 1962 का भारत चीन युद्ध हो या 1965 का भारत पाक युद्ध अथवा बंगला देश का निर्माण, इस समाज के लोगों ने राष्ट्र रक्षा एवं सैन्य क्षेत्र में पराक्रम प्रदर्शित कर देश के गौरव को बढ़ाया है। इस प्रकार के वीर सैनिकों को महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, वीरचक्र, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अतिविशिष्ट सेवा मेडल, शौर्य चक्र, युद्ध सेवा मैडल, सेना मैडल, नौसेना मैडल, वायु सेना मैडल, विशिष्ट सेवा मैडल आदि प्रदान कर उनकी सेवाओं को भारत सरकार ने मान्यता भी प्रदान की है।

इनमें कतिपय अग्र/वैश्य विभूतियों का संकेत रूप में उल्लेख अपेक्षित होगा। कैप्टन महावीर प्रसाद और लेफ्टिनेंट कमांडर संतोष कुमार गुप्ता ने महावीरचक्र, ब्रिगेडियर मनोहरलाल गर्ग, रवींद्रनाथ गुप्ता, जयलाल गुप्ता ने कीर्ति चक्र तथा एयर वाइस मार्शल कृष्ण महेश प्रसाद अग्रवाल, लेफ्टिनेंट जनरल हरप्रसाद, लेफ्टिनेंट जनरल देवेंद्रनाथ गुप्ता, मेजर जनरल हरनारायण सिंघल, लेफ्टिनेंट जनरल राजेद्रपाल अग्रवाल, वाईस एडमिरल सुरेंद्रपाल गोविल, लेफ्टिनेंट जनरल विमल सिंघल आदि ने परम विशिष्ट सेवा मैडल प्राप्त कर अग्रसमाज का गौरव बढ़ाया है।

इस संदर्भ में मेजर जनरल रवींद्र गुप्ता, ब्रिगेडियर आनंद देव अग्रवाल, ब्रिगेडियर प्रेमकुमार गुप्ता, ब्रिगेडियर हरनारायण सिंघल, ग्रुप कैप्टन अविनाश चंद्र गोयल, मेजर जनरल सुरेन्द्रनाथ, ब्रिगेडियर वेदप्रकाश गुप्ता, स्कवाड्रन लीडर सतीशनंदन बंसल, विंग कमाण्डर केशवचंद्र अग्रवाल, फ्लाइट लेफ्टिनेंट चंद्रमोहन सिंघल, सेकिण्ड लेफ्टिनेंट पुरुषोत्तम तुलस्यान, लेफ्टि. कमाण्डर दीपक अग्रवाल, स्कवाड्रन लीडर महेन्द्र कुमार जैन, डॉ० प्रेमसागर गर्ग, स्कवाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल, कर्नल रामकृष्ण बंसल, श्रीमती रेणु अग्रवाल, श्री मोहित सर्राफ, कुमारी सविता गोयल, लेफ्टिनेंट वी. के जैन, लेफ्टिनेंट एस. मित्तल आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने सैन्य क्षेत्र में अति विशिष्ट सेवा मेडल, वीरचक्र, शौर्यचक्र प्राप्त कर यह प्रमाणित कर दिया है कि अग्रवाल। वैश्य समाज राष्ट्र रक्षा के क्षेत्र में भी पीछे नहीं है।

यही नहीं अग्रवीरों ने भारतीय वायुसेना, नौसेना में भी शौर्य और पराक्रम के नये प्रतिमान स्थापित किए हैं। नौसेना मैडल, वायु सेना मैडल जैसे पदक प्राप्त कर वायु एवं नौसेना के क्षेत्र में अपना विशिष्ट नाम अंकित कराने वालों में स्कवाड्रन लीडर एस.के. गोयल, प्लाइट लेफ्टिनेंट प्रदीप कुमार तायल, विंगकमाण्डर सुभाष चन्द्र मित्तल, विंगकमाण्डर महावीर प्रसाद प्रेमी, विंगकमाण्डर रमाकांत अग्रवाल, स्वाड्रन लीडर मुकुल गोयल, लेफ्टिनेंट सन्तोष कुमार गुप्ता, ई.ए.के.के. गोयल, लेफ्टिनेंट कमाण्डर पी.के.जिंदल, कमाण्डर त्रिभुवन नारायण अग्रवाल आदि के नाम उल्लेखनीय है। एयर वाईस मार्शल सुरेन्द्र गोयल भारत के सबसे पहले और सबसे छोटे हवाई अफसर हैं, जिन्हें अग्रेंज सरकार ने एम.बी.ई. से सम्मानित किया। भारत की वायुसैन्य शक्ति को बढ़ाने में आपका विशेष योगदान रहा। आपने भारतीय युवकों को सेना की ओर आकर्षित करने के लिए ट्रेनिंग मुख्यालय की स्थापना की, जो अपने ढंग का पहला प्रशिक्षण केन्द्र है।

1991 में सेना की आयुधकोर के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्रपाल अग्रवाल को परम विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया। आपको यह सम्मान श्रीलंका में भारतीय शान्ति सेना को उत्कृष्ट सहायता सामग्री पहुँचाने के लिए प्रदान किया गया।

अपने साहस एवं शौर्य से समाज का नाम ऊँचा करने वालो में श्री राजेन्द्र गुप्ता का नाम भुलाया नहीं जा सकता। एक विदेशी पर्यटक द्वारा भारतीयों को आलसी, कमजोर कहे जाने पर वह इतना चले कि गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम अंकित कराने में सफल हो गए। आपने एक लाख 70 हजार किलोमीटर पैदल चल कर जापान के मातातोषी के एक लाख 20 हजार कि.मी. चलने का रिकार्ड तोड़ा। आपने भारत के साथ-साथ तिब्बत, चीन, पाकिस्तान, सोवियत संघ कोरिया आदि की भी यात्रा की और इस महायात्रा को पूरा करने में उन्हें साढ़े पाँच साल लगे। विदेशों में भी इस युवक का जोरदार स्वागत हुआ। आपके इस अदम्य साहस एवं शौर्य पर गिनीज बुक ने 45 लाख का पुरस्कार प्रदान कर आपको सम्मानित किया।

प्राणों की परवाह न कर शौर्य एवं साहस का उदाहरण प्रस्तुत करने वालों में ब्रिगेडियर मोहनलाल गर्ग का नाम भी उल्लेखनीय है। 2-3 दिसम्बर 1984 की आधी रात को मध्यप्रेदश के भोपाल शहर में अब जहरीली गैस फैलने लगी तो दुर्घटनास्थल से केवल 400 मीटर की दूरी पर स्थित स्ट्रा प्रोडक्टस फैक्टरी के 1100 कर्मचारी जहरीली गैस की लपेट में आ गए। उस समय ब्रिगेडियर श्री मोहनलाल गर्ग ने अपने तथा अपने परिवार के लोगों के प्राणों की परवाह किए बिना उन समस्त कर्मचारियों के बचाव में लगे रहकर अप्रतिम शौर्य का उदाहरण प्रस्तुत किया। भारत सरकार ने आपको कीर्तिचक्र प्रदान कर इस साहसिक कार्य के लिए सम्मानित किया। पुलिस में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए श्री भारतेन्दू प्रकाश सिंघल, श्री लक्ष्मीचंद गुप्ता, उपनिदेशक चिकित्सा नई दिल्ली, श्री देशराज सिंघल, प्लाटून कमाण्डर आई. टी.बी.पी नई दिल्ली व श्री अमिताभ गुप्ता आदि ने राष्ट्रपति पुलिस मेडल प्राप्त कर पद के गौरव को बढ़ाया है। श्री अमिताभ गुप्ता को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं को देखते हुए राजस्थान पुलिस महानिदेशक के पद पर नियुक्त किया गया। आप 1964 से भारतीय पुलिस सेवा में हैं। श्री राजनाथ गुप्त को उत्तर प्रदेश में पुलिस महानिदेशक पद पर रहने का श्रेय प्राप्त है।

शहीद मेजर अग्रवाल को भारत के प्रथम टैस्ट पायलट होने का गौरव प्राप्त है। श्री अजय अग्रवाल पुलिस आयुक्त रहे हैं। श्री वी. के गुप्ता उत्तर प्रदेश पुलिस सैल के

वरिष्ठ अधिकारी हैं, जिन्होंने अपहरणकर्ताओं से बच्चे को मुक्त करा साहस का परिचय दिया। आपको इस शानदार उपलब्धि के लिए राष्ट्रपति द्वारा वीरचक्र प्रदान प्रदान किया गया। आपको अनेक कुख्यात अपराधियों को मार गिराने का गौरव भी प्राप्त है।

श्री प्रदीप कुमार गुप्ता ने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के अंगरक्षक रूप में अपने जीवन का उत्सर्ग कर जो आदर्श प्रस्तुत किया, उसके कारण उन्हें 1993 में मरणोपरांत पुलिस मैडल प्रदान किया गया।

कैप्टन कमलकिशोर बसंल ने अपने ग्रंथ 'वीरता की विरासत' में ऐसे ही अनेक अग्र वैश्य वीरों के शौर्य एवं बलिदान का उल्लेख किया है, जिन्होंने असाधारण शौर्य, त्याग एवं कर्तव्य परायणता प्रदर्शित कर भारतीय पुलिस एवं सेना में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। यहाँ ऐसे ही कतिपय वीरों की सूची दी जा रही है जिस से अनुमान लगाया जा सकता है कि शौर्य एवं पराक्रम के क्षेत्र में भारतीय अग्रवाल वैश्यों का योगदान कितना बहुविध रहा है।

इस सम्बंध में एक राजस्थानी कहावत का उल्लेख समीचीन होगा-बामन हो या बाणिया, मरद दिलां मजबूत, रजवट किण रै बापरी, राखै सो रजपूत।

स्वतंत्रता पूर्व सैनिक एवं अन्य वीरता सम्मानों से अलंकृत वैश्य अग्रवाल

कैप्टन पी.सी. गुप्ता	मिलटरी क्रास
कैप्टन कामता प्रसाद	मिलटरी क्रास
कैप्टन पी.वी. राजवंशी	मिलटरी क्रास
कैप्टन कृष्णचंद्र गुप्ता	मिलटरी क्रास
फ्लाईंग आफिसर प्रेमसागर गुप्ता	डी. फ्लाईंग क्रास
सूबेदार कल्याण सिंह गुप्ता	सरदार बहादुर ओ.बी.आई. एवं एम.बी.आई.
स्कवाड्रन लीडर सुरेन्द्रनाथ गोयल	मैम्बर आफ ब्रिटिश एम्पायर
लेफ्टिनेंट कर्नल कान्ताप्रसाद	केसरे हिन्द गोल्ड मेडल
सूबेदार हरिकिशन गुप्ता	सरदार बहादुर आर्डर आफ ब्रिटिश इंडिया
सूबेदार कुन्दन लाल जैन	सरदार बहादुर आर्डर आफ ब्रिटिश इंडिया
सरदार त्रिलोकी चंद जैनी	सरदार बहादुर आर्डर आफ ब्रिटिश इंडिया

स्वतन्त्र भारत
परम विशिष्ट सेवा मैडल

एयरवाईस मार्शल कृष्ण महेश अग्रवाल	प.वि.से.मै.
लैफ्टि. जनरल हर प्रसाद	प.वि.से.मै.
लैफ्टि. जनरल सोमदेव गुप्ता	प.वि.से.मै.
लैफ्टि. जनरल देवेन्द्रनाथ गुप्ता	प.वि.से.मै. अति वि.से.मै.
एयर मार्शल श्री कृष्णचंद गुप्ता	प.वि.से.मै. वि.से.मै.
मेजर जनरल राजेन्द्र प्रसाद	प.वि.से.मै.
मेजर जनरल मिथलेशचन्द्र गुप्ता	प.वि.से.मै.
मेजर जनरल हरनारायण सिंघल	प.वि.से.मै., अति वि.से.मै.

वाईस एडमिरल सुखमल जैन	प.वि.से.मै., अति वि.से.मै., नौ सेना मैडल
एयर वाईस मार्शल छोटेलाल गुप्ता	प.वि.से.मै.
वाईस एडमिरल सुरेन्द्रपाल गोविल	प.वि.से.मै., अति वि.से.मै., ए.डी.सी.
लेफ्टिनेंट जनरल विमल सिंघल	प.वि.से.मै.
लैफ्टि. जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल	प.वि.से.मै., वि.से.मै.
लैफ्टि. जनरल अशोक मांगलिक	प.वि.से.मै., सेना मैडल
एयर मार्शल प्रद्युम्न कुमार जैन	प.वि.से.मै., वि.से.मै.

महावीर चक्र

कैप्टन महावीर प्रसाद	महावीर चक्र (मरणोपरान्त)
लैफ्टि. कमाण्डर संतोष कुमार गुप्ता	महावीर चक्र (नौसेना मैडल)

कीर्ति चक्र

श्री जीयालाल गुप्ता	कीर्ति चक्र
श्री रवीन्द्र नाथ गुप्ता	कीर्ति चक्र
ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग	कीर्ति चक्र

अति विशिष्ट सेवा मैडल

ब्रिगेडियर आनंददेव अग्रवाल	अ.वि.से.मै.
ब्रिगेडियर मनोहरलाल गर्ग	अ.वि.से.मै.
एयर कमोडोर देवेन्द्र नाथ गुप्त	अ.वि.से.मै.
ब्रिगेडियर प्रेम कुमार गुप्ता	अ.वि.से.मै.
ब्रिगेडियर रवीन्द्र गुप्ता	अ.वि.से.मै. एवं बार
ब्रिगेडियर वेद प्रकाश गुप्ता	अ.वि.से.मै.
एयर एडमिरल सुरेन्द्र पाल गोविल	अ.वि.से.मै.
ब्रिगेडियर छज्जूराम	अ.वि.से.मै., वीरचक्र
ग्रुप कैप्टन रमेश चन्द्र जैन	अ.वि.से.मै.
ब्रिगेडियर गोपाल दास	अ.वि.से.मै.
ब्रिगेडियर वीरेन्द्र प्रताप	अ.वि.से.मै.
कर्नल हरगुलाल	अ.वि.से.मै. एवं ताम्रपत्र
ब्रिगेडियर हरनारायण सिंघल	अ.वि.से.मै.
एयर एडमिरल सुखमाल जैन	अ.वि.से.मै., नौ सेना मैडल
कर्नल प्यारे लाल	अ.वि.से.मै.
मेजर जनरल सुरेन्द्र नाथ	अ.वि.से.मै., वि.से.मै.
एयर कोमोडोर नरेश कुमार	अ.वि.से.मै., वायु सेना मैडल
ग्रुप कैप्टन अविनाश चन्द्र गोयल	अ.वि.से.मै.
कर्नल एस.के. जैन	अ.वि.से.मै.
ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार जैन	अ.वि.से.मै.
कोमोडर ओम प्रकाश बंसल	अ.वि.से.मै. वि.से.मै.

वीर चक्र

स्कवाड्रन लीडर सतीशचन्द्र बंसल	वीर-चक्र
लैफ्टि. कर्नल छज्जूराम	वीर-चक्र
स्कवाड्रन लीडर महेन्द्र कुमार जैन	वीर-चक्र
विग कमाण्डर केशव चन्द्र अग्रवाल	वीर-चक्र
फ्लाईट लैफ्टि. महावीर प्रसाद प्रेमी	वीर-चक्र, वायु सेना मैडल
फ्लाईट लैफ्टि. चन्द्रमोहन सिंघल	वीर-चक्र
सैकंड लैफ्टि. पुरूषोत्तम तुलस्यान	वीर-चक्र
कैप्टन रवीन्द्र नाथ गुप्ता	वीर-चक्र
लैफ्टि. कर्नल सुरेश चन्द्र गुप्ता	वीर-चक्र
मास्टर चीफ पेटी आफिसर मेघनाथ सिंघल	वीर-चक्र
लैफ्टि. अशोक कुमार	वीर-चक्र
लैफ्टि. कमाण्डर दीपक अग्रवाल	वीर-चक्र
फ्लाईट लैफ्टि. विश्वनाथ प्रकाश	वीर-चक्र
वी. के. गुप्ता	वीर-चक्र

शौर्य चक्र

डाक्टर प्रेम सागर गर्ग	शौर्य-चक्र
सार्जेंट श्याम बिहारी गुप्ता	शौर्य-चक्र
फ्लाईंग आफिसर प्रदीप कुमार जैन	शौर्य-चक्र
स्कवाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल	शौर्य-चक्र, वायु सेना मैडल
श्री नरेश कुमार गुप्ता	शौर्य-चक्र (मरणोपरांत)
कर्नल रामकृष्ण बंसल	शौर्य-चक्र
कुमारी सविता गोयल	शौर्य-चक्र
श्री नवलकान्त	शौर्य-चक्र (मरणोपरांत)
श्री मोहित सर्राफ	शौर्य-चक्र
श्रीमती रेणु अग्रवाल	शौर्य-चक्र (मरणोपरान्त)

युद्ध सेवा मैडल

फ्लाईट लैफ्टि. संजय मित्तल	युद्ध सेवा मैडल
कैप्टन अशोक कुमार जिन्दल	युद्ध सेवा मैडल
फ्लाईट लैफ्टि. प्रदीप गुप्ता	युद्ध सेवा मैडल

सेना मैडल

कैप्टन संजय अग्रवाल	सेना मैडल एवं बार
सैकंड लैफ्टि.पी.के. जिन्दल	सेना मैडल (मरणोपरांत)
मेजर मुकुन्द लाल मित्तल	सेना मैडल
सैकण्ड लैफ्टि. एन.सी.गुप्ता	सेना मैडल

लैफ्टि. एस. मित्तल	सेना मैडल
लैफ्टि. वी. के. जैन	जीवन रक्षा पदक (नौ सेना)
लैफ्टि. कर्नल अशोक मांगलिक	सेना मैडल
मेजर एस.के. गुप्ता	सेना मैडल
सैकेण्ड लैफ्टि. पी.के. गुप्ता	सेना मैडल
कैप्टन शेखर गुप्ता	सेना मैडल
लैफ्टि कर्नल एन.के. गुप्ता	सेना मैडल
कैप्टन लवकुमार सिंघल	सेना मैडल
कैप्टन अमृतलाल सिंघल	सेना मैडल
मेजर पी.डी. जैन	सेना मैडल

नौसेना मैडल

लैफ्टि. संतोष कुमार गुप्ता	नौसेना मैडल
लैफ्टि. नरेश चन्द्र वैश्य	नौसेना मैडल
लिडिंग सीगैन एम.एस. गुप्ता	नौसेना मैडल
मास्टर चीफ पेटी आफिसर एस.पी. गुप्ता	नौसेना मैडल
ई.ए.के.के. गोयल	नौसेना मैडल
लैफ्टि. कमाण्डर पी.के. जिन्दल	नौसेना मैडल
लैफ्टि. विनोद कुमार जैन	नौ सेना मैडल (मरणोपरांत)
कमांडर सुखलाल जैन	नौसेना मैडल
कमांडर त्रिभुवन नारायण सिंघल	नौसेना मैडल
कैप्टन बी.के. गुप्ता	नौसेना मैडल
लैफ्टि. अरविन्द गुप्ता	नौसेना मैडल
लैफ्टि. राजन गुप्ता	नौसेना मैडल

वायु सेना मैडल

स्कवाड्रन लीडर नरेश कुमार	वायु सेना मैडल
स्कवाड्रन लीडर एस.के. गोयल	वायु सेना मैडल
मास्टर वारन्ट आफिसर ए.के. गुप्ता	वायु सेना मैडल
स्कवाड्रन लीडर एस.के. गुप्ता	वायु सेना मैडल
फ्लाईट लैफ्टि. प्रदीप कुमार तायल	वायु सेना मैडल
विंग कमाण्डर महावीर प्रसाद प्रेमी	वीरचक्र, वायु सेना मैडल
स्कवाड्रन लीडर प्रकाश गोयल	वायु सेना मैडल
प्रमोद कुमार गुप्ता	वायु सेना मैडल
विंग कमाण्डर सुभाष चन्द्र मित्तल	वायु सेना मैडल
विंग कमाण्डर भरतलाल लोहाटिया	वायु सेना मैडल
विंग कमाण्डर रमाकान्त अग्रवाल	वायु सेना मैडल

ग्रुप कैप्टन अशोक कुमार गोयल	वायु सेना मैडल
विंग कमाण्डर सतीश कुमार जैन	वायु सेना मैडल
स्कवाड्रन लीडर मुकुल गोयल	वायु सेना मैडल
फ्लाईट लैफ्टि. विवेक	वायु सेना मैडल
फ्लाईट लैफ्टि. आदर्शवीर	वायु सेना मैडल

डिस्पेच में उल्लेख

कैप्टन वेद प्रकाश राजवंशी	डि.मे.उ.
ब्रिगेडियर सोमदेव गुप्ता	डि.मे.उ.
ब्रिगेडियर के.सी. गुप्ता	डि.मे.उ.
ब्रिगेडियर एस.सी. गुप्ता	डि.मे.उ.
लैफ्टि. कर्नल एस.डी. गुप्ता	डि.मे.उ.
लैफ्टि. कर्नल विमलेश सिंघल	डि.मे.उ.
ब्रिगेडियर कृष्ण कुमार मित्तल	डि.मे.उ. 1965 एवं 1971
मेजर एन.एन. गुप्ता	डि.मे.उ.

–कैप्टन कमल किशोर बंसल द्वारा रचित 'वीरता की विरासत' पुस्तक से साभार।

अन्य क्षेत्रों में योगदान

ऊपर हमने इस समाज के कतिपय क्षेत्रों में योगदान को संक्षेप में अंकित करने का प्रयास किया है, किन्तु जीवन के अन्य क्षेत्र भी इससे वंचित नहीं हैं। दर्शन के क्षेत्र में डॉ० भगवानदास, स्थापत्यकला एवं भवन निर्माण के क्षेत्र में श्री एस. के. गर्ग, फिल्म के क्षेत्र में श्री देवेन्द्र गोयल, अरूण गोविल, कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में श्री सुभाष गुप्ता, पर्यावरण संरक्षण में श्री अनिल अग्रवाल, माइक्रोविमान संचालन में श्री विजयपत सिघांनिया, बालचर सेवाओं में उर्मिला रूंगटा आदि ऐसी अनेक विभूतियां है, जिनपर कोई भी समाज गौरव का अनुभव कर सकता है।

सर्वतोमुखी योगदान

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राष्ट्र निर्माण के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रवाल समाज का योगदान बहुविध एवं सर्वव्यापी है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जो उसके योगदान से वंचित रहा हो। इस समाज का विकास लोकजीवन के बहुमुखी विकास में सहायक रहा है और समाज के सभी वर्गों–हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई से लेकर कश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी क्षेत्रों में उसका प्रसार समान रुप से देखा जा सकता है। यहाँ तक कि विदेशों में भी इस समाज के लोक कल्याणकारी प्रकल्पों का अभाव नहीं है। इस समाज के योगदान के विविध पहलू हैं और प्रत्येक पहलू दीप्ति एवं आभा से युक्त है। अत: कहा जा सकता है कि यह समाज किसी जाति विशेष का प्रतिनिधित्व न कर समूचे राष्ट्र को प्रतिविम्बित करता है, और इसकी धरोहर मान्य है।

परिशिष्ट

डाक टिकट प्रकाशित अग्र विभूतियां

भारत सरकार ने समय समय पर विभिन्न अग्रविभूतियों पर डाक टिकट जारी कर उनके प्रति सम्मान तथा उनकी सेवाओं को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान की है। डाक टिकट प्रकाशित प्रमुख अग्रविभूतियां निम्नानुसार हैं-

लाला लाजपतराय-भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महान सेनानी लाला लाजपतराय की स्मृति में 28 जनवरी 1965 को 15 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।

भारतरत्न डॉ० भगवानदास-आप भारत के महान दर्शनिक, शिक्षाविद एवं उच्चकोटि के विद्वान थे। आपकी महान विद्वता को देखते हुए भारत सरकार ने आपको राष्ट्र की सर्वोच्च उपाधि भारत रत्न से सम्मानित किया। आपने 1865 में सेंट्रल हिंदू कालेज की स्थापना की तथा काशी हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापना में भी आपका योगदान रहा। आप काशी विद्यापीठ के कुलपति तथा केंद्रीय विधान सभा के सदस्य भी रहे।

आपने लगभग डेढ़ दर्जन ग्रंथों का प्रणयन किया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने आपको डी. लिट की मानद उपाधि प्रदान की। आपके सुपुत्र श्री श्रीप्रकाश भी उच्च कोटि के विद्वान तथा मद्रास, आसाम, महाराष्ट्र आदि राज्यों के राज्यपाल रहे।

आपके सम्मान में डाक टिकट विभाग द्वारा 12 जनवरी 1969 को 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।

जमनालाल बजाज-सुप्रसिद्ध समाजसेवी, राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के अनुपम सेनानी एवं गांधीजी के पांचवें दत्तक पुत्र श्री जमनालाल बजाज की पुण्य स्मृति में भारत सरकार द्वारा 4 नवम्बर 1970 को 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।

भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र-आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता एवं उन्नायक भारतेंदुबाबू हरिश्चंद्र के सम्मान में भारत सरकार द्वारा 9 सितम्बर 1975 को 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।

महाराजा अग्रसेन-अग्रकुल प्रवर्त्तक, अग्रोहा राज्य के संस्थापक तथा एक ईंट, एक रूपैया जैसे महान समतावादी सिद्धान्त के प्रवर्त्तक महाराजा अग्रसेन की 5100 वीं जयन्ती पर भारत सरकार ने 24 सितम्बर 1976 को 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया। डाक विभाग ने आप पर 80 लाख डाक टिकटें मुद्रित की, जो किसी भी महापुरुष के सम्मान में प्रकाशित होने वाली डाक टिकटों में सर्वाधिक थीं।

सर गंगाराम-आप भारत के प्रथम श्रेणी के इंजीनियर, उच्चकोटि के समाज सुधारक, विधवाओं के हितैषी एवं पंजाब में हरित क्रांति के जनक थे। पंजाब के सूखे, बंजर इलाके को हरा भरा तथा अन्न उत्पादन के मामले में अग्रणी बनाने में आपकी लिफ्ट सिंचाई योजना का प्रमुख हाथ था। आपके सम्मान में भारत सरकार ने 4 सितम्बर 1977 को 25 पैसे का डाक टिकट प्रकाशित किया।

डॉ० राममनोहर लोहिया-भारत में विरोधी दल के प्रखर नेता, समाजवादी आंदोलन तथा गैर कांग्रेसी शासन विचारधारा के प्रवर्त्तक डॉ० राममनोहर लोहिया की स्मृति में

डाक-टिकट विभाग द्वारा 12 अक्टूबर 1977 को 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।

श्री शिव प्रसाद गुप्त-महान स्वाधीनता सेनानी, काशी विद्यापीठ के संस्थापक, काशी में भारत माता मंदिर के निर्माता एवं ज्ञानमण्डल तथा सुप्रसिद्ध दैनिक 'आज' के संस्थापक श्री शिवप्रसाद गुप्त के सम्मान में भारतीय डाकतार विभाग ने 28 जून 1988 को 60 पैसे का डाक टिकट जारी किया।

श्री श्रीप्रकाश-सुप्रसिद्ध दार्शनिक डॉ०भगवानदास के सुपुत्र, अनेक राज्यों के राज्यपाल, केंद्रीय विधान सभा के सदस्य एव पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त श्री श्रीप्रकाश की स्मृति में भारत सरकर द्वारा 3 अगस्त 1991 को दो रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार-धार्मिक एवं सांस्कृतिकजगत की महान विभूति एवं कल्याण के स्वनामधन्य सम्पादक श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार की जन्म शताब्दी पर भारत सरकार द्वारा 23 सितम्बर 1992 को एक रूपयेका डाक टिकट प्रकाशित किया गया।

डॉ० राममनोहर लोहिया– इनकी स्मृति में दूसरा डाक टिकट 23 मार्च, 1997 को भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा द्वारा जारी किया गया।

प्रमुख अग्रवाल साहित्य

अग्रवाल जाति का इतिहास (भाग दो)–श्री चंद्रराज भण्डारी।
अग्रवालों की उत्पति–भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र।
अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास–डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार
वैश्य अग्रवाल राजवंशी समाज का इतिहास– श्री निहालचंद
अग्रवाल जाति का विकास–डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त (अनुपलब्ध)
अग्रवाल जाति का प्रामाणिक इतिहास–श्री गुलाबचंद एरण (अनुपलब्ध)
देश के इतिहास में मारवाड़ी जाति का स्थान–श्री बालचंद मोदी
अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल–डॉ० स्वराजमणि अग्रवाल
अग्रसेन महाराज का जीवनचरित्र–श्री गिर्राजप्रसाद मित्तल
अग्रोहा–श्री राजाराम शास्त्री।
वैश्य समुदाय का इतिहास–डॉ० रामेश्वरदयाल गुप्त
दी अग्रवालस्–श्री बदलूराम गुप्ता
अग्रोतकान्वय–श्री निरंजनलाल गौतम
अग्रवाल जाति का संक्षिप्त इतिहास– श्री शिवशंकर गर्ग
मारवाड़ी–व्यवसाय से उद्योग में–टामस.ए.टिम्वर्ग
मारवाड़ी समाज–डॉ० डी.के. टकनेत
मैं अपने मारवाड़ी समाज को प्यार करता हूँ–जैमिनी कौशिक बरुआ
अग्रोहा–एक ऐतिहासिक धरोहर–डॉ० चम्पालाल गुप्त

उच्च राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त अग्रवाल/वैश्य

डॉ० भगवानदास	भारत-रत्न (1953)
श्री राधाकृष्ण गुप्त	पद्मभूषण (1954)
डॉ० कंवरसेन	पद्मभूषण (1956)
डॉ० मोतीचन्द्र	पद्मभूषण
श्री अक्षय कुमार जैन	पद्मभूषण (1969)
श्री केशवप्रसाद गोयन्का	पद्मभूषण (1969)
डॉ० जयकृष्ण	पद्मभूषण (1972)
श्री श्रीप्रकाश	पद्म विभूषण
श्री श्रेयांसप्रसाद जैन	पद्म विभूषण
श्री रायकृष्ण दास	पद्म विभूषण
श्रीमती जानकीदेवी बजाज	पद्म विभूषण
श्री सीताराम सेक्सरिया	पद्मभूषण
श्री लाला भरतराम	पद्मभूषण
राय बहादुर गुजरमल मोदी	पद्मभूषण
श्री मंगतुराम जैपुरिया	पद्मभूषण
डॉ० बी.के. गोयल	पद्मभूषण
श्री आत्माराम	पद्मश्री (1959)
श्री रामावतार पोद्दार अरूण	पद्मश्री (1966)
श्री रामलाल राजगढिया	पद्मश्री (1969)
श्री श्यामलाल गुप्ता	पद्मश्री (1969)
श्री कल्याण सिंह गुप्ता	पद्मश्री (1969)
श्री घनश्यामदास गोयल	पद्मश्री (1970)
श्रीमती सुमित्रा भरतराम	पद्मश्री (1970)
श्री ओ.पी. मित्तल	पद्मश्री (1971)
श्री बद्रीप्रसाद बाजोरिया	पद्मश्री (1972)
श्री ओम अग्रवाल	पद्मश्री (1972)
श्री प्रभुदयाल डाबडीवाला	पद्मश्री (1972)
श्री बृजकृष्ण चांदीवाला	पद्मश्री (1972)
श्री ईश्वरचंद गुप्ता	पद्मश्री (1972)
श्री सूरजमल अग्रवाल	पद्मश्री (1973)
श्री बिशनस्वरूप बंसल	पद्मश्री (1975)
डॉ० रघुवीरशरण गुप्त मित्र	पद्मश्री (1983)
श्री वीरेन्द्र प्रभाकर	पद्मश्री
डॉ० बी.के. गोयल	पद्मश्री (1982)
श्री प्रभुदयाल गर्ग (काका हाथरसी)	पद्मश्री

श्री देवी सहाय जिंदल	पद्मश्री
श्री चरतराम	पद्मश्री
श्री रामनारायण अग्रवाल	पद्मश्री
श्री हनुमान बख्श कन्दोई	पद्मश्री
श्रीमती शीला झूनझुनवाला	पद्मश्री
डॉ० महेन्द्र कुमार गोयल	पद्मश्री
प्रो. नरेन्द्र कुमार गुप्ता	पद्मश्री
श्री अमरनाथ गुप्ता	पद्मश्री
श्री विमल प्रसाद जैन	पद्मश्री
श्रीमती रेणु अग्रवाल	पद्मश्री

विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति, कुलपति (वाईस चांसलर)

डॉ० भगवानदास	काशी विद्यापीठ
श्री श्रीप्रकाश	काशी विद्यापीठ
डॉ० जयकृष्ण	रूड़की विश्वविद्यालय
श्री राधाकृष्ण	कानपुर विश्वविद्यालय
श्री सतेन्द्र नारायण अग्रवाल	भागलपुर विश्वविद्यालय
श्री शीतल प्रसाद	आगरा विश्वविद्यालय
राजा ज्वालाप्रसाद	काशी विश्वविद्यालय
आचार्य जुगलकिशोर	लखनऊ विश्वविद्यालय
डॉ० सर मोतीसागर	काशी विद्यापीठ
श्री गोपाल प्रसाद	मगध विद्यापीठ
श्रीमती हेमलता स्वरूप	कानपुर विश्वविद्यालय
श्री सतीशचन्द्र गोयल	जोधपुर विश्वविद्यालय
श्री रघुकुल तिलक	राजस्थान विश्वविद्यालय
श्री मन्नारायण	गुजरात विश्वविद्यालय
लेफ्टिनेंट जनरल जी.सी. अग्रवाल	महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक
श्री गणपतिचंद्र गुप्त	हिमाचल एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
डॉ० गंगाराम गर्ग	गुरूकुल विश्वविद्यालय
डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार	गुरूकुल विश्वविद्यालय
डॉ० राजेन्द्र प्रकाश	गढ़वाल विश्वविद्यालय
डॉ० रंजन शाह	इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रो० रामसिंह	गुरूकुल विश्वविद्यालय
श्री पी.डी गुप्ता	आगरा विश्वविद्यालय
डॉ० सुरेन्द्रकुमार अग्रवाल	आगरा विश्वविद्यालय
श्री मदनमोहन अग्रवाल	गोरखपुर विश्वविद्यालय
प्रो० रतनप्रकाश अग्रवाल	राजस्थान विश्वविद्यालय

अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित साहित्य

- **अग्रोहा-एक ऐतिहासिक धरोहर**-डॉ० चम्पालाल गुप्त 25/-
  अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल एवं राष्ट्र निर्माण में अग्रवालों के योगदान सम्बन्धी विस्तृत जानकारी से युक्त अग्रवाल समाज का इतिहास।

- **वीरता की विरासत**-कैप्टन कमलकिशोर बंसल 25/-
  राष्ट्र रक्षा के क्षेत्र में अनुपम शौर्य एवं त्याग प्रदर्शित कर उच्च सैनिक सम्मान प्राप्त करने वाले अग्रवीरों का शोधपूर्ण प्रमाणिक विवेचन।

- **अग्रोहाधाम-गीतों में**-सं. डॉ० कमलकिशोर गोयन्का 20/-
  अग्रसेन, अग्रोहा, एवं सामयिक विषयों से सम्बद्ध कविताओं एवं गीतों का सुंदर संकलन। प्रत्येक अग्रवाल संस्था के लिए उपयोगी

- **अग्रोहा दर्शन**-श्री हरपतराय टांटिया 10/-
  अग्रोहा के अतीत एवं वर्त्तमान का रोचक विवरण, अनेकानेक रंगीन चित्रों से युक्त अग्रोहा के दर्शनीय स्थलों की जानकारी एवं निर्माण का विशद इतिहास।

- **एक ईंट-एक रूपया**-श्री ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप' 10/-
  अग्रोहा से सम्बन्धित 18 कहानियों का रोचक एवं शिक्षाप्रद संकलन।

- **महाराजा अग्रसेन चित्र गाथा**-डॉ० स्वराजमणि अग्रवाल 5/-
  बच्चों एवं किशोरों के लिए महाराजा अग्रसेन की चित्रमयी रोचक गाथा।

- **अग्रोहा की कहानी, चित्रों की जुबानी**-श्री रामेश्वरदास गुप्त 10/-
  अग्रोहा के निर्माण की सचित्र कहानी और झलकियां

- **शेरे पंजाब-लाला लाजपतराय**-डॉ० चम्पालाल गुप्त 10/-
  महान स्वाधीनता सेनानी एवं अग्रगौरव लाला लाजपतराय की जीवन-गाथा।

- धार्मिक जगत की महान विभूति-**श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार** - श्री शिवकुमार गोयल 10/-
  कल्याण के संस्थापक श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार के जीवन से सम्बन्धित कुछ रोचक प्रसंगों का संग्रह।

- **महान समाजवादी नेता-डॉ० राममनोहर लोहिया**- श्री सत्यवीर अग्रवाल 10/-
  महान स्वाधीनता सेनानी एवं अग्रगौरव लाला लाजपतराय की जीवन-गाथा।

- **महान स्वाधीनता सेनानी एवं पत्रकार- लाला देशबन्धु गुप्ता**-प्रो. पी.पी. सिंघल 10/-
  महान स्वाधीनता सेनानी एवं देशभक्त लाला देशबन्धु की जीवनगाथा

- **अग्रोहाधाम**-मासिक पत्रिका
  अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल एवं सामाजिक पुनरुत्थान से सम्बन्धित अग्रवाल समाज की सर्वाधिक प्रसार संख्या वाली देश विदेश में लोकप्रिय, सामाजिक, मासिक पत्रिका। प्रत्येक अंक में पूरे परिवार के लिए पठनीय नाना प्रकार के स्तंभों से युक्त ज्ञान-विज्ञान-स्वास्थ्य-मनोरंजन सम्बंधी भरपूर सामग्री। अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गौरवशाली प्रकाशन।

लेखक परिचय

डॉ० चम्पालाल गुप्त

डॉ० चम्पालाल गुप्त अग्रसमाज के उन गिने-चुने एवं साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने विगत तीन दशकों में अग्रसेन, अग्रोहा अग्रवाल तथा वैश्य इतिहास सम्बन्धी प्रभूत साहित्य का सृजन कर समाज को गौरवान्वित किया है। आप अग्र/वैश्य समुदाय की अद्यतन उपलब्धियों को प्रकाश में लाने वाले अग्रसमाज के सर्वाधिक ख्याति प्राप्त अनुसन्धाता एवं लेखक है।

आपने देश-के कोने-कोने में जाकर तथा प्राचीन ग्रंथों की खोज कर 'वैश्य/अग्रवाल समुदाय का राष्ट्रीय उत्थान में योगदान' विषय पर शोध कार्य किया है। आपके पास दुर्लभ अग्र/वैश्य साहित्य का बेजोड़ संग्रह है। आपने अग्र वैश्य साहित्य के शोध-अनुसंधान तथा उसे प्रकाश में लाने के लिए महाराजा अग्रसेन अध्ययन संस्थान, श्रीगंगानगर की स्थापना की है, जो इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है।

अग्रोहा की कहानी, अग्रवाल जाति का ऐतिहासिक परिचय, शेरे पंजाब-लाला लाजपतराय जैसी आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियां है। आपने 'अग्रोहाधाम' पत्रिका का सफल मानद सम्पादन और उसके माध्यम से अनेकानेक विशेषांको का प्रकाशन कर अपनी सृजनरत लेखनी द्वारा समाज की विशेष सेवा की है। आप राष्ट्रीय स्तर पर अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, अग्रवाल निर्देशिका समिति, अग्रोहा विकास समिति, अ.भा. धर्म संघ, साहित्य परिषद्, लायंस कल्ब, विवेक आश्रम एवं मंगल मिलन आदि द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। आप महर्षि दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। आपको आदर्श शिक्षक के रूप में सम्मानित होने का गौरव प्राप्त है। 'सुमित्रानंदन पंत के काव्य में युगबोध' विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने आपको पीएच. डी. उपाधि प्रदान की है। आप आकाशवाणी के वार्ताकार भी हैं।

'अग्रोहा-एक ऐतिहासिक धरोहर' आपकी विशिष्ट कृति है, जिसमें आपने अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवालों सम्बन्धी अद्यतन जानकारी का समावेश किया है।

सम्पर्क सूत्र : अग्रकुंज, 3बी-15 मीरां मार्ग, जवाहर नगर, श्रीगंगानगर (राज०) 335001